

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

زَالِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاللَّهُ عِنْدَهُ خِزْيَانُ الْمَغَابِ (ال عمران- ۱۳)

ये सज्जदुनिया की ज़ुंदगी के सामान है.
और अल्लाह के पास तो जहोत ही अरख ठीकाना है.

મોમિન કા કિંમતી સરમાયા

હિસ્સા - ૩

ઈલમી, દીની ઓર ઈસ્લાહી ઈશદિત,
મોજુદા દોર કે મિજાઝ કે મુતાબિક,
ઈમાન, યકીન ઓર અહેસાની
કે ફીયત પેદા કરનેકા
કિંમતી સરમાયા

h મુરત્તિબh

(મવ.) શમ્સુલ હક હાશીમ

ચાંગા-૩૮૮ ૧૨૧.

જુલ્લા- સાણંદ. (ગુજરાત)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

زَايِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الْمَاٰبِ (آل عمران-13)

ये सख्त दुनिया की छुटगी के सामान है,
और अक्लाह के पास तो जहोत ही अरछा कीजना है.

मोमिन का किंमती सरमाया

हिरसा -3

ईलमी, दीनी और ईसलाही ईशरिफात,
मौजूदा दौर के मिजाज के मुताबिक,
ईमान, यकीन और अहेंसानी
के इयत पैदा करनेका
किंमती सरमाया

मुरत्तिब

(मव.) शम्सुल हक हाशीम
सांगा-366 इरा.
जुस्वा-आण्ड. (गुजरात)

મોમિનકા કિંમતી સરમાયા હિસ્સા-૩

- મુરત્તિબ : મવ. શમ્સુલહક હાશીમ
ઇશાઅત : અબ્બલ
સફહાત (પેજ) : ૨૧૪
હદિયા :
ટાઇપ સેટીંગ : ઇમેજ ગ્રાફિક્સ, આણંદ.

-:મીલનેકાપતા:-

મવ. શમ્સુલ હક હાશીમ
મું-પો. ચાંગા-૩૮૮૪૨૧,
જી. આણંદ(ગુજરાત)
ફોન:(૯૯૨૫૫૪૨૩૨૦

किताब अेकनजर में

- (१) भाव दौलत
- (२) क्नायत
- (३) सइर
- (४) सेहत और तंदुरस्ती
- (५) मौत
- (६) क्यामत
- (७) जन्नत
- (८) जहन्नम
- (९) मेहकिले धर्शाह
- (१०) अल्लाह वालोंकी जुंङगी
- (११) नाइरमानों की दास्तान
- (१२) लिडमत की आतें
- (१३) मुकीद आतें
- (१४) शेअर
- (१५) दीनी किताबें

--: इहरिस्त :-
 ❁ अन्तिसाज (अर्पण) ❁

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُولِكَ
 وَصَلِّ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
 وَالْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ (ابن حبان)

उन सब दीनी अहबाब की
 भिदमत में जे अल्लाह तआला के हुकमों
 को बजलाने और नबीये उम्मी सैय्यदीना
 उलरत मुहंमद सल्लल्लाहो अलयही
 वसल्लम की छिदायत और उसवअे
 उसनह की पैरवीही में अपनी और
 तमाम औलादे आदम (अल.) की
 नजतका यकीन करते छे.

नोंध :- किताब में कौंस के अल्फ़ाज को इस तरह पढ़ें.

भिसाल :- (स.अ.व.) सल्लल्लाहो अलयही वसल्लम
 (रदी.) रदीयल्लाहु अन्हु वरदु अन्हु.
 (अल.) अलयहीरसलाम.
 (र.अ.) रहमतुल्लाही अलयही.

-: इहरिस्त :-

(१) माल दौलत.....	१८
- दौलत की उकीकत	१८
- भोमिन की दौलत.....	१८
- माल मरतबे से बेनियाजी.....	२०
- माल छंङगी का मकसद नही.....	२१
- दौलत के बंटे जुदा की रडमत से दुर.....	२२
- उलाल उराम की तमीज.....	२२
- दुनिया की जल्लत और बुराई.....	२३
- दुनिया और आगिरत.....	२४
- आपने अमलसे गाइव ईन्सान.....	२६
- गइलत का ईलान.....	२७
- दौलत का इरेब.....	२८
- माल को सही षर्य करना.....	२८
- माल षर्य करने का आसान तरीका.....	२८
- रडमत और बरकत.....	३०
- बरकत का मतलब.....	३१
- बरकत की सुरते.....	३१
- बंटे का उक अदा कीजये.....	३२
- मालदारों का असर अवाम पर.....	३२
- जयदाद (जमीन) बेचना.....	३३
- उदीया तोडइा.....	३४
- हस्ते गैब.....	३६
- आजमाईश.....	३७
- अल्लाह का डर.....	३८
- जन्नत से मेडइम.....	४१
- आग का टुकडा.....	४१
- कर्ज की मुसीबत.....	४३
- तुम गरीब नही दौलत मंङ लो.....	४४
- रोजगारके लीये बैइन का सइर करना.....	४५
- रोजी मीवने का यकीन.....	४६
- पट्रोल की दौलत.....	४७
- हर थीज ईम्तिदान का परया डे.....	४७
- सुद की इडानी बिमारीयां.....	४८
- बंक का ईन्ड्रस्ट ली यकीनन सुद डे.....	५१
- सुदी रकम का ईस्तिमाल.....	५१

-: इहरिस्त :-

(2)	कनाअत.....	५२
	- कनाअत (संतोष) का मतलब.....	५२
	- अरखी छंढगी.....	५४
	- कनाअत और तरक़्की.....	५५
	- कनाअत उदक़नों का उल.....	५६
	- ज़ेडनी सुकुन.....	५८
	- उसना और रोना.....	५८
	- अस्बाब इफ़्तियार करना.....	५८
(3)	सइर.....	६०
	- सइर के आदाब.....	६१
	- छंढगी का सइर.....	६२
	- उवाइ ज़डाज़ की सवारी.....	६३
	- बडी मेडइमी.....	६४
	- नई बस्तीमें दाबिल होते वक़त.....	६५
(४)	सेहत और तंइरस्ती.....	६६
	- सेहत के बीये ज़इरी तदबीरें.....	६६
	- रंज और गम.....	६७
	- साहगी.....	६८
	- खाने का मजा.....	६८
	- भबूर और इक़तार.....	७०
	- ज़ेतुन और अंख़र.....	७०
	- उराम गिजा.....	७१
	- अप्लाक़ पर असर.....	७२
(५)	मौत.....	७४
	- मौत का मतलब.....	७४
	- अकीद-अे-आभिरत.....	७४
	- मौत की याद.....	७४
	- मौत नसीहत के बीये काड़ी है.....	७५
	- नइसानी ख़वाडीशातसे आभिरत का नुक़शान.....	७७
	- मौत अेक गिरइतारी है.....	७८
	- मौत का सबक.....	८०
	- अख़ब अंजाम.....	८२
	- ये बदन ग़लसउ ज़येगा.....	८२
	- वो भुशनसीब ख़न्का बदन मेडकुज़ रहेगा.....	८३

—: हेहरिस्त :-

- भौत से गइलत.....	८४
- भौत का सइर.....	८५
- भौत के वकत.....	८७
- भौत का भंजर.....	८७
- सकरात के आलममें क्या करे ?.....	८८
- भौत के बाह क्या खोता है ?.....	८९
- भौत के बाह मुहें की भासियत.....	८२
- आना और ज्ञाना.....	८३
- आशानक भौत.....	८३
- भौत के सामने क्रीसीकी नलीं खलती.....	८४
- भौत का हँस्वा अटल है.....	८५
- भौत की तैयारी करना.....	८५
- भौत की तमन्ना.....	८६
- अपनी किकर करें.....	८७
- क्या आप भौत के वीथे तैयार है ?.....	८७
- बुस्ने भात्मा अज्म होलत.....	८७
- बुस्ने भात्मा नसीब खोना.....	८८
- बुस्ने भात्मा के वीथे नव नुस्बे.....	८८
- बुस्ने भात्मा और गुनाखों का कइकरल.....	१०२
- भौत में कइ.....	१०३
- भौत सिईं खालत बहलने का नाम है.....	१०४
- दइन करने के बाह इल अपना वकत कहां गुजरती है.....	१०५
- आलमे भरअभ.....	१०५
- हो अलम खिदायते.....	१०८
- मैथ्यत पर रोना यिल्लाना.....	११०
- तअजीयत.....	१११
- अंजम की ખबर ખुदा खी को है.....	११२
- जन्नतुल मअला.....	११३
- बुजुर (स.अ.व.) की वक़ात का खोटेसा.....	११४
- उजरत अबु बक (र.दी.) की वक़ात.....	११६
- उजरत उमर (र.दी.) की वक़ात के वकत दानिशमंदी.....	११७
- उजरत उस्मानगनी (र.दी.) की मजलुमाना सख़ाहत.....	११८
- उजरतअली (र.दी.) की शख़ाहत.....	१२०
- उजरत उसन (र.दी.) की वक़ात.....	१२०
- उजरत बुसैन (र.दी.) की हर्दनाक शख़ाहत.....	१२१

—: इहरिस्त :-

- उजरत ईमाम अबु हनीफ़ (र.अ.) की वफ़ात.....	१२२
- उजरत ईमाम मालिक (र.अ.) की वफ़ात.....	१२२
- उजरत ईमाम शाफ़ई (र.अ.) की वफ़ात का डाल.....	१२३
- उजरत ईमाम अहमद हनीन उम्बल (र.अ.) की वफ़ात.....	१२३
(८) क्यामत.....	१२४
- क्यामत का दीन.....	१२४
- क्यामत अयानक आयेगी.....	१२५
- आज का दौर और क्यामत की उर अवामतें.....	१२६
- औरत और तिजरत.....	१२८
- धेर से ज़ावी लोगो की लीड.....	१२८
- क्यामत की नफ़सा नफ़सी.....	१२८
- फ़तरों का ज़माना.....	१३०
- बयाव क़ैसे हो ?.....	१३०
(९) ज़न्नत.....	१३२
- ज़न्नत की तिजरत के वीये अल्वाह तआवा की दअवत..	१३२
- ज़न्नत की तरफ़ दौड.....	१३२
- हुजुर (स.अ.व.) का हुनियामे ज़न्नत और ज़उन्नम का मुशाखीदा..	१३३
- ज़न्नत की उम्मीद रभनेवावा.....	१३४
- दो बडी चीज़ोंको न लुलो.....	१३५
- सबसे पहले ज़न्नतमें जाने वाले.....	१३५
- ज़न्नतकी नेअमते.....	१३५
- ज़न्नत के वीये तैयारी.....	१३६
- ज़न्नत के आभाव.....	१३८
- ज़ंजुरोंमें बांधकर ज़न्नतमें दाख़िल कीये ज़येंगे.....	१३८
- ईमान का बहवा.....	१३८
- अख़्डी तरह वुजु करने वावा.....	१४०
- सालीस हदीस की ख़िफ़ाजत का ईमान.....	१४०
- औरत के यार कामों का ईनाम.....	१४०
- योथा क़दमा बजारमें पढने का सवाब.....	१४१
- मरख़द की सफ़ाई.....	१४१
- भजुर और रोटी के टुकडे का सफ़का.....	१४१
- ज़न्नत का मुफ़्तसर नज़रउ.....	१४१
- ज़न्नत की फ़ुंजीयां.....	१४२
- ज़न्नती तीस सालकी उम्रके होंगे.....	१४३
- शीहर की आशिक और मनपसंद मेहबुबाअे.....	१४३

:- इहरिस्त :-

- नवभास्ता नवजवान औरते.....	१४४
- दुरों की चमक हमक.....	१४४
- दुर की भुशु.....	१४५
- दुनिया की औरते दुरोंसे अक़ल होगी.....	१४५
- जन्नतमें अल्लाह का दीदार.....	१४७
- दीदार के वक़्त जन्नत की सभ नेअमतें खुल जायेंगे.....	१४८
- अल्लाह से मोलूबत.....	१४८
- अल्लाह तआला कुआन सनायेंगे.....	१४८
- जन्नत के दरवाजों के नाम.....	१४८
- दर आमल का ओक दरवाजा.....	१४८
- आकों दरवाजों का फुल जना.....	१५०
- जन्नत और दौलत का मुताबला.....	१५०
(८) जहन्नम.....	१५०
- कुआनमज्जहमें जहन्नमका भयान.....	१५०
- उहीस शरीकमें जहन्नमीयोंकी सजाओका भयान.....	१५१
(९) मेहदीते ईशाद.....	१५३
- शार्जिद का भत.....	१५३
- छुटकारे के लीये ओक उहीस.....	१५४
- शेभ अ. कादीर जल्लानी (र. अ.) का ईशाद.....	१५४
- दीलकी आंभ.....	१५५
- ईश्रत.....	१५५
- शाहवलीयुल्लाह (र. अ.) के ईशादत.....	१५६
- दुन्नर और तिज्जत करनेवालों को भिताब.....	१५६
- मशाईफ की औलाद से भिताब.....	१५७
- तालीबे ईल्मों से भिताब.....	१५८
- वाईजों और आबिदों से भिताब.....	१५८
- आम मुसलमानोंसे भिताब.....	१६०
- अय आदमके बरख्यो.....	१६१
- उजरत मौलाना ईल्य़ास (र. अ.) के ईशादत.....	१६२
- उजरत मौलाना हुसैन अलमद मदनी (र. अ.) के ईशादत.....	१६७
- सादतकी जम्मेदारी.....	१६७
- अपनी तारीक़ सुनकर.....	१६८
- उजरत थानवी (र. अ.) के ईशादत.....	१७०
- भराब हिमाग.....	१७१

-: इहरिस्त :-

-	उजरत मौलाना महंमद अहमद प्रतापगढी (र.अ.) के ईशादात.	१७१
-	उजरत मौलाना अब्दुलगनी कुवपुरी (र.अ.) के ईशादात ...	१७१
-	उजरत मौलाना अब्दाइलउक साडेब (दा.अ.) के ईशादात ...	१७३
(१०)	अल्लाह वालों की जुंढगी.....	१७६
-	ईमाम अबु युसुफ़ (र.अ.) की तालीबे ईल्मी.....	१७६
-	नाफ़रमानी से डरना.....	१७७
-	ईमाम शाइफ़ (र.अ.) की नज्जत.....	१७७
-	भुर्जुगी का सबब.....	१७८
-	अमलकी ईस्तिफ़ामत.....	१७८
-	ईमान व यकीन की मजबुती.....	१७८
-	भालीक की कुदरत पर डसना.....	१७८
-	जहरेर का असर न डोना.....	१८०
-	जैरियत पुछोतो नजरत भी पुरी करो.....	१८०
-	जिंकसे गइवत मोत डे.....	१८०
-	मिसाली सबर और माझी.....	१८१
-	तकवा की रोशन मिसाल.....	१८१
-	शरारत.....	१८२
-	गवत डेस्वा डेने से ईन्कार.....	१८२
-	अल्लाह तआला बंदो को आजमाते डे.....	१८३
-	डाख़र नवाब.....	१८३
(११)	ना इरमानों की दास्तान.....	१८५
-	ईबने सबा का क़िल्ना.....	१८५
-	गाइल्लों का क़िरदार.....	१८६
-	गुस्ताफी का ईब्रतनाक अंजाम.....	१८७
-	गुस्ले ननाबत न करने की सजा.....	१८८
-	नमाज छोडने और नसुसी की सजा.....	१८८
-	अबु नख़ेल को अजाबे क़ध्र.....	१८८
(१२)	हिकमत की जातें.....	१९०
-	क़िल्ने करीब क़िल्ने डूर.....	१९०
-	मेडरूम नख़ी डोता.....	१९०
-	नमाज की पाबंदी.....	१९१
-	मस्जिद का सबब.....	१९१
-	आसान शरीअत.....	१९१
-	मुनाफ़िक.....	१९१

-: इहेरिस्त :-

- नंग की आग बुझाओ.....	१८१
- मायूसी से बचो.....	१८२
- बिमारीयों का मज्बुआ.....	१८२
- बात करने का ढंग.....	१८२
- तकदीर.....	१८३
- राज में रफना.....	१८३
- तुकान का फतरा.....	१८३
- भुदा से डरनावाला.....	१८३
- तकब्बुर की अलामत.....	१८४
- ईज्जत वासिल करने की शर्त.....	१८४
- अट्वाह तआवा के ओहसान.....	१८४
- थार थीजें सप्त आमाव मेंसे है.....	१८५
- मोमिन की शान.....	१८५
- ईमाम शाकई (र.अ.) का डकीमाना कौव.....	१८५
- नीह बडी अख्ब यीऊ है.....	१८५
- अंबिया (अ.व.) की नीह.....	१८६
- जरा सौयो तो कौन बेकार है ?.....	१८६
- अक हील.....	१८६
- ईस्वाह में नरमी का बरताव.....	१८७
- ऊटके सेडना.....	१८७
- गुस्सा न करो.....	१८७
- शराब के बारेमें ज़ाहीव का डकीमाना कौव.....	१८७
- तकवा बडा अमल है.....	१८८
- राज की बात.....	१८८
- गइलत का नतीजा.....	१८८
- बुराई का डेवना.....	१८८
- ताकतवर.....	१८८
- हील का सप्त डोना.....	१८८
- सरमाया की जरूरत नहीं.....	१८८
- आभिरत का यकीन.....	१८८
- अकलमंही.....	२००
- ईज्वास.....	२००
- खिसाबे मेहशर.....	२००
- कौव और अमल का रेकार्ड.....	२०१

—: इहेरिस्त :-

- जालील की अस्वते.....	२०१
- अकल और तबुरबा.....	२०१
- बडा बेवकुइ.....	२०१
- आदमी की पर्येयान का जरीया.....	२०२
- सबसे जयादा छक कीसका.....	२०२
- तिवावत का मस्तुन तरीका.....	२०२
- सुदी कर्ज से परछेज कीछये.....	२०३
- पेरवी करना जरूरी छे.....	२०३
- सझाई पेश करना.....	२०३
- गुनाहों का कइकरा.....	२०३
- छंइगी की छकीकत.....	२०३
- उस्ताद का मरतबा.....	२०३
- कमजोरों की वजह से रोजी.....	२०४
- अल्वाड की दैन.....	२०४
- थोडे में भरकत.....	२०४
- काम्याब ईवाज.....	२०४
- गुहीद बातें	२०५
(१३) शेअर.....	२०८
- नइस की वजहत.....	२०८
- तौछका.....	२०८
- गम छंमेशा नही रेखता.....	२०८
- ईअत.....	२०८
- सुबखान तेरी कुदरत.....	२०८
- अय बुढापा पुश आमदीद.....	२१०
- वअज और ईअत.....	२१०
(१४) दीनी किताबें.....	२११
- किताबों तक पहुंचना.....	२११
- किताबों का जभीरा और ईशाअत.....	२१२

-: ઇશદિ ગિરામી :-

-: ઈશદે ગિરામી :-

-: डाबिते तिहाज :-

कीस कदर अकसोसनाक भात
 हैके जुंदगीके सभक हमें उस वक्त
 भीलते है जब वो हमारे लीये
 भेकार हो जाती है. सख्याई की
 रोशनी जहां ली दीभाई है उसकी
 रोशनी से क्षयदा उठाओ. ये न
 देओ के रोशनी दीभाने वाला कौन
 है. ? थालाक, जलीम अमतक
 जैसी भेडीयां धज्ज नही कर सके
 जे ध-सानी दिमाग को जकड दे.

-: सदा-जे- हक :-

एक और सदाकत की
 आवाज को कोई ताकत रोक नहीं
 सकती अगरये शयतानके भडे भडे
 दावपेय जमा हो जाये. और
 सय हंमेशां से अेक जहीर होने
 वाला और उंया होने वाला
 जौहर है. अगरये जुठ की
 भडीभडी यद्दानों से दबा दीया
 जाये.

(किश्कुले हसन - ३८)

किताब को कैसे पढ़ें ?

याद रखीये ! मुसलमान की निर्यत बलोट छी जयादा अलमीयत रभती है. विलाज्ज पढने से पहले ये निर्यत करवें के ईस किताब को ईस वीये पढ रहा हुं के अल्लाह तआला मुंजसे राजी हो जये और ईन्शाअल्लाह उस पर अमल करने की पुरी कोशीश करूंगा ईस निर्यत से आप पढ़ेंगे तो अल्लाह तआला अमल की तौकीफ जरूर अता करमावेंगे. जस बात पर अमल करना मुश्कील होगा. आपकी नेक निर्यत और तलब की बरकत से उस पर अमल करना आसान इरमावेंगे. और जल्ना वक्त पढने में भर्य होगा ईबादत में शुमार होगा. बुजुर्गाने दीन ने कुछ नसीहतें वीजी है. जे यहां वीजी जती है.

१. किताब पढनेसे पहले ये हुआ जरूर करवें के या अल्लाह ईस किताब को मेरी हिदायत का जरिया बना लें.
२. अपने हिल ह्मिाग और आंभों के परहों को भोल वीजये.
३. किताब पढने के वीये जैसा वक्त नीकावा जये जे उल्जनों या परेशानीयों से घीरा हुवा न हो. कभी जैसा होता है के उल्जन सवारथी कीसी और वजल से, और चुंभन महेसुस होती है किताब के मज्मून से.
४. पहले तौबा, ईस्तीगफार जरूर करवें ता के दीव पर जे गुनाहों का गुबार छाया हुवा है वो दूर हो जये.
५. किताब के मुताबे के वक्त अक कलम साथ रभें और जिन बातों में भुद को कोताही करनेवाला महेसुस करें उस पर निशान लगा दें और उसको बारबार पढ़ें. और उसकी ईस्लाह के वीये भुब हुआओं मांगे और अमल करने की कोशीष भी करें.
६. किताब पढने की दअवत दुसरों को भी दे. और किताब में जे ईमानी तरककी, अफ्लाक की बलेतरी और सिफाते अवलीया (रह.) से जोई बात मीले तो ईन भुबीयों और सिफात की तरफ दुसरे लाईयों को और अपने घर वालों को तवज्जुह दीवार्ये.

जिन बुजुर्गों की किताबों की मददसे फायदा उठाकर ये मज्मून तैयार कीये है उनके लक में और ईस किताब को तैयार करने में भी कीसी तरल शरीक होने वाले मददगारों के वीये भुसुसी तौर पर हुआओं का अहतिमाम करना.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ. وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ.

अपनी जात :-

मुसलमान वो कौम है जिसकी ज़ंदागी परलेजगारी, पुशदावी, काम्याबी और धज्जत आबड़ सिई और सिई लुजुर नबीये करीम (स.अ.व.) के लाये लुवे दीन में है. जब तक ये दीन कामिल तौर पर धस उम्मत में जाकी रखा ये कौम धज्जत आबड़ से जींदा रली, हाकीम रली. और उसकी शानों शौकत दुनियाबरमें डैवी लुध थी. इस दीन से उसने अपने प्यारे नबी (स.अ.व.) की तावीमात को लडका समजा और उससे मुंल डीराया उसी दीन से उसका ज्वाल शुड़ हो गया. अब दोबारा उस डावतको वापस लाने के लीये सिवाय धस्के कोध यारा नही के धस पर मलेनत हो. के ये उम्मत अपने प्यारे नबी (स.अ.व.)की तावीमात को डर मामलेमें आगे रभकर यलें.

डर कौम की तरककी के कुछ अस्बाब लोते है. उनमें ये ली है के वो अपने बडों को या जन्के डार्थों में ये पलती है या परवरीश पाती है उनकी ज़ंदागीयों में वो पाकीजा पुबीयां देपती है. जन्से उनकी तरककी लुध. तो कौम ली ज़रर उनकी पुबीयों के असर को कबुल करती है और ये पुबीयां उनके लीये धस्वाडकी तामीर में पलेवी धंट का काम देती है. और ये पुबीयों लरा धस्वाडी माडौल का पलेला सबक धरके महरसे में पढाया जाता है और येही वो महरसा है जिसकी पलेवी तरबीयतका सलेरा मा-के सरपर आता है.

लिडाजा ये महरसा (मा-की गोद) अगर धमानकी ललेरों से आबाद हो अप्लाक और कीरदार का ड़लदार दरपत हो और अपने प्यारे नबी (स.अ.व.) की सुन्नतों से आरास्ता हो तो डीर क्या मुशकील है के उसकी गोद में पलने वाला ड़रजंद दीन व धमान का पाबंद और अप्लाक से आरास्ता न बने.

अलकर के दील में अक अरसे से ये धरादा हो रखा था के कोध ऐसी किताब जिसमें उम्मत की काम्याबी और धज्जत आबड़ ड़ासिल

करने का काम्याब नुस्खा तइसीव से लीजा गया हो. लिडाऊ अल्वाड के बरोसे पर किताबों के मुतावा के जरीये धल्मी मजमीन अछुभोगरीब नुकते जमा करना शुर् कीये. जे अेक किताब की शकल में तैयार हो गया और मोमिन का किमती सरमाया छिस्सा-१, २, ३ के नाम से आपकी फिदमत में पेश कीया ज रहा है.

इकीकत में अंदे की हैसियत धंस किताब की तावीइ में तरजुमान की है. अंदाने अपनी तरइसे कुछ नहीं लीजा और न धंस काबिल है अवबत्ता सिई वोही बातें लीजी है जइस्की सनद कुर्आनमज्जद, इदीसे पाक, और तसव्वुइ की मुस्तनद किताबों या मशाईभे किराम के अकवाल से हो.

धंस्के बावजूद कोई बात या कोई जुम्ला अहेवे धल्म या अहेवे कलम पर गीरां गुजरे और उस्की तावीव भी न हो सकती हो तो बराहे करम धत्तिलाअ इरमा हें. अंदा अहेसानमंद होगी.

अल्वाड तआवा से उम्मीद है ये किताब डर तबके के मुसलमानों और भास करके दीन के आशिक मिज्जल दोस्तों के लीये मुईद होगी. जून उजरात को धंस किताब से नइा हो वो अडकर के लीये और उस्के वालेंदेन और उस्के उस्ताजों और जुजुर्गों को अपनी दुआओ में जर याद इरमावे. वरसलाम.

अडकर: शम्सुलइक हाशीम.

यांगा-ज.आगुंद-गुजरात

१, मोडरम-१४२४ डीजरी.

(१) माल दौलत

दौलत की हकीकत :-

मौजूदा दुनिया में हर आदमी दौलत चाहता है. ताके वो अपनी मरज्जके मुताबिक अपने वीये अेक काम्याब खंडगी तामीर करे. कोई ईन्सान याहे कीन्नाही जयादा दौलत अपने वीये लासिल करवे मगर वो मेहुदुद (वीमीटेड) होगी. ईस वीये कोई शम्स ईस दुनियामें अपनी दौलपसंद खंडगी नही बना सकता.

दौलतकी कोईभी मिकदार आदमीको उससे नही बचा सकती के वो बिमार न हो. उसको डाहेंसा पेश न आये. अेक मुफ्तसर मुदत के बाद वो मर न जये और जब बिमारी और डाहेंसा और मौत पर ईन्सानको कुदरत नही तो अपने वीये पसंदीदा खंडगी बनाने पर वो कैसे कुदरत रभ सकता है ?

दौलत खंडगी नही. दौलत खंडगीका अेक वसीवा है. वसीवाकी हेंसियत हंमेशा दूसरे हर्ने की होती है. खंडगी है तो वसीवेकी भी अहमियत है और अगर खंडगी नही तो वसीवेकी कोई अहमियत नही. मगर अक्सर ईन्सान उसको भुल जते है. वो दुनिया की दौलत लासिल करनेमें ईन्ना मरगुल होते है जैसेके दुनिया की दौलत ही मकसुद हो. और दुनियाकी दौलत ही का दूसरा नाम खंडगी हो.

ईन्सान के वीये काम्याब खंडगीका कोई नकशा आबिरतको शामिल कीये बगैर नही बन सकता. ईन्सानको हो में से कीसी अेक को पसंद करना है. यानी मौजूदा दुनियाको सबकुछ समजकर नाकामी की मौत मरना. या मौजूदा खंडगीको आबिरत में काम आनेवावे आमाव से जेडकर अपने वीये काम्याब खंडगीका राज मालुम करना.

भोमिन की दौलत :-

दौलत वो है जे खंडगी के मसाईल में काम आये. भोमिन के वीये सबसे बडा मरअला आबिरत का मरअला होता है. ईसवीये वो ईसी चीजको दौलत समजता है जे आबिरत में काम आने वाली हो. आबिरत में जे चीज काम आने वाली है वो ये है के वो हर हालमें अल्लाहका शुक्र अदा करनेवाला हो उसका दौल अल्लाहकी याहमें अटका

हुवा हो. जे शप्स आभिरत वाली छुंङगी पसंद करे वो अपनी छुंङगी में दीनदार साथी को दोस्त बनायेगा. जैसे आदमी के लीये ऐसी बीवी बहोत बड़ी दौलत है जे दुनियाके बजये आभिरतको यादती हो और आभिरतकी तरफ़ खलनेमें मदद करे. लोग सोना चांदी को दौलत समजते है. मगर मोमीनकी दौलत जुदा है. वो ईन चीजों को सबसे जयादा अहमियत देता है. जे उसको जुदा से करीब करनेवाली हो और आभिरतमें उसको जुदाकी रहमतोंका मुस्तहक बनाये.

(अल रिस्ाला - ७/१८८१/४३)

माल-मरतबे से बे नियाजी :-

असल बे नियाज (बेपरवा) तो अल्लाहकी जत है.

فَلَا لِلَّهِ غِنَىٰ عَنِ الْعَالَمِينَ (प ६७)

“बेशक अल्लाहउतआला सारे जलानोंसे बेनियाज है.”

(पारा-४, ३-१)

ईन्सानकी बे नियाजी ये है के वो ईस गनी जत (अल्लाह) के सिवा पुरी दुनिया से बे नियाज हो जये और ये समजले के जे कुछ भीलेगा उसीसे भीलेगा. गैर के आगे हाथ डैलाना बेकार है. जुदाकी कारसाजी (काम बनाने) का यकीन दीलोंको ईम्तिनान और कनाअत की दौलतसे मालामाल कर देता है. कनाअत (संतोष) करनेवाला शप्स कीसीके माल-दौलत पर गलत निगाह भी नही डालता. बल्के लंमेशां परवर दिगारे आलमकी शाने रबुबीयत पर नजर रખता है. माल-दौलत से बालयका भात्मा नही होता. बल्के कनाअत की वजहसे सुकुन ईम्तिनान नसीब होता है. हुजुर (स.अ.व.) का ईशदि है.

“तवंगरी माल-अस्बाब की कसरत का नाम नही है. बल्के असल तवंगरी तो दीवकी तवंगरी है”

शेख सअदी (र.अ.) ने “तवंगरी ब दीव अस्त न बमाल” केडकर लहीसे नबवी (स.अ.व.) के मक़लुम को पेश किया है.

उजरत सुहैल बीन सअद (रही.) इरमाते है के उजरत जिब्रईल (अल.) ने रसुले अकरम (स.अ.व.) को बताया के मोमिन की शराफ़त रात की नमाज में और मोमिन की ईज्जत ईन्सानोंसे बे नियाज हो जना है.

ईस्लामी तारीखमें जुदाके सिवा तमाम दुनियासे बे नियाजीके किस्से कसरतसे मीलते हैं। सेंकडों उल्माअे लक है ज्खुने गेर मामुली ईल्म और बुजुर्गी और अपने मकबुल असरके बाबुलुद सारी ज्दुगी तंगीमें गुजरदी और कबी सोना चांदी और मोतीयोकी (माल-अस्बाब) की तरफ नजर नही डाली.

काजी लइस बीन गयास (र.अ.) बगदाद और कुइके चीक नरटीस थे. दुनियाकी हर तरलकी राहत और अेश की चीजे उन्के कदमों में थी. लेकिन उस्के बाबुलुद उन्की बेपरवाईका ये आलम था के सरकारी अजानेसे उन्को तीनसो (३००) दीरलम माडाना अपनी अिदमतके मीलते थे लेकिन उस्मेसे अपने तमाम अर्य के वीये सिई सो (१००) दीरलम रअकर बाकी रकम मुस्तलीक लोगों में तकसीम करमा देते थे.

(अलकुस्कान - ११/१८८८/३५)

माल ज्दुगी का मकसद नही :-

माल ज्दुगी की जरूरत है. माल ज्दुगी का मकसद नही. माल को अगर ईसवीये डालिब किया जये के उससे ज्दुगी की जरूरी डालते पुरी हो तो माल ईन्सान के वीये बेहतरीन मददगार है. लेकिन अगर मालको ज्दुगी का मकसद बना वीया जये और जयादा से जयादा माल कमाने ही को आदमी अपना सबसे बडा काम समजवे तो ऐसा माल अक मुसीबत है. वो आदमीको दुनियामें भी तबाह करेगा और आभिरतमें भी.

ईन्सान को दुनियामें अक मुदत तक ज्ना है. ईसवीये उस्को दुन्यवी चीजोंकी जरूरत है जे उस्के वीये ज्नेका सडारा बन सके. ये सामान मालके जरीये डालिब होता है. ईस वीये डवाल कमाई करके माल डालिब करना हर आदमीके वीये जरूरी है. ईस अेअतिबारसे माल हर ईन्सान के वीये किंमती मददगार की हैसियत रअता है.

मगर ईन्सानी ज्दुगी का दुसरा पलेलुं ये हैके उस्को ईल्म डालिब करना है. उस्को इखानी तरक्की के वीये कोशीष करना है और दीनकी दअवत के जरीये उस्को ईन्सानीयत की तामीर और तरक्की में अपनी जम्मेदारी अदा करना है. ताके अपनेको समाजका मुकईद आदमी बना सके.

यही वो चीज है ज्स्को मकसदे ज्दुगी कडा जाता है. ईस

मक्सदको लासिल करना उस वक्त मुम्कीन है जबके आदमी अपनी ताकतका एक हिस्सा उसमें लगाये. माव कमानेकी मशगुलीयोंको एक हदमें रफ़्तक़र वो धन कामों के लीये अपने वक्तको इशरीफ़ करे.

माव धनसान की ख़स्मानी और खीजोंकी ख़ज़रतोंको पुरा करता है. मगर माव उसकी इ़डानी और दीनी ख़ज़रतोंको पुरा करनेके लीये काफ़ी नही. जे आदमी माव ही को अपनी ख़ंढगी का मक्सद बनावे उसका बदनतो मुसलसब गीज़ा पाता रहेगा. मगर उसकी इ़ड काका कर रही डोगी और उसका दीव व हिमाग़ अपनी असली ખोराक से मेहज़म डो कर ऐसा डो ज़येगा जैसे उसका कोई पुबुद ही न डो.

धसलीये मावको किन्ता कडा गया है. यानी वो धनसान के लीये आजमाईश है. मावका सही ખर्य करना धनसानको डर किसमकी तरक्कीयोंकी तरफ़ वे जाता है. और मावका ग़लत धस्तिमाव धनसानको तबाही के धडे में गीरा देता है.

दौलत के बंढे ખुदा की रहमत से डुर :-

डज़रत अबु डरैरड (रही.) से रिवायत है के रसुलुल्लाड (स.अ.व.) ने इशमाया:-

बंढ ओ दीनार ખुदाकी रहमतसे मेहज़म डो और बंढओ दीरडम ख़ुदाकी रहमत से डुर रहे. (तिमीज़ी)

जे लोग माव-दौलत और दीनार और दीरडमों के परस्तार है और उनडोनें दौलत ही को अपना मअबुद और मेहबुब और मतलुब बना लीया है. धस डहीसमें उनसे बेजारीका अलान और उनके डकमें बहडुआ है के वो ख़ुदाकी रहमतसे मेहज़म और डुर है.

माव-दौलतकी परशतीस और बंढगी ये है के उसकी याडत और तलबमें बंढा ऐसा गिरफ़्तार डो के अल्लाड के अडकाम और डलाव व डराम की डुडुडका भी पाबंढ न रहे. (मआरिफ़ुल डहीस - २/८४)

हलाव हराम की तमीज़ :-

डुज़ुर (स.अ.व.) ने येल्मी पेशीनगोई इशमाई है के आईन्हा एक ज़मान ऐसा भी आने वाला है, के लोग डलाव व डराम की तमीज़ नही करेगें और तमाम खीजों का धस्तिमाव शुरु कर देगें.

હુઝુર (સ.અ.વ.) ને ફરમાયા લોગોં પર એક ઝમાના એસા આયેગા કે આદમી ઊસ્કી બિલકુલ પરવા નહી કરેગા કે વો હલાલ ખા રહા હે. યા હરામ ખા રહા હે. (મિશકાત-૨૧)

હાલાં કે હલાલ વ હરામ જહીર હોગા. ઊલ્મા ઊસ્કી નિશાન દેહી કર ચુંકે હોગે. લેકીન કુછ લોગ ઊસ્કી પરવા નહી કરેંગે.

યે ખાત ઝેહન મેં રખ્ખી જાયે કે હર ગીઝા કી તાસીર હોતી હે. હરામ સે જો ગોશત ઓર ખુન તૈયાર હોતા હે. ઊસ્મે વો તમામ બુરાઈયાં પેદા હોતી હે જો ખાને વાલોં કો નેકી કે કામ પર આમાદા નહી હોને દેતી. ઓર એસે હી લોગ મુલ્ક વ મિલ્લત મેં ફિત્ના ફસાદ કો જન્મ દેતે હે. ઓર મુલ્ક કા અમન ઓર સુકુન ઓર ઈત્મિનાન બરબાદ કરતે હે. ઓર ઊન્કી હી વજહ સે કત્લ ઓર ખુનરેઝી, ચોરી, ડકેટી, આમ હોતી હે. ઓર મુલ્ક તબાહી ઓર બરબાદી કે કિનારે પહુંચ જાતા હે. ઓર પબ્લીક આરામ કી નિંદ નહી સો પાતી.

હુઝુર (સ.અ.વ.) ને ફરમાયા એસે લોગ જહન્નમ કે ઈંધન બનેગોં.

હુઝુર (સ.અ.વ.) ને ફરમાયા જીસ બદન કી પરવરીશ હરામ ગીઝાસે હુઈ હો વો જન્નત મેં દાખીલ નહી હોગા.

યે ખાત અપની જગા દુરૂસ્ત હે. કે તમામ કાઈનાત ઈન્સાનોં કે લીયે પૈદા હુઈ હે ઓર ઈન્સાનોં કી ઊસસે ફાયદા ઊઠાને કા પુરા હક હે. મગર ઊસ્કા મતલબ યે નહી હે કે હલાલ હરામ કી તમીઝ ઊઠાદી જાયે ઓર જઈઝ ના જઈઝ કી રાહ છોડ દી જાયે.

મૌજુદા દૌર માદી દૌર હે. રૂહાનિયત કરીબ ખત્મ કે હે. લોગોં મેં સહી અકાઈદ, મામલાત કી સફાઈ ઓર અખ્લાક ઓર આમાલ કી પાકીઝગી ખત્મ હોતી જ રહી હે. નફરત કરનેકા ફિત્ના પુરી બુલંદી પર હે. ઈસ લીયે જરૂરત હે કે દીની મસાઈલ કી ઈશાઅત પર તવજ્જુહ દી જાયે ઓર હરામ હલાલ કો બયાન ક્રિયા જાયે તાકે યે મસાઈલ મુસલમાનોં કી નિગાહોં સે ઓઝલ ન રહે.

દુનિયા કી જલ્લત ઓર બુરાઈ :

હુઝુર (સ.અ.વ.) ને દુનિયા કી બુરાઈ ઓર જલ્લત બયાન

इरमाते लुअे अतवाया हे के अल्लाहके नजदीक और आपिरतके मुकाबलेमें ये दुनिया कीस कदर डकीर और बे किंमत है.

हमारे ईस जमानेमें दुनियाके साथ लोगों का तअल्लुक और मशगुली हदसे ज़यादा बढ़ गया है. और दुन्यवी और मादी तरक्की के मस्अले को ईत्नी अहमियत दी गई है के ईससे पेहले कभी भी ईस्को ईत्नी अहमियत का मुकाम हासिल न हुआ होगा.

ईसवीये अब हालत ये हो गई है के दुनिया की ज़ल्लत और बुराई की बात बहोत से मुसलमानों के हीलों में आसानी से नही उतरती. बल्के नौबत यहां तक पहुंच गई है के बाऊ वो लोग भी जे मुसलमानों के रेहनुमा और मुस्लेह समझे जाते है और दीन के नाम से उन्का शुमार अवाम में नही बल्के अवास में होता है. दुनिया की बे सुभाती और इानी होने की नसीहतको बेतकल्लुफ़. "रहबानियत और गलत तसव्वुफ़ की तब्लीग" केले हते है और जब उन्के सामने ईस डकीकत की हदीसे अयान की जाये तो हदीस का ईन्कार करनेवालों की तरह ईन सही हदीसों के बारे में शक ज़हीर करने लगते है.

दुनिया और आपिरत :

ये दुनिया ज़स्में हम ज़ंद्गी गुजर रहे है और ज़स्को हम अपनी आंभो से द्हेभकर कानोंसे सुनकर मेहसुस करते है ज़स तरह ये अेक वाकेई डकीकत है. ईसी तरह आपिरतभी ज़स्की अल्लाहके सब पयगंबरोंने अबर दी है वो भी अेक यकीनी डकीकत है और अपनी ज़ंद्गीके ईस दौर में हमारा आपिरतको न द्हेभना बिलकुल अैसा ही है जैसा मा के पेटमें होनेके ज़मानेमें हम ईस दुनियाको नही द्हेभते थे. ईर ज़स तरह हमने दुनियामें आकर ईस दुनियाको द्हेभ लीया और ज़मीन और आस्मानकी वो डज़ारों लाभों चीज़ें हमारे मुशाहीदे (नज़रोंके सामने) में आगई ज़स्का हम मा के पेटमें ज़्यालभी नही कर सकते थे. ईसी तरह मरनेके बाद आलमे आपिरतमें पहुंचकर ज़न्नत दौज़अ को और उस आलमकी उन तमाम चीज़ोंको द्हेभ लेगें और पा लेगें, ज़न्की अबर अल्लाहके पयगंबरों और किताबोंने दी है.

मतलअ के हमारी ये दुनिया ज़स तरह अेक हकीकी आलम है ईसी तरह आपिरत भी मरनेके बाद सामने आ जानेवाला अेक हकीकी

और बिलकुल वाकेई आलम है. ईसपर हमारा ईमान है और नकल और अकलकी रेशनीमें हमको ईस्के आरेमें अलहम्दुलिल्लाह पुरा लरोसा और यकीन और ईत्मिनान है.

दुनियाके आरे में हमको यकीन है के दुनिया और उस्की हर चीज शानी है और आभिरतकी हर चीज गेरशानी और जवेदानी (हंमेशा रहेनेवाली) है. वहां पहुंचने के बाद ई-सान को भी गेरशानी बना दीया जयेगा. यानी उस्को कभी अत्म न होनेवाली हंमेशाकी ज़ुदगी अता इरमा दी जयेगी.

ईसी तरह वहां अल्लाहके नेक और भुशनसीप बंदोको जो नेअमतें अता होगी उस्का सिलसिला भी हंमेशा हंमेशा जारी रहेगा. कभी न टूटेगा - ईसीको कुर्आनमज्जदमें इरमाया गया है.

वो अताअे भुदावंदी ज़ुस्का सिलसिला कभी भी नहीं टूटेगा.

(۱۲۴ . ۲۷ ب) عَطَاءٌ غَيْرَ مَجْدُوْدٍ (पारा-२७-३-१२)

ईसी तरह भगावत और सरकशी और कुफ़ी तकप्पुस्की वजहसे अल्लाहअतालाका गजब उन पर होगा. उनकी तकलीफ़ों और अजाबोंका सिलसिला कभी अत्म नहीं होगा. जैसाके जहन्नमीयों के आरे में जगा जगा इरमाया गया है.

१ वो हंमेशा उसी जहन्नम में पड़े रहेंगे. -- (सुरअे तौबा-२२)

२ वो दोऊभी कभी जहन्नम से निकल न सकेंगे. (सुरअे अकरह-१६७)

३ और दोऊभीयों को मौत भी न आयेगी के मरकर ही अजाबसे छुट सके और उनके अजाब को कभी हल्का न किया जयेगा.

(सुरअे इतिर-३६)

ईसी तरह अल्लाह के पयगंबरों और अल्लाहकी किताबों की अतलाह छुई ईस हकीकत पर भी ईमान है के दुनियाकी नेअमतों और लज्जतों के मुकाबलेमें आभिरतकी लज्जतें और नेअमतें बेहद बुलंद है. अल्के असली नेअमतें और लज्जतें आभिरत ही की है. और दुनियाकी चीजोंको उनसे कोई निरूपत ही नहीं है.

ईसी तरह दुनियाकी सप्तसे सप्त तकलीफ़ और अडे से अडे दुःखको दोऊअके हल्के से हल्के दर्जे के अजाब से भी कोई निरूपत नहीं.

जहरीर है के ठन सभ प्नातों का तकाजा ये है के ठ-सान की किंकर और कोशीष अस आभिरत ही के लीये हो और दुनियासे उस्का तअल्लुक सिर्द्धि सप्त जइरतके मुताभिक हो.

ये भी प्यालमें रहे के कुर्मान और हदीस में जोस दुनियाकी पुराधं पयान की गध है. वो आभिरत के मुकापले वाली दुनिया है. ठसलीये दुनियाके कामोंकी मशगुली और दुनियासे नका उठाना अगर आभिरतकी किंकर के साथ हो और आभिरत के रास्ते से वो लटकता न हो तो वो पुरा और मना नहीं है. पलके वो तो जन्त तक पहुंचने की सीडी है.

अलपत्ता उस्में शक नहीं के दौलत के साथ तकवा यानी भुदासे उरना और किंकरे आभिरत और इत्तिप्याये शरीअत की तौकीक कम ही लोगों को भीलती है. वरना दौलत के नशे में अकसर लोग पलके जाते है.

(भआरिकुल हदीस - २/६०)

अपने अंजाम से गाहिल ठन्सान :

ठन्सान अशरकुल मज्लुकात है और ठन्सान को दुसरी मज्लुक पर इज्जिलत ठसलीये हासिल है के उस्मे मअरिक्ते ठलाही की सलाहीयत है. गोया यही भुदाकी मअरिक्ते उस्का जमाल और कमाल है और यही मअरिक्ते आभिरतमें उस्का जभीरा और सामान है.

लेकिन जोस ठन्सान को अल्लाह तआलाने ठस सलाहीयतसे नवाजा है उस्का हाल आज जनवरोसे पदतर है. जनवर भी अपने मालिक को पलेचानता है. और जोस काम के लीये उस्के मालिक ने उस्को पाला है. वो ठस कामको भुपीसे अंजाम देता है. अक कुत्ते को अगर उस्के मालिकने घरकी छिंकाजत और पेहरादारी के लीये पाल रभा है तो वो अपनी जोभेदारी निलाता है. बैल को अगर उस्के मालिकने जेती भाडी के कामके लीये पाला है तो ठस कामको परापर अंजाम देता है और हद तो ये है के उस्का मालिक उसे जप और जोस वक्त काम पर लगा दे वो अपने काममें लग जाता है. मगर वो अशरकुल मज्लुकात ठन्सान जोसे उस्के मालिकने अपनी ठप्रादत के लीये पैदा कीया है वो ठप्रादत से गाहिल ही नहीं. पलके अपने मालिक को भी भुल भेका है.

आप शामके वक्त कीसी यौराहे पर भडे होजाये. गाडीयों की

आमदो रक्त. धन-सानों की चहेल पहेल. दुकानोंकी आराधन और जेपाधन. इलक पोस धनारतें, पीजलीके कुमकुमे, ये सब चीजें देअकर आप प्याल करेगें जैसे तमाम धन-सानोंका असली मकसद यहीं चीजें है. यानी दुनियाके साथ लोगोंका तअल्लुक हदसे जयादा बढ गया है. और पालीस-दुन्यवी और भादी तरक्की को तमाम धन-सानोंने अपनी छुंढगीका अहम मकसद बना लीया है.

और जोस शाप्सको दुनियाकी जरासी दौलत भील गध वो दौलतके नशेमें जैसा चुर नजर आता है जैसे उससे बढकर कोठ नही. ढालाके जोस दौलत पर वो धतरा रहा है उसकी हकीकत उसके मालिक के नजदीक मरछरके पर के बराबर ही नही.

गहलत का धलाज :

धमान के बाद धनसान को काम्याब करने के लीये चुंके सबसे बडा दबल अल्लाहका षौक और किकरे आभिरत का है. धसलीये लुजुर (स.अ.व.) ने अपनी उम्मत में धन दो चीजों के पैदा करनेकी पास कोशीष इरमाध. सुनाये आपने कबी षौक और किकर के इजाधल बयान इरमाये और कबी अल्लाहतआवा के डेहर और जलालको और आभिरतकी सप्त सजाओं को याद दीलाया ताके दीलोंमें अल्लाहका षौक और किकरे आभिरत पैदा हो.

लेकीन दुनिया हर वक्त नजरों के सामने है और आभिरत आंभोंसे ओजल है. धसलीये अकसर दुनिया ही की किकर और तलब गालिब रेहती है. ये धनसानकी बडी कमजोरी है. उनका ढाल धस मामले में बिलकुल उन छोटे बर्यों जैसा है जिनको बयपनमें अपने भेल, पिलोनोंसे दीलयरुपी होती है और आगे आनेवाली मुस्तकबील की छुंढगीको पुश गवार बनाने के लीये तावीमी और तरबियती मामला उनके लीये सब चीजोंसे जयादा नापसंद बल्के सप्त होता है. इन बर्योंके मा-बाप समज बुजाकर उनको अच्छे कामोंकी तरकरगबत दीलाते रहेते है जन्मे लगकर वो अेक काम्याब धनसान बन सकते है. और अपनी कौमके लीये मुहीद होते है. अपनी छुंढगी संवारने के साथ दुसरों को भी नक्षा पलुंयाते है.

अल्लाह तआलाने अपने पयगंबरों और उन पर नाजीब होनेवाली किताबों के जरिये हमेशा ईन्सानोंको ईस गवती और कमजोरीसे बचनेका इन्तिजाम किया. मगर ईन्सानोंसे ईस बारेमें हमेशा बख्यो वाली गवती होती रही.

ईन्सानोंको याहीये के वो इहसे जयादा दुनिया से दीव न लगाये और उनको अपना असली मकसद न बनाये बल्के आभिरतको अपनी असली मंजीब और हमेशाका वतन यकीन करते हुआ वहां की काम्याबी हासिल करने की किकर करे. और अपनी दुन्यवी किकरों पर आभिरतकी किक को गालिब रभे. ईन्शाअल्लाह आभिरत की नेअमतों से नवाजा जायेगा और हमेशाकी यैन और सुकुन नसीब होगा.

दौलत का इरेज :

दुनिया में आदमी के पास दौलत हो तो उसका हर काम पुरा होजाता है. ईसलीये आदमी समजता है के दौलत सबकुछ है. दौलत मीब जाये तो आदमी समजता है के उसने सबकुछ पा लीया. हावांके सबकुछ पाना ये है के आदमी आभिरत में जुदाकी रलमतोंको पावे.

मौतसे पहलेकी खंङगी में आदमी उन मसाईल से दौ-यार है. ईन्से बिलकुल मुफ्तलीक वो मसाईल होगें जन्से आदमी मौतके बाद की खंङगीमें दौ-यार (मुफ्तवा)होगा आज दौलत की अलमियत है. उस वक्त ईमान और नेक अमल की अलमियत होगी. आज यीजें बाजार से हासिल होती है. उस वक्त तमाम यीजें जुदाकी रलमतके भजाने से मीवेगी. उस वक्त जुदा ये ईस्वा करेगा के आदमीको क्या मीवे और क्या न मीवे. (अलरिसाला - १२/१८८४/१२)

माल को सही जर्ज करना :

इजरत अली (रही.) इरमाते है के : अल्लाह तआला जइकी माल है. उसको याहीये के वो ईस माल से अच्छी मेजबानी करे. रिशते जेडे, डैदी और गिरकतार लोगोंको छुडाये. मुसाकिरों, मिस्कीनो, इकीरों और मुजहिदोंकी मदद करे. और अयानक पेश आने वाली जरूरतों के लीये कुछ रभवे. ईन नेक प्रस्वतोंकी वजहसे दुनियाकी ईजजत और आभिरतका शई (बुजुर्गी) हासिल होगी.

जल्दबाजी से बचो. क्युं के वो शरमींदगी की जड है. जल्दबाज आदमी जनने से पहले बोलता है और समजनेसे पहले जवाब देता है. सोचनेसे पहले धरदा करता है. अंदाजेसे पहले काट देता है. तजुरबा करनेसे पहले तारीक करता है. पसंद करनेसे पहले बुराई बयान करता है. जस्मे ये भस्वर्ते हो वो शरमींदा होकर पछताता है. और वो सलामती से दूर रेडता है.

दुस्ने अप्लाक ये हें के आदमी नरम तबीयत हो. येदरा भीवा डुवा हो. पाकीजा भातथीत हो. जैसे शप्सकी मोडुब्बत लोगोके दीवोंमें बाकी रहेती है. उसकी दोस्ती पक्की होती है.

जब धन्सान के अप्लाक अरछे हो तो उसके दोस्त जयादा हो जते है और दुश्मन कम हो जते है. गजबनाक दीव उसके वीये नरम हो जते है. उसके मुश्कील काम आसान हो जते है.

और उसके अप्लाक बुरे हो उसकी रोजी तंग हो जती है. लोग उससे मुसीबत में पड जते है और भुद भी परेशानी और मुसीबतमें गिरफ्तार रहेता है.

जे शप्स मज्जुक के वीये अपना पेडलुं नरम रहे. साथीकी भात बरदाश्त करे. मुआशरे को पाकीजा बनाये. भातथीत अरछी करे. तो मज्जुक उसकी तरफ जुंजुं जती है और उसकी रोजी कुशादा हो जती है. उसका नइस आराम पाता है. लोग उससे सलामत रहेते है. वो मतलुब थीज को पा लेता है.

जब कौम के अप्लाक में कुशादगी न हो तो बडा शहरे भी लोगो पर तंग हो जता है. (मजाहिरे उलुम - ८/२०००/२७)

माल जर्ज करने का आसान तरीका :

अल्लाह की राहमें जर्ज करनेकी आदत डालने के वीये अक आसान तरीका नजरसे गुजरा जे डजरत मौलाना मुक्ती मुहंमद शही साहब (२.अ.) का मामुल था.

आपका मामुल था के जकात अदा करने के अलावा आपके पास जे रकम आती तो उसका अक भास लिस्सा जैर के कामों में जर्ज करनेके वीये अलग रख लेते और ये तय किया था के आमदनी अगर मछेनतसे डसिल

हुँए है तो उस्का बिंसवा डिस्सा-(पञ्ज)-और अगर लदीया-तौलड़ा वगेरुड डोता तो दसवा डिस्सा झौरन अलग निकाल लीया जाता. ईसलीये आपके पास अलग अलग कामों में अर्थ करने के लीये रकम मुकरर थी. जे अेक संदुक (पेटी) में मुप्तलीक थेले या लिङ्काई में रभे रहते थे. जस पर लीजा रेडता था के ये आनगी अर्थ के लीये. ये सकर अर्थ के लीये, अेक थेली लुंमेशा आपके पास रेडती जस पर सडका करनेके लीये लीजा रेडता था. तंगदस्ती डो या झरापी (कुशादगी) आमदनी का पास डिस्सा निकाल पर आप झौरन थेली में रभ लेते थे. जबतक सडका के थेले में न डाल लेते उस वक्त तक आमदनी ईस्तिमाल नही करते थे. अगर दस रुपीये भी आ जाते तो अेक रुपिया थेलीमें रभनेका अेलतिमाम झरमाते और झरमाते थे के ईस तरीके पर अमल करनेमें अरकत ये डोती है के जब कोई अर्थ का तकाजा सामने आता है तो उस वक्त सोचना नही पडता था के रकम कहां से दी जाये. अल्के ये थेलीया और लिङ्काई डर वक्त याद दीलाते है के उस्को अर्थ करनेका कोई डकदार तलाश कीया जाये.

आजकल डमारा डाल ये है के अर्थ करनेका शोक और जजबा डी पैदा नही डोता और कभी डोता है तो डाय आली डोनेकी वजडसे तमन्ना दील डी में रेड जाती है अगर डम भी ईस तरड आमदनी का कुछ डिस्सा अलग निकाल कर अल्लाडकी राडमें अर्थ करनेका अपने को आदी अनाले तो डडी अरकत की खीज डोगी. अगर ईरादा कर ले तो ये कोई मुशकील काम नही. ईस्के अडे झायदे है जे अयानसे आडर है. अपने मालमें से सडकअे जरियड के कामों में भी डिस्सा लेना याडीये. कडी मरश्हद मद्रसाकी तामीर डो रडी डो तो जरूर कुछ न कुछ डिस्सा लेना याडीये. दीनी किताबे जरीद कर वकड करना आडीये. जस्का सवाअ मरनेके बाद भी जरी रेडता है.

(निदाअेशाडी-३/१८८७/४६)

रहमत और अरकत :

अल्लाड तआला का ईशाद है : “अगर ईन अस्तीयों के रेडनेवाले ईमान लेआते और परडेज करते तो डम उनपर जमीन और आस्मान की अरकतें ओल देते. लेकीन उनडोंने जुठलाया, तो डमने उनके आमाव की वजड से उनको पकड लीया.”

(सुरअे अलआराक-८६)

ईस आयातमें अताया गया है के अगर वो लोग ईमान और तकवा ईज्जियार करते तो उनको जमीन व आस्मान की नेअमतों से रहमत और ईनायत के तौर पर सरइराज किया जाता.

बरकत की मतलब:

कीसी भी चीज में ज़ैर का मौजूद होना और बरकत के माअना जयाहती और ईजाइ के भी है.

आस्मान और जमीन की बरकतों से मुराद ये है के दर तरफ़ से भलाईके दरवाजे भोल दीये जाते है. जैसेके जइरत के मौके पर बारीश का होना. जमीनसे ज्वालीश के मुताबिक़ यीजोंका पैदा होना - ईर ईन यीजों से इयादे डासिल करनेके तरीके ईल्डाम कर दीये जाते है. ताके राखत के अस्बाब डासिल हो.

बरकत की सुरते:

१. कभी कीसी चीज में हकीकत में जयाहती हो जाती है - के पहेले कम थी बादमें उसमें ईजाइ हो गया. जैसेके दुजुर (स.अ.व.) के मोअज्जों में ये बात है के थोडासा पाना अक़ बडी जमाअतने सेर होकर आया. और अक़ मामुली बरतन के पानी से पुरे काइले ने अपनी प्यास बुजई.

२. ज़लीरी तौर पर कोई ईजाइ नही होता. मगर उससे डासिल होनेवाले इयादोंमें ईजाइ होजाता है और अक़ चीजसे ईतने इयादे डासिल होते है के ईससे कई गुना यीजोंसे डासिल नही हो पाते जैसेके बाज यीजें बरतन, कपडे, धरेलुं सामान जैसे मुबारक होते है के उनसे आहमी उमर लर इयादा उठाता है और जु की तुं बाकी रहेती है. जबके बाज दुसरी ईस तरह की यीजों में बरकत नही होती वो इरन टूट इट जाती है. या उन यीजोंसे नइ नही उठा सकता.

३. उम्र और वक़्त में बरकत होती है के अक़ कमअर आहमी थोडेसे वक़्तमें वो काम अंजाम देता है जे अक़ अंजुमन, कमीटी और अक़ेडेमी अंजाम नही दे सकती. इजराते अवलियाअे किरामकी तस्नीइत ईस्का मजहर है.

४. माल में बरकत होती है. ज़लीर में पहेले के मुकाबले में माल बढ़

जता है और आतीनी बरकत ये लोती है के मामुवी रकम से वो काम लो जते है जे बडी रकमें अर्च करके भी वो काम नही लोते. अक लुकमें से वो ताकत हासिल हो जाती है. जे ताकतवर गीजा और दवा भी वो काम नही देती. (मजाहिरे उलुम - ८/२०००/७)

बंदो के हक अदा कीजिये :

(मौलाना महंमद आशिक ईलाही बुलंदशेहरी (र.अ.) (मदीना मुनवरह)

बंदो के लुकक का मामला बहोत अलम है. आम तौर पर लोगों को उसकी परवा नही लोती. दीनदारी अस कुर्ता नमाज में रेल गथ है.

उजरत सुफ्यान सौरी (र.अ.) इरमाते है के अगर कोई शम्स अल्लाहतआवा की ७० नाइरमानीयां लेकर क्यामत के मेदान में पहुंचे तो ये उससे लडका गुनाह है के कीसी बंदेका अक लक मार कर मेदाने क्यामतमें हाजिर हो. क्युं के अल्लाहतआवा बेनियाज है. उस से माई की उम्मीद रभी जये. लेकिन बंदे युंके मोलताज है. ईस वीये उन्के लुकक की अदायगी का ध्यान रचना और उन्को अदा करके जना बहोत अलम और जरूरी है. बंदोसे वहां माइ कराने की उम्मीद रचना बेवकुई है. बंदे वहां मोलताज होंगे. बेयेनी का आलम होगा. मामुवी सलारा तलाश करते होंगे और लक वाला अपना पुरा पुरा लक वसुल करना चाहेगा.

मिरास (वारसा वहेयागी) के बाब में तो दीन दारी के दावेदार पीर, इकीर, आलिम, जहिल आम तौर पर मुसीबत में गिरफ्तार है. मरने वाला मर जाता है और उसका माल शरीअत के उसुल के मुताबिक वारिसों में तकसीम नही कीया जाता. यतीमों और बेवाओं के डिस्से ट्रसरेही लोग जा जते है. और मरनेवाले की बीवीयों और बेटीयों को मिरास के शरई डिस्से नही दीये जते.

हा - बिदअत के कामों में मिरास के मुशतरक (सहीयारा) माल से अर्च करते रहते है और शरीअत के मुताबिक मिरास तकसीम करने से जिन युराते है. (अलकुरकान-२/१८८८/१७)

मालदारों का असर अवाम पर :-

कुहरती तौर पर अवाम अपने मालदारों और हाकिमों के अज्वाक और आमाव से असर लेते है. जब ये लोग बह अमल हो जते है तो

कौम भी बढ अमल ढो जती है. ईस वीये जून लोगोंको अल्लाहतआवाने माल दौलत दीया है. उनको ईस्की अयादा इकिर डोनी याडीये के अपने आमाव और अप्लाककी ईस्वाड करते रहे. औसा न ढो के अशपरस्तीमें पडकर गाइल ढो जये और पुरी कौम उनकी वजहसे गलत रास्ते पर पड जये तो कौमके बुरे आमावका ववालभी उन पर पडेगा.

(म.कु.प. - ४५८)

जयदाद (जमीन) बेयना :

मकान, भाग या भेती की जमीन जैसी गेर मन्कुल (स्थावर) चीजों की भासीयत ये है के न कोई उस्को थोरी कर सकता है और न उन पर दूसरी आइते आती है. जैसा के और जयदादों (बंगम मिलकत) पर आइते आती रहेती है.

ईसवीये अकलमंटी का तकाजा ये है के बगैर कीसी भास जरूरत और मस्लेहत के ईन चीजों को न बेया जये. अगर बेया जये तो बेडतर ये डोगा के उस किंमत से दूसरी कोई गेर मन्कुल (स्थावर मिलकत) ढी भरीदी जये.

डुजुर (स.अ.व.) को उम्मत पर जे शकत और प्यार है ईस बीना पर आपने भी ईस तरड का मशवरा दीया है. ढहीस शरीफ में है.

रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया. तुममे से जे कोई अपना घर या जयदाद बेये तो सजावार है के उस्के ईस अमलमें बरकत और इायदा न ढो. अलबत्ता अगर वो उस्की किंमत को ईस तरडकी दूसरी जयदादमें लगा दें तो इीर ठीक है.

(ईबने माज)

डुजुर (स.अ.व.) के ईस ईशाद की हैसीयत अेक डमदईना इदायत और मशवरे की है. ये शरई मस्अवा नही है.

(अलइरकान - ४/१८७)

अपनी जयदाद का ईन्तिजाम निदायत बेदारी और बइकशी से कीजये, ताके कर्जा भी अदा ढो और सरमाया की तरक्की ढो. कारकुनों और मुवाजिर्मों पर लरोसा करके गाइल ढो जना. बडोत से रईसों को बरबाद कर चुंका है.

(सुलुके तरीकत - १८८)

हदीया, तोहफा :-

आदाबे छंदगी की वेन-देन में ओक शकल ये भी है के अपनी कोई चीज हदीया और तोहफा के तौरपर कीसीको पेश की जाये. रसुले अकरम (स.अ.व.) ने अपने ईशादात में उसकी बड़ी तरगीब दी है. हदीया की वेन देनसे दीवों में मोहब्बत और तअल्लुक में पुशगवारी पैदा होती है. जे दुनिया में बड़ी नेअमत आइयत, सुकुन और आइतों से लिफाजत का जरीया है.

हदीया उस देनेको केहते है जे दुसरोंका दीव पुश करने के लीये और अपना दीवी तअल्लुक जखीर करनेके लीये दीया जाये और उसके जरीये अल्लाहतआवा की रजामंदी मतलुब हो.

अगर ये हदीया कीसी छोटे को दीया जाये तो उसके साथ अपनी शकत का ईज्जदार है. अगर कीसी दोस्त को दीया जाये तो मोहब्बत का वसीला है.

अगर कीसी कमजोर को दीया जाये तो उसकी जिदमत का जरीया है और उसके दीवको पुश करने का जरीया है.

अगर अपने कीसी बुजुर्ग या मोहतरम को पेश कीया जाये तो उनका ईकराम है और नजराचा है.

अगर कीसी जरूरतमंद को अल्लाह के वास्ते और सवाब की नियत से दीया जाये तो ये हदीया न होगी बल्के सटका होगा. हदीया जब ही होगी जबके उसके जरीये अपनी मोहब्बत और दीवी तअल्लुक को जखीर करना मकसुद हो और उसके जरीये अल्लाहतआवा की पुरनुद्दी मकसुद हो.

हदीया अगर ईप्लास के साथ दीया जाये तो उसका सवाब सटके से कम नहीं बल्के बाज अवकात जयादा होगा. हदीया और सटका के ईस इर्क का नतीजा ये है के रसुले अकरम (स.अ.व.) हदीया शुक्रियल और दुआ के साथ कुबुल इरमाते और उसको पुद भी ईस्तिमाव इरमाते थे.

और सटका अगरये शुक्रियल के साथ कुबुल इरमाते और दुआ भी देते थे. लेकिन उसको पुद ईस्तिमाव न इरमाते थे. दुसरों को भरलमत इरमा देते थे.

अइसोस ले उम्मत में आपस में जुबुस से उदीयो का लेन-देन का रिवाज बलोट कम हो गया है. आज पास उल्की में बस ! अपने जुजुगी और आविमो और मुर्शिदों को उदीया पेश करनेका कुछ रिवाज तो है. लेकीन रिश्तेदारों, पडोसीयों वगेरह के यहां उदीया लेजने का रिवाज बलोट कम हो गया है. लावांके दीवों में मोलुब्बत और तअल्लुकात में पुशगवारी और खंडगी में सुकन और चैन पैदा करने और अल्लाहतआला की रजामंदी लासील करनेके लीये रसुले अकरम(स.अ.व.) का मतवाया हुवा नुस्खअे किमीया था.

उजरत आयशा (रही.) बयान इरमाती है के रसुले अकरम (स.अ.व.) का इस्तुर था के आप उदीया, तोउड़ा कुबुल इरमाते थे और उसके जवाबमें जुदमी अता इरमाते थे. (जुभारी शरीफ)

मतलब ये है के जब कोई मोलुब्बत करनेवाला उदीया पेश करता तो आप (स.अ.व.) जुशी से कुबुल इरमाते थे और अल्लाहतआलाके ईशाद (۱۲۸. ۲۷ ب) الْأَخْسَانُ إِلَّا الْأَخْسَانُ के मुताबिक उदीया देने वाले को जुदमी उदीया और तोउड़ा से नवाजते थे. (याहे उसी वक्त या दूसरे वक्त में)

ईस उदीस से मालुम हुवा के जोस्को कीसी मोलुब्बत करनेवाले की तरफ से उदीया - तोउड़ा दीया जाये और उदीया पानेवाला उसके जवाब में उदीया, तोउड़ा दे सके तो ऐसा ही करे और ताकत न हो तो उसके लकमें कल्मअे जैर कहे. और उसके अखेसानका दूसरो के सामने तजकेरा भी करे. अल्लाहतआला के यहां उसकोभी शुक समज जायेगा.

अक उदीस में ले के "जजकल्लाह" केडने से भी लुक अदा हो जाता है. और जे शप्स उदीया, तोउड़ा पानेके बाद उसको छुपाये. जवानसे जिक तक न करे "जजकल्लाह" जैसा कल्मा भी न कहे तो वो ना शुकी करने वाला शुमार होगा.

हुजुर (स.अ.व.) का ईशाद है के जोस्ने कीसी शप्सके लीये (कीसी मामलेमें) शिकारिश की और शिकारिशकी बीना पर शिकारिश करने वाले को कोई उदीया पेश किया और उसने वो उदीया कुबुल कर लीया तो वो सुद (व्याज) की अक बडी जराब किस्म के गुनाह को करनेवाला

शुमार लोगा.

ईस उदीससे मालुम हुवा के उदीया वही कुबुल करनेके काबील है जे ईप्वासके साथ हो और गलत किस्म की अगाराज का शुभा और शायेबा (संकोय) न हो. (अलफुरकान - ७/१८७८/११)

दस्ते गैब :-

दुनिया में जैसे शप्स का ईकराम होता है जे कीसी से उधार लेकर वक्त से पहले अदा कर देता है. और आखिस्ता आखिस्ता समाज में उसकी ईमानदारी और मामलात की सफाई मशहूर हो जाती है. आभिरकार अक वक्त ऐसा आता है के समाज के तमाम लोग उसके उपर भरोसा करते हैं. और बखतसे लोग उसकी कर्ज देनेकी पेशकश करते हैं. जैसे लोग दुनियाके अंदर सबसे बड़े अकलमंद और समजदार डॉशियार आदमी है. उनको आईन्दा की भी डिक्कर होती है. क्युं के दुनियामें मामला अक बार नही होता बार बार करनेकी जरूरत पेश आती है.

शैफुल उदीस उजरत मौलाना जकरीया सालब (र.अ.) का वाक्या है के उनके यहां अक वक्तमें आज भरतबा कई उजार मेहमान होते थे. भास तौर पर रमजान में मेहमानों की अजबो गरीब भीड होती थी. और रमजानके अलावाभी दोनों वक्त सेंकड़ोंकी तअदादमें उनके यहां मेहमान हुवा करते थे. खलता झीरता आदमी भी जाना जाने के लीये शेफ के यहां पहुंच जाता था. कीसीने उजरत शेफ से पुछा के क्या आपके यहां दस्ते गैब है ? जखिरमें कोई ऐसा कारोबार नही है और न कोई बडी जयदाद है. आभिर ये पैसा कहांसे आता है ? तो उजरत शेफने जवाब दीया मेरे पास दो दस्ते गैब है.

१. अक दस्ते गैब तो ये है के जब मेरे पाससे पैसा जन्म हो जाता है तो मैं कीसीसे वक्त तय करके कर्ज ले लेता हूं और वक्त आने से पहले दूसरे से कर्ज लेकर उसका कर्ज अदा कर देता हूं. और दूसरे का वक्त आनेसे पहले तीसरे से लेकर अदा कर देता हूं. तो ईस तरीकेसे मेरे कर्ज का सिलसिला लोगोके दरम्यान घुंमता रहता है. कीसीको मुजसे कोई तकलीफ नही होती. वाअटे से पहलेही अदा कर देता हूं और आज ये डालत है के लोग मुझे कर्ज देने के लीये पेशकश करते हैं. मगर मैं हर शप्स से लेता नही. मैं तो यंद

अलबाब से ईस्का मामला रजता हुं.

२. दूसरा हस्ते गैब ये छे के मैं अर्थ करते वक्त गीनता नही और अर्थ करता रेखता हुं . जब बिलकुल अत्म हो जाता है तो दूसरा ईन्तीजाम करता हुं और हर वक्त अब मैं अपने भाईयो से दरभास्त करता हुं के आप लोग होशियार और अकलमंद बन जाये और अपने मामलात को ह्दस्त करमावे. अगर कीसीने अपनी छुंदगीमें मामला पराब कर रखा है वो कीरी तौर पर दूसरोके दुकु अदा कर दे और पीछली छुंदगीमें अपने किये दुअे पर अक्षोस करते दुअे तौबा कर वे.

(निदाअे शाही - /२०००/३४)

आजमाईश :-

नई नई चीजें और बेशुमार नये सामान आज का सबसे बडा किन्ना है. ईस मादी तेहजीब ने दुनिया की छुंदगी को ईत्ना जयादा पुरकशीष बना दीया है के हर आदमी उसके अहुं के जलमें इसा है. हर आदमी उसकी तरफ़ दौडा यवा ज रहा है. हर मई और औरत उसको डालिव करने में अपनी तमाम ताकत लगाये दुअे है. अब लोगोका मरकजे तवक्कुल "भुदा" नही बल्के मादी तरक्की है. आज का ईन्सान ईसी दुनिया में अपनी जन्ततकी तामीर करना याखता है. नई तेहजीब का ये अहुं ईत्ना बढ़ा दुवा है के आज अक मजलबी ईन्सानबी ईत्नाही जयादा मादा परस्त हो गया है अत्ना कोई-गेर मजलबी ईन्सान

(दीन-व-शरीअत-१८५)

उदीसमें आया है के रसुवुल्लाह (स.अ.व.) ने इरमाया के तुम्हारे बारेमें मुजे सबसे जयादा अस चीजका उर है वो ज्वालीश और वंभी उम्मीदें है. ज्वालीश उकसे रोकती है. और वंभी उम्मीदें आपिरतको बुवा देती है.

(मिशकात-३/१४३८)

अक और उदीसमें आया है के हर उम्मतका अक किन्ना होता है. और मेरी उम्मतका किन्ना माव है.

(मिशकात-३/१४३४)

यहां ये सवाल है के ज्वालीशों और आरजुंओं में अना या मावका तवबगार बनना. ये अैसे किन्ने है अन्में हर जमानेके लोग मुब्तवा रहे है.

आभीर क्या वज्रुड है के रसुवे अकरम (स.अ.व.) ने धन यीजोंको अपनी उम्मत का किंता अताया और आस तौर पर उम्मतको धससे अबरदार करमाया.

धसका सबअ ये है के धस उम्मतका जमाना आभीर जमाना है. यानी वो जमाना जस्में जदीद सायन्सी और टेकनीकी धन्कीलाअ पुबुद्धमें आया. जस्की वज्रुडसे मौजूदा दुनिया धन्सान के वीये जयादा हसीन हो गध. जे पहले के कमी नही थी.

आजका धन्सान जब धस नध दुनियाको देअता है तो उसके दीवमें आरजुंओ और तमन्नाओंका अेक तुकान अरपा होता है और उसके अंदर धस आतकी बेहिसाअ ज्वालीशें पैदा हो जाती है के जयादासे जयादा आल आसिल करे. ताके वो नध दुनियाकी रोनाकोंको जयादासे जयादा अपने आसपास जमा कर सके.

धस नये सुरते डालने आदमीकी ज्वालीशों और आरजुंओ को बे पनाह हद तक बढ़ा दीया है. और हर ज्वालीश और आरजुंओ पुरा करनेके वीये आल की जरूरत होती है. धस वीये हर आदमी अस आल के पीछे दौड रहा है. हर आदमी अस ! कमाने वाला जनवर अन गया है. नये नये ज्जुअसुरत सामानों की कोध हद नही. धस वीये यीजोंकी दुनियाकी तरफ धन्सानके दौड की भी कोध हद नही-

धस नये दौर ने पुरे डालात को अद्व डाला है. अज्वाकी और इडानी सिद्धतोंकी किंमत की जगा यीजोंको किंमती समज जाने लगा है. किंमती और बेहतरीन ज्जुंगी के अवकातको सिद्ध दौलत कमानेमें लगाया जाने लगा है. ज्जुंगीका असल मकसद अत्म हो गया है और उसकी जगा डायदा परस्तीने ले रही है. धन्सानोंकी किंमती सवालीयते आजार का आल अन गध है. हर आदमी तैयार रहता है के ज्जुस दुकान पर उसकी किंमत जयादा लगे वहां वो अपने आपको बेच दे. धन्सानों के आपसके तअव्लुक दुन्यवी गज्जके ताबे हो गये है. दुन्यवी अलमियतकी यीजें आरजुं और तमन्नाओंका मरकज अन गध है. धन मकसदोंको पुरा करने के वीये हर आदमी धन्ती जयादा दौलत जमा करेना चाहता है के उसके अेटों और पौतों तक के वीये अेशो आरामकी ज्जुंगी यकीनी हो जाये.

ये है वो माखोल जस्में आबका ईन्सान ज रहा है. उम्मत मुस्लिमल भी अपना सफ़र तय करते हुआये ईसी जमानेमें पदुंयने वाली थी ईस वीये हुआर (स.अ.व.) ने पेशगी तौर पर अपनी उम्मतको आगाह करमाया ताके उम्मत जब नये किन्नोंसे तरे हुआये ईस दौरमें पदुंये तो वो ईस्के बारेमें जबरदार हो जये और अपनेको उसकी जराबीयाँसे बचा सके.

आब उम्मत ईसी तुफ़ानी किन्ने के दौर में है. हर मर्द-औरत हर जवान-बुढ़ा ईस बड़े किन्नेकी जद में है. देखातों से लेकर शेखरों तक कोई भी ईससे बचा हुआ नही है.

उपरकी हदीसकी रोशनीमें ये केहना सही होगा के मौजूदा जमानेमें कीसी मुसलमानको जंयनेका यही सबसे बड़ा तरीका है. जे मुसलमान ईस नये मादी सेलाबमें हुआनेसे अपने आपकी बचावे वो काम्याब हुआ-और जे ईस मादी सेलाबमें इस जये वो हलाक हो जयेगा-

(दीन-व-शरीअत-२८७)

अल्लाह का डर :-

जब लोगों के दीवोमें आभिरतकी पकड़ का भौड़ हो तो वो निकाल या तलाक या माल और जयदाद के जगड़े अदावतमें नही वे जयेगें जस्के बारेमें उन्का ये यकीन हो के ये मेरा हक नही है. मगर जब दीवोमें आभिरतका भौड़ न रहे तो अपने झयदे के वीये जैसे मामलेको लेकर ईन्सानी अदावतमें पदुंय जते है. क्युं के उन्को यकीन होता है अदावतमें ठुठे अक्काज बोल कर वो पराई थीजको अपनी ठेहरा सकते है.

जमीर (दीव) की अदावतके सामने जूंक जना ईस बातकी अवामत है के उम्मत जीदा दीन पर कायम है. और जब लोग जमीर(दीव)की अदावतसे मुंड फेरकर अपने मुकददमें ईन्सानी अदावतों में वे जाने लगे तो समजना के उम्मत अपने दारे जवावमें पदुंय गई.

जस शप्सके सीनेमें अल्लाह का डर हो और आभिरतकी पकड़ का अंदेशा रजता हो वो अदावतमें सिर्फ़ अपना जईज हक लेनेके वीये जाता है. अदावत के जेर पर ऐसी थीज पर कब्ज करनेकी कोशीष करना बड़ा जुरम है. जे हकीकतमें उसकी न हो.

अगर कोई चीज उसके कब्जे में हो और उसका दौल ये केवल रखा हो के ये चीज उसकी नहीं है. तो अदावती इस्लाम के अन्तर्गत किये बगैर वो ऐसी चीजको लुप्त कर के उवाले कर देगा. क्युं के उसको यकीन होगा के जो चीज लुप्तकृतमें मेरी नहीं है वो किसी अदावतके इस्लामकी बीना पर मेरी नहीं हो सकती. याह अदावत कीन्ही ही बड़ी क्युं न हो.

(दीन-व-शरीअत-२७१)

जब कभी माल या जयदादमें जघडा पैदा हो तो जैसे मौके पर ईन्सानका जमीर ही ये अताने के लीये काफ़ी होता है के उस पर कीसका लक है. ऐसी हालातमें याहीये के वो अपने जमीर के मुताबिक मामला करे जो अपना लक है उसको अपने पास रखे. और जो दूसरे का लक है उसको दूसरों के उवाले कर दे.

ईर बी बाज हालातमें जमीर (दील) की रेहनुमाई पुरे तौर पर साफ़ नहीं होती ऐसी हालातमें शरीअतके कानूनके मुताबिक जो इस्लाम हो रखा हो उसको जुदाई इस्लाम समजकर उस पर राख हो जाये- अगर मामला दोनों इरीक (पार्टी) के आदमी जुद न कर सके तो दोनोंका इर्ज है के ईस मामलेको शरई अदावतमें ले जाये अगर शरई अदावत न हो तो ईस मामलेमें उल्माके किरामकी तरह इन्जुअ किया जाये और उल्माके किराम शरई ईल्मके मुताबिक जो इस्लाम है उसको अलस किये बगैर मान लीया जाये. यही तरीका जुदाका पसंदीदा तरीका है.

मौजुदा जमानेमें अक्सर मुल्कोमें दो किसम के इस्लाम लासिल करनेके ईन्तजाम है. एक तरह उल्माके दीन है. अगर लोग अपने मसाईलमें ईन उल्मासे इन्जुअ करे तो वो शरीअतकी रोशनीमें उन्के मामलातका इस्लाम देगें- दूसरी तरह सरकारी अदावत है. जहां दून्यवी कानून चलते है वहां वकीलोंको बड़ी बड़ी इरीस देकर उन्के जरीये गलत तौर पर अपने लकमें इस्लाम लासिल किया जा सकता है.

जो मुसलमान अपने ईन्तजाम और जघडों के मामलोंको उल्माके किरामके पास न लाये बल्के वो सरकारी अदावतोंमें जाकर हर कीमत पर अपने लकमें इस्लाम लेनेकी कोशीष करे- जैसे लोगों पर बेशक कुअन मज्हदी ये आयत सादिक आती है. यानी वो जुदा और रसुलको

છોડ કર શયતાન કે પાસ જ રહે હૈ. એસે લોગોં કે લીયે સખ્તખતરા હે કે વો નમાઝ રોઝા કે બાવુજુદ ખુદાકે નજદીક મુજરીમ કરાર પાયે ઓર આખિરતમે ઉન્કા અંજમ એસા હો જો ના ફરમાનોં કે લીયે મુકદ્દર હૈ.

ઉમ્મતકે લોગ જબ ઝવાલ કે શિકાર હોતે હૈ તો ઉન્કા હાલ યે હોજતા હે કે જહીરી અકીદેકે મુતાબિક વો ખુદાકી કિતાબ કો માનતે હૈ. મગર ઉન્કી અમલી જીંદગી કિતાબે ઈલાહી સે આઝાદ હો જાતી હૈ. વો ખુદાકી કિતાબકા ઝબાની ઈકરાર કરનેકે બાવુજુદ અપની જીંદગીકો પુરી તરહ ખ્વાહીશાત કે રાસ્તે પર ચલા દેતે હૈ.

યે હાલત તમામ મુસલમાનોં કે લીયે એક સખ્ત આઝમાઈશ હૈ. જો લોગ અપને ઈખ્તિલાફી મામલોંમેં ફેસ્લા ખુદાકી શરીઅતકે મુતાબિક લે ઓર ઉસ્કો રાજી હોકર કુબુલ કર લે. વો આઝમાઈશમેં પુરે ઉતરે. એસે લોગ ખુદાકે યહાં મુખ્લીસ મુસલમાન સાબિત હોગે. ઓર ખુદાઈ ઈનામોં કે હકદાર હોગે. (દીન-વ-શરીઅત-૨૭૪)

જન્નતસે મેહરૂમ :-

હઝરત અનસ (રદી.) ફરમાતે હૈ કે રસુલુલ્લાહ (સ.અ.વ.) ને ઈશાદિ... ફરમાયા :-

જો શખ્સ અપને વારીસકો ઉસ્કે વિરાસતકે હકસે મેહરૂમ કરેગા. અલ્લાહતઆલા ઉસ્કો જન્નતકા વારીસ નહી બનાયેગે- હાં ! અગર તૌબા કર લે ઓર વારીસકો ઉસ્કા હક અદા કર દે તો માફી હો સકેગી.

(ઈબ્ને માજ)

આગ કા ટૂકડા :-

હુઝુર (સ.અ.વ.) કા ઈશાદિ હૈ :

હઝરત ઉમ્મે સલ્મા(રદી.)સે રિવાયત હે કે રસુલે અકરમ (સ.અ.વ.) ને ફરમાયા કે મૈં એક ઈન્સાન હું તુમ અપને મુકદ્દમમેં મેરે પાસ લાતે હો. હો સકતા હૈ કે તુમ મૈં સે કોઈ શખ્સ દુસરે શખ્સકે મુકાબલેમેં ઝયાદા અચ્છે અંદાઝમેં અપના દાવા પેશ કરે ઓર મૈં અપને સુનને કે મુતાબિક ઉસ્કે હકમેં ફેસ્લા કર દું તો મૈંને જીસ શખ્સકો ઉસ્કે ભાઈકા હક દીયા ઉસ્કો મૈંને આગકા એક ટૂકડા દીયા. (બુખારી-મુસ્લિમ)

યે હદીસ બતાતી હૈ કે હર હાલમેં વો હક ઉસીકા હૈ જો ઉસ્કા

સચ્ચા હકદાર છે. યહાં તકકે અગર પયગંબર કીસી વજહસે ગેર હકદાર કે લીયે ઉસ્કા ફેસ્લા કર દે તબ ભી વો ઉસ્કી નહી હો સકતી પયગંબરકે ફેસ્લેકે બાવુજુદ વો આખિરતમે ઉસ્કે લીયે આગકા ટૂકડા સાબિત હોગી.

મૌજુદા ઝમાનેમેં નાજઈઝ કબ્જા બહોત આમ હૈ. મૌજુદા બિગડે હુએ નિઝામને લોગોંકો મૌકા દીયા હૈ કે વો રિશવત ઔર ધમકી કે જ્હેર પર અપની નાજઈઝ ખ્વાહીશ પુરી કર સકે. યુંનાયે આજ હર બસ્તી ઔર શહેરમેં એસે લોગ મીલેગે જીન્હોને ગલત કારવાઈ કરકે કીસી દુસરે શખ્સકી જમીન યા ઈમારત પર કબ્જા કર લીયા હૈ.

એસે લોગોં કે લીયે યે હદીસ બહોત ઝયાદા ડરાને વાલી હૈ. જહીર હૈ કે જબ રસુલે ખુદા (સ. અ. વ.) કે ફેસ્લેકે બાવુજુદ એક જયદાદ કીસી ગેર હકદારકી નહી હોતી તો વો ઉન લોગોંકી કેસે હો જાયેગી. જો ફરજી (બનાવટી) રજીસ્ટરી ઔર જુઠે સરકારી કાગઝોંકી બુન્યાદ પર દુસરોંકી જયદાદ પર કબ્જા કરકે બેઠ ગયે હો.

દુનિયામેં આદમી દુસરેકી ઈમારત પર કબ્જા કરકે ખુશ હોતા હૈ. આખિરતમેં ઉસ્કા ક્યા હાલ હોગા જબ ઈસ પુરી ઈમારતકો આગકી ઈમારત બનાકર ઉસ્કે અંદર ઉસે બંદ કર દીયા જાયેગા.

(અલ્લાહ કી પનાહ)

(અલરિસાલા-૨/૧૯૮૮/૩)

કીસી મોહલ્લેકે ચંદ બેવકુફ નવજવાન અગર અપને હી ઘરમેં આગ લગાને લેગે તો આસપાસ કે પડોશી ખામોશ તમાશાઈ નહી બનેગે- કે હમેં ક્યા ? વો જાને ઉન્કા કામ ? બલ્કે ઈન બેવકુફ નવજવાનોંકો ઈસ હરકતસે બાઝ રખનેકે લીયે તંબીહ - ખુશામદ, પોલીસ કી મદદ વગેરહ તમામ મુશ્કીન કોશીષોંકો કામમેં લાયેગે. ક્યું કે માલુમ હૈ કે ઉન્કી ગલ્તી સે ઉન્કે ઘરમેં આગ લગી તો પડોશભી ઉસસે મેહકુઝ નહી રહેગા.

જલાનેમેં આગ યે ખ્યાલ નહી કરેગી કે લગાને વાલા કોન હૈ ? ગલ્તી કીસકી હૈ ? મુજરીમ કોન હૈ ? આનકી આનમેં તમામ ચીઝોંકો જલાકર રાખમેં તબ્દીલ કર દેગી.

ઈસી તરહ અગરચે ચંદ સરફીરે નવજવાન ખુલે તોર પર ગુનાહોંમેં મુબ્તલા હો. અખ્લાક કો બાલાએ તાક રખકર બેશરમી ઔર નાલાયકી કા બાઝાર ગરમ કરે - જુલ્મ પર ઉતર આયે - યાં ચંદ ઔરતે બે પર્દા -

बनठन कर गली कुर्थों में दखवते नज्जरल देती झीरे. और अपने ईस तर्ज अमलसे दुसरी औरतोंको भी बे पर्दा डोनेकी दखवत दे और ईस्वामी अडकामकी खुली पायमावी करे और ज्जम्मेदार तब्का उसपर युपकी साध ले तो ज्जे आइतों और बवार्ये आयेगी वो आम डोगी. नेक और बुरा उससे बय नडी सकेगा.

ईसवीये कौम के बा असर और डोंश रज्जनेवाले तब्केकी ज्जम्मेदारी है के वो अपने आसपास के पडोश पर निगाल रजे और समाजमें मौजूद और पैदा डोनेवाली तमाम बुराईयोंको अत्म करनेमें अपनी पुरी ताकत अर्प्य करे. कुंके यंद अइरादकी अय्याशी. बदअमावाली पुरी कौमकी तबाडीका सबब बन सकती है. अल्लाह अपने इज्जलों करमसे दुनियाकी आइतों और अजाबे आभिरतसे दिइज्जत इरमाये-आमीन..

(मआरिफुल कुर्आन - ईब्ने कसीर - १०७१)

कर्ज की मुसीबत :-

कर्ज बुरी बला है. अकाबिरका मकुला है. कर्ज मोडब्बतकी डैयी है. कर्जका लुगवी (असली) तरबुमा काटनेका है. बडोतसे लोगोंको कर्ज लेनेकी आदत डोती है. नइरत और बगैर नइरतके कर्ज लेते रेखते है. और जब कर्ज बडोत बढ जाता है तो ये अडीयल आदमी हर जैसे आदमीके ताकमें रेखते है. ज्जससे कर्ज मील सकता है. नइज्जं कर्जों नये आदमीसे मेव ज्वेल लुवा बस उसे द्दाग दीयां. अब वो बियारा आगे पीछे झीरता है. अदायगी का नाम नडी. जब कर्ज लीया था तो दुसरा मुंड था. आज्जकीके साथ माग रले थे भीगी बिल्वी बने लुअे थे. लेकीन जब कर्ज देने वाला मागनेको आता है तो उसकी शकल देअना भी गवारा नडी करते. उसको देभा और बुभार यढ गया. और बाज तो बडी बे बाकीसे डेड देते है के मैं नडी देता ज्जे याले कर ले.

कर्ज तो बडोत मज्जबुरीमें लीया ज्जये और नैसेडी ईन्तिजाम डो ज्जये झीरन अदा कर दे. पैसोंकी आमदनी पर कर्ज की अदायगी मौकुइ न करे धरकी यीज्ज बेय कर, मडेनत मज्जहुरी करके ज्जस तरल मुम्कीन डो नल्दीसे नल्दी कर्ज अदा कर दे. और कर्ज देनेवालेके मागनेसे पलेले डी भुद ज्जकर अदा करे.

कर्ज की अदायगी का ईन्तजाम छोते लुओे अदा न करना. उस्को लदीसमें "मतल" इरमाया है. लुओुर (स.अ.व.) का ईशरद है के लुओे पास अदायगीका ईन्तजाम छो डीर ली टालमटोल करना, कर्ज अदा न करना लुओेमकी बात है- जे शप्स तुम्हारी लुओुरत के वक्त काम आया और उधार दे दीया उस्को ये सजा दे रहे है के वो वसुल करनेके लीये बार बार आये और वापस जये और ईन्तजाम छोते लुओे ली न दीया जये. शरीअत और दुन्यवी मामलात के लिसाब से लुओेमकी बात है.

लुओुर (स.अ.व.) का ईशरद है के कर्ज के अलावा शडीहका लर गुनाल बप्श दीया जाता है. (मुस्लिम शरीफ़)

तुम गरीब नही दौलतमंद हो :-

अेक इकीरने लीज मागने के लीये आवाज लगाई. सुनने वालेने देभाके तो इकीर के डाय पांव दुरस्त थे. उस्ने कहां तुमकी पैसा कुं दीया जये ? इकीरने कला मैं गरीब लुं. आदमीने कला तुम गरीब नली लो - बलौत दौलतमंद लो. इकीरने कला बाबुल मजक न कीलये मेरे पास दौलत कहां ? मेरे पास तो कुछ ली नली. मैं तो बिलकुल गरीब लुं - आदमी ने कला अरछा तुम्हारे पास जे कुछ है मुंजे दे दो. मैं उस्के बदले में तुम्हे ५० लजार इपिये देता लुं. इकीरने अपनी जेली कंधेसे उतारी और कला मेरे पास तो अस यली है. उस्को आप ले लीलये. आदमीने कला नली तुम्हारे पास ईस्के अलावा ली बलौत कुछ है. तुम्हारे पास दो पांव है. अेक पांव तुम मुजको दे दो. और मुजसे दस लजार इपिये ले लो. इकीरने देने से ईन्कार कर दीया. अब आदमी ने कला तुम्हारे पास दो डाय है अेक डाय मुजको दे दो और मुजसे २० लजार इपिये ले लो. इकीरने अब ली देनेसे ईन्कार कर दीया. आदमीने कला देओ तुम्हारे पास दो पांव-दो डाय-और दो आंजे है. मैंने सिई अेक अेक के दाम लगाये तो ५० लजार इपिये लो गये. अगर दोनों पांव-दोनों डाय और दोनों आंजोका दाम लगाया जये तो उन्की किमत अेक लाज इपिया लो जयेगी. ईस्का मतलब ये है के ये जे तुम्हारे पास बदन है लुओेमे बेशुमार थीं है. डीर तुम गरीब कैसे लो तुम तो बडे दौलतमंद लो. तुम लीज मागना छोड दो और अपनी ईस किमती दौलतको ईस्तीमाल करो. तुमसे ज्यादा काम्याब दुनियामें कोई

नडी लोगा.

ईन्सान को अल्वाडतआवाने बडी अज्जब सवाडीयतों के साथ पैदा कीया है. आम डालातमें उस्का अंदाजा नडी डोता. अलबत्ता जब कोई चीज न रहे तो उस वक्त मालुम डोता है के वो कैसी किंमती थी.

भाज भरतभा आदमी की कीडनी डेव डोजती है. तो उस्की तंदुरस्तीके वीये सिई अेक भात डोती है के वो कीसी दुसरे शप्ससे अेक कीडनी डालिव करे. कीडनी अेक आवीस कुदरती पैदावार है. कीसी ईन्सानी कारभानेमें करोडों रुपिया अर्य करके वी कीडनी नडी बनाई ज सकती. डीर अगर कोई शप्स अेक कीडनी डेटमें देदे तो डॉक्टरोंकी डीस हो- तीन वाप रुपिये और दवाओं वगेरडका अलग अर्य करके कीडनीको बदनमें डीट कीया ज सकता है.

डकीकत ये है के आदमीके पास कुछ न डो तब वी उस्के पास अडोत कुछ डोता है. ये बदन और ये द्दिमाग जे डमको मीवा है. ये तमाम किंमती चीजोंसे जयादा किंमती है. आदमी अगर अपने बदन और द्दिमागकी सवाडीयतोंको भरपुर ईस्तिमाल करे तो वो दुनियाकी डर काम्याबी डालिव कर सकता है. कोई चीज उस्के वीये नामुश्कीन नडी.

अगर आपके पास डाय है. जससे आप पकडे और पांव है जससे आप चले. आपके पास आंभ है जससे आप देभे और जभान है जससे आप डोले तोगोया आपके पास सबकुछ है. और उस्के जरीये दुनियाकी तमाम चीजें डालिव की ज सकती है. कोई चीज मुश्कील नडी.

(अलरिसाला-४-१८८०/१४)

रोजगारके वीये डेडनका सडर करना :-

आज कल नवजवानों में ये भात बढ रही है के वो तालीम डालिव करके डेरुन जना चालते है. ये डेजडान गवत है. अयना वतन कीसी आवा मक्सडके वीये छोडना तो जरूर दुडस्त है. मगर सिई जयादा कमाई के वीये आडर जना डरगीज दुडस्त नडी.

डडीसमें है के जस्की डिजरत अल्वाड तआवा और उस्के रसुल (स.अ.व.) के वीये की है तो उस्की डिजरत अल्वाड तआवा और उस्के रसुल (स.अ.व.) डी के वीये डोगी. और जस शप्सने कीसी

दुन्यवी गर्ज या क्रीसी औरतसे निकाह करने के लीये खिजरत की तो उसकी खिजरत उसी गर्ज के लीये समञ्ज आयेगी. (बुभारी शरीफ)

खिजरत ईस्लाममें अेक बडोत आ बरकत अमल माना गया है मगर ईस्लामके मुताबिक मतलुब खिजरत वो डी है. जे मक्सदे उक के लीये की गर्ह डो. उसके खिलाफ जे आदमी दुनियाको पाने के लीये खिजरत करे वो मुश्कीन है के दुनिया को पाले मगर वो जुदाकी रजाको नही पा सकता. ईस उदीसमें साइ तौर पर मआशी और मादी खिजरत की डॉस्वा शीकनी की गर्ह है. ये कोई सादा बात नही है. उसके अंदर निलायत गेडरी खिकमत छुपी छुई है. ईस्का नमुना पाकिस्तानमें देखा जा सकता है. पाकिस्तान बनने के शुर्ज् अमानेमें वहां बडी तअदादमें आला तालीम याइता लोग जमा डो गये थे. मगर जल्द ही मादी तरक्की के शोकमें लोग पाकिस्तान छोडकर बाहरके मुल्कोमें चले गये. यही सबसे बडा सबब है के पाकिस्तान 40 सालसे जयादा मुदत गुजर जाने के आपुनुद अमतक तरक्की याइता मुल्क न बन सका.

अेशियाई लोग मगरीबी मुल्कोमें जयादा कमाने के लीये जाते है. ईस्की कोई जयादा अडेमीयत नही है. मेहनती आदमी अपने मुल्कमें भी काइी कमाई कर सकता है. अगरये इर्क जरूर है के बाहर जे कुछ मेहनत करो मील जाता है. उसको अपने मुल्कमें पाने के लीये जयादा मेहनत का सुबुत देना डोगा.

अलबत्ता मगरीबी मुल्कोमें अेक आस यीज है जे खिंद्स्तान जैसे मुल्कोमें मौजूद नहीं. और वोहै मामलातमें दीयानतदारी.

(अलरिसाला-4-2003/12)

रोमी मीलनेका यकीन :-

अेक मरतबा मीरजा गालिबके पास उनका अेक ताज्जर दोस्त आया और कडा के मै दीवली छोडकर कलकत्ता जा रहा डुं आपसे इम्सती की मुलाकातके लीये डज्जर डुवा डुं. मीरजा गालिबने पुछा के आप दीवली छोड कर कलकत्ता क्युं जा रहे डो उनडोंने कडा के दीवलीमें मेरा कारोबार नहीं चल रहा है वहां जा कर कोशीष कर्इंगा मीरजा गालिबने कडा के जब आप कलकत्ता पडुंये तो वहां के अल्वाडसे डमारा सलाम कडेना उस पर दोस्तने कडा के क्या वडंके अल्वाड अलग है ? मीरजा गालिबने जवाब दीया के अगर वडंके अल्वाड

અલગ ન હોતે તો આપ દીલ્હી છોડકર કલકત્તા નહીં જાતે. ઉસ્કે બાદ દોસ્ત લાજવાબ હો ગયે ઓર ઉન્હોને કલકત્તા જાનેકા ઈરાદા છોડ દીયા.

પેટ્રોલકી દૌલત :-

હમારે માલદાર તબ્કેકી ઓશ પરસ્તી કુઝુલ ખર્ચી ઓર નામવરીકે જાજબેને અવામ કો ગલત રાહ પર ડાલ દીયા હૈ. જીસ્કી વજાહ સે પુરે મુઆશરેમેં બેચેની કી લહેર ફેલી હુઈ હૈ. સુકુન ઓર ઈત્મિનાનકી દૌલત ગોયા છીન લી ગઈ હૈ. ઓર આખિરકાર યે કહા જા સકતા હૈ કે ઈસ સુરતે હાલકા અસલ જીમ્મેદાર યહી માલદાર તબ્કા હૈ.

હમેં કેહને દીજીયે ! પુરાને રઈસોં ઓર ઉન્કી જાગીરદારી કા નિઝામ તો ખત્મ હો ગયા. મગર પેટ્રોલ કી દૌલત કી નાલી જો યહાં પહુંચી હુઈ હૈ ઓર જીસ ઘર તક ઉસ્કા રાસ્તા હૈ. તમામ “નયે નવાબ” “પુરાને નવાબ” કી યાદ તાઝા કર રહે હૈ. વોહી કુઝુલખર્ચી વોહી શાનો શોકત ઓર ઠાઠ બાઠ ઉન્કી પેટ્રોલ કી “બેહનેવાલી દૌલત” જુતોંસે લે કર આલિશાન મકાનોં તક ઓર ખત્નાસે અકીકા તક ઓર ફાતિહા ઓર મૈય્થ તક કી તમામ રસ્મોં મેં સૈલે રવાં (તુફાની મૌજ) કી તરહ બેહ રહી હૈ. ઓર યે લોગ ઉસ્કે દુન્યવી ઓર આખિરતકે અંજામસે બિલકુલ ગાફિલ ઓર બેખબર હૈ. શાઈર હાલીને અમીરોં કે હાલકી તસ્વીર તખ્તને કે અંદાઝ મેં કીસ કદર સચ્ચી ખીચી હૈ.

અમીરોંકા આલમ ન પુછો કે ક્યા હૈ,

ખમીર ઈન્કા ઓર ઉન્કી તીનત જુદા હૈ.

સઝાવાર હૈ ઉન્કો જો ના સઝાવાર હૈ,

રવાં હૈ ઉન્હે સબકો જો ના રવાં હૈ.

શરીઅત હુઈ હૈ નેકો નામ ઉન્સે,

બહોત ફખ્ત કરતા હૈ ઈસ્લામ ઈન્સે

(નિદાએ શાહી- ૧૨-૧૯૯૧/૩૦)

હર ચીઝ ઈમ્તિહાન કા પરચા હૈ :-

અક્સર મકાન ઓર દુકાન મેં યે જુમ્લા લીખા હુવા દેખા હૈ.

(۱۷۶ . ۱۹ ب) هَذَا مِنْ قَضَلِ رَبِّي (યે મેરે ખુદાકા ફઝલ હૈ) ક્યા ?

ઇસ તરહકી ચીઝેં ઘરોં ઓર દુકાનોમેં ટાગના ચાહીયે ?

મજકુર કુઆની આયત જીસ તરહ અધુરી શકલમેં - મકાનોં ઓર દુકાનોમેં લીખી જાતી હે. ઉસસે ઉસ્કા અસલ મક્સદ નહી ખુલતા. અસલ યે હે કે હઝરત સુલેમાન (અ.લ.) કો અલ્લાહતઆલાને જો ખુસુસી તાકત અંતા ફરમાઈથી ઉસ્કા ઝિક કરતે હુએ આપને ફરમાયા.

قَالَ هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي أَشْكُرُكُمْ أَكْفَرُ وَمَنْ شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّي غَنِيٌّ كَرِيمٌ (પ ૧૧૯. ૧૧)

હઝરત સુલેમાન (અ.લ.) ને ફરમાયા કે યે મેરે રબકા ફઝલ હે. તાકે મુઝે જાચેં કે મેં શુક કરતા હું યા ના શુકી ઓર જો શુક કરે તો વો અપને હી લીયે શુક કરતા હે. ઓર જો ના શુકી કરે તો મેરા રબ બેનિયાઝ હે. કરમ કરનેવાલા હે.

અપની દુકાનોં ઓર મકાનોમેં જો લોગ (પ ૧૧૯. ૧૧) هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي લીખ કર લગાતે હે. વો ઇસ તરહ યે જાહીર કરતે હે કે યે દુકાન ઓર મકાન જો ઉન્હે મીલા હે વો ફઝલ ઓર ઇનામ કે તોર પર મીલા હે હાલાં કે પુરી આયત સામને રખીયે તો માલુમ હોગા કે ઇસ કીસમકી માદી ચીઝેં અલ્લાહકી તરફસે જીસ્કો દી જાતી હે. વો ઉસ્કો બતોરે ઇમ્તિહાન દી જાતી હે ન કે બતોરે ઇનામ.

હકીકત યે હે કે દુનિયાકી હર ચીઝ ઇમ્તિહાન કા પરચા હે. જહાં તક ઇનામે ઇલાહી કા તઅલ્લુક હે વો કીસી બંદેકો આખિરતમેં મીલેગા. મૌજુદા દુનિયામેં નહી. (અલરિસાલા - ૯/૨૦૦૩/૪૪)

કુઆન મજહકે મુતાબિક ઘર યા સાઝોં સામાન જો ઇસ દુનિયામેં કીસીકો મિલતા હે વો નવાઝને કે તોર પર નહીં હોતા બલ્કે જાંચ કે તોર પર હોતા હે. ઇસ દુનિયામેં હર ચીઝ ઇમ્તિહાન કા એક પરચા હે. ઉસ્કે ઝરીયે ખુદા યે દેખના ચાહતા હે કે આદમી ઉસ્કો પા કર ખુદા કા શુકગુજર બના યા સરકશ હો ગયા ?

હકીકત યે હે કે હર ઇન્સાન પર ખુદા કા યે સબ સે બડા હક હે કે વો હર મીલી હુઈ ચીઝ કો ખુદા કી નેઅમત સમજે. ઓર ઉસ પર ઉસ્કા શુક અદા કરે. જો આદમી દીલ ઓર અમલ સે ખુદા કા શુક અદા કરે વહ ઇમ્તિહાન મેં કામ્યાબ હુવા ઓર જીસ્કે અંદર શુક કા જઝબા નહી વો અપને ઇમ્તિહાન મેં નાકામ હો ગયા. જો ચીઝેં નહી મીલી ઉસ્કો પાના

यावते हो तो पहले भीवी दुर्घ चीजों पर जुदा का शुक्र अदा करो. शुक्र असलमें जयादा नेअमते पाने का उकदार बनाने की हैसीयत रभता है.

सुद की उहानी निमारीयां:-

अल्लाहतआवाका ईर्शाद है के अल्लाहतआवाने सोदागरीको उलाल और सुदको डराम किया है. (पारा-३ ३-५)

أَحَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا (٥ ع . ٣)

अल्लाहतआवाने जब सुदको डराम करार दीया है तो उस्मे जरूर ખબासत और नुकशान है.

सुदभाने वाले सुद और सोदागरीको अेक बताते है के जस तरड कारोबारमें कमाना और नक्षा करना दुइस्त है ईसी तरड सुदमें भी जयादती और नक्षा और उस्का लेन देन दुइस्त है. जलीरमें सोदागरी और सुद में नक्षा कमाना होता है. ईसवीये दोनों बराबर है.

लेकिन सुदभोरोंका दोनों (सोदागरी और सुद) में इर्क न करना औसा है जैसा के भीवी और बडेन, दोनों औरत है. मगर अेक से निकाड जर्धज और दुसरीसे डराम है. या जैसे कुतिया और बकरी दोनों जनवर डोनेमें बराबर मगर बकरीका ईस्तिमाल जर्धज और कुतिया डराम है.

तो सुद और सोदागरी को बराबर समजना और उस्के डराम उलाल डोनेका यकीन न करना. उक और आतिलमें इर्क न करना, भरे षोटे को अेक जैसा बताना. पागलोंका काम है.

सुदसे अगरये माल बढता नजर आयेगा मगर वो रंज और गम बढनेका सबब बनेगा- जैसा कीसीके बदन पर वरम (सोज) का आना के उस्मे बदन का बढना नजर आता है. मगर ये जयादती तकवीइ और मुसीबत है. ईसवीये कोई अकलमंद वरमको पसंद नही करता. सुदभोर के पास बंगवा, इेकटरी, कार तो डोगी मगर उस्मे राडत न डोगी और आभिरतका अजाब अलग.

सुदमें अगरये जलीरमें मालकी जयादती नजर आती है. तो दुनियाकी कौनसी चीज औसी है जसमें कोई लबाई और इायदा न डो. साप, बिच्छु, शेर, चित्ता, जेडरीवी चीजें, ईन तमाम चीजोंमें कुदरतने इायदे भी रभे है. ईसी तरड योरी, डकेटी, रिशवत, जिनाकारी,

મક્કારી, ધોકાબાઝી, કીસી ન કીસીકે લીયે કુછ ન કુછ તો ફાયદા ઓર લઝઝતકા સામાન હે.

મગર અકલમંદ તો હરચીઝકે નફા નુકશાન પર નજર રખતા હે. અગર નફા ઝયાદા હો તો ઈખ્તિયાર કરતા હે ઓર નુકશાન ઝયાદા હો તો છોડ દેતા હે. ઈસી તરહ સુદકે હંગામી નફે કે મુકાબલેમેં રૂહાની નુકશાન બહોત સખ્ત હે.

સુદ ઈન્સાનકો ઈન્સાનિયતસે નિકાલ દેતા હે. સુદકી નહુસતસે આદમીકા દીલ સખ્ત ઓર બેરહમ હો જાતા હે. સુદસે સિલા રહમી, ઈન્સાની હમદદી ઓર અખ્લાક કા દરવાઝા બંદ હોજાતા હે.

સુદસે દુનિયાકી મોહબ્બત પૈદા હોતી હે. ફીર યહી દુનિયાકી લાલચ સુદખોરકો હર ઐબ ઓર બુરાઈ ઓર પાપસે ઈન્સાનકો અંધા બના દેતા હે. સુદમેં સરાસર બદઅખ્લાકી ઓર ગરીબોં પર ઝયાદતી ઓર જુલ્મ હે.

હદીસ શરીફમેં સુદ લેને વાલે, દેને વાલે, લીખને વાલે ઓર સુદકી ગવાહી દેનેવાલે સબ પર લઅનત ફરમાઈ હે.

હુઝુર (સ.અ.વ.) ને શબે મેઅરાજમેં કુછ ઐસે લોગમી દેખે જીન્કે પેટ કુલ કર ઓર ફેલકર મકાનોં કી તરહ હો ગયે થે ઓર ઉસ્મે સાપ, બિચ્છું ભરે હુઝે બાહરસે નજર આ રહે થે ઓર યે સુદખોર થે.

હુઝુર (સ.અ.વ.) ને ઈશાદ ફરમાયા - સુદ કા એક દિરહમ ખાના છત્તીસ મરતબા ઝીના કરનેસે બદતર હે. (અલ્લાહકી પનાહ)

જીન્કે સીનોંમેં દર્દમંદ દીલ હે વો જાનતે હે કે ગરીબોં ઓર તંગદસ્તોંકી મદદ કરના ઈન્સાની કમાલ ઓર ઈન્સાની ફરીઝા હે. ઓર કીસી નાદાર ઓર ગરીબકી મજબુરીકા ગલત ફાયદા ઉઠાના જુલ્મ ઓર બુજ્દીલી કી ખાત હે.

ઓર કીસી કર્ઝદાર કા ખુન યુસ કર (સુદ લેકરે) ઉસ કમાઈ પર મહેલ તામીર કરના બડી બે શરમી ઓર હમદદી ઓર રહમ કે ખિલાફ હે.

શરીઅતમેં સુદી કારોબાર, લેનદેન, ના કાબિલે માફી જુર્મ હે. ઈસલીયે મુસલમાનોંકો ઈસસે પુરે તોર પર બચના ચાહીયે.

(મઝાહીરે ઉલુમ - ૬/૧૯૯૭/૮)

बैंक का ईन्टरस्ट भी यकीनन सुद है :-

कुछ आजाद ज्वाल अकलमंदो ने काही अरसे से ये गलत क्रेडमी क्रेवा रभी है के बैंक में रकम रखने पर जे आर्ध रूपिया मीलता है वो तो शिर्कत है. बैंक ईसी रकमसे कारोबार करता है. झीर अपने नफ़ामें से कुछ खिस्सा रूपिया रखनेवालोंको भी दे देता है. बिहाजा ईसे सुद नही कडा जायेगा. लावांके ये बात गलत है.

ईस्वामी किंकड़में बैंक से जे जयादा रकम मीलती है वो भेशक सुदमें दाजील है. जस्के हराम होने पर तमाम उल्मा और कुकडा मुत्तकीक है. क्युं के बैंकमें जे भी ईजाफ़ा (जयादा) मीलता है वो सिर्फ़ मुद्दत गुजरने पर मिलता है. बैंकके कारोबार में शिर्कतका वहां वडेमो गुमान भी नही होता. ईसवीये ये झासिद तावील है के बैंकमें जरी सुदको सुद न समजते दुजे अनजुअकर शिर्कतमें डाल दीया जाये. ये सुदभोरोके शयतानी वस वसे है. जन्डे उम्मत बार बार रद कर चुंकी है.

(अल्लाह से शरम कीज्जे - १२१)

सुदी रकम का ईस्तिमाल :

सुद (व्याज) हरामका माल है. जस्का असल लुकम (मालिक की तरफ़ लौटाना है) ईसवीये अगर लुकुमतका सेलटेक्स, ईन्कमटेक्स, ओक्ट्रोई वगेरलका कोई गेरशरई मुतालिबा हो - तो उस्में ये रकम अदा कर दी जाये. अगर ईस तरलका कोई मुतालिबा न हो तो उस्के वजालसे बचने के वीये सवाबकी निथ्यत कीये बगैर गरीब, मोलताज लोगों पर सद्का करदीया जाये. क्युं के जब मालिक की तरफ़ लौटाने का मुतालेबा न हो तो ऐसी सुरतमें हराम माल इकीरो पर सद्का करना शरीअतमें वाज्जब होता है.

(रुद्दे मुहत्तार - ५/२४७)

ईस सुद की रकमको फुद ईस्तेमाल करना जर्हज नही. जैसाके अपने काम कराने के वीये रिशवत देना या बयतुलजवा की तामीरमें जर्ज करके अपनी जइरतमें ईस्तेमाल करना है ईस वीये जर्हज नही. ये बात भी ध्यानमें रखे के रिफ़ाही (सार्वजनिक) कामों मे ये रकम जर्ज की जाये तो ये अेक हर्ज में सद्का तो है मगर सद्कजे वाज्जबाको अदा करनेका ये तरीका हुरत नही के सुदी रकम से सीधा माल जरीहकर सार्वजनिक कामों में जर्ज

કરદે. બલ્કે વાજીબ સદકે કો અદા કરનેકે લીયે ઝકાત કી તરહ ગરીબ મુસ્તહીક કો ઉસ્કા માલિક બનાના જરૂરી હોતા હૈ.

સાર્વજનિક કામોં મેં ખર્ચ કરનેમેં કીસી કો ઉસ રકમ કા માલિક બનાના નહી હોતા ઈસલીયે જઈઝ નહી- હા અગર કીસી ગરીબ મોહતાજ કો યે રકમ દેકર માલિક બનાઘીયા જાયે. ફીર વો ગરીબ યે રકમ અગર ઈસ્તિમાલ કરને કે લીયે દે તો જઈઝ હે-

(કવાઈદુલ ફિકહ-૮૦) (મઝાહિરૂલ ઉલુમ-૧૧/૧૯૯૭-૩૯)

બેંક કી સુદ કી રકમ ઈન્કમટેક્ષ કી તરહ દુકાનકે ટેક્ષ મેં દેના જઈઝ હૈ. જમીન લગાન (મેહસુલ) મેં ઓર નહેરકે ટેક્ષ મેં દેના જઈઝ નહી. ક્યું કે યે મુતાલિબા શરીયતકે ખિલાફ નહી હૈ. હા. અગર નેહરકા પાની ઈસ્તિમાલ ન કીયા હો ઓર ફીર ટેક્ષ આજાયે તો ઉસ્મે સુદી રકમ દી જા સકતી હૈ. (ફતાવા મઝાહિરૂલ ઉલુમ જાન્યુ. ૧૯૯૮/૩૭)

(૨) કનાઅત

કનાઅત (સંતોષ) કા મતલબ :-

કનાઅતકા મતલબ યે હૈ કે બંદે કો જો કુછ મીલે ઉસ પર વો રાજી ઓર મુતમઈન હો જાયે ઓર ઝયાદા કી લાલચ ન કરે. અલ્લાહતઆલા અપને જીસ બંદે કો કનાઅત કી યે દૌલત અતા ફરમાયે બેશક ઉસ્કો બડી દૌલત અતા હુઈ ઓર વો બડી નેઅમત સે નવાઝા ગયા.

કનાઅત કી વજહસે ઈન્સાન અલ્લાહતઆલાકા મેહબુબ હોજતા હૈ ઓર ઈસ દુનિયામેં ભી ઉસ્કી ઈઝઝત હોતી હૈ. ઓર દીલકી બેચેની પરેશાનીકી સખ્ત તકલીફસે ઉસ્કો નજાત મીલ જાતી હૈ.

હકીકત યહી હૈ કે તવંગરી ઓર મોહતાજ ખુશહાલી ઓર પરેશાની કા તઅલ્લુક રૂપિયે પૈસે સે ઝયાદા આદમી કે દીલસે હૈ. અગર દીલ ગની ઓર બેનિયાઝ હૈ તો આદમી કો ચેન ઓર ખુશહાલી નસીબ હોતી હૈ ઓર અગર દીલ લાલચ મેં ગિરફતાર હૈ તો દૌલતકે ઢેરોંકે બાવુબુદ વો ખુશહાલીસે મેહરૂમ ઓર મોહતાજ ઓર પરેશાન હાલ હૈ.

(મઆરિકુલ હદીસ-૨/૨૯૨)

“તવંગરી બ દીલ અસ્ત ન બમાલ”

કનાઅતકા સબસે બડા ફાયદા યે હે કે વો આદમી કો દુનિયાકે મસાઈલમેં બેકાર ઉલઝને સે બચાતા હે. ઓર વો વક્ત ઓર કુવ્વતકો ઝયાદાસે ઝયાદા આખિરતકે કામોમેં લગાનેકા મોકા દેતા હે. આખિરતકે મુસાફીર કે લીયે કનાઅત ઈત્ની હી જરૂરી હે જીત્ના દુનિયાકે મુસાફીર કે લીયે લાલચ. જીસ આદમીકે અંદર લાલચ ન હો વો દુનિયાકે માલકા માલીક નહી બન સકતા. ઈસી તરહ જીસ્કે અંદર કનાઅત ન હો વો આખિરતકી નેઅમતોંકો પાને સે મેહઝમ રહેગા.

કનાઅતકી ઈન ખુબીયોંકી બીના પર ઉસ્કી બડી ફઝીલત આયી હે. અબ્દુલ્લાહ બિન અમ્ર બિન આસ (રદી.) ફરમાતે હે કે રસુલુલ્લાહ (સ.અ.વ.) ને ફરમાયા :

વો શખ્સ કામ્યાબ હો ગયા જીસ્ને અપને આપકો અલ્લાહકે હવાલે કર દીયા. જીસ્કો જરૂરતકે મુતાબિક રોઝી મીલી ઓર અલ્લાહને ઉસ્કો જો કુછ દીયા ઉસ પર ઉસ્ને કનાઅત કી.

(મુસ્લિમ શરીફ - તિમીઝી) (ઈમાની તાક્ત-૩૮)

હુઝુર (સ.અ.વ.) કા ઈશદિ હે,

અલ્લાહતઆલા અપને અતા કીયે માલ કે જરીયે અપને બંદેકો આઝમાતા હે. બસ ! જો શખ્સ અલ્લાહતઆલાકી તકસીમ પર રાજી રહે અલ્લાહ તઆલા ઉસ્કો કુશાદગી અતા ફરમાતા હે. ઓર જો શખ્સ ઊસ પર રાજી ન રહે (બલ્કે ઝયાદકી લાલચ કરે) તો ઉસ્કો બરકતસે મહેઝમી રહેતી હે. (મજહીઝ અવાઈદ - ૧૦/૨૫૭)

ઈન્સાનકી ખ્વાહીશેં બે હિસાબ હે ઓર દુનિયાકી થીઝેં મેહફુદ. આદમી દુનિયાકી થીઝેં કીત્નીહી ઝયાદા હાસિલ કર લે વો ઉસ્કી તસ્કીન કે લીયે હંમેશા ના કાફી હોતી હે. યહી વજહ હે કે ઝયાદા પાનેવાલા ભી ઈસ દુનિયામેં ઈત્નાહી પરેશાન રેહતા હે. જીત્ના કમ પાનેવાલા. ઈસલીયે ઈસ દુનિયામેં અગર કોઈ થીઝ આદમીકી તસ્કીન કા ઝરીયા બન સકતી હે તો વો કનાઅત હે. ક્યું કે કનાઅત કરનેવાલા હર હદ પર મુતમઈન હોજતા હે. જબ કે લાલચ કરનેવાલા કીસી હદપર મુતમઈન નહી હોતા.

કનાઅત આદમીકો બેસબરી સે બચાતી હે. વો કડવી યાદોંકો

बुवा देती है. वो नापुशगवार छंदगीको पुशगवार छंदगी बना देती है.
(अल रिसाला-१/१८८१/४२)

दुनियामें धन्सानोंके दरम्यान उय-नीय रहती है. धसवीये अक्सर धन्सान सुकुनसे मेडरुम छंदगी गुजरते है. वो उन लोगोंको देपते रहते है जन्को उन्से जयादा भीवा बुवा है. धस तरल वो अइसोस करते बुजे धसी डालमें मर जते है.

धस्का डल धस्वाम में कनाअत अताया गया है. कनाअत आदमीको धस काबील बनाती है. वो भीवे बुजे पर राख रहे और न भीवी बुध यीजोंके गममें अपने आपको डल्का न करे. धसवीये के पुदाके डेस्वेंके मुताबिक दुनियामें डर अेक को वोडी भीलता है जे पुदाने उस्के वीये मुकर्रर कर दीया है और जस्को कम भीवा वो भी पुदाके डुकम से था. और जस्को जयादा भीवा वो भी पुदाके डुकम से था.

ये अकीदा आदमीको डंमेशा सुकुन अता करता है. डीर वो धस यकीनमें जने लगता है के उस्को जे कुछ भीवा वो अथानक नही भीवा बल्के वोडी भीवा जे उस्की बेडतरी के वीये उस्को भीलना याडीये था.

अरछी छंदगी :-

मुतवक्कील अलव्वाल अेक अब्बासी पलीइा था. इत्ल बीन पाकान अेक रोज पलीइाकी पिटमत में लाज्जर बुवा और कडा के अमीड्ल मुअमिनीन ! आप कुछ इिकरमंद मालुम डोते है. डालां के आप वो शप्स है जस्को दुनियामें सबसे जयादा आरामके सामान डालसिल है. पलीइाने इत्ल बीन पाकानकी आत सुनकर अपना सर उठाया और कडा :

अय इत्ल ! मुजसे जयादा अरछी छंदगी उस शप्स की है जस्के पास अेक कुशाडल मकान डो. नेक भीवी डो. नइरतके मुताबिक रोडीका धन्तजाम डो. न डम उस्को जानते डो के उस्को तकवीइ दे. और न वो डमारा मोडतान् डो के डम उस्को डस्वा करे. (तारीपुल पुलइा - २४१)

“अरछी छंदगी” उस्का नाम नही के आदमी के पास छंदगीके साजो सामान जयादा डो. अरछी छंदगीका राज “कनाअत” है और कनाअतकी दौलत उस्को भीवती है जे नइरतकी यीजें भीलने पर राख

हो ज्ये और शोहरत और धज्जत से बेनियाज होकर जना जनता हो.

कीसीको जरूरतके मुताबिक रोजी भीले तो उससे बढ़कर कोई नेअमत नहीं. जरूरतकी रोजी पर राज न होना सिई बाबयकी बीना पर होता है और बाबयी आदमी को कभी धम्मिनान नहीं होता.

नेक बीवी धसलीये है के वो छंढगीकी रङ्गीक (साथी) बने और आदमीके वीये धरेवुं सुकुनका जरीया बने. मगर ये झयदा सिई नेक बीवीसे हासिल होता है. दुसरी भुबीयां औरतमें जे तलाश करता है वो भुबीयां इना होने वाली है. और नये मसाधल भी पैदा करती है.

कीसी के पास कुशादा मकान हो तो उसका मतलब ये है के उसको भुद अपनी अेक दुनिया हासिल है. जहां वो अपनी राहतकी छंढगी उसके अंदर गुजर सकता है. दीनदार अकलमंद आदमी के वीये कुशादल मकान गोया तुझाने नुल के दरम्यान अेक “कशती अे नुल” है.

गुमनामी आदमी के वीये सबसे बडी आझीयत है क्युं के जे शप्स नामवारी हासिल करले उसको असद करने वालों के असद से बचना मुशकील है.

धसी तरल जस शप्सको भुदाने दुसरो की मोहताज से बचाया हो उससे बडी भुशकिरमती और कोई नहीं. क्युं के लोगोंका डाल ये है के वो जैन भौके पर आदमीको जलील कर देते है. जब वो डाजतमंद बनकर उन्के सामने गया हो.

(धमानी ताकत - २९)

कनाअत (संतोष) और तरकडी :-

अकसर जबरें आती है के इवां बडी कंपनी देवालीया हो गध. जैसा क्युं होता है ? के बडी बडी कंपनीयां देवालीयापन का शिकार हो जाती है. धस्का सबब सिई अेक है. और वो है. अपनी ताकतसे जयादा बडी छलांग लगाना. आम तौर पर जैसा होता है के अेक कंपनी के पास अपना जाती सरमाया खंद भीवीयन डॉलर है. मगर वो अेक जैसे कारोबार का मनसुबा बनाती है जस्को काधम करनेके वीये कंठ भीवीयन डॉलर की जरूर पडती है. अब वो बेंकसे सुदी कर्ज लेती है और ये कर्ज सुद के साथ किस्तोंमें अदा किया जाता है. अब अगर कंपनीकी कमाध सडी अंदाज में चलती रही तो कर्ज भी अदा होता रहेगा. लेकिन अगर कीसी वजहसे

आमदनीमें भल्ल (गरबड) पड ज्ये तो कंपनी ईस काबिल न रहेगी के कर्जको अदा कर सके. ईसी निजामके टूटनेका नाम देवालीयापन है. ये ऐसा मामला है जे हर दुनियापरस्त ईन्सान को कीसी न कीसी शकलमें पेश आता है.

क्युं के हर आदमी पैदाईशी तौर पर जयादाकी तलब रખता है. अपनी तलबमें कीसी छेद पर रूकना ईन्सानी मिजजके खिलाफ है. ईसी वीये ईन्सान जयादा तलबकी कमजोरीसे बच नही सकता. हीर जे तकवीर्कि पेश आये उसका कोई छल भी नही निकलता.

ईस मामले का छल सिर्फ अक है और वो है “आभिरत पसंद” मिजज. आभिरत पसंदी के मुताबिक ईस मस्अवेका छल ये है के आदमी दुनियामें जरूरत पुरी करने पर राजी हो ज्ये और आभिरतमें जयादा मीलनेका यकीन पैदा करे और उसका तलबगार हो. यानी दुनिया में जरूरत के पुरा होने को काफ़ी समजना और जयादा की तलब को आभिरत पर छोडना.

छरत झाड़के आजम (रही.) के आभिलों (गवर्नरों) के पास से जब कोई कासीद आते तो उनसे आभिलोंकी जेरियत पुछते और उनके डालात मालुम करते लेकीन उसका मतलब दीनी जेरियत और दीनी डाल पुछना होता था न के आज कल की रिवाज मिजज पुरी.

शुनाये अक आभिलके पास से आनेवाले कासीद से जब आपने आभिल की जेरियत पुछी तो उसने कडा.

“वहां जेरियत कहां है ? मैंने तो उनके दस्तरख्वान पर दो-दो सालन जमा देभे. गोया रसुले अकरम (स.अ.व.) जस तर्ज छंढगी पर सडाभा (रही.) को छोडकर गये थे. बस ! उस पर कायम रहेनाही उन छरतके नजदीक जेरियतका मेअ्यार था.

(छरत मौलाना ईल्यूस (र.अ.) और दीनी दखवत - १/१८८५/५२)

कनाजत उल्लजों का हल :-

जून लोगोंके पास पैसा कम होता है. वो बडोतसी परेशानीयोंमें मुभ्तवा छोते है. वो समजते है के परेशानीयां पैसों की कमी की वजहसे पैदा होती है. अगर पैसे जयादा आ ज्ये तो उनकी तमाम परेशानीयां

अन्तर्गत लो जयेगी. मगर लकीकत ये हे के अस तरल पैसेकी कमीसे परेशानीयां हे. ईसी तरल पैसे जयादा लो तो भी परेशानीया आती हे. अस शप्सके पास पैसे जयादा लो जये उस्की उल्जने बढ जाती हे. यलां तकके उस्को सुकुन के साथ रातके वक्त सोना भी मुशकीव लो जाता हे.

ईस दुनियामें सुकुनवाली छंदगी का राज सिई अेक हे और वो वली हे उस्को शरीअतमें “कनाअत” (संतोष) कला जाता हे. यानी जे कुछ जुदाने दीया हे उस पर सबर और शुक्से रहना. अगर कनाअत नली हे तो बेयेनी की सजा हर आदमी को लुगतनी पडती हे. ईसलीये के कनाअत न करनेवाला जुदाकी तकसीम (अपनी तकदीर) पर राज नली हुवा.

आम आदमी सिई ये जन्ता हे के मेरा असल काम हे में दौलत कमाउ. लावांके दौलत कमाना ली अगर सब कुछ लो तो दौलतमंद आदमी कभी कीसी परेशानी में मुअतला न लो. लकीकत ये हे के दौलत लासिल करने से भी जयादा बरूरी ये हे के छंदगी का ईल्म लासिल कीया जये आदमीको जना आ जये तो वो हर लावमें सुकुन के साथ ज सकता हे. याहे उस्के पास पैसा जयादा लो या कम.

पीछले दौर का ईन्सान सुकुन की छंदगी गुजरता था. आज कीसीको सुकुन लासिल नली. क्युं के उन्के पास दीन और अज्लाक के लीये काई वक्त लोता था मगर आजका ईन्सान दुनियाकी यीजों के पीछे भाग दौड में ईत्ना मशगुल हे के दीन और अज्लाक नैसी यीजों के लीये उस्के पास कोई वक्त नली.

कनाअत का हर शप्सको ये पैगाम हे के दुन्यवी नुकशान का गम न करो अगर वो लो युका हे तो वो अेक लोनेवाली भातथी जे लुई. और अगर उस्का सिई अंदेशा (डर) हे तो बलौतसे अंदेशे अैसे हे के आदमी उन्के लीये अपने आपको परेशान करता हे. लावांके वो कभी पेश नली आते.

कनाअतका सबसे बडा फायदा ये हे के वो आदमी को दुनियाके मसाईलमें गेरबरूरी तौर पर उलजने से बचाता हे. ईस तरल उस्को मौका देता हे के वो अपनी कुवत और वक्त को जयादासे जयादा आभिरतके

कामों में लगा सके.

कनाअतकी ईसी अलमियतकी बिना पर लदीसमें उसकी बडी इजीवत आई है.

लउरत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रही.) इरमाते ले के रसुले अकरम (स.अ.व.) ने इरमाया. वो शम्स काम्याब हो गया जइसे अपने आपकी अल्लाह के सुभुद कर दीया. जइसी बकदरे नउरत रोजी मीली और अल्लाहने उसको जे कुदु दीया उस पर उसने कनाअत की.

قَدْ أَفْلَحَ مَنْ أَسْلَمَ وَرَزَقَ كَفَافًا وَقَعْتَهُ اللَّهُ بِمَا آتَاهُ (مسلم و ترمذی)

जेहनी सुकुन :-

मौजूदा जमानेका शायद सबसे बडा मस्अला ये है के आज कीसी भी ईन्सानको जेहनी सुकुन हासिल नही. अकसर आदमी जेहनी तनाव और इकिरी उल्जनों में मुब्तला है. याहे वो अमीर हो या गरीब. सामान वाला हो या बगैर सामान वाला.

पीछले साल बेंगलोर में अेक कोम्प्युटर अेन्जनीयर को उसकी अेक ईज्जद (नवी शोध प्रोजे) पर अमरिका की तरफसे ७५० मीलीयन डॉलर अयानक मिल गये. मगर ईस बखत बडी दौलतने उसको जेहनी परेशानीमें मुब्तला कर दीया. यहां तक के अेक साल के अंदर उसका ये डाल डुवा के उसकी निंद अत्म हो गई. और रातको गोलीयां भाकर सोने लगा. मौजूदा दुनियाके अकसर लोगोका डाल यही है. याहे वो बडे हो या छोटे.

आम तौर पर आदमी अपनी उल्जनों का डल ईस्में समजता है के जयादा से जयादा दौलत कमा कर जयादा से जयादा राहत का सामान हासिल हो. मगर तजुर्बा ये बताता है के मौजूदा दुनियामें बखतसे लोग है. जन्होंने बेशुमार दौलत कमाई और राहत और आरामके तमाम सामान जमा कर लीये. मगर ईस्के बावजूद सुकुन और यैनसे मेडरूम रहे. यहां तकके वो ईस दुनियासे बले गये-

भुदाका ये कानुन है के सिई दुनिया के राहत के सामानमें जेहनी सुकुन तलाश करना अेक अैसा बेइइहा अमल है. जे कभी काम्याब होनेवाला नही.

जेडनी परेशानी वालों को लंमेशा मेडडमी का डर सताया करता है. न दीन को सुकुन रेडता है न रात को. उन्को ये समजना थालीये के “अक शप्स आपका रोजगार छीन सकता है. मगर वो कभी आपकी किस्मत को छीन नहीं सकता.

हसना और रोना :-

लोग दुनियाकी काम्याबी को काम्याबी समजते है ईसलीये वो ईस्को पाकर डसते है. वो लुल जते है के थोडे दीनों के बाद ये काम्याबी उन्का साथ छोड देगी. ईसी तरड जे लोग काम्याबीसे मेडडम डोते है वो रोते है. वो लुल जते है के थोडे दीनों के बाद उन्के लीये लंमेशाकी काम्याबीका दरवाजा खुला डुवा है. शर्त ये है के वो ईस लंमेशाकी काम्याबी के लीये वडी मेडनत करे जे उन्डोंने थोडे दीनोंकी काम्याबी के लीये की थी.

मौनुदा दुनिया में ईन्सानका हसना और रोना दोंनो जे माअना है. क्युं के उस्का हसना भी गेर डकीकी (बनावटी) थीऊके लीये है. और उस्का रोना भी गेर डकीकी (बनावटी) थीऊ के लीये ईस दुनिया को पाना और उससे मेडडमी दोंनों डी बिलकुल गेर डकीकी है.

ईन्सानको थालीये के वो डकीकी थीऊ को अपना मकसद बनाये और आबिरतकी लंमेशाकी काम्याबी के लीये अमल करे. जे लोग ऐसा करे वोडी लोग डसनेवाले दीन डसेगे. और जे लोग ऐसा न करे उन्के लीये सिई अक अंजम मुकददर है... दुनियामें भी रोना और आबिरतमें भी रोना.

(अलरिसाला - ४/१८८८/५)

अरबाब ईणितयार करना :-

अकलमंद मुसलमानका काम ये है के डर काममें असल बरोसा तो अल्लाड तआला पर रजे. मगर जलीरी और मादी अरबाब को भी नजर अंदाज न करे. इस कदर जर्णज अरबाब अपने मकसद के डसिल करनेके लीये उस्के ईणितयारमें डो उन्को बड्ठे डार लानेमें कोताली न करे और रशुले अकरम (स.अ.व.) ने भी ईस्की तालीम इरमाई है. और यडी पयगंबराना तपककुल और सुन्नते रशुल (स.अ.व.) है.

(म-कु-५- ११२)

(३) सफ़र

सफ़र :-

हदीसमें आया है के “सफ़र अज़ाब का ओक नुज़व है.”

ईस हदीसका ये मतलब नही के सफ़र कोई बुरी चीज़ है. और ओहले ईमानको सफ़र नही करना चाहीये. ईस हदीस में “अज़ाब” हर अरब थकन और मशक़त के भाअना में है. ये बात भुद रिवायत के अगले अल्फ़ाज़ से साबित है. खुंनाये आप (स.अ.व.) ने इरमाया सफ़र आदमीको पाने और पीने और सोने से रोक देता है. ईमाम नववी (र.अ.) ने उस्की यही तशरीख़ की है.

(सही मुस्लिम शर्ह नववी - ७०/१३)

थकन और तकलीफ़ ईस्लाम के दुसरे आमाव में भी है. जैसा के रोज़ा उन्न, जिहाद वगेरह. वाकिआत बताते है के भुद रसुले अकरम (स.अ.व.) ने बार बार सफ़र इरमाया. नभुव्वत से पहले आप (स.अ.व.) ने तिजरत के लीये सफ़र कीये. नभुव्वत के बाद भी ये सिलसीला जारी रहा. जैसाके हम्पती सफ़र, डिजरत का सफ़र, जिहाद का सफ़र, उन्न और उमरह का सफ़र वगेरह.

इकीकत ये है के सफ़र ओहद अलम चीज़ है. अगर वो सही ओहदके साथ कीया जये तो सफ़र ओन ईबाहत बन जाता है. ईसलीये कुर्आन में ओहले ईमानकी ओक सिइत (१६.११) $اَلسَّائِغُونَ$ बताई गई है. यानी सफ़र करने वाले. (सुरअे तौबा-११२)

मौजूदा दुनियामें इर अरुधे कामके साथ तकलीफ़ जुडी छुई होती है. ईसी तरह सफ़र भी ओक तकलीफ़ का मामला है. मगर कीसी चीज़का तकलीफ़ वाला होना या कठीन होना कोई बुराई की बात नही. ये कठीनाई ही वो चीज़ है जे कीसी अमलमें ज़न पेदा करती है.

मुश्कीलात ईन्सान के दीमाग को जगाती है और आदमी के तजुरबात में ईजाज़ा होता है. और यही आदमी को नये तजुरबात तक पहुँचाती है.

इकीकत ये है के ईल्म का पयास हीसद ५०% डिस्सा अगर मुतावा के जरीये हासिल होता है तो उस्का बाकी ५०% सैर और सफ़र के

जरीये लासिल होता है. किताबी मुताला अगर मालुमात को बढ़ाता है तो सहर तजुरबात में छंजाड़ा का जरीया है.

(अल रिसाला - २/१८८८/२४)

सहर के आदाब :-

- ❖ सहरमें रवाना होते वक्त यार रकात नफील नमाज पढ लेना चाहीये. (मजमउज्जवाइद)
- ❖ हमारे प्यारे नबी (स.अ.व.) जुमेरातके दीन सहरमें जाने को पसंद करमाते थे. (बुभारी शरीफ)
- ❖ तन्हा सहर करनेसे आप (स.अ.व.) ने मना इरमाया. और उसकी तरगीब ही के कमअजकम तीन आदमी साथ लो. (तिमीजी)
- ❖ और इरमाया सहरमें तीन आदमी साथ लो तो अेक को अभीर बना ले. (अबु दावुद)
- ❖ और इरमाया के सहर में ज्जुस्के पास अपनी जरूरतसे जयादा खाने-पीनेकी चीजें लो तो उन लोगों का ख्याल करे ज्जुस्के पास अपना तोशा न लो. (मुस्लिम शरीफ)
- ❖ आप (स.अ.व.) की आदते शरीफुल थी के जब सहर से वापस तशरीफ लाते तो याशत के वक्त मदीना में दाखिल होते और पहले मस्जिदमें जाकर दू रकात पढने कीर (कुछ देर) लोगोंकी मुलाकात के लीये वहाँ तशरीफ इरमा रलेते. (बुभारी शरीफ)
- ❖ और इरमाया सहर में अपने साथीयों का सरदार वो है ज्जे उन्का भिदमत गुजर लो.
- ❖ ज्जे शम्स भिदमतमें आगे बढगया तो उसके दुसरे साथी उससे आगे नहीं बढ सकेंगे. हा ! अगर कोई शहीद लो जये तो वो आगे बढ जयेगा. (भयलुकी शरीफ)
- ❖ सहरमें ज्जुन लोगों के पास कुत्ता या घंटी लो उन्के साथ (रहमतके) इरिशते नहीं लोते. (मुस्लिम शरीफ)
- ❖ जब कीसी मंजील पर उतरो तो सब साथमें कियाम करो. और अेक ही जगा रहो और दुर दुर कियाम न करो. (अबु दावुद)
- ❖ सहर अजाबका अेक टूकडा है. तुम्हे निंद और खाने पीनेसे रोकता है.

लिडाजा जब वो काम पुरा होगये छस्के लीये गये थे तो बल्ही घर
वापस आ जाओ. (बुभारी शरीर)

जुंछगी का सङ्ग्रह:-

भाऊ भरतबा आदमी अपने काम के लीये सङ्ग्रह में जाता है और
सवारी पर सवार होकर अपनी मंजिल की तरफ आगे बढ़ता है. अथानक
कोई डाँटसा पेश आ जाता है और आदमी का धिन्तिकाव हो जाता है.

धिस तरह के वाकेआत मुप्तलीक शकलों में हर रोज़ होते रहते
है. हर दीन भेशुमार लोग मौत के दरवाजे में द्वापिल हो जाते हैं. हर रोज़
बापों आदमीयोके साथ ये वाकेआ पेश आता है. वो अपने मुकाम से
निकल कर कीसी मंजील के लीये रवाना होते हैं मगर दरम्यान में ही उन्को
पुद्दाके इरिशते पकड़ लेते हैं और उन्को अपनी मंजीलके बजये आपिरतकी
मंजील पर पहुँचा देते हैं.

हर आदमी उम्मीदों और तमन्नाओं की अक दुनिया अपने
जेहनमें लीये लुअे है. वो समजता है के मैं अपनी उम्मीदों की दुनिया की
तरफ़ बढ़ रहा हूँ. मैं अपने प्वाबोंको पुरा करने जा रहा हूँ. मगर बहोत
बल्द उसे मालुम होता है के वो अपनी तमन्नाओं वाली दुनिया के
बजये पुद्दाकी दुनियाकी तरफ़ बढ़ रहा था. वो दुनियाकी मंजीलकी तरफ़
नहीं बल्के आपिरतकी मंजील की तरफ़ चला जा रहा था. आदमी कहां
जा रहा है ? और कहां पहुँच रहा है ? मगर कीसी को उसकी ખबर नहीं.

आदमी अपने बर्यों के मुस्तकबील की ખातिर अपना सब
कुछ लगा देता है मगर उससे पहले के वो अपने बर्यों के मुस्तकबील को
देख कर पुश हो वो पुद्द अपने उस मुस्तकबील की तरफ़ झंक दीया जाता
है छस्के लीये उसने कोई तैयारी नहीं की थी. आदमी अपने आराम के
लीये अक शानदार मकान ખडा करता है मगर अभी वो वक्त नहीं आता
के वो अपने मकानमें सुख चैन के साथ रहे. के मौत उसके और उसके मकान
के दरम्यान ખडी होजाती है.

आदमी अपने मआश (रोजगार) को बढ़ाता है वो समजता
है के मैं धिज्जत और तरककीयोकी बुलंदी पर अपने आपको बिठाने जा
रहा हूँ. मगर बहोत बल्द उसको मालुम होता है के आने वाला दीन

उस्के वीये जूस यीजका धन्तिजार कर रखा था वो अेक सुन्सान कब्र थी. न के धज्जत और तरक्की की रौनके.

पुदा हर दीन कीसी मंजील के मुसाफिरको कब्र में पलुंया रखा है. मगर आदमी धन वाकेआतसे असर नहीं लेता. हर आदमी अपने वीये यही समजता है के वो अपनी मंजील की तरफ जा रहा है. और कब्रकी मंजील उस्के वीये कभी आने वाली नहीं.

हवाई जहाज की सवारी :-

हवाई जहाज की सवारी आज बलोट जयादा आम हो चुकी है. धसवीये लोगों को उस्के गेर मामुवीपन का अेहसास नहीं होता. उकीकत ये है के हवाई जहाज अल्लाह तआला की अेक अज्जम नेअमत है. हवाई जहाजने आज लंबे सफ़रों को हर आदमी के वीये मुम्कीन बना दिया है. पहले के जमाने में बलोट कम लोग लंबे सफ़र का हॉस्वा कर सकते थे.

वार्ड करजन अेक बेहद अमीर जानदान से तअल्लुक रખता था. वो १८ वी सदी के आधीरमें हिंदुस्तान का वार्धस रॉय बना. मगर ध.स. १८८८ में जब वो हिंदुस्तान का वार्धस रॉय होकर रवाना हुवा तो लंडनसे कलकत्ता तक का सफ़र तय करनेमें १७ दीन लग गये उस वकत हवाई जहाज का सफ़र चालु नहीं हुवा था.

आज अेक आदमी हवाई जहाजमें बैठकर बंद घंटोंमें अेक मुल्कसे दुसरे मुल्क और अेक बर्रआजम से दुसरे बर्रआजम में पलुंय जाता है. हवाई जहाज अपने अंदर सेंकडो मुसाफ़ीरों को बिठा कर हवा में उडाता है और पुशकी और समंदर, पहाड की हर इकावट को पार करते हुअे निहायत तेजी के साथ लोगों को उन्की मंजील पर पलुंया देता है.

ये किन्ना हैरत नाक वाकेआ है. आज बेशुमार लोग धस सफ़री सलुवत से शायदा उठा रहे है. मगर शायद ही कोध हो जूसका डाल ये हो के पुदाकी धन्नी बडी नेअमतको सोचकर उस्की जूसम के रोंगटे ञडे होजाये. और वो तअज्जुब के समंदर में गरेक होकर केले उठे.

فَيَأْتِي الْآءِ رَبُّكُمْ فَتَكْفُرُونَ (پ १० ع १८)

“तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअमते नुठवाओगे.”

બેશુમાર લોગ રોજાના હવાઈ જહાઝ સે સફર કરતે હે. મગર મુસાફીરોં કે ચહેરે ઓર ઉન્કી બાતચીત બતાતી હે ઈસ કુદરતી મોઅજ્જા કો સોચકર કીસીકે અંદર ઈબ્રત કી લેહર પૈદા નહી હોતી. મઝહબી ઈન્સાન હો યા સેક્યુલર ઈન્સાન. દોનોં કિસમકે લોગ હવાઈ જહાઝ કા સફર તો કરતે હે. મગર સફરકે દરમ્યાન ઉન્કી અકલ રબ્બાની સફર તય નહી કરતા. ઉન્કા હાલ તકરીબન ઉસ જાનવર જૈસા હે જીસ્કો એક મુકામ પર જહાઝ મેં બિઠાયા જાયે ઓર લેજાકર ઉસ્કો દુસરે મુકામ પર ઉતાર દીયા જાયે.

આજ અલ્લાહત આલા ને હર આદમી કે લીયે જમીન કી તુન્નાબે (દુરકે ફાસ્લેકી રસ્સી) ખીંચ કર સફર કો મુખ્તસર બના દીયા હે. મગર કુર્આન મજીદ કે ઈશાદ કે મુતાબિક (૨૯ ૨૨) **وَقِيلَ لِمَنْ يَدْعُوا وَلَوْ كَانُوا فِي آلِهَتِهِمْ كَمَا يُحْسِبُونَ**

મેરે બંદોં મેં શુક ગુજાર કમ હી હોગે - ઉસ્મેં મોમીન કે લીયે તન્બીહ ઓર સબક હે શુક ન કરને પર.

હવાઈ જહાઝ ફીઝા મેં ટેક ઓફ (Take off) કરતા હે. ઓર ઉડતે હએ ૮ સે ૧૦ કિ.મી કી ઉંચાઈ તક પહુંચ જાતા હે. ઓર ફીર આહિસ્તગી કે સાથ નીચે આકર જમીન પર ઉતરતા હે. ઈસ કિસમકી બાતોંકો ટેકનોલોજી કા કારનામા સમજા જાતા હે. મગર હકીકત યે હે કે વો **وَإِنَّا كُنْمُ مِنْ كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ (سبأ. ۱۳)** કા કરીશમા હે. (સુરએ ઈબ્રાહીમ-૩૪)

બડી મેહરૂમી:-

ટ્રેન કે A.C. કોચ મેં જયાદા તર ખુશ હાલ તબ્કે કે લોગ સફર કરતે હે. દોખને મેં હર મુસાફીર કે ચેહરે પર ફાખ્ર ઓર ખુશીકે જઝબાત નુમાયા હોતે હે. કોઈ આરામ વાલી સીટ પર બેફિકરી કે સાથ દરાઝ હોતા હે. કોઈ અપને મોબાઈલ ફોન પર ફાતિહાના લેહજે મેં અપને દોસ્તસે બાત કરતા હે. કોઈ હંસ હંસ કર અપને સાથી કે સાથ બાત ચીતમેં મશ્ગુલ હે. ઈસ મંજર કો દોખકર જૈસા મેહસુસ હોતા હે જૈસે હર આદમી અપની ઝબાને હાલસે યે કેહ રહા હો કે યે જો કુછ મુજે મીલા હે યે કીસીકી દૈન નહી. યે મૈને ખુદ અપની મેહનત ઓર અપની સલાહીયત સે હાસિલ કીયા હે. ગોયા યે વોહી સોચ હે જો કાઝન કી ઝબાનસે નિકલી થી જીસ્કો કુર્આન મજીદમેં ઈન અલ્ફાઝમેં નકલ ક્રિયા ગયા હે.

(૧૦૯ . ૨૦ પ) إِنَّمَا أُوتِيَنَّا عَلَيْنَا عِلْمٍ

યે મંજર દેખકર દીલ તડપ ઉઠતા હે કે લોગ હકીકતસે કિત્ના ઝયાદા દુર હે. જો ચીઝ સરાસર અલ્લાહ કી દૈન હે. ઉસ્કો વો અપની જાતી મિલકીયત સમજ રહે હે. જન ચીઝોં કો પાકર ઉન્હે ખુદાકે શુક્રમેં ડુબ જાના ચાહીયે થા. ઉસ્કે બજાયે વો સિફ ફખ્ત ઓર બરતરી કી ગીઝા લે રહે હે. યે યકીનન ઈન્સાન કી સબસે બડી મેહરૂમી હે.

ટ્રેનકે જીસ કોચ મેં એરકન્ડીશન હોતા હે. ઉસ્મેં સવાર હોકર સફર કરનેવાલા જબ ઉસસે નિકલ કર બાહર પ્લેટફોર્મ પર આતા હે તો અચાનક ઠંડક કે બજાયે ગરમ મૌસમ હોતા હે. એક તરફ ઠંડા દુસરી તરફ ગરમ. ગરમી કા યે માહોલ દેખકર કુઆન મજીદકી વો આયત યાદ આતી હે.

بَاطِنُهُ فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهُ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ (૧૮૯ ૨૮ પ)

એક તકસીરકે મુતાબિક રહમત ઓર અઝાબ કે અલ્લાહ તાબીરી તૌર પર ઈસ્તિમાલ હુએ હે. ચુંનાયે યહાં રહમત સે મુરાદ મોમીનોં કા નુર ઓર અઝાબસે મુરાદ મુનાફિકીન કી જુલ્મત મુરાદ હે.

(કુર્બુબી - ૧૭/૨૪૬)(અલરિસાલા - ૮/૨૦૦૧/૪૯)

નઈ બસ્તી મેં દાખિલ હોતે વક્ત :-

કીસી નઈ બસ્તી મેં દાખિલ હોને કા ઈસ્લામી તરીકા યહી હે કે અગર નમાઝકા વક્ત હો ગયા હો તો પહેલે મસ્જીદમેં દાખિલ હોકર મુકામી મુસલમાનોં કે સાથ બાજમાઅત નમાઝ અદા કીજાયે. ઓર અગર નમાઝ કા વક્ત નહી હે તો દો રકાત નફીલ પઢકર અપને લીયે ઓર બસ્તી વાલોં કે લીયે દુઆ કરે. ઉસ્કે બાદ બસ્તી કે અંદર જાયે.

હિજરતે મદીના કે વક્ત અલ્લાહતઆલાને રસુલુલ્લાહ (સ.અ.વ.) કો ઈસ દુઆ કી તલકીન ફરમાઈ. તાકે મક્કા સે નિકલના ઓર ફીર મદીના પહુંચના દોનોં ખેર ખુબી ઓર આફીયત કે સાથ હો. ઈસી દુઆ કા નતીજા થા કે હિજરત કે વક્ત પીછા કરનેવાલે કુફરકી ઝદ સે અલ્લાહતઆલાને આપકો હર કદમ પર બચાયા ઓર મદીના મુનવ્વરહ કો હર તરહ આપકે ઓર સબ મુસલમાનોં કે લીયે સાઝગાર બનાયા.

ઈસી લીયે બાઝ ઉલ્માને ફરમાયા હે કે યે દુઆ હર મુસલમાનકો

तमाम मकसदों के शुरुआत में याद रखना यादीये के हर मकसद के लीये ये दुआ मुझीद है. दुआ ये है.

وَقُلْ رَبِّ أَنْجِلْنِي مِنْ غَلِّ صَدِقٍ وَأَخْرِجْنِي مِنْ غَلِّ مُنْكَرٍ صَدِيقٍ وَجَعَلْ لِي مِنْ لَدُنْكَ سُلْطَانًا نَصِيرًا ۝ 15

“वकुल रब्बी अदभीदनी मुदअल सिदकीव वअभरीरनी मुअरर सिदकीव वअवलवली भील लहुंन्क सुलतानन नसीरा.”

(म-कु-11/129)

ईस दुआ का तअल्लुक कीसी बस्तीमें दागिल होने और निकलने दोनोंसे है. ईस्का मतलब ये है के अय मेरे भुदा ! निकलनेमें ली तुं मेरी मदद करमा. और दागिल होनेमें ली तुं मेरी मदद करमा. हर वक्त और हर लम्हा के लीये तुं मेरा ताकतवर मददगार बन जा.

(४) सेहत और तंदुरुस्ती

सेहत के लीये जरूरी तदबीरें :-

सेहत की लावत में परलेज करना बिमारी के वक्त दवा पीने से बेहतर है. अक्लमंद वो है जे बिमार होने से पहले सेहतका प्याव करके उसकी तदबीर कर लेता है. सेहतकी डिफाजतके लीये जिन चीजोंका प्याव रखना जरूरी है उनमें खाना पीना, काम करना, सोना, जगना, सोलबत, रंज और गम और बदनके दुसरे आजा की देभवाल जरूरी है. पहलेवी तदबीर खाने की है. के जरूरत के मुताबिक खाना खालिये भुब सेर डोकर न खाये.

डुजुर (स.अ.व.) का ईशाद है के ईबने आदम के लीये पेट भरकर खाने से ज्यादा कोई चीज नुक्शान करने वाली नही है. ईन्सान के लीये ईत्ने लुकमें काड़ी है जे उसकी पीठ को सीधा रख सके. यानी पेटका अक डिस्सा खाने के लीये. और अक डिस्सा पानी के लीये. और अक सांस के लीये.

डुजुर (स.अ.व.) का ईशाद है. पेट तमाम बिमारीयोंका घर है. और परलेज तमाम दवाओं का सर है. और हर बिमारी की जड ठंडक है. अस ! हर बदन का ईलाज ईस चीजसे करो जइस्का वो आदी हो.

अकसर ईन्सानों को देखा गया है के वो जयादा भाते है. रदी और गंदे भानों के आदी होते है. अगर ये वो तंदुरस्त भी हो झीर भी बिमारीयां उनमें पोशीदा रेहती है. ईसवीये बेदतर ये है के जाने पीनेमें दरम्यानीपन का ज्याव रभा जये.

ऐसे लोग ज्हन्को जयादा मेहनत वाला काम नही होता उनको उल्की गीजाओं जाना मुनासिब है. मेहनती लोगों के वीये भारी गीजाओ जयादा नुकशान नही करती. झीर भी दरम्यानी पौराक ही मुवाकिक और मुनासिब है- क्युं के उस्मे आराम और आकियत है.

जाने के वास्ते उल्माने अवकात तय कीये है. बाजों ने कडा के रात-दीन में तीन भरतबा जाना याहीये. बाजोंका ज्याव है के अक रात-दीन में अक भरतबा जाना याहीये.

ईन अवकात के अलावा अगर सुब्ब शाम या राशत के वक्त थोडासा भा लेनेकी आदत कर ली जये तो कुछ उरज नही. गीजा जुब यबाकर जानी याहीये ताके उजम होने में आसानी हो. जाना बेठकर जाना याहीये. बिस्मिल्लाह पढकर शुर् करना याहीये. और अल्हम्दुलिल्लाह पर अत्म करना याहीये. नुकशान करनेवाली चीजोंसे परहेज करना याहीये. बासी जाना जबके तबीयत पसंद न करे न जाना याहीये और जब तक पहेला जाना उजम न होजये दुसरा जाना दाखिल न करना याहीये ईससे बिमारी पैदा होनेका भतरा है.

रंज और गम :-

रंज और गम जयादा हो तो बदन कमजोर होजता है. ज्हस्को रंज और गम पेश आये वो सबर करे और मस्नुन हुआओं को पढने का अहतिमाम करे.

ईन्सान को याहीये के वो ऐसी चीज के वीये कोशीष करे ज्हस्का दासिल होना मुम्कीन हो. बडी ज्वाहीशों से परहेज करे. ताके रंज और गम पेश न आये अगर कोई काम और यादत पुरी हो तो उदसे जयादा जुश न हो. उदसे जयादा जुशी और जयादा गम और गुस्सा दोनों शयतान की तरफसे है.

गुरसा :-

उदीसमे छे के गुरसेकी डालतमें या तो पानीसे गुसल कर ले या पुजुं करके दो रकात नमाज पढे और ये दुआ पढे.

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذَنْبِي وَأَذْهَبْ غَيْظَ قَلْبِي وَأَعِزَّنِي مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

“अल्लाहुम्मगद्दीरली जन्मी वअज्जीब जयज कल्मी.

वअर्जनी भिनशयतानीरज्जम”

ईस तदबीरसे गुरसा ठंडा हो जयेगा.

सादगी :-

मौजूदा जमाने के मुसलमानों में एक हीनी सिद्धत बिलकुल गिठ गई है. और वो सादगी है. डालां के सादगी की ईत्नी जयादा अहमियत है के उसको ईमान का एक जुजव (खिस्सा) अताया गया है.

एक सडानी (र.दी.) इरमाते है के डमको तकल्लुक से मनाकिया गया है. इरमामलें में सादगी का तरीका ईस्लाम का तरीका है. और तकल्लुक का तरीका गेर ईस्लामी है. मौजूद जमाने के मुसलमानों मे ये बिमारी ईत्नी आम है के इर मुल्क में उसका मंजर दीजाई देता है.

बिबास और तेडवार और दुसरी रस्मों और जानदानी रीवाजे में और अर्थ्योंकी नाज बरदारी में बडोतसे मुसलमान ईत्ना जयादा पैसा अर्थ करते है. जे कुतुब अर्थी की हेसियत रअता है. कुतुब अर्थी करनेवालोको कुआन मज्द में शयतानका भाई कडा गया है. ये बेडद अतरनाक बात है.

ऐसे लोगोका उसवक्त क्या डाल डोगा ? जब आभिरत में उनके बारेमें अेलान कीया जयेगा के ये लोग शयतान के भाई है. उनको उस मकाम पर ले जाओ ज्जुस्को शयतानों के वीये आस कीया गया है.

जाने का मजा :-

ईसी तरड इर साल रोजे का तजुरबा ईमानवालों को ईसवीये कराया जाता है. के वो ये जाने के जाने की असल वज्जत मसाला जैसी चीजों में नडी है. बडके उसमे है के आदमी को लुक का तजुरबा हो और झीर वो जाना पाये और पानी पीये. ईस डकीकत को कीसी ने ईन अड्काज में अयान किया है.

દુનિયા મેં સબસે અચ્છી ચટની ભુક હૈ.

મુસલમાન અભી તક ખાને કે ઊસુલ કો નહી જાનતે વો સિર્ફ લઝીઝ ખાને કો ખાના સમજ તે હૈ. હાલાં કે ખાને કા અસલ મક્સદ તાકત હાસીલ હોને વાલી દરમ્યાની ખોરાક લેના હૈ.

મગર બદ કિસ્મતી સે મુસલમાન બિરયાની ઓર મુર્ગ કો ખાના સમજતે હૈ. ખાને કી હિકમત વાલી ખાતોં સે વો અભી તક વાકિફ નહીં.

ખાના સેહત કે લીયે હૈ. સેહત બખ્શ ખાના વોહી હૈ. જે સાદા ખાના હો. મગર મુસલમાનોં ને સારી દુનિયા મેં ખાને કો લઝઝત કી ચીઝ સમજ લીયા હૈ. હર મુસલમાન કી કમાઈ કા બડા હિસ્સા ઈસ પર ખર્ચ હોતા હૈ. કે ખાને કો ઝયાદા સે ઝયાદા લઝીઝ બનાયા જાયે. યે લઝીઝ ખાના કુજુલ ખર્ચી ભી હૈ. વો સેહત કો ભી ખરાબ કરતા હૈ. ઓર સાદગી કે મિઝાઝ કો ખત્મ કરતા હૈ. જબ કે સાદગી ઈમાન કી પરવરીશ કે લીયે બેહદ જરૂરી હૈ.

હકીકત યે હૈ કે જે આદમી લઝીઝ ખાના ખાયે વો ન સિર્ફ અપની સેહત કો ખોતા હૈ. બલકે વો ઈસસે ભી મેહરૂમ હો જાતે હૈ કે ઊસ્કો આલા ઈમાનકી કેફીયત કા તજુરબા હો. લઝીઝ ખાના ગેહેરે ઈમાની એહસાસ કે લીયે ઝહેરે કાતિલ કી હૈસિયત રખતા હૈ. જે લોગ લઝીઝ ખાને સે ઊપર ન ઊઠ સકે વો એક કિસ્મ કે ખુશ પોશ (અચ્છે લિબાસ મેં) હયવાન હૈ. ઊન્હે કભી બુલંદ ઈન્સાનિયત કા તજુરબા નહી હો સકતા.

કોઈ મેઝબાન પુછે આપ ક્યા ખાયેગે ? તો યે જવાબ ઝયાદા બેહતર હૈ “સાદા જીંદગી ઓર ઉંચી સોચ”

ખાનેકે મામલે મેં કોઈ ખાસ શૈક ન હો. દખવતી ખાનોં સે ઝયાદા દીલચસ્પી ન હો. જે ખાના સબસે ઝયાદા આસાની સે મીલ જાયે વોહી સબસે ઝયાદા પસંદીદા ખાના હૈ.

અજીબ ખાત હૈ મૌજુદ ઝમાને મેં લોગ સાદા ખાનેકી સુન્નત કો બિલકુલ ભુલ ગયે હૈ. લોગોં કે સફરનામોં મેં અકસર પુર તકલ્લુફ ખાને ઓર શાનદાર નાશતોંકા ઝિક્ક હોતા હૈ. ઓર એસી દખવતોંસે લઝઝત હાસિલ કરના એક બડા કારનામા સમજ લીયા ગયા હૈ.

आने के भेज पर दोस्तों के साथ खेल खेलते हुआ खेरे को टोकर
 एकबाव के एस शेअर की याद ताजा होती है.

निशाने मर्दे भोमिन बा तुं गोयम - खुं मुर्ग आयद तभस्सुम भरवबे उस्त.

मर्दे भोमिनकी पड़ेयान ये है के जब उसके सामने लुना लुवा
 मुर्ग पेश किया जये तो मारे भुशी के उसके खेरा यमक ठे.

बियारे मुर्ग की मीत ली के सटकेमें दोस्तोंको खेल खेलाने का मौका
 मीलता है. (अवरिसाला - १/१८८८/२४)

जगुर और ईस्तार :-

जब शुगर लेवल कम होता है तो आदमीको लुक लगती है.
 ईसीवीये रोजे की डालतमें ईस्लामने मुसलमानको जगुर आनेकी तरगीब
 दी है. दो जगुर ली से शुगर लेवल बराबर होकर बदनमें कीम्यावी तन्दीवी
 होकर जस्मको मतलुबा जोराक मील जाती है.

जैतुन और अंजूर :-

अल्वाड तआला ने कुआन मंजुदमें ईन्सान जैतुन और
 अंजूरका का नाम अक साथ जिंक इरमाया है.

وَالزَّيْتُونَ وَالرُّيْبُونَ وَطُورَسِين (२० ८ ३०)

जुजुर (स.अ.व.) ने इरमाया : जैतुन के तेल अपने आनों में
 ईस्तेमाल करो. और उसकी मालीश करो.

ये तेल जस दरभत से डालिल होता है वो नेअमतां से लरपुर
 है. तिब्बी तडकीकने ली साबित किया है के जैतुन के तेल को आनेमें
 ईस्तेमाल करनेसे पुनमें कोलेस्ट्रॉल की भिकदार कम होजाती है. जैतुन का
 तेल पुनमें मकाई के तेलसे ली जयादा फायदा मंद है.

अंजूर का आना जुजुर (स.अ.व.) की भिदमतमें पेश किया
 गया. आप (स.अ.व.) ने अपने सलाबा (र.दी.) को आने के लीये
 कडा और इरमाया के अगर मुंजे ये केडना पडता के ये आना जन्नतसे
 आया है तो मैं जरूर कलेता के ये अंजूर है. अंजूर बवासीर और जेडोंके
 ददोंमें बहुत मुझीद है. कब्जकी वजहसे ली बवासीर होती है. और
 अंजूर में जैसी भुजीयां पायी जाती है. जे आंतोंको साफ करती है.
 शरभतें अंजूर भ्रिटीशकी पास दवाओंमें शामिल है. और ये कब्ज के

वीये बढोत मुझीद है. अंजूरका ईस्तेमाल घठया(वा) और जेडों के दई में तडकीकी तौर पर बेउद मुझीद है. (सुन्ते नबवी (स.अ.व.) और नदीद सायन्स - ४३८)

हराम गिजा :- (सुव्वर का गोशत)

सुव्वरका गोशत खाना ईस्लाम में हराम है. उवाले के वीये कुआन मज्जकी आयतें (सुरअे बकरउ - १७३/अलमाईदउ - ३ अल ईन्आम-१४५/ अल नउल - ११५) में मौजूद है.

मौजूदा जमाने के ईसाई अगर ये सुव्वरका गोशत खाते है मगर उन्के मज्जल में भी सुव्वर का गोशत खाना मना है. बाईबल का उवाला ये है.

सुव्वर तुम्हारे वीये नापाक है. तुम उन्का गोशत न खाना. और उन्की वाशों को न छुना. वो तुम्हारे वीये नापाक है. (अउबार-११:७)

उवाल जनवर गोया कुदरत के छंदा कारखाने है. वो ईन्सान के वीये प्रोटीनी खोराक इरादम (जमा) करनेका किंमती जरूरीया है. ये जनवर गेर गीजा (Nonfood) को गीजा (food) में तब्दील करते है.

बकरी घास खाती है और उस्को दूध और गोशतमें तब्दील करती है. यीडीया कीडे मकोडे खाती है. और उन्को गोशतमें तब्दील करती है. मछलीयां पानी के मामुवी जनवर खाती है. और उन्को किंमती सड़ेद गोशतमें तब्दील करती है.

मगर सुव्वर के अंदर ये खुबी नही है. सुव्वर न घास खाता है और न कीडे मकोडे. उस्की खोराक गंदकी है. उस्का गोशत गंदकीसे बनता है. यही वज्ज है के सुव्वर के खानेका असर आदमीके मिज्ज पर पडता है. और उस्के अप्लाक बीज्ज जते है.

सुव्वर हमारी बिमारीका भी सबब है. खुं के अपनी गंदी खोराककी वज्जसे वो अकसर बढोतसी (येपी) बिमारीयां में मुन्तला रहेता है.

सुव्वरका लक़्क अकसर जमानोंमें बुरा मझुम रखाता है. उस्की वज्ज ये है के सुव्वर आम तौर पर गंदकी खाता है. ईस बीना पर उस्के नामके साथ गंदगीका ख्याल वा बस्ता डोगया है. अंग्रेजमें केडते है. Pig turns man into a pig यानी सुव्वरका (गोशत) आदमीकी

ली सुव्वर बना देता है.

मालुम डुवा के सुव्वर या तो गंदगी जाता है या ठन्सानी भोराक. सुव्वरको भुदाने ठसवीये बनाया था के वो गंदगीको अपना भोराक बनाकर "सझाई कर्मचारी" का काम अंजम दे. मगर ठन्सानने उसको अपनी भोराक बना लीया. और उसके भातिर बडे बडे धार्म बनाये. और कुहरत के ठन्तिजाममें भलल पैदा कीया. सिई ठस किंमत पर के ठन्सान अपनी भोराक का जयादा खिस्सा उसको भीला कर उससे अपने लीये कम भोराक डसिल करे.

अप्लाक पर असर :-

जनवरों का गोशत सिई अेक भोराक नही है. बल्के अप्लाक से भी उसका गेहरा तअव्लुकु है. बकरी का गोशत जानेसे बकरी वाली सिइत बनती है. और भेडीयाका गोशत जानेसे भेडीयावाली सिइत बनती है. ठसी तरड सुव्वरका गोशत जानेसे आदमीके अंदर पास किसमकी अप्लाकी गिरावट पैदा होती है. ठसवीये शरीअतमें सुव्वरके गोशतका भाना डराम करार दीया गया है.

ठस मामले को समजने के लीये ये अेक डकीकत है के सुव्वरका गोशत जयादातर मगरबी कौमों में भया जाता है. मशरीकी (अेशियाई) कौमोंमें ठसका रिवाज बडोत ही कम है. मगरबी कौमोंमें सुव्वर की हैसियत अेक आम गीजाकी है. उसके भिलाइ मशरीकी कौमोंकी आम गीजा गव्वा, सबजी, दुध - नैसी यीजे है. मगरबी कौमों में जे मुसलमान है वो सिई डलाव गोशत भाते है. सुव्वर का गोशत उन्के जानेमें शामिल नही.

अब दोनों कौमोंका अप्लाकी हैसियत से मुकाबला कीजये. मशरीकी कौमोंमें मजडब और इडानी उलुम की तरक्की डुई. और दुसरी तरइ मगरीबी कौमोंमें अैसे उलुम की तरक्की न हो सकी उन्के दरम्यान जयादातर टेकनीकल उलुम को तरक्की डसिल डुई. ठससे जडीर डोता है के डलाव गीजा आदमी के अंदर पाकीजा भिजज पैदा करती है. और डराम गीजा गंदा भिजज पैदा करनेका सबब बनती है.

ठसी तरड पुराने जमानेमें जयादातर मशरीकी कौमों को सियासी और डौजी गव्वा डसिल था. अब मौजुदा दौरमें सियासी और डौजी

ગલ્બા મગરીબી મુલ્કોકો હાસિલ હે. ગેહરાઈ કે સાથ દેખીયે તો મશરીકી કૌમોંકા ગલ્બા ઝયાદા પુર અમન નજર આયેગા. મશરીકી કૌમોને કબી બેરહમાના દરીન્દગી કા સુબુત નહી દીયા. જીસ્કા નમુના મૌબુદા મગરીબી કૌમોંમેં દીખાઈ દેતા હે.

મગરીબી કૌમોં ને તારીખકી સબસે ઝયાદા ભયાનક લડાઈયાં છેડી હે. ઉન્હોંને ખતરનાક હથિયારોંકો પહેલી બાર ઈન્ડસ્ટ્રીકી હેસિયત દે દી. આજ યે લોગ આલમી સતહ પર કૌમોંકો સિફ્ ઈસલીયે લડાતે હે તાકે યે કૌમેં ભારી કિંમત પર ઉન્સે હથિયાર ખરીદે ઔર ઉન્કી ઈન્ડસ્ટ્રી કામ્યાબીકે સાથ ચલતી રહે વગેરહ.

ઈસસે જાહીર હોતા હે કે હલાલ ગીઝા આદમીકે અંદર અમનવાલા મિજાઝ પૈદા કરતી હે ઔર હરામ ગીઝા આદમીકે અંદર સખ્તીવાલા મિજાઝ પૈદા કરનેકા સબબ બનતી હે.

(અલ-રિસાલા - ૧૧/૧૯૯૧/૨૫)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا - عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

(૫) મૌત

મૌત કા મતલબ :

“અમલ કરને કી જગહસે હંમેશા કે લીયે રૂખસતી
 ઓર બદલા પાનેકી જગહમે હંમેશા કે લીયે દાખલા”

અકીદ એ આખિરત :-

આખિરત કા યકીન એક આમ ઈન્સાન કો એસે મુકામ પર લાકર ખડા કર દેતા હે જે બડે બડે આરિકીન ઓર અવલિયા અલ્લાહ કા મુકામ હે. આખિરત કે યકીન મેં એસી તાકત હે કે બડી સે બડી તાકત ઉસ્કા મુકાબલા નહીં કર સકતી.

ઈન્સાન કે અંદર જબ યે ધ્યાન પૈદા હો જાયે કે હમેં મરના હે. અલ્લાહ કે દરબાર મેં હાજર હોના હે. અપને ક્રિયે કા બદલા પાના હે તો બડે સે બડા એશ કા સામાન ભી ઉસ્કે લીયે કોઈ હેસિયત નહીં રખતા. ઉસ્કા ધ્યાન હર વકત ઈસ બાતકી તરફ લગા રેહતા હે કે મૌત કી તલવાર સર પર લટક રહી હે. મૌત કા ફરિશતા ઉસ્કી તાક મેં હે.

મહીનોં ઓર સાલોં કી ઈશરત કદે (જન્નત) મેં કદમ ભી ન રખ સકા ઓર મૌત કે ફરિશતેને ઉસ્કો દબોચ લીયા. આદમી બરસોં કી જરૂરીયાત કા ઈન્તીઝામ કરતા હે ઓર ઉસ્કો પલ કી ખબર નહીં.

બડી બડી તાકત ઓર શાન શૌકતવાલે હુકુમત ઓર ફૌજ વાલે, એશો આરામ કે દીલદાદહ આજ જમીન કે પેવન્દ બને હુએ હે.

મૌત કા ધ્યાન ઈન્સાન કે અંદર આખિરત કી ક્રિક પૈદા કરને કે લીયે હે. યે લઝઝતોં ઓર બેફિકરી કો તોડનેવાલી એક હકીકત હે.

હુજુર (સ.અ.વ.) કા ઈશાદિ હે. લઝઝતોંકો ખત્મ કરદેને વાલી ચીઝ યાની મૌત કો કસરત સે યાદ કરો.

મૌત કી યાદ :-

હુજુરે અકરમ (સ.અ.વ.) કા ઈશાદિ હે :

“મૌત કો બહોત ઝયાદા યાદ કરો. જે લઝઝતોંકો તોડ દેનેવાલી હે”

ઈસસે માલુમ હુવા કે મૌત કી યાદ ભી એક “ઝિક” હે. વો એક ઈબાદતી અમલ હે. મૌત કી યાદ એક સવાબ હે. જે ઈન્સાન કે આમાલ

नामा में दर्ज किया जाता है.

दुजुर (स.अ.प.) का र्शद है “जबतक छु याहे दुनियामें रेहवे आभीर अक दीन तुजे मरना जरूर है. और छुससे याहे मोहब्बत करवे आभीर उससे बुदाई लाजमी है. और जे छु याहे अमल करवे बहवा उसका जरूर मील कर रहेगा. (ईमाम गजाली (रअ.)का फत)

अक इरसी शार्ह बुढा हो गया. उसकी दोनों आंभें जती रही. उस वक्त उसने ये शेअर कला के मौत के लाय ने रवानगी का नक़ारा (नगारा) बन दीया है.

अय मेरी दोनों आंभें अब तुम सर को अल विदाअ कलो.

“मौत आकर रहेगी” ये बात उन लोगों से केहनेकी है जे अभी जवानी की उम्र मे हो. लेकिन जे लोग बुढापे की उम्र को पहुंच चुके है. उनके लीये जयादा सही बात ये है के उनसे ये कला जये के “मौत आना शुरू होगई”

जवान आदमीके लीये मौत जलीरमें मुस्तकबील की अक पबर है लेकिन बुढे आदमीके लीये मौत डालमें पेशआने वाला अक वाकेआ.

इकीकत ये है के जवान आदमी अगर मौतको याद न करे तो ये उसके लीये गइलतकी बात होगी. लेकिन जे लोग बुढापे की उम्र को पहुंच कर ली मौतको सुवे लुअे हो. उनकी ये गइलत बेहद संगीन है. गोया ये अक सरकशी है और अल्लाहके नजदीक सरकशी से जयादा संगीन ज़ुर्म और कोई नही.

हर दीन ये मंजर दीआई देता है कोई बयपनमें मर गया तो कोई जवानीमें और कोई बुढापेकी उम्र को पहुंच कर मरा. ईस तरह हर उम्र के लोग अपने जैसी उम्र के मर्द और औरतको हररोज मरते लुअे देभते है.

जैसी डालतमें हर अकलमंद को याहीये के वो अपने आपको मौत के किनारे मेहसुस करे. कीसी ली उम्र का ईन्सान अपनेको मौतसे मेहकुल न समजे.

(अलरिसाला - ५/२००१/४)

मौत नसीहत के लीये काही है :-

दजरत अबु हरदा (रही.) इरमाते है के मौत नसीहत के लीये बहोत अहम जरीया है. लेकिन ईससे गइलत बहोत जयादा है. मौत

वाअऊ के लीये काड़ी है. और ऊमाना लोगों में नुदाई पैदा करने के लीये तैयार है. आज जे लोग घरों में है. वो कल को कइमें लोंगे.

रजाबिन उयात (र.अ.) इरमाते है के जे शम्स मौत को कसरत से याद करेगा उसके दीवसे इसद और ईतराइट (बडाई) निकल जयेगी. यानी न तो वो कीसी दुन्यवी नेअमत की बीना पर उल्जनमें मुन्तला लोग. और भुशी और अेशमें मस्त होकर गुनाह नही करेगा.

औस बीन अब्दुल्लाह (र.अ.) इरमाते है के जस शम्सके दीवमें मौत की याद जम जाती है. वो अगले दीन तक बी अपनी छंछगीके रेखनेका यकीन नही रभता. कीन्ने लोग कल की उम्मीद रभनेवाले है मगर कल तक नही पहुँच पाते. (ईमाम गजाली (र.अ.) का अेक अत)

उजरत उमर बीन अ.अजीऊ (र.अ.) इरमाते थे के मौत की याद उसके दीवमें जगा बना ले वो अपने मालको इंमेशा जयादा ही समन्वेगा. (यानी जयादा माल बढ़ानेकी इिकर नही करेगा)

उजरत कअब बीन अलबार (र.अ.) से रिवायत है के जे शम्स मौत को पहुँचानेले उसके लीये दुनियाकी तमाम मुसीबतें और रंज - गम उल्के हो जयेंगे.

अेक औरतने उजरत आईशा (र.दी.) से अपने दीवकी सभ्नी की शिकायत की तो आपने नसीहत इरमाई के तुम मौत को कसरतसे याद कीया करो तुम्हारा दीव नरम हो जयेगा.

उजरत अली (र.दी.) से नकल किया गया है के कबर अमलका संदुक (पेटी) है. मौतके बाद उसकी जबर मीलेगी. (शरहुस्सुदूर - ४६)

अल्लामा तयमी (र.अ.) इरमाते है के दो चीजोंने मुजसे दुनियाकी लऊत छीन ली है. अेक मौत की याद दुसरा मैदाने इंशरमें अल्लाह तआवाके सामने डाजरी का ध्यान और यकीन.

उजरत उमर बीन अ.अजीऊ (र.अ.)का मामुल था के वो उल्माको जमा इरमाकर मौत-कियामत और आभिरतका बयान दीया करते थे और डीर ईन बातोंसे असर लेकर सब लोग जैसे कुट कुट कर रोते थे गोया ईन्के सामने कोई जनाजा रभा हुआ है.

(अत्तजकरह-१०)(निदाअे शाही-३/२०००/३८)

नइसानी ज्वाहीशात से आपिरत का नुक्शान :-

“बरोसा कुछ नहीं नइसे अम्माराल का अय जाडिह

इरिस्ताभी अगर डो जये ईससे बद्गुमां रेडना”

नइसानी ज्वाहीशातों की पेरवीने ईब्वीस और बलअम ईब्वे बाउरा जैसे किन्नोंको दुबा चुकी है और दुबाती रेडती है. दीन को “राडीब” नजर आनेवाले आज लोग नइसानी ज्वाहीशोंकी पेरवीमें रात को बलअम डो जते है.

अव्वाह तआवाने अक शप्स का अपनी नइसानी ज्वाहीशात की पेरवी करने की वजहसे मरदुह खोने का वाकआ सुरअे अअराइमें बयान इरमाया है. कुर्आन मज्हमें अगरये उस्का नाम जिह नहीं कीया गया. लेकीन जमहुर के नजदीक वो बलअम बीन बाउरा है. वो दून्यवी लालय की वजहसे अपनी ज्वाहीशों की पेरवीमें लग गया और अपनी कौम के केडने पर डजरत मुसा (अ.व.) के लीये बद्दुआ करना याही लेकीन उस्की जुबान बाहर निकल आयी और मरदुह हुवा.

अव्वाह तआवा का ईशार्ह है. और उन्को उस शप्सका डाल सुनादे ज्हस्को डमने अपनी आयतें दी थी. सो वो उन्से निकल गया. और डम अगर याडते तो उस्को आयतों के सबब बुलंद मरतबा कर देते. लेकीन वो दूनियाकी तरफ माईल डो गया और अपनी ज्वाहीशों की पेरवी की.

नइस लजजतों को पाने के लीये ज्वाहीशोंकी पेरवी करता है. मौत का ध्यान उस्को तोड देता है. ईसी लीये लुजुर (स.अ.व.) ने ईशार्ह इरमाया है के: “लजजत को तोड देने वाली यीज यानी मौत को कसरत से याद करो”

(मिशक़ात)

लिहाजा बुजुर्गाने जुद ली उस्को ईज्जियार इरमाया है और अपने मुरीदों को भी मौत का ध्यान रज्जने के साथ साथ रातको सोते वकत कुछ देर मौत का और मौत के बाद कबर और आपिरत के डालत को सोचनेकी वसीयत इरमाई. डजरत थानवी (र.अ.) के नशीस्त (बेहक) के सामने अक तज्जीपर ये अशआर लीजे लुजे सामने रेडते थे. ताके मौत की यादसे गइलत न डो.

रेख के दुनियामें नही जेबा बशर को गइलत.

मौत का ध्यान भी लाजीम है के हर आन रहे

जे बशर आता है दुनियामें ये केडती है कज

में भी पीछे यही आती हुं जरा ध्यान रहे.

(तरीके अवलीया-२-१६)

मौत अेक गिरफ्तारी है :

मौत अेक कीरम की गिरफ्तारी है. मौत वो दीन है जब के इरिशते कीसी आदमीको पकड कर उसके मालीक के पास पहुंचा देते है.

गिरफ्तारी का ये दीन हर शम्सकी तरफ तेजीसे दौडा आ रहा है. मगर लोगोका डाल ये है के वो दूसरोकी गिरफ्तारी को तो भुज जनते है मगर भुद अपनी गिरफ्तारीकी उन्हे भबर नही. वो दूसरोके पकडे जानेका तो बलौत यर्था करले है. मगर अपने वीये आनेवाले उस दीन को याद नही करते जबके भुदाके इरिशते भे रडमीके साथ उन्हे पकडकर मालीके काईनात की अदालतमें पहुंचा देंगे.

मौत ये साबित करती है के हर आदमी अकेला है. दुनियामें आदमी दूसरोके साथ डोता है. अपने भानदान वालोंमें डोता है. मगर मौत भेरडमीके साथ आदमीको हर चीजसे अलग कर देती है. जहां उसका कोई साथी और मददगार नही.

दुनियाकी खंडगीमें हर मोके पर बलौतसे साथी उसकी मदद के वीये भजे डोनेवाले थे. मगर मौत के बाद खंडगीमें वो तन्हा अपनी कबरमें डोता है. वो इरिशतोके मुकाबले में अकेला डोता है. वो भुदाके सामने ईस तरड पहुंचता है के उसके आगे पीछे कोई दूसरा नही डोता.

हर आदमीका चलना मौत पर भंड लोजता है. मौत कीसीके वीये जन्नतका दरवाजा है और कीसीके वीये दौजभका दरवाजा . वो आदमी भडा भुश किरमत है जइसी मौत उस डालमें आये के वो अपनेको जन्नतके दरवाजे पर भडा डुवा पाये. क्युं के उसके बाद वो ऐसी दुनियामें डोगा जहां भंमेशा भुशीयां है. उसके बाद उसके वीये न कोई रंज है न कोई डर.

और जइस आदमीकी मौत उसको जडन्नम के दरवाजे पर पहुंचाये

उस्की बढबप्तीका कोर्ण ठीकाना नडी. क्युं के वो अपने आपको ऐसी दुनियामें गिरफ्तारी पायेगा. ज्हां लंमेशा के वीये उस्को ईस तरह रहेना लोग के वहां उस्के वीये आग और धुंअे के सिवा कुछ न होगा.

कल की जन्ततमें उस आदमी को दाबला मीलेगा जे आज पुदाकी बडाई को मानकर उस्के आगे जूंक जये. जे आज लकपसंद और पैरप्वाळ बनकर दुसरे ईन्सानोंके दरमान रहे.

ज्जल्नम उन बढ नसीब ईन्सानों का कैदपाना है जे दुनियामें पुदाकी बडाईको न माने. जे अपने मामलो में जे ईन्साई की छोडना गवारा न करे. जे बुद्धम और धमंड करे.

मौतसे पहले आदमीको बडोत से काम नजर आते है. मगर मौतके बाद आदमीके सामने सिई अेक ही काम होगा. वो ये के पुदाके गजबसे वो कीस तरह बये. जब आदमीके पास वक्त जयादा होता है तो वो बडोतसे काम शुरु कर देता है मगर जस शप्सको वक्तके बंद लभे डासिल हो वो सिई वो ही काम करता है. जे ईन्तिडाई जरूरी हो.

दुनियामें हर आदमी मडेनत करता है. वो तमाम उम्र मडेनत करके अेक काम करता है. मगर जब वो वक्त आता है के वो दुनियामें अपनी ईस मडेनतका आभरी ईनाम पाये तो मौत उस्को मौबुदा दुनियासे बुदा कर देती है. वो मडेनतके बावुबुद अपनी मडेनतका ईनाम पाने से मेडरूम रहेता है.

जे लोग आभिरतके वीये मडेनत करे. जे दुनियाको अमल करनेकी जगा समजे. और आभिरतको बढवा पानेकी जगा. जैसे लोगों के वीये मेडरूम और मायूसी का कोर्ण सवाल नडी.

ये दुनिया ईन्तिडानकी जगा है. यहां हर आदमी अपना अपना ईन्तिडान दे रहा है. वो याहे तो दुइस्त अमल करके ईन्तिडानमें काम्याब हो सकता है. और अगर वो गाकिल रहे तो नाकामी के अंजमसे दो बार होगा- नाकामी के अंजमको पानेके वीये कुछ करनेकी जरूरत नडी है. वो अपने आप हर आदमीकी तरह दौडी यकी आ रही है.

ईस मामलेमें आदमीकी मिसाल बरह बेचनेवाले दुकानदार की तरह है. बरह हर घडी पीघलता रहेता है. ईस वीये बरहके दुकानदारकी

काम्याबी ईस्मे हें के वो बरइ के पीघलने से पलेले अपने बरइ को बेचकर किमतमें तब्दील कर ले. अगर उसने देर की तो आभीरमें उसके पास कुछ न होगा. जिससे वो अपनी तिज्जरत कर सके. वो अपनी मुडी और नका दोनों जो युका होगा.

यही मामला ईन्सानकी छंढगीका हें ईन्सान उम्र गुजरनेके साथ तेजीसे अेक सप्त अंजमकी तरइ यला ज रहा हें. उस अंजमका आना यकीनी हें. उससे बचनेकी सिई अेक शकल हें. और वो ये के, उस वकतके आने से पलेले अपनी छंढगीका सही ईस्तिमाल करनेका तरीका तलाश कर लीया जये.

बरइ का काम्याब ताज्जर वो हें जे बरइ के पीघलने से पलेले अपने बरइ को बेच डाले. ईसी तरइ काम्याब ईन्सान वो हें जे अपनी उम्र के पन्म डोने से पलेले अपनी उम्रको सही कामोंमें ईस्तिमाल कर ले. आभिरतका मंजर सामने आनेसे पलेले आभिरत के वीये तैयारी कर ले.

मौत का सबक :-

मौत हमारी छंढगीकी सबसे बडी मोअल्वीम हें. मौत हर आदमीको अेक जैसे सवाल के बारे में सोचने पर मजबूर कर देती हें उसके ज्वाबमें छंढगीका तमाम राज छुपा हुआ हें. मौत हमको बताती हें के हम अपने मालीक आप नही हें. मौत हमको बताती हें के मौजूदा दुनियांमें हमारी छंढगी सिई आरज्ज छंढगी हें. मौत हमको बताती हें के मौजूदा दुनिया वो जगा नही जहां हम अपनी तमन्नाओंको डालसिब कर सके. मौत हमको जना सीभाती हें. मौत हमको बताती हें के लकीकी काम्याबी डालसिब करनेके वीये हमें क्या करना चाहीये ?

मौतके बारेमें सबको यकीन हें के वो वकत पर जरूर आकर रहेगी. उसके बावजूद मौतसे अेसी गइलत और बेइकरी हें के डालात से मालुम होता हें के मौत सिई अेक अइसाना (दास्तान) हें. या दूसरोंको आया करती हें. हमें तो कभीभी मौत नही आयेगी. या कमअजकम झीलडाल और झोरन नही आ सकती. बरसोंके बाद जब कभी आयेगी उस वकत हमें लेंगे- अभीसे इिकरमें पडनेकी क्या जरूरत हें ? डालांके लकीकत उसके पिवाइ हें. मौत हर वकत सर पर सवार हें. उसकी इिकर हर वकत रेडनी

याडीये. मौतको याद न करना ही दीवकी सज्जी और लंबी उम्मीद बांधना और तमाम गङ्गलतोंकी नद है. (छज्जत शेष भोळमद जकरीया (२.अ.)

यहां दर पैदा डोनेवाला आपिरकार मर जाता है. मगर बाज अइराद को कम उमरी ही में मौत दे दी जाती है. ताके लोगोंकी आर्षे भुले और जे लोगं बेडोशी में पडे डुअे है वो भी लॉशमें आकर अपनी ईस्वाड कर ले.

अेक बर्ये की मौत जब बयपनमें आ जाती है तो लोग केडते है के अेक कम उमर बर्येका क्या कुसुर था ? के उस्के साथ अैसा डदेंसा पेश आया. ईस्में असल मस्अला कुसुर का नही है बल्के भुदाकी कुदरतके निजामका है. ये दुनिया ईम्तिडानकी नगा है. ईस डकीकत को बताने के वीये जालीके काईनातने मुभ्तवीक ईन्तिजाम किये है. उन्मेंसे अेक ईन्तिजाम ये है के भौबुदा दुनिया की इानी हैसियतको बताने के वीये भिसाल काईम की जाती है और बयपन की मौत ईस किस्मकी अेक भिसाल है.

मौत और डदेंसात के वाकेआत आर्षे भोवने के वीये पेश आते है. अकलमंद वो है जे ईन वाकेआत से सबक ले. नादान वो है जे बेकार यीजोंके सवालोंमें उलज्जर रहे जये.

ईस दुनियामें कोई शप्स रोते डुअे मर जाता है और कोई शप्स डसते डुअे. कीसी पर उस्की मौत बद डालीमें आ जाती है. और कोई मीट्टी पर बेडा डुआ ईस दुनियासे यवा जाता है. और कोई तप्ते डुकुमत पर मर जाता है. मौत अेक अैसा अंजम है जे डरअेक पर आता है. याले वो अेक डालत में डो या दुसरी डालतमें.

मगर मौत ही वो बडी डकीकत है ज्जस्को ईन्सान सभसे जयादा भुवा डुवा है. यहां डसनेवाला और रोनेवाला दोनों अेक ही डालतमें मुभ्तवा है. वो सिई अपने आनको जनते है. वो अपने कल को नही जनते. अगर वो अपने कलको जन ले तो डसनेवाले का डाल भी वोही डोजये जे रोनेवालेका डाल नजर आता है. ये सभसे बडी भुव है ज्जस्में आन का ईन्सान मुभ्तवा है.

ईस दुनिया में डर ईन्सान बेपनाड आरजुंओ और डोस्वों को

लेकर आता है. वो रात हीन मेहनत करता है. मगर उसकी आरजुंओं को पुरी नही कर सकता के मौतका वक्त आ जाता है.

उकीकत ये है के कोई छोटा हो या बडा. अधुरे होस्वों का मजार है. ये ईस बातका सबक है के मौबुदा दुनिया सिई कोशीष और मेहनत करनेकी जगा है. वो पानेकी जगा नही.

अजुब अंजाम :-

पेल की दुनिया में कभी जोसा होता है के अक आदमी अयानक अक बडी काम्याबी लासिल करता है और वो जीरो से हीरो बन जाता है.

From Zero TO Hero

यही मामला बलोट से लोगों के साथ आभिरतमें होनेवाला है. बलोटसे लोग दुन्यवी कमावात दीभाकर आबकी माही दुनियामें हीरो बने हुअे है. मीडियामें उन्का चर्चा होता है. उन्के पास हर किसमके माही साजो सामान है. लोग उन्को ईज्जतकी निगाहसे देखते है. अक वक्त आनेवाला है जब के वो अपनी ये शानो शौकत जो देंगे. वो अयानक हीरो से जीरो बन जायेंगे. मगर ईन्सान आबके हीनमें ईत्ना गुम है के कलके हीन की कोई ખबर नही. (अलरिसाला - ३/२००२/७)

ये बदन गल सड जायेगा :-

ईन्सानका ये बदन मीड्रीसे बना है. और मीड्रीमें मील जायेगा. कब्रमें अकर पुअसुरत आभे जन्हे सुरमा और काज्वलसे संवारा जाता है. और ये बाल और रूप्सार जन्हे उरीन और जमील बनानेकी कोशीषें की जाती है. और ये पेट अस्की लुअ मिटाने के लीये हर तरह के जतन कीये जाते है.

यहीं आभे कुट कर उन्का पानी रूप्सारों पर बेल पड़ेगा - बाल पुद ब पुद गलकर टूट जायेंगे - पेट बदबुदार होकर कुट पड़ेगा - कब्र में कीडे ईस मीड्री के बदनको अपनी गिजा बना लेंगे.

कब्रमें होनेवाली ईस लावतको ईन्सान दुनियामें लुअ जाता है. मगर ये लावत पेश आकर ही रहेगी. ईसलीये ईस्की तरह ध्यान करानेके लीये हुअुर (स.अ.व.) ने उअराते सलाबा (रदी.)से ईश'द इरमाया :

कब्र रोजाना ये अेलान करती है के अय आदमकी ओवाह ! तुं

मुझे कैसे बुल गया ? क्या तुझे मालुम नहीं है मैं तन्हाईका घर हूँ. और मैं
 एक तंग जगा हूँ. मेरा मुकाम वेदशतनाक है. और मैं कीडोंका घर हूँ. और
 मैं एक तंग जगा हूँ. सिवाय उस शप्सके वीये जिस पर अल्वाहतआवा
 मुझे वसीअ इरमा है.

कीर डुजुर (स.अ.व.) ने ईशाई इरमाया कब्र या तो जल्दन्नम के
 घडों में से एक घडा है. या जन्नतके बागों में से एक बाग है.

(शरडुस्सुदुर - १६५)

खिडाजा अल्वाहतआवा से शरमो लया का तकाजा बयान करते
 डुअे डुजुर (स.अ.व.) ने ईशाई इरमाया के - "अपनी मौत और बदनकी
 बोसीदगी को यादरभे." इससे डिकरे आभिरत पैदा होगी और गुनाहोंसे
 बयनेकी तोड़ीक होगी.

कोईकैसा ही भुबसुरत और लसीन क्युं न हो. मनी जैसी नापाक
 और बदनबुदार चीजसे पैदा हुवा है. कुर्आन मज्हदमें ईशाई है
 "क्या ? हमने तुमको जलीव और नापाक पानीसे नहीं बनाया"

(पा-२८ ३-१८)

हैज के भुन से उसका जस्म बनाया गया है. हर वक्त उसके
 पेटमें नापाकी मौबुद रहती है. पैशाब और पापाना जैसी नापाक और
 बदनबुदार चीज उससे निकलती रहती है. आंभसे थिपड, कानसे मेल,
 नाक से रीढ, मुंडसे लुआब (लाण-थुंक) हीन रात निकलता रहता है. उस
 पर गौर कीजये और भुबसुरत ईन्सानकी लकीकत समजये. मरने के साथ
 ही बदन कुलता है, सडता है, पीप निकलता है, ईस लकीकतको सोयीये के
 मुंजेबी और दूसरे ईन्सानोंको ये डालात पेश आयेगें. तो नइस की ये
 शरारतें सिई ज्वाब और ज्वाब मालुम होंगें.

जो यमन में गुजरे तो अय सबा ये कडेना बुलबुले जारसे
 के भिजां के हीन बी है सामने न लगाना हील को बडारसे.

(मकतुबाते शैभुल ईस्लाम र.अ.)

वो भुशनसीब ज्जुका बदन मेहकुअ रहेगा :-

अल्वाह तआवा अपने बाज नेक बंटो के ओअज्ज में उन्के
 ज्जर्मोंको साल ड़ा साल गुजरनेके बाबुबुद जमीनमें गुंका तुं मेहकुअ

करमा देते है. और जमीन धन पाकीजा बदनो को इना करनेसे आज्ञा रखेती है. धन भुशनसीब बंदोमें सबसे पहले लहराते अबिया (अ. व.) है. चुनाये डुजुर (स. अ. व.) का धर्शा है. बेशक अल्लाहतआलाने जमीन पर अबिया (अ. व.) के पाक बदनो को इराम कर दीया है.

धसी बीना पर ओलवे सुन्नत वल जमाअत का अकीदा है के तमाम अबिया (अ. व.) के मुबारक अस्म अपनी अपनी कब्रोंमें बगैर कीसी तब्दीली के नैसे थे वैसे मौजूद है. और उन्को अक भास किसमकी बरजभी डयात डसिल है.

और बाज शहीदों के बारेमें ये बात के सही सालीम पाये गये (अगरये हर शहीदके साथ जैसा डोना लाजीम नही क्युं के शहीदको जे भास डयाते बरजभी डसिल है उस्के वीये बदनका बे अयनेही मडेकुज डोना लाजीम नही.) (इडुलमआनी - २/२१)

डुअे नामवर बे निशां कैसे कैसे.

अर्भो भा गध आस्मां कैसे कैसे.

मौत से गइलत :

कबर दुसरी खंडगीका दरवाजा है. धस दरवाजे के जरीये आदमी आबकी दुनियासे निकल कर आभिरत की दुनिया में दाभिल डोजता है. डममें जे शप्स आब कब्रके बाहर है वो कल मरनेके बाद कब्र में दाभिल डोकर दुसरी दुनियामें (आभिरतमें) पडुंय जयेगा- हर खंडा शप्स मौतसे जैसी डार जायेगा के कोध उस्को बया न सकेगा- मगर धत्नी बडी डकीकतको धन्सान सबसे जयादा लुवा डुवा है.

डममें से हर अक ने ये मंजर देभा है के कीसी के वीये कब्रका दरवाजा लुवा और डीर उस्को उस्में दाभिल करके डंमेशा के वीये उस्के उपर बंद डोगया- मगर डममें बडोत कम डोग है जे ये जन्ते डो के डुद उन्के वीये ली ये दरवाजा अक धीन लोवा जयेगा और डीर धसी तरड उन्के उपर बंद कर दीया जयेगा. अस तरड दुसरोंके उपर डंमेशा के वीये बंद डो युका है.

आदमीकी ये गइलत कैसी अजब है के वो दुसरों को रोज मरते डुअे देभता है. मगर डुद धस तरड खंडगी गुजरता है गोया उस्को

हंमेशा ईसी दुनियामें रेखना है. उसके वीये मौतका वक्त कभी आनेवाला नही. वो देखता है के लोग अेक अेक करके रोजाना भुटाके यहाँ पेशीके वीये बुलाये ज रहते है मगर भुट अपने को ईस तरल अलग कर लेता है गोया अदावते ईलाहीमें लाजरीका ये दीन उसके वीये कभी नही आयेगा.

हर शम्सकी मौत उसके करीब है. ये अेलसास अगर पैदा होजये तो हर आदमी की मौत को आदमी अपनी मौत समझे - वो दुसरेका जनाजा देखे तो उसको अैसा मालुम होगा के भुट उसकी वाश उठाकर कबरकी तरफ लेजयी ज रही है.

आदमी जब मौत के दरवाजे पर अडा कर दीया जयेगा. उस वक्त उसके पीछे दुनिया होगी और उसके आगे आभिरत. वो अैसी दुनियाको छोड रहा होगा जहाँ वो दोबारा कभी वापीस नही आयेगा- और अेक अैसी दुनियामें दाभील हो रहा होगा जससे उसको कभी निकलना नसीब न होगा. वो अपने अमलके मुकामसे उटाकर अैसी जगा डाल दीया जयेगा जहाँ वो अपने अमलका बहला हंमेशा के वीये भुगतता रहे.

आजकल मस्नुई सेटेवाईट (उपग्रह) जलामें लेजे जते है. ये सेटेवाईट उपर जकर दोसो मील की दुरी पर जमीनके आसपास घुमने लगते है. मगर उन्की उन्न की अेक मुद्त है. अेक मुद्तके बाद वो जमीनकी कशीष (गुरुत्वाकर्षण) के दायरेमें आकर जमीनकी तरफ पीयने लगते है. यहाँ तकके नीचे आते आते अेक रोज जमीन पर गीर पडते है.

ईसी तरल ईन्सान ईस दुनियामें अेक मुकरर मुद्तके वीये आया है. थोडे अरसे के बाद उसकी वापसी का सफर शुरू होजता है. यहाँ तकके आभिरकार वो दोबारा भुटाकी तरफ यला जता है.

मौत का सहर:

हवाई जहाज लंबी उडान के बाद जब डिक्कालत के साथ जमीन पर उतरता है तो मुसाफ़ीर भुशी से तालीयां बजते है. लेकीन अगर ईस डकीकत को सामने रभा जये के हम जस जमीन पर उतरे है वो भुट भी अेक घंटेमें अेक डजार मीलकी रफ़तार से जलामें दौड रही है. तो ये कहेना सही होगा के हम अेक जहाजसे उतर कर दुसरे जहाज पर सवार हुअे.

डम गोया ँन्सानी सवारी से निकल कर षुदाँ सवारी में बेठ गये.

ँन्सान का सहर मुसलसल ञरी डे. ँन्सानी सहरकी मंजील मौत डे. न के कोँ अरपोरँ और न कोँ रडाँरशी मकान.

यडी आत डडीसमें ँस तरड कडी गरँ डे के दुनियामें ँस तरड रडो गोया तुम मुसाकिर डो.

दुनिया के सहर में आदमी डडरडाव ओक रोज अपने डीकाने पर वापस आ ञता डे मगर ओक सहर और डे ञस्का मामला डिलकुल अलग डे.

ये मौतका सहर डे. ञे डर ओक को लाजमी तौर पर करना डे. मौतके सहरके आदवापसीका कोँ ँम्कान नडी डे. और न पीछली आतोंकी तलाकीकी कोँ सुरत. डर आदमीको लाजमी तौर पर औसी सवारी पर बेठना डे. ञे कभी उस्को वापस डेकर नडी आयेगी के वो अपनी सरकशी की तलाकी कर सके.

आड ! कैसा सप्त मामला ँन्सानके साथ पेश आनेवाला डे. और वो कित्ना जयादा उससे गाकिल पडा डुवा डे. दुनियाकी तमाम अज्जब आतोंमें सबसे जयादा अज्जब आत बेशक यडी डे.

ओक डवार्ँ ञडाज मुल्क के ओक अरपोरँ पर पडुंया. वडां ञे मुसाकीर उतरे उन्मे कुछ शप्स वो थे, ञन्के ँस्तिकडाल के लीये वडां डडोत से लोग मौनुद थे. उसीके साथ उन्मे ओक शप्स वो था. ञस्के आरेमें मुकामी पोलीसको पडेले से ये ञबर मील युकी थी के वो ओक मुजरीम डे. सुंनारये ञैसेडी वो डवार्ँ ञडाज से आडर आया. उस्को गिरफ्तार कर लीया गया- कुछ लोग डवार्ँ ञडाज से निकल कर वडां के लोगोंके मडेमान डने और दुसरा मुसाकीर ञेल आने में गया.

ये वाकेआ मिसाल के इपमें ँससे जयादा डडे वाकेआको बता रडा डे. ञे मौतके आद डर आदमी को पेश आनेवाला डे. डर आदमी पर ये वक्त आनेवाला डे के ओक डीन मौतके इरिशते अपनी सवारी डेकर उस्के पास पडुंय ञयेगें. उस वक्त आदमीसे कडा ञयेगा के अपने दुन्यवी घरको छोडकर ँस्में बेठो. आदमी मन्बुर डोगा और वो उस सवारीमें बेठेगा. उस्के आद इरिशते उस सवारीको डेकर रवाना डोगें. ये सवारी

दुनिया से रवाना होगी और आभिरत में पहुँचकर ठेहर जयेगी.

जब आदमी अपनी सवारी से निकल कर आभिरत की दुनिया में उतरेगा तो कोई शप्स ये पायेगा के वहां इरिशते ईस्तिक्बाव के वीये मौजूद है. और कोई शप्स ये देखेगा के उसकी गिरफ्तारी के वीये इरिशते वहां उसके ईन्तिजार में है. ओक शप्सको ओअजाऊ के साथ जन्नतमें पहुँचा दीया जयेगा. और दुसरेको मुजरीम की तरफ गिरफ्तार कर वीया जयेगा. और इर उसकी जलन्नम के अजाबमें डाल दीया जयेगा. ताके वो उसमें लंमेशां के वीये पडा रहे.

मौत के वक्त:-

मुसलमान जब मरने लगता है तो इरिशते उसको बशारत सुनाते है. उस वक्त वो अल्वाह तआवा की मुलाकात का मुश्ताक हो जाता है.

और काफ़िर को अजाबकी धमकी देते है. वो काफ़िर उस वक्त पुदा तआवा के पास जाने से गलराता है और नापसंद करता है.

उदीसों और वाकीआत से मालुम होता है के मरने के साथ ही तन्हाई अत्म होजती है. और मुसलमान की रूह आलमे अरवाह में जकर लुजुर (स. अ. व.) के दीदार से मुशरक़ होती है. और अपने अजीजो की मुलाकात से जुश होती है. मतलब के वहां दरवक्त जुशी ही जुशी रहेगी और ऐसी जुशी होगी के दुनिया में उसका ज्वाब भी नहीं देभा गया.

मौत की वेदशत दूर करने और पुदावंद तआवा की मुलाकात का शौक पैदा करने की तदबीर अल्वाह का कसरत से जिक, ईबाहत का अहतिमाम, और गुनाहों से परहेज करना है.

मौत का मंजर :

आदमी जब अपने सामने कीसी की मौतका मंजर देखता है तो ये देखता है के मरनेवालेका सांस उभडता है. आर्षे पथरा जती है. और सकरात की लीयकीया आती है. ऐसा मालुम होता है के आंभे उपर यदनेसे ओक शप्स आभिरतकी तरफ़ जते लुअे पीछे मुड कर दुनियाको देख रहा है. उभडी उभडी सासों आने लगती है. जे ईस बातकी अवामत

डोती है के बदन का निजाम अपनी सली डालतमें बाकी नही रहा -
 उसीके साथ उसका बोलना बंद हो जाता है. आगिरमें डींगकी की कैकियत
 पैदा होकर ऐसा होजाता है जैसे कोई चिराग जुजनेके वक्त लडकने
 लगता है. थोड़ी देर ये कैकियत रखती है. डीर ईन्तीकाव होजाता है. और
 (२६ . २५) $\text{وَإِنِّي لَأَكْفُرُ}$ पढा जाता है.

डीर मेडसुस होता है के दुनिया की बिसात लपेट दी गई और
 इरिशते ईन्सानी इडको लेकर जुदाके दरबार की तरफ चले जा रहे है ये मंजर
 देभकर आंभोमें आसुं आजाते है. उस वक्त आदमीको ये दुया करनी
 याहीये के अथ जुदा मेरे लीये ली ये दीन आनेवाला है. उस दीन से पहले
 तुं मुंजे बश्श दे. वरना मेरा अंजम अरफा नही होगा.

डकीकत ये है के आदमी अगर नसीहत लेना चाहे तो सिई मौतका
 मंजर उसकी आभें भोलने के लीये काई है. मौत बर्येको ली आती है.
 और बडे को ली. मौतका कोई वक्त मुकरर नही. वो उम्रके कीसी डिस्सेमें
 आ सकती है.

इस के वजीरे आजम स्टाविन और अमरिका के वजीरे पारज
 डेवीज बिमार हो कर मरे. और लोर्ड माउन्ट भेटन की बीवी अक सफर में
 रात को सो गई तो निंद ही में उसका जात्मा हो गया. ईस से मालुम हुवा
 के मौत कभी पबरदार करके आती है कभी अयानक आजाती है. उससे न
 अमीर बच सकता है न गरीब. और न कोई ईवाज उसे रोक सकता है.

ये डकीकत अगर आदमी के सामने हो तो दुनिया के तमाम लंगामे
 उसको बेकार नजर आने लगते है. दुनियामें ईज्जत और पुशलावी
 डसिल करनेके लीये ईन्सानों की तमाम दौड बेवकुई की डरकत मालुम
 डोती है.

कीसी मुसाफ़ीर की ट्रेन सामने पडी हो और वो उसमें बैठने के
 बजाये प्लेटफ़ोर्म की बेंच पर जगा डसिल करने के लीये कश्मकश शुरु कर दे
 तो डर आदमी उसको बेवकुइ कडेगा. मगर आज सारी दुनिया ईसी
 नादानि में मुब्तवा है. डर रोज़ लार्भों आदमी मरकर डमको ये बताते है
 के तुम्हारी ज़िंदगी आगिरत का अक सफ़र है. उसके लीये तैयारी कर लो.
 मगर ईन्सान दुनियाकी दीलयस्पीयों में और दुनियामें ईज्जत ढूँढनेमें

ઈત્ના ગુમ છે. ઓર દુનિયાકે કામોં મેં ઈસ કદર ઉદ્દા હુવા છે કે ઉસે કુદી એહસાસ નહી રહેતા. ઈસી હાલમેં આદમી જીંદગી ગુજરતા રહેતા છે. યહાં તકકે જબ ઉસે મૌત આતી છે તો અચાનક ઉસે માલુમ હોતા છે કે ઉસ્ને અપને આપકો એક ઘરેમેં લાકર ગીરા દીયા છે.

(અલરિસાલા - જુલાઈ - ૮૮)

હર આદમી જે પૈદા હુવા ઓર મર ગયા. ઉસ પર ઉન્મેં સે કોઈ એક અંજમ બીત ચુકા છે. ઓર જે આદમી અભી જીંદા છે. ઉસ પર ઉન્મેં સે કોઈ એક અંજમ બીતનેવાલા છે. હર આદમી દો અંજમ મે સે કીસી એક અંજમકે કિનારે ખડા હુવા છે. ઓર કીસી બી વક્ત વો ઉસ્મેં મુખ્તલા હોનેવાલા છે.

બેશક યે મામલા હર ઈન્સાનકા સબસે ખડા ભારી મામલા છે. યે મામલા ઈન્સાનકો બેચેન કરનેકે લીયે કાફી છે. યે એસા મામલા છે કે અગર આદમીકો ઈસ્કા એહસાસ હો તો ઉસ્કી પુરી જીંદગી બદલ જાયે.

દુનિયાકે મુસાફિર કે પાસ સફરસે વાપસી કા રીટર્ન ટીકટ મૌજુદ હોતા છે. ઈસલીયે આસાની સે વતન આ જતા છે. મગર મૌતકે બાદ આદમીકા ક્યા હાલ હોગા.? ક્યું કે મૌત કા સફર એક એસા સફર છે જીસ્મેં આદમીકે પાસ વાપસીકા ટીકટ નહી હોતા.

આહ ! ઈન્સાન પર કેસા અજીબ દીન ઓનવાલા છે. મગર ઉસ્કે બાવુજુદ વો કિત્ના ઝયાદા ઈસસે ગાફિલ પડા હુવા છે.

સકરાત કે આલમ મેં ક્યા કરે ?

જબ આદમી પર સકરાત કા આલમ તારી હો ઓર મૌત કી સખ્તી શુરૂ હો જાયે તો ઉસ વક્ત હાજેરીન કો સુરએ યાસીન કી તિલાવત કરની ચાહીયે ઉસરો રૂહ નિકલને મેં સહુલત હોતી છે. બાઝ/રિવાયતોં મેં યે મજમુન આયા છે કે હુજુર (સ.અ.વ.) ને ઈશાદ ફરમાયા.

જીસ મરનેવાલે કે સરકે કરીબ સુરએ યાસીન શરીફ પઢી જાયે તો અલ્લાહ તઆલા ઉસ પર મામલા આસાન ફરમા દેતે છે.

(શરહુસ્સુફુર-૬૯)

ઓર હઝરત જાબિર બિન જૈદ ફરમાતે છે કે સુરએ રઅદ પઢને સે

भी मरने वाले को सदुलत और आसानी नसीब होती है.

(ईब्ने अबीशयबल - ३/४४५)

और मुस्तलब है के सकरात के वक्त मैयतका इण किब्ला की जनिब कर दीया जाये और उसके सामने क्लमअे तैयबल लाईवाल ईल्लव्वालु बुलंद अवाजसे पढा जाये. मगर ऐसे पढनेका लुकम न दीया जाये के कर्डी वो जुन्जवाकर ईन्कार न कर दे. और जब वो अेक मरतबा पढ दे तो बार बार पढने पर मजबुर न करे. (इर्रे मुप्तार - २/७५)

और जब इल परवाज कर जाये तो उसके जलडोंको पट्टा वगेरल से बांध दे. और आंगे बंद कर दे. और आंग बंद करने वाला ये पढे. बिस्मिल्लाहे वजला मिल्लते रसुलील्लाह. (शरहुस्सुदुर - ७४)

झीर मैयत के पास पुशुं जलाये और नापाक लोग और डेज वाली औरतें उसके पास से उट जाये. और रिश्तेदारों और दोस्तोंको उसकी मौतकी ईत्तिवाअ दे दी जाये. और दहन करनेमें जल्ता हो सके जल्दी की जाये. (इर्रे मुप्तार-२/८३)

और मैयतको जब तक गुस्ल न दीया जाये उस वक्त तक उसके करीब बेठकर कुर्आन मज्हद की तिवापत न करे. गुस्ल देने के बाद कर सकते है. ईसी तरल धरके दुसरे कमरेमें भी कर सकते है. (शामी-३/८५)

अेक रिवायतमें लुजुर (स.अ.व.) ने मैयतको कहन दहनमें जल्दी करनेकी ताकीद करते लुअे इरमाया.

और मैयतकी तैयारीमें जल्दी करो क्युं के कीसी मुसलमान की लाशको उसके धर वालोंके दरम्मान पडे रहना मुनासिब नही.

ईस जल्दीका अंदाजा ईससे लगाया जा सकता है के कुकडा इरमाते है के अगर कीसी शम्सका जुम्हाकी सुब्लको ईन्तिकाल हो जाये तो सिई ईस वजलसे जुम्हाकी नमाज तक जनाजामें तापीर करना मकडुल है के उसकी नमाजे जनाजामें बडा मजमा शरीक हो जायेगा. बल्के जैसे ही तैयारी मुकम्मल हो नमाजे जनाजा पढकर दहन कर देना चाहीये.

(इर्रे मुप्तार - ३/१३६)

और दहन करनेके बाद झौरन डाजेरीन को लौटना नही चाहीये. बल्के कुछ हैर कअ्रस्तानमें मौजुद रेहनेसे मरनेवालेको उन्स और तसल्ली

नसीब होती है.

दुजुर (स.अ.व.) जब मयतके दहनसे इरिग होते तो उसकी कब्र पर डेहरते और ईशदि इरमाते के अपने भाई के वीये ईस्तिगइर करो और उसके वीये साबित कदमी की द्रुआ करो. क्युं के अभी उससे सवाल किया जानेवाला है.

उजरत अब्दुल्लाह ईब्ने उमर (रही.) इरमाते थे के दहन के बाद कब्र पर सुरअे बकरल की शुर् की आयतें और आपरी आयतें पढना मुस्तलब है. (शामी - 3/183)

मौत के बाद क्या होता है ? :-

मौत की लकीकत मरने से मालुम होगी उससे पहले उसका समजना मुश्कील है. वैसे आम भायनों में इल और बदन की जुदाईका नाम मौत है.

हर शम्सकी मौत वकते मुकरर पर आती है अेक लम्हा बी आगे पीछे नही हो सकता.

कबरका अजाब और सवाल बरलक है. और उसके बारेमें कुर्आन मज्द और बहोतसी हदीसें जिंक की गई है. ईन बातों को सिर्फ अकलके वसवसोंकी वजहसे रद करना सही नही. अजाबे कब्रसे अल्लाहतआलाकी पनाह मागना याहीये अल्लाहतआला हर मुसलमानको मेहकुल रभे. आमीन..

कबर वो जगा है ज्हरमें मयत को दहन किया जाता है. और कबर जन्नतके भागों मेंसे अेक भाग है. या दौजभके घडों में से अेक घडा है. ये हदीसके अल्हाज है. अेक कबर में अगर बहोत से मुई हो तो हर अेक के साथ मामला उन्के आमाव के मुताबिक होगी. उसकी समजने के वीये ज्वाबकी मिसाल काई है. अेक ही बिस्तर पर दो आदमी सो रहे हो अेक ज्वाबमें जागकी सैर करता है. और दूसरा सप्त गरमी में ज्वलता है. अेक ही बिस्तर में लेटनेवालों की डालत अलग अलग है. जब ज्वाब में ये मुशाहीदे रोजाना होते है. तो कबरका अजाब तो गैबकी चीज है. उसमें क्युं ईशकाल किया जये ?

हदीसमें इरमाया गया है के इल मय्यत में लोटाई जाती है. अब

इह याहे ईल्लीयीन या सीन्जयीन में हो उस्का अक भास तअल्लुक बदनसे कायम कर दीया जाता है. अस्की वजह से बदनको भी सवाब या अजाबका अहसास होता है. मगर मामला गैब का है. ईसवीये हमें मैयतके अहसास का आमतौर शुहर नहीं होता. आलमे गैबकी जे बाते हमें डुजुर (स.अ.व.) ने बताया है. हमें उनपर ईमान लाना याहीये.

डुजुर (स.अ.व.) ने ईशाह इरमाया : अगर ये अंदेशा न होता के तुम मुर्दोको दफन करना छोड दोगे तो मैं अल्लाहतआवासे दुरमा करता के तुमको भी अजाबे कब्र सुना दे. जे में सुनता हूं.

(मुस्लिम शरीफ - २/३८६)

ईमाम अबुं हनीफ़ल (र.अ.) “अल हीक़लुल अकबर” में तहरीर इरमाते है. और कबरमें मुन्कर नकीर का सवाल करना उक है. और बंटेकी तरफ़ इह का लौटाया जना उक है और कब्रका भीयना उक है. और उस्का अजाब तमाम काफ़िरो के वीये और बाऊ (गुनाहगार) मुसलमानों के वीये उक है. जरूर होगा.

(शरह़े किफ़ाये अकबर-१२१) (आपके मसाईल और उस्का जल-३०४)

मौत के बाद मुर्दे की जासियत :

मौत के बाद ईन्सान अक दूसरी दुनिया में पहुंच जाता है. अस्की “बरज़ख़” केडते है. यहां के पुरे डावातका ईस दुनिया में समजना मुम्कीन नहीं. उस्की कैफ़ीयतनहीं बताया गई. और ईन्सान उन्को मालुम करनेका मुक़ल्लक़ भी नहीं. अलबत्ता अत्ना कुछ समज सकते थे. ईब्रत के वीये ईस्को बयान कर दीया गया है.

युंताये अक उहीस मे है : मैयत पड़ेयानती है के कौन उस्को गुसल देता है. कौन उसे उठाता है. कौन उसे पड़ेनाता है. और कौन उसे कब्रमें उतारता है.

अक उहीसमें है के जब जनाजा उठाया जाता है अगर वो नेक हो तो केडता है जल्दी ले यलो और नेक न हो तो केडता है डाय बदकिस्मती ! तुम मुंजे कहां लेजा रहे हो ? (सही बुभारी - मुस्लिम) अक उहीसमें है :

अय भाईयो ! अय मेरी नअश उठाने वालों ! देओ दुनिया

तुमको धोका न दे. जिस तरफ उरने मुझे धोका दीया और वो तुम्हें जिलौना न बनाये जिस तरफ उरने मुझे जिलौना बनाये रभा. मैं जे कुछ पीछे छोडकर ज रहा हुं वो तो वारिसों के काम आयेगा मगर बढवा लेनेवाला मालिक क्यामत के दीन ईस्के बारेमें पुछेगा और उस्का खिसाब किताब मुंज से लेगा.

डाय अइसोस ! तुम मुंजे इप्सत कर रहे हो और अकेला छोडकर आ जवोगे. (ईब्ने अबीदुनिया)

आना और जना :-

हर शप्स अपने अपने जानदान में मुकीम दीजाई देता है. मगर ये सब सिर्फ़ उपरकी बात है. असल ये है के यहां कोई भी रहनेवाला नही. अस ! हर अेक आ रहा है. ज रहा है. ईस दुनियाका कोई मकान मकान नही. हर मकान गोया अेक तरफकी आरज सराई है. यहां लोग ईस वीये आते है के वो यहांसे वापस चले जये.

लोग ज्इंगीकी जनते है. मगर मौतको नही जनते. यहां रहने को जनते है. वहां (आजिरतमें) जाने को नही जनते. लोग समजते है के आजीरतमें उन्को जहां रहना है. वो जगा वो है. जे जुदाने उन्के वीये मुकरर की है. न वो जगा जे उन्होंने बतौरे जुद अपने वीये तामीर कर रपी है. (अल रिसाला - ४/१८८०/४)

अयानक मौत :

नबीये करीम (स.अ.व.) से अयानक मौतके बारेमें पुछा गया के ये मौत कैसी है ?

आप (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया मोमीनके वीये रहमत और गुनाहगारके वीये गजबनाक पकड. (मस्नदे अहमद)

मोमीन के वीये मौत तो जैसे भी रहमत और नेअमत है. के वो शुशी शुशी अपने असली वतन ज रहा है. और चलनेसे पहले इरिशतोंका सलाम क्लाम और कदम कदम पर उस्का ईस्तिक्बाल हो रहा होगा.

ईस्के अलावा दुनियाकी तकलीफों और मुसीबतोंसे आजाद होकर मौतकी सकरात और बेचेनीसे मेहकुज हो गया. और जल्दी जल्दी अपने

रब के लुजुरमें पलुंय गया.

और गाड़ील और गुनाडगार ईन्सान के वीये अयानक मौत
 अेक धक्का, लुदेसा और अयानक पकड ले. तोबा और ईस्तिगडार का
 मौका न भील सका. छुंढगीमें अपनी वंगी उम्र से झपटा न उठाया.
 ईसवीये गुनाडगारकी अयानक मौत अइसोसनाक और गजबनाक पकड
 ले.

लुदीसमें अयानक मौतसे पनाड तलब करनेकी जे छिदायत
 भीवती है वो ऐसी ली बुरी मौत से मुतअल्लीक है. वरना मौत तो
 मोमीन का तोलइा है. (इरामीने रसुल (स.अ.व.) ४०४)

मौत के सामने कीसी की नही चलती :-

शेभ सअदी (र.अ.) ने अेक कलानी लीभी हैके कीसी बादशाहके
 दरबारमें अेक पलेलवान रहता था. पलेलवानकी उम्र जयादा होने लगी.
 तो बादशाहने उससे कला के कीसी जवान आदमीको अपने करतब सींभाकर
 पलेलवान बना दो ताके तुम्हारे बाद दरबारकी जगा भीली न रहे.
 पलेलवानने अेक नवजवानको पसंद करके अपने करतब सिंभाने शुरू किंये.
 यहां तकके वो अेक लौशियार पलेलवान बन गया.

उस्के बाद वो शम्स अपने उस्तादसे भागी लो गया. वो शहरे
 में लोगों के दरम्यान ईस तरहकी बातें करने लगाके वो अपने उस्तादसे
 जयादा बडा पलेलवान है. ये बात बादशाहको अरखी नली लगी.
 दरबारीयोंसे बातचीत के बाद ये ईस्वा लुवा के उस्ताद और शागिर्द के
 दरम्यान मुकाबला कराया जये.

दोनों अंभाउमें जमा लुअे. शागिर्दने कुछ देर तक जेर आजमाया
 उस्के बाद अयानक उस्ताद ने उस्को जमीन पर पटक दीया.

बादशाह ने उस्ताद से पुछा के तुम तो अपना सारा करतब अपने
 शागिर्दको सींभा चुके. कीर तुम किस तरह उस्को खराने में काम्याब लोगये.
 उस्ताद ने जवाब दीया. पलेलवान हमेशा अेक दाव अपने पास मेलकुअ
 रभता है.

ईसी तरह पलेलवाने कितरत (अल्लाह तआला) ने अेक दाव
 अपने पास मेलकुअ रभा है. उस्का नाम मौत है.

मौत का ईस्ला अटल है :-

लुजुर (स.अ.व.) के यहाँ चार लउकीयां पैदा लुई. जैनन, इकैयल, कुलसुम, इतमा, (रदीयल्लालुं अन्दुम) ये चारों सालबजादीयां लउरत भदीण (रदी.) के अतन से पैदा लुई थी. तीन सालब जादीयां लुजुर (स.अ.व.) की छंङगी ली में ईन्तिकाव कर गई. लउरत इतमा (रदी.) का आपकी वइतके छे माड बाद तकरीबन 30 सालकी उम्रमें ईन्तिकाव लुवा.

लुजुर (स.अ.व.) के लउकों की तअदाद तीन थी. तीनों लउके अथपनमें ईन्तिकाव कर गये. उनमें से कासिम और अब्दुल्लाड लउरत भदीण (रदी.) के अतनसे पैदा लुअे. और मक्काके ईब्तिदाई जमानेमें उनका ईन्तिकाव लो गया.

तीसरे सालबजादे लउरत ईब्राहीम लउरत मारीयड किब्तीयड के अतन से पैदा लुअे. उनडोंने तकरीबन दैठ सालकी उम्र में सन लीजरी- १० में वइत पाई. और जन्नतुल मअला में द्खन कीये गये.

लउरत ईब्राहीम अलोत तंद्ुरस्त और लोनलार (काबिल) थे. वो शकल और सुरतमें रसुलुल्लाड (स.अ.व.) से अलोत मीलते लुवते थे. जब उनका ईन्तिकाव लोने लगा तो रसुलुल्लाड (स.अ.व.) ने उनको अपनी गोदमें उठा लीया और इरमाया : अय ईब्राहीम ! अल्लाडके ईस्ले के मुकाबले में लम तुडारे कुछ काम में नली आ सकते.

(अलरिसाला - १/१८८१/३१)

मौत की तैयारी करना :

मौत की तैयारी के लीये आदमी को अपना ईमान मज्बुत बनाना चाहीये. क्युं के मौत के बाद की लंमेशा की छंङगी. मोमीन के लीये अडी मसरत और शादमानी (पुशी) की छंङगी है.

जम्हल इवाईद में अक लदीस है के “मौत मोमिन का तोलइा है”. और मडमुद बीन रबीअ (र.दी.) से रियायत है के दो चीजों को आदमी पसंद नली करता. लालां के ईन दोनों में मोमिनके लीये जैर है. अक मौत है. अस्को लोग नापसंद करते है. लालां के मौत मोमिन के लीये किन्ने के मुकाबले में अडी अलाई है. दुसरा मालकी कमी आदमी को नापसंद लोती

हे डालांके माल की कमी में मोमिन के लीये ये लवाएँ हे के खिसाब कमसेकम देना पडेगा. (जम्हिल इवाएँद-इवाला मस्नदे अलमद)

मौत की सप्तती जेवने के बाद बरज्ज और कब्र का मामला हे. ज्जस्के बारे में उदीस हे के वो जन्नतके भागों मेसे अक भाग हे. या जलन्नम के धडों मेसे अक धडा हे. सही मुरिलम शरीफमें रिवायत हे.

जब आदमी मर जाता हे तो उसके अमलका रिश्ता कट जाता हे मगर तीन चीजों का (सवाब) नहीं कटता.

- (१) वो सद्का जे जरियल हे. (यानी नेक वो काम ज्जस्का सवाब जारी रहे)
- (२) वो ईल्म ज्जस्का नफ़ा उठाय़ा जाता हो.
- (३) नेक औलाद जे उसके लीये दूआ करती हो.

अगर बरज्ज की लंबी योडी ज्जङ्गी में नफ़ा उठाना चाहे, कबर में सवाब डालिसल करना चाहे तो आज मौका हे. इन तीन बातोंको मजबुती से पकड लें. या कमसे कम उनमेसे अक को आज ही करले. जैसा के मद्रसा बनवा दे. मस्जिद तामीर करा दे, सराय या सबील लगा दे, जबतक चलता रहेगा बराबर अजर पाता रहेगा, या लोगों को ईल्मे दीन सीखा दे. कुर्आन मज्जिद या दीनी किताबें वक़फ़ कर दे, या अपनी औलाद की ऐसी अच्छी तरबियत कर दे के वो नेक और दीनदार रहे. मा-बाप के लीये उनके मरने के बाद दूआ करते रहे.

मुर्दा कबर में अपने रिश्तेदारों, भाईयों और दोस्तोंकी दूआओ मग़्फ़िरत का ईन्तिज़ार कर रहा होता हे. जैसा के दुबने वाला तीन्के का सडारा बेनेका ईन्तिज़ार करता हे इस तरह उस वक़्त ये तीनों चीजें इस मरनेवाले के काम आयेगी.

मौत की तमन्ना :-

सही उदीसों में जे मौतकी तमन्ना को मना इरमाया हे. उसका डालिसल ये हे के दूनियाकी तकलीफ़ोंसे ग़बराकर जे सबरीसे मौत मागने लगे ये दूइस्त नहीं.

डुजुर (स.अ.व.) ने इरमाया के कोई शप्स कीसी मुसीबतकी वजहसे मौतकी तमन्ना करे अगर कलेना हे तो युं कले के या अल्लाड

जब तक मेरे लीये छंदगी बढेतर हो उस वक्त लीदा रफ और जब मौत बढेतर हो तो मुझे मौत देदे. (म.कु.प-१५२)

अपनी डिंकर करें:-

- ❖ क्या मेरे अकाईद दुरस्त है.?
- ❖ क्या मेरी नमाज दुरस्त है.?
- ❖ क्या इर्ज जकात अदा करता हुं.?
- ❖ क्या मेरी कमाई उलाव है.?
- ❖ क्या बीवी के साथ मेरा मामला दुरस्त है.?
- ❖ क्या बरयों पर शइकत करता हुं.?
- ❖ क्या रिश्तेदारों के साथ नेक सुलुक करता हुं.?
- ❖ क्या में शुक्र अदा करता हुं.?
- ❖ क्या मेरे अंदर तकब्बुर की बिमारी है.?

क्या आप मौत के लीये तैयार हैं? :-

- ❖ क्या आपने वसीयत नामा लीख लीया है?
- ❖ क्या आपने तौबा करली है?
- ❖ क्या आपने कर्ज अदा कर दीया है?
- ❖ क्या आपने बीवीका मेहर अदा कर दीया है?
- ❖ क्या आपने ज़िम्मे कोई नमाज बाकी है?
- ❖ क्या आपके ज़िम्मे कोई रोजा बाकी है?
- ❖ क्या आपके ज़िम्मे इर्ज उल्लू बाकी है?

(मौलाना मोहंमद तकी उस्मानी साहब)

दुस्ने जात्मा अजुम दौलत :-

दुस्ने जात्मा से मरनेवाले की सिर्फ ज़लीरी डालत मुराद नही है. क्युं के बाज मरतबा जैसा होता है के बडे नेक और जुजुर्ग आदमी पतरनाक डालेसा से अयानक वक़्त पा जते है और कभी कोई बदअमल आदमी बडी आसानी और अच्छी डालतमें मरता है.

दुस्ने जात्मा का मतलब ये है के आदमी कामिल ईमान और नेक आमाव की डालतमें रहमते जुदावंदी का उम्मीदवार बनकर बारगाडे जुदावंदीमें पलुंये. ईस्के साथ अगर कोई ज़लीरी तकलीफ़ पलुंये तो कोई

इकिरकी भात नही है और अगर ये कैश्चित न होतो हीर सिई आसानीकी मौतसे कुछ क्षयदा हासिल न होगा.

दुजुर (स.अ.व.) ने ईशाई इरमाया : अल्लाहतआवा जब कीसी बंदेसे मलोबत करता है तो उसे मिठास अता इरमा देता है. सदाबा (र.दी.) ने अर्ज किया मिठास अता करनेका क्या मतलब है ? तो आप (स.अ.व.) ने इरमाया के उसे मौतसे पेडले जैसे नेक आमावकी तौकीक अता इरमाते है के उसके आसपास पडोसमें रहनेवाले उससे पुश होते है और (मौत के बाद) उसकी तारीक करते है. (ईबने खब्बान - 2/371)

हुस्ने ખાત્મા નસીબ હોના :-

मुल्का अली कारी (र.अ.) इरमाते है के जब ईमानकी सलावत (मिठास) ओक भरतबा मोमिनको अता इरमा दी जाती है तो हीर वो करीम मालिक अताओ शाही को देकर कभी वापस नही लेते. और ईस्मे ईशारा है के जैसे शम्सको हुस्ने खात्मा नसीब होगा.

(मिशकत - १/७४)

हुस्ने खात्मा और दीन पर मजबुती से कायम रहेना. ये दोनों ऐसी बडी नेअमते है जन्की बरकतसे जल्दन्म से नजात और दाओमी जन्नत अता हो जाये ये हमारी मेहुदुद खंडगी की ईबाहत और रियाजतका बहवा डरगीज नही हो सकती थी. ईस वीये अल्लाहतआवाने अपने बंदोको ખબરदार किया के तुम मेसे कोई जन्नतमें दापले का कोई अवेज (बहवा) अदा नही कर सकते. क्युं के ८० बरस के नमाज रोजोंसे ८० बरस की जन्नत मीवने का कानुन समजमें आता है. लेकीन हंमेशा के वीये कभी ખत्म न होनेवाली जन्नतका खंडबरसोंकी ईबाहत पर मीवना ये सिई उक तआवा शानहुं का ખास ईन्आम है.

(कीशकुले मअरिफत - २५१)

हुस्ने ખાત્મા કે લીયે નવ નુસ્ખે :-

(१) डर ईर्ज नमाज के बाद गीडगडा कर ये द्रुआ पढना :

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ (پ ۳ ع ۹)

रब्बाना वा तौजीग कुलुबना बअद ईज डदयतना वडव वना मील्लहुन्क रहमड ईन्नक अन्तव वडववव . (पा-3) इकुअ ८)

તફસીરે બયાનુલ કુઆનિ મેં હૈ કે ઈસ આયતમેં અલ્લાહતઆલાને ઈસ્તિકામત (દીન પર મજબુતી સે કાયમ રહેના) ઓર હુસ્ને ખાત્માકી દરખાસ્ત કા બંદો કે લીયે સરકારી (ખુદાઈ) મજમુન નાઝીલ ફરમાયા હે ઓર જબ હક તઆલા શાનહું ખુદ દરખાસ્તકા મજમુન અતા ફરમાયે તો ઉસ્કી કબુલીયત યકીની હોતી હે. લિહાઝા ઈસ્કી બરકતસે ઈસ્તિકામત ઓર હુસ્ને ખાત્મા ઈન્શાઅલ્લાહ જરૂર અતા હોગા-

(૨) હુસ્ને ખાત્માકે લીયે હદીસે પાકમેં હૈ કે યે દુઆ હંમેશા પાબંદી સે પઢે.

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيْثُ.

યા હય્યુ યા કય્યુમુ બિરહમતિક અસ્તગીસ. (મિશકાત - ૨૧૬)
હુઝુર (સ.અ.વ.) કો જબ કોઈ ગમ ઓર સદમા ઓર બેચેની હોતી તો આપ ઈસ દુઆકો કસરતસે પઢતે થે. (મિશકાત - ૨૧૬)

(૩) મિસ્વાક કરના હૈ : મિસ્વાક વાલે વુઝુંસે જો નમાઝ અદા કી જાયેગી ઉસ્કા સવાબ ૭૦ ગુના ઉન નમાઝોસે ઝયાદા હોગા જો બગૈર મિસ્વાક વાલે વુઝુંસે પઢી જાયે.

મિસ્વાક કી સુન્નતકી બરકતસે મૌત કે વકત કલમએ શહાદત યાદ આ જાયેગા. (શામી - ૧/૮૫)

મિસ્વાક પકડનેકા તરીકા હઝરત અબ્દુલ્લાહ ઈબ્ને મસ્ઉદ (ર.દી.) કી રિવાયતમેં યે હૈ કે છોટી ઉંગલી મિસ્વાક કે નીચે રખે ઓર અંગુઠા મિસ્વાક કે શુરૂ હિસ્સેમેં રખે. ઓર બાકી ઉંગલીયાં મિસ્વાક કે ઉપર રખે. (શામી - ૧/૮૫)

(૪) ઈમાનકી નેઅમત પર શુક કરના :

યાની હરરોઝ મૌબુદા ઈમાન પર શુક અદા કરના - અલ્લાહતઆલા કા વાઅદા હૈ. અગર તુમ લોગ શુક અદા કરોગે તો હમ અપની નેઅમતો મે જરૂર જરૂર ઈઝાફા કર દેગેં.

(સુરએ ઈબ્રાહીમ - પારા-૧૩)

બસ ! ઈમાન પર શુક કરના ઈમાન કે બાકી રેહને ઓર તરક્કી કા ઝરીયા હૈ.

(૫) બદનજરી સે હિફાઝત :

બદનજરી સે હિફાઝત પર હલાવતે ઈમાનીકા અતા હોનેકા

वाअदा है. और लवावते धमान जब दीलको अक भरतबा अता हो जयेगी तो झीर कभी वापस न ली जयेगी. दुस्ने भात्माकी बशारत धस अमल पर ली है.

हदीसे कुदसी में है. दुजुर (स.अ.व.) ने धशाद इरमाया :

बेशक नजर धवलीस के तीरों मेंसे अहरमें बुजाया दुवा अक तीर है.

जस अंदेने मेरे भौइसे अपनी नजरको (नामेहरम लडकीसे या हसीन लडकेसे) मेहुकुल रभी- उस्को असा धमान अता करुंगा. जस्की लवावत वो अपने दीलमें मेहयुस करेगा. (कुनुल उम्माव-1/328)

मुक्ला अली कारी (र.अ.) इरमाते है के ये लवावते धमान कभी वापस न होगी. अस ! धस अमल पर ली धमान पर भात्मा की बशारत साबित हो गध.

दुस्ने भात्माकी ये दौलत आनकल सदकों पर तकसीम हो रही है. नजरकी लिझाअत कीजये और ये दौलत हासिल कीजये.

(६) अजानके बाद की दुआ पढना है.

धस दुआको दुआ अ वसीला ली केहते है. अजान के कलीमात का जवाब दीजये. झीर जब अजान अत्म हो आप (स.अ.व.) पर हुद शरीक पढकर दुआअे वसीला पढीअे.

اللَّهُمَّ رَبِّهِ الدَّعْوَةَ التَّامَّةَ وَالصَّلَاةَ الْقَائِمَةَ اِنَّ مُحَمَّدًا اَبْنُ اَبِي الْقَيْسِ وَالْقَضِيَّةَ
وَابْنَةَ مَقَامًا مَحْمُودًا اِنَّ الَّذِي وَعَدْتَهُ اِنَّكَ لَا تَخْلِفُ اَلْعَهْدَ

अल्लाहुम्म रब्ब हाजुडीद अअवतीत ताम्मती. वस्सलातील काधमती आति मुहंमद नील वसीलत वल इदीलत वबअस्सुं मकामम महुद नीललज वअदतुं धन्नक ला तुहलीकुल मिआद.

दुजुर (स.अ.व.) का धशाद है के जे धस दुआको पढेगा उस्के लीये मेरी शिक्षाअत वाजब होगी. (बुजारी शरीक)

जब धस दुआ पर दुजुर (स.अ.व.) की शिक्षाअत वाजब होगी तो मुक्ला अली कारी (र.अ.) इरमाते है के उस्में दुस्ने भात्माकी बशारत भौबुद है के उस्का भात्मा धमान पर होगा. क्युं के दुजुर (स.अ.व.) की शिक्षाअत काझीर को नही भील सकती. (मिश्कत - 2/163)

(૭) અલ્લાહ વાલોંકી સોહબત ઈખ્તિયાર કરના ઓર ઉન્સે મોહબ્બત કરના સિફ અલ્લાહ કે લીયે :

બુખારી શરીફ કી દો રિવાયતોંસે પતા ચલતા હે કે ઈસ અમલસે હુસ્ને ખાત્મા કા ફેસ્લા મુકદ્દર હો જતા હે.

એક શખ્સ જિફ કી મજલીસ મેં અલ્લાહવાલોં કે સાથ થોડી દેર કે લીયે બેઠ ગયા. અલ્લાહતઆલાને ફરિશતોંસે ઈન જિફ કરનેવાલોં કી મગફીરતકા એલાન ફરમાયા તો એક ફરિશતેને કહા યા અલ્લાહ ફ્લાં શખ્સ તો કીસી જરૂરતસે આયા થા ઓર ઉન્મેં બેઠ ગયા ઓર વો ખતાકાર ભી હે. ઈશાદિ હુવા કે યે એસે મકબુલે હક હે કે ઉન્કે પાસ બેઠને વાલા મેહરૂમ નહી રેહ સકતા. મેંને ઉસ્કો ભી બખ્શ દીયા.

બુખારી મુસ્લિમ શરીફ મેં હે કે જીસ્મેં તીન ખસ્લતેં હોગી વો ઈમાનકી હલાવત પાયેગા.

- * જીસ્કે દીલમેં અલ્લાહતઆલા ઓર હુજુર (સ.અ.વ.) કી મોહબ્બત તમામ કાઈનાત સે ઝયાદા હો.
- * જો કીસી બંદેસે મોહબ્બત સિફ અલ્લાહતઆલા કે લીયે કરે.
- * જો ઈમાન અતા હોનેકે બાદ કુફ મેં જના ઈત્ના નાપસંદ કરે જૈસા આગમેં જાને કો.

ઈમાન પર ખાત્મા કે લીયે મોહબ્બત કરના એક અજીમ ઓર બડા ઝરીયા હે. ઓર જહીર હે કે યે મોહબ્બત અલ્લાહવાલોંસે હી કામિલ દર્જે કી હોતી હે. બસ ! ઈસ્કા કામિલ નુસ્ખા કીસી અલ્લાહવાલેસે મોહબ્બત કરના હે.

અલ્લાહવાલોં કી મોહબ્બતસે હલાવતે ઈમાની નસીબ હોતી હે ઓર ઉસ પર હુસ્ને ખાત્માકા અતા હોના જહીર હો ગયા.

(૮) સદકા કરના હે :

હુજુર (સ.અ.વ.) કા ઈશાદિ હે. સદકા અલ્લાહતઆલાકે ગજબકો ઠંડા કરતા હે ઓર બુરી મોતકો દફા કરતા હે.

(મિશકાત - ૧૬૮)

શેખ અબ્દુલ હક મોહદીસ દેહલ્લી (ર.અ.) તહરીર ફરમાતે હે કે બુરી મોત કે દફા કરને સે મુરાદ બુરે ખાત્માસે હિફાઝત હે.

(८) अल्लाहतआला की मोहब्बत सीगना है और मोहब्बतके आमाव धन्तियार करना है. और धन दोनों को हासिल करनेका जरीया अल्लाह वालोंसे मोहब्बत करना है. उदीस में धशाह है:

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَلِكُ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يُحِبُّكَ وَالْعَمَلَ الَّذِي يَبْلُغُنِي حُبَّكَ
अल्लाहुम्म धन्नी अस्अलुकु हुब्बक वहुब्ब मंय युदीब्बुक वल
अमलल्लजु युबल्लेगोनी हुब्बुक.

(किश्कुले मअरिफत - २४८/२६३)

अल्लाहतआला हम सबको आपने अेहसान और करमसे मौत के वक्त कल्मअे शहाहत नसीब इरमाये. आमीन...

दूरने जात्मा और गुनाहों का इफ्शारह :

धस उन्वान में वो उमुर शुमार क्रीये गये है. जन्से अगले और पीछले गुनाह माफ़ होते है. जरकी अल्लामा सुयुती (२.अ.) और हाईज धन्ने उजर अस्कलानी (२.अ.) ने भी बयान क्रीया है. वो उमुर ये है.

नागवारी के बा वुबुह वुजु का पानी आज़ामें दूर तक पहुँचाना. मोअज़ज़ीन जब अशहदु अल्लाधलाहा धल्लल्लाह कहे तो उसी जैसा जवाब देना और ये कलीमात भी जयादा कर दो.

رَضِينَا بِاللَّهِ رَبًّا وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَسُولًا وَنَبِيًّا
मुकतदी का धमाम की आमीन के साथ आमीन केडना. यासत और धशराक की नमाज़ पढना. नमाजे जुम्मा के बाह धसी तरह भैठे हुवे सुरअे इातिहा, सुरअे धप्वास, कुल अउजु बिरब्बील इलक और कुल अउजुबिरब्बीन्नास, सात-सात मरतबा पढना, सवातुत्तस्बीह पढना, रमजान शरीफ़ के रोजे रभना, अरफ़ल के दीन रोज़ा रभना, उज्ज करना.

धसी तरह मकामे धब्रालीम के पीछे दो रकात नइल नमाज़ पढना और सवाबकी नित्यत से का'बा शरीफ़ पर नजर करना और सुरअे उशर की आपरी आयतें तिलावत करना. अपने बरयोंको कुर्आन मज्द की तालीम देना और उस शप्स केभी गुनाह माफ़ हो जते है. जे कीसी अंधे को यावीस इदम पकड कर ले यले और उस्केभी जे कीसी मुसलमान की हाजत रवारध के वीये कोशीष करे. अगरये वो हाजत पुरी न कर सके.

ईसी तरह गुनाखों का कङ्कड़ारह रास्ते से कांटे काभी ईँक देना है और कीसी अजबनी मुसाफ़ीर की ज़स्के पास उसकी ज़न पड़ेयान वावा कोई न हो तिमारदारी करनाभी है. मुसलमानोंसे मुसाफ़ल करनाभी गुनाखों का कङ्कड़ारह है. जब के उसके साथ दूद शरीक़ पढ लीया ज़ये और ये दुआभी पढी ज़ये. (२०१-२-प) رَبَّنَا إِنَّا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَفِي الآخِرَةِ حَسَنَةٌ وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (प-२-२०१)

क्युं के ये लउरत अनस (रही.) की रिवायतसे साबित है.

ईसी तरह कपडा पड़ेनने और जाना जाने के बाद अल्लहुविल्लवाल पढना भी गुनाखों का कङ्कड़ारह है. ईसी तरह ८० सालकी उमर होना ईनमें अगरये भाज रिवायते ज़ईक़ भी है. मगर लदीसे ज़ईक़ परभी अमल इजाईवे आमाव में कर लीया जाता है. (जब तक के रिवायत का ज़ेअक़ बहोत शहीद न हो)

अल्लामा मनावी (र.अ.) केहते है के ज़स शम्सको इजाईवे आमाव से मुतअल्वीक़ कोई बात पलुंये तो उसे याहीये के उस पर अमल ज़र करे अगरये अक़ ली मरतबा क्युं न हो ताके ईस इज़ीवत का मुस्तलीक़ हो ज़ये. (मआरिक्के सुफ़ीयल-२४२)

मौत में इक़ :

मौत हर अक़ पर आती है. कोई ईससे बच नही सकता. मौते हो किस्म की होती है. अक़ वो जबके आदमी अल्लाल को अपना मक़सुद बनाये लुअे हो. वो अल्लाल के लीये जोलता हो और अल्लाल के लीये युप रेहता हो. उसकी तमाम तपज्जुल अल्लाल की तरक़ लगी लुई हो. जैसे आदमीका मतलबये है के वो अपने रब की तरक़ सक़र कर रहा था और मौतके इरिरेतेने उसके सक़रको मुज्तसर करके उसको उसकी मंजीव तक पलुंया दीया.

दुसरा आदमी वो है ज़स्ने अपने मालिक को लुवा रभा है. उसका इक़ना उसका यवना अल्लाल के लीये नही होता. वो अपने रबको छोडकर कीसी और तरक़ भाग रहा है. जैसे शम्स के लीये मौतका दीन उसकी गिरफ़्तारी का दीन है. उसकी मिसाल उस बागी (भगावत करनेवाले) की तरह है. ज़े यंद दीन सरक़शी दीजाये और उसके बाद उसको पक़ड कर अदालतमें लाजूर कर दीया ज़ये.

जलीर में एक तरलकी मौत है. जे दोनों आदमीगों पर आती हो. मगर दोनोंमें धन्ना इर्क है जन्ना कुल और आगमें. अक के लीये मौत रब्बुल आलमीन के डेह जाने में डाला जना. और अक के लीये मौत जन्तके भागोंमें दाभलेका दरवाजा है. और कीसी के लीये मौत वो दीन है. जब के उसको जलन्तमकी भडकती दुर्ध आगमें डूंक दीया जाता है. ताके अपनी सरकशी के लुर्म में वहां अबदी तौर पर जलता रहे.

मौत डर थीजको बातिल कर देगी और उसके बांढ वही थीज भयेगी जस्की आभिरतमें कोर्ध किंमत हो.

सख्यार्ध की पुकार पर ध्यान न देना लंमेशा धसलीये होता है के आदमी के सामने सिई मौतसे पेहलेकी दुनिया होती है. आदमी अगर मौतके बादकी दुनिया देग ले तो आनखी वो उरा गुदाके आगे जुंज जये जस्के आगे उसे कल जुंकना है. अगर ये कलका जुंकना कीसीके कुछ काम न आयेगा.

(अलरिसावा - 3/१८८१/१५)

मौत सिई हालत बदनने का नाम है:-

यानी इह की बादशाहत जे बदन पर थी, अत्म हो गध और बदन की इह धताअत से बाहर हो गध. धन्सान के बदनने के तमाम आजा इह के मुलाजीम है. वो जगतक बदन में रहती है जिनसे काम लेती है. नैसा के डाय से पकडती है, कान से सुनती और आंभो से देखती है. लेकिन थीजों की लकीकत पुट मालुम करती है. और पुशी और गम और मुप्तवीक कीस्म की तकवीर्शों से असर लेती है. धन थीजों के लीये बदनमें जिस्का कोर्ध मुलाजीम नही.

धसलीये मरने के बाद यानी इह का बदन से लुटा होने के बाद, इह बदन के मुलाजीमो के जरीया जे भातें डालिल करती थी वो अत्म हो जाती है. यानी लूक, प्यास, शेलवत वगैरह.

लेकीन डर थीज की कैकियत और पुशी व गमी का अेलसास इहमें बाकी रहता है. बटके मरने केबाद इह का अेलसास (असर लेना) बलोट जयादा बढ जाता है.

सुंनये मरते वक्त अगर आदमी पर बीवी बख्यों, घर बार, माल दौलत की मोलब्बत गालिब होती है तो जिस्का अेलसास और

असर इल को जयादा रेलता है. और दुनिया के छुट ने के गम में मुज्जला लोती है. और ये अजाब मुज्जलिक शकलोमें इल पर मुसल्लत लोता है.

और अगर आगिरत का शौक अल्लाह तआलासे मीलने की तडप जिस्के दिदार के शौक में इल निकलती है तो ये बडी मुबारक इल लोती है. हीर ये लंमेशा जिसी जयाब में कयामत तक रलेगी. जिस्का लरर भी जिसी लालत में लोगा.

दहन करनेके बाद इह अपना वक्त कहां गुजारी है ?

ईस बारे में रिवायतें मुज्जलीक है. तमाम रिवायतोंको जमा करनेसे जे बात मालुम लोती है वो ये है के नेक इलोंका असल हीकाना ईल्लीथीन है. (मगर उसके दरजत मुज्जलीक है) बद्दकार इलों का असल हीकाना सीज्जिन है. और लर इलका अक भास तअल्लुक उसके बदनके साथ कर दीया जाता है. याले वो बदन कबरमें दहन किया गया लो या दरियामें दुब गया लो. या कीसी जन्नवरके पेट में लो.

मतलब ये के बदनके लिस्से जहां जहां लोंगें. इलका अक भास तअल्लुक उनके साथ कायम रलेगा. और ईसी भास तअल्लुक का नाम “बरज्जभी ज्जंगी” है. जस तरल नुरे आइताब से जमीन का ऊर्जा यमकता है ईसी तरल इलके तअल्लुक से बदनका लर लिस्सा ज्जंगी से मुनव्वर लो जाता है.

अगर ये बरज्जभी ज्जंगीकी लकीकतका ईस दुनियामें मालुम करना मुम्कीन नली.

कबर में इल का अक भास तअल्लुक (जस्की कैइयत का समजना लुमारे बस में नली.) बदनके साथ कायम कर दीया जाता है. जससे मुर्दमें अलसास और तमीज पैदा लोजती है.

(आपके मसाईल और उसका लल-30८)

आलमे बरज्ज :

शरीअत की ज्जबानमें आलमे बरज्ज वो आलम है. जहां इले दुनियासे और जमीनी अनासीर (तत्वो) की कैद से आजाद अपनी अक मुस्तकील ज्जंगी रभती है. और वहां राहत और तकलीक सेलती है.

छंदगी के तीन दर्जे है.

(1) पहला मरहला - दुनियाकी छंदगी :-

ईस मरहले में बदन रूढ़ के साथ होती है. और उन्को बदनसे तअल्लुक डोनेकी वजह से राहत और तकवीक़ का अहसास होता है.

(2) दूसरा मरहला - बरज़्जी छंदगी :-

ईस मरहले में बदन रूढ़ की कैद से आजाद हो जाती है और रूढ़ को सीधा राहत या तकवीक़का असर होता है. अबबत्ता शरीरों की छंदगीके बारे में उदीस में आता है के उन्की रूढ़े सज़्ज परीन्दों के अंदर होती है. ईन परीन्दों के रेडनेके वीये कुछ कन्दीवे (कानुस) अर्थ के नीये बटकाई गई है. ये परीन्दे जन्नतमें ज़ां यावे असेरा करते है. ईर बौटकर ईन्डी कन्दीवों के पास आ जाते है. (मुस्लिम शरीक़)

ईस तरह ये रूढ़े अपना आरज़्ज ज़माना गुज़रती है. या बगैर ज़स्म के युंली रेडती है.

(3) तीसरा मरहला - आज़िरतकी छंदगी :-

ईस छंदगी में रूढ़ों को दोबारा ज़स्म अता होगा ज़स्के अंदर वो दुनियाकी छंदगी में रेडती थी.

दुनिया और आज़िरत की ईस दरम्यानी छंदगी को आलमे बरज़्ज कडा जाता है.

ये छंदगी असल में ईन्तिज़ार का वक़फ़ा है. ताके तमाम रूढ़े ज़मा होकर आलमें आज़िरत के वीये तैयार हो- और ज़ब दुनियाके आज़री ईन्सानकी रूढ़ भी वहां पहुंच जाये और पहलेवी दुनिया इना हो जाये तब तीसरी छंदगीका दौर शुरु हो और रूढ़ों को दोबारा ईन्के ज़स्मों में मुन्तक़ील कीया जाये और वो अपने कीये की सज़ामें होज़ा या नेकी के बहलेमें जन्नतके डक़दर हो. ईससे ये भी मालुम हुवा के दुनिया अमलकी ज़गा है. और आज़िरत बहला पानेकी ज़गा है और ईन दोनों के बीयमें आलमें बरज़्ज के नामसे अक़ बीयकी दुनिया है. जे डकीक़तमें ईस्वा और ईन्तिज़ार का वक़फ़ा है. ईस डकीक़त की तरक़ कुर्आन मज्जद में ईशाद है. दुनिया और आज़िरत की ईस दरम्यानी छंदगी को आलमे बरज़्ज

कहा जाता है.

उर अेक शप्स अेक दीन भौतका मजा यभने वाला है और क्यामत के दीन तुम सबको पुरा बढवा-दीया जयेगा. (उस दीन) जे शप्स दीजभसे दुर रभा गया और जन्नत में गया वो काम्याब हुवा और दुनियाकी छंढगीतो सिर्फ धोके का सोदा है. (आले ईम्रान - १८५)

यहां अेक सवाल ये पैदा होता है के आलमे बरजभमें जहां इले बदन से आजाद होगी क्या इहाँ को राहत और तकवीक भीवना शुरु होगी?. क्या उनके ईन्तिजारका ये वकफ़ राहत या तकवीक में तब्दील हो जायेगा?

जवाब में अर्ज है के राहत और तकवीक की शुरुआत इसी आलमें बरजभसे शुरु हो जायेगी.

कुर्आन और हदीस की रोशनी में ये लकीकत सुरज से जयादा रोशन है के सकरात के वक्त से ली इह को रजमतके इरिशतों से राहत और अजाबके इरिशतोंसे तकवीक भीवना शुरु होजाती है. इरी लम्हा ब लम्हा उरमे ईजाफ़ा होता रेहता है. अल्वाहदतआला का ईशाद है.

काश तुम (अपनी आंभोसे) वो डालत देभो जबके इरिशते ईन काकिरोकी ज्ञन निकालते है और उनके यहेरों और पछों (सुरीन) पर मारते है. और (केहते है के अभी क्या है ? आगे यलकर दीजभके अजाब का मजा यभ. ये उन आमाव की सजा है जे तुम्हारे डार्थोंने आगे भेजे है. और अल्वाह अपने बंदो पर जुल्म करनेवाला नही.

(अन्हाल - ५०-५१)

यही इरिशतें उनहे तमाये मारते है और उनकी सुरीनों और उनकी पीठ पर मारते हुअे पीटाई करते है. सकरात के वक्त इस किस्म की सजाअें काकिरों और मुशरीको और बढकारों को दी जाती है.

रहे पाकबाज, परहेजगार और भुदाके मोमीन बंदे तो उनके बारेमें हुजुर (स. अ. व.) का ईशाद है.

जब मोमीन बंदा दुनियासे इभसत होकर आलमें आभिरतका इभ करता है तो उसके पास आस्मान से जैसे इरिशते उतर कर आते है उनके यहेरे सुरजसे जयादा रोशन होते है. उनके साथ जन्नतका कफ़न

डोता है और जन्नतकी पुशुं साथ डोती है. और मोमीनकी जहां तक निगाह जाती है वहां तक इरिशते आकर बैठ जाते है. हीर मौतका इरिशता डाल्जर डोता है और उसके सरखाने बैठ कर कडेटा है : अय पाकीजा इल! अपने रबकी मगहीरत और उसकी पुशनुदी की तरफ यल. ये सुनते डी इल बदनसे ईस तरल निकलती है जैसे मशकीजे में से पानी निकलता है: रडी काहीरों और मुनाफिकोंकी इले तो उसके बारेमें रसुलुल्लाह (स.अ.व.) का ईशाद है.

और जब काहीर दुनियाको छोडकर आभिरतकी तरफ कुय करता है तो उसके करीब आसमान से कावे यडेरैवाले इरिशते उतरते है. उनके पास टाट डोता है. नजर पडुंये वहां तक इरिशते बैठ जाते है. हीर मौतका इरिशता डाल्जर डोकर उसके सरके पास बैठ जाता है और कडेटा है : अय नापाक इल! अपने परवरद्विगारके गजब और उसकी नाराजगीकी तरफ यल. ये सुनकर इल बदनमें ईधर उधर भागना याडती है. बेकीन इरिशते^{के} उसे युं पीटता है जैसे गीवी उन पकडकर उधेडी जाती डो.

(तरगीब-४/३६६)

कबर आभिरतकी जंद्गीका पडेला मरडला और आभिरतकी योभट है. मरनेके बाद कबरमें भी बदन और इलको अजाब डोता है. हीर बदन इना डोजता है और उसकी इलको अजाब डोता है. कबरका अजाब डक है और अकल और नकलसे साभीत है.

डर कीसीको ईस्का तजुरबा है के ज्वाबमें राडत और आरामको देभकर ज्वाब देभनेवाला अपने अंदर सुकुन और येन मेडसुस करता है और आंभ पुलने पर और राडतकी ईन घडीयों के यले जाने के बाद डसरत डोती है.

ईस तरल तकवीइवाला ज्वाब देभकर दुःख डोता है और ईससे नजत तब मीलती है जब आंभे निंदसे बेदार डोती है. और ये मुशाडीहा है के अच्छे बुरे ज्वाब का असर दीव-द्विभाग पर अक अरसा तक मेडसुस डोता है.

ईन्ना जरूर है के इलें जहां कहीं और जूस डालमें रडेती है. उसका तअल्लुक अपनी कबर या जमीनसे बाकी रडेता है. जहां मरनेके

बाद उन्हे दबा दीया जाता है. और वहां की जमीनमें उसकी लड़ीयां गलसड जाती है.

रिवायतों में ये बात आती है के कब्रवाला अपनी कब्र पर आनेवाले और सलाम करनेवालेको पड़ेयानता है.

ईसी बीनापर यकीनके साथ कडा जाता है के कब्रकी खंडगीसे जन्नतकी राहत या दौजभके अजाबका सिलसिला शुरू होजाता है. हा ! शहीदों की इन्हें जन्नत में सज्ज परीन्दोंमें छोटी है और अर्शसे बटकनेवाली कन्दीलों में बसेरा करती है.

बाहर डाल मरकर मीट्टीमें मील जानेके का दरम्यानी छिस्सा जसे आलमे बरज्जभ कडा जाता है. ईन्सानी आर्धमाश का जमाना होता है. ईस मुद्दत में ईन्सान को अपनी लकीकत और अंजम की ખબर होजाती है.

अल्लाह तआला ईमानवालों को पक्की बात (कल्मअे तैयबल) की बरकत से दुनिया आखिरत में साबित कदम और मज्जुत रખता है. और जालीमोंको राह से बने राह बना देता है. आलमे बरज्जभमें ईमानवालोंकी इलोंको अेडतिराम से ईल्लीथीन में रखा जाता है. और काफ़ीर मुशरीक और बद्कारों की इल को जमीनकी तेडमें ड़ेंक दीया जाता है. और इले अपने अपने मुकाम पर राहतो आराम या तकलीफ़ोंमें रेहती दुर्घ ईन्तिज़ार की घडीयों को बसर करती है. यहां तक के अल्लाहतआला ईन्सानी ज़स्मोंको झीर से पैदा इरमाये और उन्के अंदर ज़न डाल दे.

(अकीद अे भोमीन - ४५०/४५८)

दो अहम हिदायतें :

उज़रत मौलाना अब्बाइल उक साडभ (दा. अ.) इरमाते है के डमारे अंदर दो दीनी बिमारीयां पैदा हो गई है.

१. मैयत को दख्न करने में तापीर करना.

सुन्नत तरीका डमारी क़िताबों में ये लीखा है के अगर कीसीका सुब्ब के वक़्त ईन्तिकाव हो जाये और जुम्मा अेक बन्ने होता है और कब्रस्तान ऐसी जग़ा में है के दख्न करके साडे बारा बन्ने तक आ जायेगें जुम्मा नली छुटेगा तो दख्न करने के लीये जुम्माका ईन्तिज़ार करना

जर्णळ नडी.

(तडतावी - ३३२)

२. ये हे के जस बस्ती में धन्तिकाव लो वडीं द्खन करना याडीये.

(तडतावी - ३३७)

असल बुकम और सुन्नत तरीका यडी है. कीसी दुसरेका अमल दलील नडी. जून अकाबिर की मैयतको मुन्तकीव कीया. बादके लोगों ने किया. वो तो जूंदगी बर सुन्नत की तावीम और तदकीन करते रहे.

उजरत मौलाना युसुफ सादब (२.अ.) का लाहोरमें धन्तिकाव बुवा उन्होंने वसीयत और ताकीद की थी के देभो मुझे यडीं द्खन करना. लेकीन जे कुछ बुवा बाद के लोगों ने किया. (निदाओशाडी-२/२००२/२१)

मस्जला :-

शौहर और बीवी में अगर कोई अक मर जये तो वो अक दुसरे का खेरा देभ सकते है.

(दुर्रे मुफ्तार-१-५७५)(मजलीरे उलुम-४/२००२/३८)

मैयत पर रोना-यिल्लाना :-

कीसी की मैयत पर उसके रिशतेदारों और दोस्तोंका रंजुदा और गमगीन होना और आपोंसे आसुं भेडना और धस तरड बे धज्जियार रोना और गम जलीर होजना बिलकुल क्तिरी बात है और ये धस बातकी अलमात है के धस आदमी के दीवमें मोडुबत और द्दमंटी का जजबा मौजूद है. जे धन्सानियतका अक किंमती और पसंदीदा काम है. धस बीये शरीअतने उस पर पाबंदी नडी लगाई. लेकीन नोडा और मातम और अपने धरादे से रोने पीटने की सप्त मनाई है. क्युं के ये बंदगी और अल्लाहतआला के इस्ले पर राजु रेडनेके बिलकुल जिलाइ है. और ऐसा करनेसे अपने और दुसरो के रंज और गम में जयादती होती है. और अमलकी और सबर की कुवत कम हो जाती है. धस्के अलावा नोडा और मातम और रोना पिटना मैयतके बीये बी तकलीफ का सबभ है.

उजरत अब्दुल्लाह धंभने अब्बास (रही.) से रिवायत है के रसुले अकरम (स.अ.व.) ने इरमाया जे कोई (गमी और मौतके वक्त)

अपने इन्साराँ (गालों) पर तमाथे मारे और मुंड पीटे और गरेबान झड़े और जलिलोके तरीके पर शिकायत करे वो डम में से नही यानी वो डमारे तरीके पर नही.

(भुभारी शरीफ़ ज-१/१७३)(निदाअे-शाही-८/१८८७/३०)

तअजीयतः-

मिशकत शरीफ़ में भयलकी के डवाले से ये वाकेआ नकल कीया गया है के रसुले अकरम (स.अ.व.) की वफ़ातके बाद जब अहले बैत और सलाबा (र.दी.) सप्त गम और बेयेनी में थे. हुजरा मुबारक के अक कौनेसे अक आवाज आयी केडनेवाला केड रहा था जस्का मइलुम ये है के “ अल्लाहतआलाकी जत (की मोडब्बत उससे लगाव और उसके ध्यान) में मुसीबतके वकत सुकुन और एल्मिनान का सामान है. और डर जाने वालेका नेअमल बदल है और डर नुकशान की तलाही का जरीया है. विलाजा अल्लाह ही पर बरोसा करो. ईसीसे आस लगाओ और जन वो के डकीकतमें मुसीबत जहा तो वो है जे अजर्रो सवाब से मेडइम रहे”

सय है ! अल्लाहतआला के सिवा डर थीज इानी है. न कीसी नबीको बका (इंमेशा रडेना) है. न कीसी वली को, पुश किस्मत है वो ईन्सान जे अपने हील में अल्लाह के तअल्लुक को ईस तरड रया बसावे के उसके उम्मीदोंका मरकज सिई वोही अक जत हो जये - ईस तअल्लुक का अक इायदा ये होता है के अल्लाहतआला की तरकसे सब और रजामंदी की तौहीक मीलती है और मुसीबतें, आइतें तरककी और भुदावंदतआला से नजदीकी का वसीला बन जते है.

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ يَهْدِ اللَّهُ لَهُ . (प २८ ए १५)

शैभुल हदीस डजरत मौलाना मुइंमद जकरीया (र.अ.) ने मौलाना सैयद मइंमद सानी हसनी मइुम की वफ़ात पर अक पत तअजीयतका डजरत मौलाना सैयद अबुलहसन अली नदवी (र.अ.) को वीआ था. अली भिया ! डजरत ईमाम शाइई (र.अ.) का वो शेअर याद आ रहा है जे उन्होंने डजरत ईमाम अबुर्इडमान बिन मेहदी को उनके साडजजादे की तअजीयतमें वीआ था. शेअर का मइलुम ये है.

“मैं तुम्हारी तअजीयत कर रहा हूँ। उसका मतलब ये नहीं है कि मुझे अपनी छद्मगीका कुछ बरोसा है। बल्कि तअजीयत एक मस्नुन दीनी अमल है। वरना सच तो ये है कि न तअजीयत करनेवाला बाकी रहेगा। और न वोड़ छस्की तअजीयत की जा रही है। याहो वो दोनों थोड़े दीन और दुनियामें रहेले”

अली मियां ! मौत के हावसे की ખબर सुनकर दील पर क्या गुजरी बयान नहीं कर सकता। एधर आपका बुढापा और लगातार हावसेातका सिलसिला और जयादा गम और बेयेनी का सबब है। मगर सिर्फ रंज और अकसोस करनेसे न तो जानेवाले को ज्ञायदा. न रहेनेवालेको सुकुन. मैं ने तो ખબर सुनते ही अपने हस्तुरके मुवाफिक दोस्तोंको एसावे सवाब और दुआये मगईरत की ताकीद थुड़े कर दी. मेरे यहाँ असल यही तअजीयत है. अल्लाह तआला मर्दुम की मगईरत इरमाये अजरे अजीम अता इरमाये और पीछे रहेनेवालोंको (पासकर आपको) सब्हे नमील अता इरमाये.”

(अलफुरकान - ६/१९८२/३)

ओहले मदीना का मामुल था के जब कीसी मुसीबतजदा को तसल्ली देनी छोती तो नबीये करीम (स.अ.व.) की वफातका हावसेा एसे याद दीवाया जाता. छस्को सुनकर हर मुसीबत और तकलीफ आसान मालुम होने लगती है. अल्लाहत आला बुजुर (स.अ.व.) के हरगत को बुवंद से बुवंद इरमाये और पुरी उम्मतकी तरफसे आपको बेहतरीन बहवा अता इरमाये - आमीन या रब्बल आलमीन.

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِ مُرْسَلِيْنَ وَسَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ أَجْمَعِيْنَ .
(निंदाये शाही - ८/२०००/१४)

अंजाम की ખબर ખुदा ही को है :

जब कीसी गेर मुस्लिम का जनाजा गुजरता है तो आज मुसलमान उसको देभकर केडते है : (۱۰ ع . ۲۷)
فِي النَّارِ وَالسَّقْرَ (ب) فِي النَّارِ
ऐसा केडना सही नहीं. क्युं के ખुदाके कामको अपने हाथमें लेना है. आभिरतका अंजाम पुरे तौर पर ખुदाके इफ्तियारमें है और ખुदाने डमें ये मन्सब नहीं दीया है के डम यहाँ उसके इस्लेका ओवान करे.

तमाम बातोंको जंयने के लीये एक सही कसोटी है और वो

रसुवे अकरम (स.अ.व.) और अस्लाबे रसुव (स.अ.व.) की सीरत का नमूना है.

जब भी किसी बातका शरई हुकम मालुम करेना हो तो रसुवे अकरम (स.अ.व.) और अस्लाबे रसुव (स.अ.व.) के जमाने को देखीये. अगर वहां मिसाल मौजूद है तो दृष्ट है. वरना वो सरासर गुमराही है. (अवरिसावा-१/१८८८/३७)

जन्नतुल मअला :-

मकका जिस जमीन पर आबाद है वो अेक तरफ़ ईथी और दूसरी तरफ़ नीची है. नीचले ँवाकेको मिस्कलल और ईथे ँवाके को मअला केडते है. ईयाईवाले ँवाकेमें अेक पुराना कब्रस्तान है. उस्का नाम जन्नतुल मअला है. ये मकका से मिनाके रूप पर है. ईस कब्रस्तानमें उजरत भदीज (र.दी.) की कब्र है. जुजुर (स.अ.व.) के सालभजदे ँब्राहीम और आपकी वालीदल आमीनल बिनते वलभकी कब्र है. आपके यया अबुतालिब और आपके दादा अब्दुल मुतलीब की कब्रभी यही है. उजरत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (र.दी.) जैसा सलाबी और अबु जअहरमन्सुरी जैसा हुकमरान भी यहां दफन किये गये है. ईसी तरल और भलोतसे लोगोके मजारात है. जे उन शप्सीयतो की याद दीवाते है. जे कभी हमारी तरल जमीन पर चलते झीरते थे.

जईदा आदमी की अलामत दुनिया के घर लोते है. और मुर्दा आदमी की अलामत कब्रस्तान. कब्रस्तान हमको याद दीवाता है के कुछ जईदा आदमी थे जे अपनी उम्र पुरी करके जंदगी के अगले मरलवेंमें दाखिल हो गये. झीर वो कब्रस्तान जस्के बासीयो का डाल नाम बनाम मालुम हो उस्की अलमियत और जयादा हो जाती है. जैसे कब्रस्तान तारीफ़ का खिस्सा लोते है. वो तारीफ़ के जईदा सफ़लात (खेरे) लोते है जन्में अगली नसलें अपनी पीछली नसलों के अलवाल पढती है.

कब्रस्तान गोया अेक बीता हुवा तजुरबा है. जे आज के लोगोको कलके लोगोकी काम्याबीयो और नाकाम्याबीयो की दास्तान सुनाता है. कोई डाज या मकका मुकर्रमल की जयारत करनेवाला जब जन्नतुल मअला के सामने पहुंचता है तो ये मुकाम उस्की याद दीवाता है के जंदगी के जिस

રાસ્તે પર વો ચલ રહા હૈ. યે વોહી મઅલુમ ઔર મુતઅથ્યન રાસ્તા હૈ. જીસ પર ઉસસે પહેલે બહોતસે લોગ ચલે થે. કબ્રસ્તાન એક ઐસે કાફલે કે ગુજરનેકા નિશાન હૈ. જે તારીખમેં અપની હકીકત લીખ ચુકા હૈ. ન કે ઐસા કાફલા જીસ્કે નિશાનાત પીછલે દૌર કે ધુંધલે અફસાનોમેં ગુમ હો ચુકે હૈ.

એક શખ્સ જબ જન્નતુલ મઅલા કે સામને ખડા હોતા હૈ તો ઉસ્કા ઝેહન તારીખ કે ઉન માલુમ ઈન્સાનોકી તરફ ચલા જાતા હૈ. જે હમસે પહેલે અરબ કી જમીન પર પૈદા હુએ ઔર ચલતે ઔર બોલતે આખિર યહાંકી મીટીમેં ખામોશ હોકર લેટ ગયે.

જન્નતુલ મઅલામેં હઝરત ખદીજા (ર.દી.) કી કબ્ર હર આને જાને વાલેકો યે યાદ દીવાતી હૈ. કે તુમકો દૌલત કે મુકાબલેમેં કિરદાર કો અહમિયત દેના ચાહીયે.

હઝરત ખદીજા (ર.દી.) કી કબ્ર તારીખ કી ઈન્તીહાઈ મેંઅચારી ખાતુનકી યાદ દીવાતી હૈ. ઐસી ખાતુન જે અપને રફીકે જીંદગી કે લીયે મસ્અલા નહીં બની. જીસને તકલીફ કે દીનોમેં ભી અપને રફીકે જીંદગીકા ઈસ તરહ સાથ દીયા. જીસ તરહ આરામ કે દીનો મેં.

(અલ રિસાલા-૧/૧૯૮૧/૨૮)

હુમુરે અકરમ (સ.અ.વ.) કી વફાત કા હાદેસા.

મૌત કે વકત કી સખ્તી ઔર તકલીફ કો કોઈ બયાન નહી કર સકતા. ઊસ્કી અસલ હકીકત વો હી જાન સકતા હૈ. જે ઈસ હાલત સે ગુજરતા હૈ.

દુસરો કા ક્યા કેહના ! ખુદ હુમુર (સ.અ.વ.) પર ભી મૌત કી તકલીફ શુરૂ હુઈ તો (બુખારી શરીફ કી રિવાયત મેં હેં કે) વફાત કે કરીબ હુમુર (સ.અ.વ.) સામને રખે હુએ એક બરતન મેં પાની લેકર અપને ચેહરએ અન્વર પર છીડકતે થે. તાકે તકલીફ કી સખ્તી મેં કુછ કમી હો. ઔર આપ (સ.અ.વ.) કી ઝબાન મુબારક પર યે અલ્લાહ થે.

લાઈલાહ ઈલ્લલાહ, ઈન્ન લીલ મંવતી સકરાત.

(બુખારી શરીફ હદીસ-૪૪૪૯)

अल्लाह के सिवा कोई मअबुद नही. वाकेँ (उकीकत में) मौत की सप्तीयां बरडक ले.

लुजुर (स.अ.व.) ने दुन्यवी ज्हुँगी में सबसे आपरी अमल अंजम दीया वो भिस्वाक के अरीये पाकीऊगी ढासिल करना था. चुंनाये आप (स.अ.व.) ने निढायत उम्हा तरीके पर भिस्वाक इरमाँ और अनी आप उिस्से इरिगि लुअे थे के आपने अयना दस्ते मुबारक या उींगली आस्मान की तरफ़ उिठाँ और तीन मरतबा ये अल्फ़ाज दोहराये "रकीकील अअला" इीर डअरत आयशा (रदी.) की गोद में छिन्तिकाव इरमा गये. छिन्ना विल्लाड..... (बुभारीशरीफ़-२-६३८)

अेक रिवायत में ले के आप (स.अ.व.) ने वक़ात के वक़त ये दुआ इरमाँ.

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَاَرْحَمْنِيْ وَاَلْحَقْنِيْ بِالرَّافِقِيْنَ الْاَعْلَى

अल्लाहुम्मग इीरली. वरुहमनी. वल्हीइनी बीररकीकील अअला.

(बुभारी शरीफ़-२-६३८)

१२, रबीउिल अव्वल पीर के दीन याशत के वक़त आप (स.अ.व.) की वक़ात लुई. पीर का दीन और मंगल की रात भिलाइत कायम करने और डअरत अबुबक (रदी.) से भयअत की तकमील में गुजर गँ. मंगल की सुब्ह आपको गुस्व दीया गया. और इीर छिन्तीरादी तीरपर नमाऊ पढने का सिसिला शुइ लुवा. जे पुरादीन गुजर कर रात तक ज़री रडा. इीर छिन्ती रात में डअरत आयशा (रदी.) के लुजुरा मुबारक में आपको द्दुन किया गया. (अिदाया वन्नी डायड-५-३८४)

जब आपको द्दुन कर दीया गया तो डअरत इातमा (रदी.) ने सप्त गमगीनी की डालत में डअरत अनस (रदी.) से इरमाया.

मियां अनस! तुम ने ये कैसे गवारा कर लीया के तुम लुजुर (स.अ.व.) के बदने अकदस (यानी कबर) पर अपने डार्थों से मीट्टी डालो.

डअरत अनस (रदी.) ज़बाने डाल से ज़वाब दे रले थे के उकीकत में दील तो नही याडता था मगर लुकमे नबवी (स.अ.व.) को पुरा करने में मजबुरन ये अमल अंजम देना पडा. (इत्तुलबारी-८-१४८)

अल्लाडतआला लुजुर (स.अ.व.) के दरजत को बुवंद से बुवंद तर इरमाये और पुरी उिम्मत की तरफ़ से आपको बेडतरीन बदला आता

इरमाये. आमीन. या रब्बल आलमीन.

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِ مُرْسَلِيْنَ وَسَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ أَجْمَعِيْنَ .
(अल्लाह से शरम कीजिये-२४८)

हजरत अबुबक (रही.) की वफ़ात :-

हजरत अबुबक सिद्दीक (रही.) बुजुर (स.अ.व.) के आशिक और महेबुब और सख्ये साथी और मुसलमानों के पहले भलीक्षा है. हजरत अबुबक (रही.) की वफ़ात का सबभ बडोत से हजरत ने ये लीभा है के आप को बुजुर (स.अ.व.) का वफ़ात का ईस कहर सदमा था के आप अंदर ही अंदर घुंटे रडे और बराबर कमजोर और दुबले छोटे यले गये और यही अंदरूनी घुटन और तकलीफ़ वफ़ात का सबभ बनी.

आपने वफ़ात की बीमारी में अकाबिरे सलाबा (रही.) की राय मश्वरे से अपने बाह हजरत उमर (रही.) को भलीक्षा तय इरमाया और उिस पर बयअत ली. और जब ये काम पुरा हो गया तो आपने बरगाडे ईवाली मे ये हुआ इरमाई.

अय अल्लाह ! मैं ने जे काम किया है. ईस से मेरा मकसद सिर्फ़ मुसलमानों की ईस्वाह है. मैं ने कित्ने के उर से जे कुछ किया है आप उिस्को अरखी तरह जानते है. मैं ने ईस मामले में अपनी राय से ईजतिहाद किया है. और अपनी समज के मुताबिक मुसलमानों में सबसे बडेतर, ताकतवर, और नेकीपर सभ्कत करने वाले शप्स को उिन पर डाकिम बनाया है. मै आपके लुकम से ईस क्वानी दुनिया को छोड रडा हुं आप उिन्में मेरी तरह के जैर ज्वाह लोग पैदा इरमाईये. मुसलमानों के डाकिमों को सलाहियत से नवाज दीजिये और उिमर बिन अत्ताब (रही.) को पल्काये राशेदीन में दाभिल इरमा दीजिये और उिन्की रिज्माया की ईस्वाह इरमाईये.

अक रिवायत में है के आपने वफ़ात से पहले हजरत आयशा (रही.) से इरमाया बेटी ! मुंजे मेरे ईन पुराने कपडों मे ली कक्षन देना. और आज पीर का दीन है. अगर मेरा रात तक ईन्तिकाह हो जये तो मेरे दक्षन में कल का ईन्तजार न करना क्युं के बुजुर (स.अ.व.) की जिदमत में जित्ना जल्दी पहुंच जे उिन्ना ली बेडतर है. (तारीखुल भुवफ़ाअ. १०२)

ઔ યે ભી મશહુર હે કે વફાત કે વક્ત આપ કી ઝબાન મુબારક સે
 યે દુઆ જરી થી. تَوَفَّنِي مُسْلِمًا وَالْحَقْنِي بِالصَّالِحِينَ

“તવફફતી મુસ્લીમન વઅલહીકતી બિસ્સાલિહીન”

મૌત દે મુઝે ઈસ્લામ પર ઔર મિલા દે મુઝ કો નેક બખ્તો મેં.
 ઈસ દુઆ કે બાદ આપ કા ઈન્તિકાલ હો ગયા.

(મશાહીર કે આખરી કલેમાત - ૧૨)

આપકો હુઝુર (સ.અ.વ.) કે કબર કે પાસ યાની આપ
 (સ.અ.વ.) કે કદમ મુબારક કે પાસ દફન કીયા ગયા.

رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ وَارْضَاهُ (અલ્લાહ સે શરમ કીજયે-૨૫૦)

હઝરત ઊમર (રદી.) કી વફાત કે વક્ત કી દાનિશ મંદી:-

આપ કો એક મજુસી ગુલામ ‘અબુલુલુ’ ને ફઝર કી નમાઝ
 પઢાતે હુઝે નેઝે સે સખ્ત ઝખ્મી કર દીયા થા. આપ કો ઊઠાકર લાયા
 ગયા. મદીના મેં ખલબલી મચ ગઈ. લોગોં કી બહોત ઝયાદા ખ્વાહીશ
 થી કે આપ સેહતમંદ હો જયે લેકીન જબ આપ કો દુધ પીલાયા ગયા તો
 પેટકે ઝખ્મ સે બાહર નિકલ ગયા. તો યકીન હો ગયા કે આપ સેહત ન પા
 સકેગે. ચુંનાયે લોગ આપકી બિમાર પુર્સી કરતે..

એક નવજવાન ને આકર આપકો યે ખિતાબ ક્રિયા.

અમીરૂલ મુઅમિનીન ! ખુશખબરી કબુલ ફરમાઈયે કે અલ્લાહતઆલા
 ને આપકો હુઝુર (સ.અ.વ.) કી સોહબત કા શર્ફ અતા ક્રિયા. ફીર
 ઈસ્લામમેં સબ્કત સે નવાઝા. ફીર આપ જબ ખલીફા બનાયે ગયે તો
 આપને ઈન્સાફ કે સાથ યે જીમ્મેદારી નિભાઈ. ઔર અબ આપ શહાદત
 કે મરતબે સે નવાઝે જરહે હૈ. યે સુનકર હઝરત ઊમર (રદી.) ને ઈશાદિ
 ફરમાયા.

મેં તો યે ચાહતા હું કે ઈન સબ નેઅમતોં કે સાથ ભી હિસાબ
 કિતાબ બરાબર હો જયે તો બહોત ગનીમત હૈ.

ફીર આપને હઝરત અબ્દુલ્લાહ ઈબ્ને ઊમર (રદી.) સે ફરમાયા.
 કે ઊમ્મુલ મુઅમિનીન હઝરત આયશા (રદી.) કે પાસ જકર મેરા સલામ
 અર્ઝ કરો યાની યે કેહના કે ઊમર ને સલામ કહા હૈ. ઔર ઊમર આપસે
 ઈસ બાતકી ઈજાઝત તલબ કરતા હૈ કે વો આપ કે હુજરે મેં અપને સાથીયોં

डुजुर (स.अ.व.) और उजरत अबुबक सिद्दीक (रही.) के साथ दहन किया जाये.

उजरत अब्दुल्लाह (रही) ने ये पयगाम उजरत आयशा (रही) को पढुया दीया. जिन्डो नें जवाब दीया के अगरये में जुद यहाँ दहन होना यादती थी लेकिन अब मैं अपने गिर उजरत गिर (रही.) को तरछुल देती हूँ. यानी जिन्को दहन करने की इज्जत है. उजरत गिर (रही.) जवाब के इन्तिजर में थे जब उजरत अब्दुल्लाह (रही.) वापस आये तो इरमाया क्या जबर लाये ?

उजरत अब्दुल्लाह (रही.) ने अर्किया उजरत आपकी मुराद पुरी हो गई. उजरत आयशा (रही.) ने इज्जत देदी. ये जुश जबरी सुनकर उजरत गिर (रही.) की जमान से बे इम्तियार उम्हो-सना के कविमात निकले और इरमाया इससे जयादा अलम और कोई चीज मेरे लीये नही थी.

इर इरमाया जब मेरी वक़त हो जाये तो मुंजे गिठाकर उजरत आयशा (रही.) के डुजुरा मुबारक तक ले जना और इर मेरा नाम लेकर इज्जत तलब करना. अगर इज्जत दे दे तो वहाँ दहन करना वरना मुंजे आम कब्रस्तान में दहन कर देनां गिस्के बाद अपने पिलाइत सोंपने के लीये सात अकाबिरे सडाभा (रही.) की अेक मजलीसे शुरा बनाई. ज्जस्में आपके भेदे अब्दुल्लाह(रही.) ली शामिल थे. मगर जिन्के बारे में आपने जुलासा कर दीया था के जिन्डे पलीइा नही बनाया जा सकता. गिस्के बाद आपने नाईज से वसीयत इरमाई.

और वक़त के वक़त आपका सर मुबारक आपके साडजअदे उजरत अब्दुल्लाह इब्ने गिर (रही.) ने अपनी गोदमें रप लीया तो आपने इसरार कर के जमीन पर रपवा दीया. और अपने इस्सारों को मीट्टी से रगडते डुजे इरमाया.

गिर और गिस्की मा- की बडी जराबी है. अगर गिर की मगकिरत न हो. इर साडजअदे से इरमाया के जब मेरी वक़त हो जाये तो कहन दहन में जल्दी करना. (किताबुल आकीबाउ-६४)

जब आपकी वक़त हो गई तो इज्जत मीलने के मुताबिक

अपने साथीयों लुज़ुर (स.अ.व.) और उज़रत अबुबक (रही.) के साथ यानी उज़रत अबुबक (रही.) के पांच मुबारक के पास दहन कर दिया गया. رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى رَحْمَةً وَاسِعَةً

हज़रत उस्मान गनी (रही.) की मजलुमाना शहादत :-

उज़रत उस्मान गनी (रही.) को जब शरपसंद बागीयों ने अपने मकान में घेर लीया और बागीयों को उटाने की हुर कोशीष नाकाम हो गई. तो भदभप्त बागी आपके मकान का दरवाजा ज़वाकर अंदर दाखिल हो गये तो इस अतरनाक मंजर को देख कर उज़रत उस्मान गनी (रही.) ने नमाज़ की नियत बांधली. और सुरअे ताड़ा पढना शुरू करदी. आपके घर पर जागी हुमला करते रहे और पुरे सुकुन के साथ आप नमाज़ में मशगुल रहे. और नमाज़ से इरिग होकर कुर्आन मज्हद की तिलावत करने लगे. उसी डालत में अेक शप्स आप पर हुम्लाआवर हुवा और र्छन्ना जेर से आपका गलां धौंटा के आप पर बेडोशी तारी हो गई. अभी उरिने छोडा ही था के दुसरा और तीसरा आदमी आगे बढ़ा और उरिने तलवार से आप पर हुमला कीया. आपने डाय से रोकने की कोशीष की ज़ससे आपका डाय कट गया. और पुन का सभसे पडेवा कतरा कुर्आन मज्हद की इस आयत पर पडा.

فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللَّهُ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ (ب- १- १३८)

अपने डायों को कटता देखकर आपकी ज़बान मुबारक से यह अल्फ़ाज़ नीकले के यही वो डाय है ज़रिने सभसे पडेले कुर्आन मज्हद की मुइस्सल सुरते वीभी. इरि अेक और शप्स ज़स्का नाम सवदान बीन उमरान था. नंगी तलवार लडेराता हुआ आया और उस पबीस ने तलवार आपके पेट में उतार दी. और आप उसी डाल में अड्डाड की बारगाड में डालर हो गये.

र्रिन्नाविद्वाली वर्रिन्ना र्रिलयली रररिउिन.

(अलबिदायड वन्नीडायड-ॢ-२०१)

जब आप लडुलुडान थे तो आपकी ज़बान मुबारक पर ये अल्फ़ाज़ जरी थे.

لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ (ब- १७- १६)

तेरे अलावा कोई ईबादत के लायक नही तुं उर औब से पाक है.
मै. कोताही करने वालों में हूं. अय अल्लाह ! मैं अपने मामले में तुंजसे
मदद का तलबगार हूं. और अपनी मुसीबत पर सबरकी दर्यास्त करता
हूं.

भाऊ सल्लू से मनकुल छे के जे लोग त्मी आपके कत्व में शरीक थे
वो सब बाद में कत्व कीये गये. और भाऊने ये इरमाया के कत्व करने
वालों में से उर शप्स पागल होकर मरा. अल्लाह की पनाह.

(अलबिदायह वन्निदायह-८-२००२)

हजरत अली (रदी.) की शहादत :-

शेरे भुदा इतिहासे जयबर उजरत अली (रदी.) को जब जमीस
ईब्ने मुल्कीम ने सप्त जम्मी कर दीया. और आपका खेरा लडु लुडान
हो गया. इीर आपको कियाम गाल पर लाया गया. और जम्म के जयादा
होने की वजह से जूहगी से ने ना जिम्मीदी हो गई तो आपने अपने
साहबजदो उजरत हसन (रदी.) और उजरत हुसैन (रदी.) को बुलाकर
भास तौर पर वसीयत इरमाई.

उिस्के बाद आप बराबर कल्मअे तैयबल पढते रहे. और
ईसीहालतमें वफ़ात पायी. और भाऊ उजरात का केहना है के आपकी
जबान पर सबसे आबिर में ये आयत जरी थी.

فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ (प-३०)

जुस्ने जर्रा बर भलाई की वो देभ लेगा जिसे. और जुस्ने
जर्रा बर बुराई की वो देभ लेगा. (अल बिदायह. वन्निदायह-३५०)

हजरत हसन (रदी.) की वफ़ात :-

उजरत हसन (रदी.) को जब पतरनाक किस्म का ऊहर पीलाया
गया. और आपकी हालत नाजूक होने लगी तो आपने इरमाया मुंजे
सेहन की तरफ़ ले यलो. मै. अल्लाह की कुदरत में गौर करना चाहता हूं.
युंनाने आपका बिस्तर बाहर भीछा दीया आपने आस्मान की तरफ़
नजर डिटाई और इरमाया. अय अल्लाह ! मैं अपनी जन को तेरे नजदीक
सवाब की उकदार समजता हूं. मेरे पास ईससे जयादा किमती कोई चीज
नही.

उजरत लुसैन (रही.) ने तशरीफ़ लाकर तसल्ली देते लुअे इरमाया के भाईजन ! ईस तकलीफ़ की क्या हैसियत है ? अस आपके बदन से इड निकल ने की देर है. के इीरन आप अपने वालिद माज्जह उजरत अली (रही.) और अम्मीजन उजरत क्षातमा (रही.) और अपने नाना जन उजरत मोहमंद (स.अ.व.) और अपनी नानी उजरत षदीज (रही.) और अपने चाचा उजरत हमजा (रही.) और उजरत ज़अहर (रही.) और अपने मामुं उजरत कासिम, उजरत तैयब, और उजरत ईब्राहीम और अम्मी ज़ावा उजरत इक़ैयस (रही.) उजरत जिम्मे कुल्सुम (रही.) और उजरत ज़यनब (रही.) से मुलाकात करने वाले है. तसल्ली के ये अल्फ़ाज सुनकर उजरत हसन (रही.) को तकलीफ़ का अेहसास कम हो गया. और आपने इरमाया प्यारे भाई ! बात ये है के मैं ईस वक़्त औसी डालत में हुं ज़स्का पेहले कभी तज़ुरबा नही लुवा. और मैं अपनी आर्षों से औसी मज़्लुक दैप रहा हुं ज़न्की आज तक नही दैया. ये सुनकर उजरत लुसैन (रही.) को रोना आ गया. (अलबिदायह वन्निदायह-७-४३३)

उजरत लुसैन (रही.) की दर्दनाक शहादत :-

उजरत लुसैन (रही.) ने शहादत से पहले ज़लीम लुमला आवरों की इीजको पिताब करते लुअे इरमाया. क्या ? तुम मेरे कत्व के दरपे हो ? अह्लाड की कसम ! मेरे बाद तुम कीसी औसे बंदे को कत्व न कर सकोगें. ज़स्का कत्व मेरे मुकाबले में अह्लाड के नज़दीक मेरे कत्व से ज़यादा अज़ाब का ज़रीया होगा.

अह्लाड की कसम ! मुंजे जिम्मीद है के अह्लाडतआवा तुम्हे ज़लील करके मुंजे ईजज़त अता करेगा. इीर मेरी तरफ़ से तुमसे ईस तरह बहवा लेगा के तुम्हें अेहसास बी न होने पायेगा.

पुदा की कसम ! अगर तुमने मुंजे मार डाला तो अह्लाड तआवा ज़िस्का सप्त अज़ाब तुम्हारे ज़िपर नाज़ील करेगा. और ज़िस्के बहले में पुन रेज़ी आम होगी. इीर ज़िस वक़्त तक तुमसे राज़ न होगा जब तक के तुम्हे बहतररीन और दर्दनाक अज़ाब में मुब्तला न कर दे.

आपकी ईस पुर असर तकरीर के बाद आपके पानदान के रउ, अइराह शहीद हो चुके थे. बेकीन कोई मुआलिफ़ इीजी आप पर लुमला

करने की छिम्मत न कर सकता था. लेकिन बहबन्त कमान्डर शिम्न बिन जल जेशन की ललकारने जरआ बिन शरीक और सनान बिन अनस नामके दो बहबन्त पत्थर दीव जलीमों ने छिन्तिछाछि मजलुमाना डालत में आपको शहीद कर के अपनी जल्लत पर मोडर लगाई.

‘छिन्नाविल्लाडी वछिन्ना छिलयली राजेछिन’.

(अलबिदायड वन्निछायड.-७-५८५)

हजरत छिमांम अबु हनीफ़ (र.अ.) की वफ़ात :-

अलीफ़ा अबु जफ़र मन्सुर अब्बासी ने छिमांम आज़म अबुडनीफ़ (र.अ.) को कुफ़ा से भगदाद बुवाया. और काज़ी बनने की दरआस्त की. आपने छिन्कार कीया. तो छिस्ने केदछाने में डलवा दीया. और छर दीन आपको बाहर निकाल कर निछायत बे दही से कोरे लगाये जते. जससे आपका बदन लडुलुडान छो जता. दस दीन तक बराबर यडी छोता रछा. झीर आपको जबरदस्ती जेहर पीने पर मजबुर किया गया. यूनारये केदछाने में रेडते छुअे पंहरड दीन छुअे थे के आप सप्तीयोंकी ताब न ला सके और जेहर के असर से सप्त बेबस छोकर ७० सालकी छिम्न में मजलुम डालत में छिन्तिकाल इरमा गये.

‘छिन्नाविल्लाडी वछिन्ना छिलयली राजेछिन’.

जब छिमांम साडबने अपना आभरी वक्त मेडसुस इरमाया तो सिजदे में यल गये और छिसी डालत में आपकी इल परवाज कर गई.

जनाज़ा केद छाने से बाहर लाया गया. भगदाद के काज़ी छसनबिन छिमारड ने गुस्व दीया. जे लोग गुस्व देने में शरीक थे केडते छे के आपका बदन बछोत जयादा कमजोर था छिबादत ने छिस्को पीघवा दीया था. अभी लोग आपको गुस्व देकर इररिग छुअेथे के छडारों छजार लोग आपकी जिथारत के लीये जमा छो गये. अंदाज़न पयास छजार लोगो ने आपकी नमाजे जनाज़ा पढी. मजमा जयादा छोनेकी वजडसे नमाजे जनाज़ा छे बार पढी गई. (छिकुदुज जमान-३६०)

छिमांम मालिक (र.अ.) की वफ़ात :-

छजरत मालिक बिन अनस (रही.) जे मदीना मुनव्वरड में वफ़ात पाने के छिस कहर मुश्ताक थे के छिम्न के आभरी दीनों में मदीना के

बाहर सफ़र बिलकुल बंद कर दीया था. के कही दूसरी जगह वक़ात न हो जाये. चुनाये अह्लाब तआलाने आपकी आरज़ु पुरी इरमाई. और मदीना मुनव्वरह में आपकी वक़ात-लुई-और-जन्नतुल बकीअ में दख्न होने की सआदत मीली. ईन्तिकाल से पहले कल्मअे शहादत पढा ड़ीर ये आयत पढते रहे.

لِلّهِ الْأَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ بَعْدُ (ب- २१)

लुकम अह्लाब ड़ी का है. पहले बी और बाद में बी.

ड़ीर ईसी रात वक़ात पा गये. उस वक़्त आपकी उमर ८५ साल थी.

(अल बिदायह वन्निहायह-८-६०३)

ईमाम शाइई (र.अ.) की वक़ात का हाल :-

ईमाम मुऊनी (र.अ.) केडते है के मैं ईमाम शाइई (र.अ.) की वक़ात के वक़्त आपकी खिदमत में छाछर हुवा. और पुछा के आपने सुब्ह कैसे की ? तो उअरत ने इरमाया के मेरी सुब्ह ईस डालमें लुई के मैं दुनिया से चलने को तैयार हुं. दोस्तों ओर अडबाब से मीलने का वक़्त है. अपने बुरे आमाव से मुलाक़ात होने वाली है. मौत का प्यावा पीने के करीब हुं. और अपने परवर दिगार के लुअुर में छाछर होने वाला हुं. अब मुऊे मालुम नडी के मेरी इह जन्नत की तरफ़ जायेगी के मैं उसे मुबारक बादी हुं. या जहन्नम की तरफ़ जायेगी के मैं उसकी तअजीयत कइं ड़ीर आपने यंद शेअर पढे ज़स्का तरजुमा ये है.

मैं अपने गुनाहों को बडा समजता हुं. मगर जब अथ परवरदिगार ! उसका मुकाबला तेरी माफ़ी से करता हुं तो तेरी माफ़ी यकीनन मेरे गुनाहों से कहीं जयादा अजम है.

(मशाहीर के आभरी कलिमात - ६२)

हअरत ईमाम अहमद जीन हम्बल (र.अ.) की वक़ात :-

उअरत ईमाम अहमद बिन हम्बल (र.अ.) ने वक़ात से पहले अेक वसीयत लीथी ज़स्मे अपने वारीसों को कीमती नसीहतें इरमाई. ड़ीर बअ्यों को बुलाकर प्यार ड़ीया. उसके बाद बराबर अह्लाबतआला की हम्दो सना में मशगुल रहे. वक़ात से पहले आपकी ज़बान से ये कलिमात निकले. अभी नडी. अभी नडी. तो साडबजहने पुछा के उअरत के ये

भात आप कीससे इरमा रहे है ? तो आपने जवाब दीया के घर के कोने में छिबीस गिन्गलीयां दातों में दबाये भडा है. और केड रडा है. अय अडमद ! तुम मेरे डाय से निकल गये. छुस्का में जवाब दे रडा था के अभी नही निकला. जब तक ईमान पर वझत न हो जये.

वझत से रहेले अपने घरवालों से वुंजु कराने को कडा. खुंनाये आपको वुंजु कराया गया. आप जिक दुआमें भशगुल रहे. और वुंजु की डर डर सुन्नत का ज्वाल इरमाते रहे. यडां तक के गिन्गलीयों का भिलाव भी करवाया. इर जैसे ही आपका वुंजु पुरा डुवा आपकी इल परवाज कर गछ. 'ईन्नाविल्लाही वईन्ना ईलयही राणेगिन'.

जुम्मा के दीन सुब्ब के वक्त आपका ईन्तकाल डुवा आपकी वझत की भबर जंगल की आग की तरड डैल गछ. लोग मारे गमके सडकों पर निकल आये. जब जनाजा बाहर आया तो भगदाद की गली कुयों में दुर दुर तक आदमी नजर आते थे. लाणों अइराद ने नमाजे जनाजा पढी. और जबरदस्त मजमा की वजल से असर के बाद आपको दइन किया ज सका. (अलभिदायड वन्निडायड-१०-७८२)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا - عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

(९) क्यामत

क्यामत का दीन :-

अल्लाड तआला का-ईशाद है के जे मेरे भास ईमानवाले भंटे है. उन्से केड दीजये के वो नमाज की पाबंदी रभे. और डमने उन्को जे कुछ दीया है. उन्मेंसे अर्थ कीया करें. जैसे दीन के आने से पडेले पडेले छस दीन न जरीदोइरोप्त होगी और न दोस्ती होगी.

(सुरअे ईब्राहीम-३१)

मतलब ये है के आज तो अल्लाडतआला ने ताकत, कुरसद अता इरमा रपी है. के नमाज अदा करे और अगर पीछली ईमरमें गइलतसे कोई नमाज कजा हो गछ हो तो उसकी कजा करें. ईसी तरड

आज माव तुम्हारी माविकी और कब्जेमें है. उसको अल्लाह के लीये पर्य कर के (आभिरतमें) लंमेशाकी खंढगी का काम बना सकते हो. वो दीन करीब आनेवाला है जब के ये दोनों कुव्वते और ईप्तिहार तुमसे ले लीया जयेगा. न तुम्हारे बदन नमाज पढने के काबिल रहेंगे. न तुम्हारे कब्जेमें कोई माव रहेगा. जिससे छुटे लुअे लुकुक की अदायगी कर सकी. और उस दीनमें कोई तिज्जरत और परीदोइरोप्त भी न हो सकेगी के आप कोई ऐसी चीज परीदले जस्के जरीये अपनी कीतालीयों और गुनाहों का कफ़ारा कर सके. और उस दीन आपस की दोस्तीयां और तअल्लुक़ातभी काम न आ सकेंगे. कोई अजीज दोस्त कीसी के गुनाहों का भोज न उठा सकेगा. न उसके अजाब को कीसी तरह उटा सकेगा.

उस दीन से मुराद उशर, क्रियामत का दीन है. और हो सकता है के वो दीन मौतका दीन हो. क्युंके ये सब निशानीयां मौत के वक़त से ज़हरी हो जाती है के न बदनमें कीसी अमल करने की सलाहीयत रहती है. न माव उसके कब्जेमें रहता है.

ईस आयतमें ये ईशदि है के कयामत के रोज़ सिई दून्यवी दोस्तीयां काम न आयेगी. लेकीन जे दोस्ती और तअल्लुक़ अल्लाहके लीये और दीनके कामों के लीये हो उन्की दोस्ती उस वक़तभी काम आयेगी. अल्लाह के नेक और मक़बुल बंदेदुसरो की शिक्षाअत करेंगे. जस्की तफ़सील बहोतसी हदीसोंमें है. और कुर्आनमज्जदमें है.

“वो लोग जे दूनियामें आपसमें दोस्त थे. उस रोज़ अेक दुसरे के दुश्मन हो जयेगे. (के ये थारुंगे के दोस्त पर अपना गुनाह उाव कर भुद अवग हो जये) मगर वो लोग जे तकवा वाले है. क्युं के तकवावाले वहांभी अेक दुसरेकी मदद शक़ाअत के रास्तेसे करेंगे. (म. कु. ५/२५३)

कयामत अयानक आयेगी :-

लुज़ुर (स. अ. व.) ने कयामत के अयानक आनेके बारे में इरमाया के लोग अपने अपने कारोबार में मशगुल लोंगे. अेक शप्स ग्राहक को दीपाने के लीये कपडे का थान ञोल कर बेठा लोगा. वो अभी मामला तय न कर पाया लोगा के कयामत कायम हो जयेगी. अेक शप्स अपनी

उंटनी का दूध दोहर यवा लोगा. अभी उसको छस्तेमाव करने न पायेगा
के क्यामत आ जयेगी. कोई शप्स अपने लोण की भरम्त (रीपेरींग)
कर रहा लोगा. उससे झरिग न होने पायेगा के क्यामत कायम लो जयेगी.
कोई शप्स आने के लीये लुकमा लायमें उठायेगा अभी मुंड तक न पडुंयेगा
के क्यामत बरपा लो जयेगी. (बुभारी शरीङ्ग)(म. कु.-४/१४१)

आजका दौर और क्यामत की (७२) अलामतें :

- उजरत लुजैङ्ग (२६.)से रिवायत है के लुजुर (स.अ.व.) ने झरमाया
७२, यीजें क्यामत के करीब होने की अलामत है. जब तुम देणो के,
(१)जब लोग नमाजें गारत करने लगे. (२)अमानतमें षयानत करनेलगे.
(३)सुद आने लगे. (४) नुठ को ललाव समजने लगे.
(५) उंची उंची बील्डींग बनाने लगे.
(६) दीन बेयकर दुनिया समेटने लगे.
(७) मामुली बात पर पून रेकी करने लगे.
(८)रिशतेदारोंसे बहसुलुकी होने लगे. (९)छन्साङ्ग कमजोर लो जये.
(१०)नुठ सय बन जये. (११) विबास रेशम का लो जये.
(१२) नुल्म (१३)तलाक (१४) और अयानक मौत आम लो जये.
(१५)षयानत करनेवालेकी अमानत दार
(१६)और अमानत दारको षयानत करनेवाला समज जये.
(१७) नुठे को सख्या (१८) और सख्ये को नुठा कला जये.
(१९)तोल्म्मत लगाना आम लो जये.
(२०) बारिश के बा पुनुद गरमी लो.
(२१)अवलाद गम और गुस्से का सबल लो. (२२) कमीनों का ठाठ लो.
(२३) शरीकों का नाकमें दम लो जये.
(२४) अभीर और वज्जर नुठके आदी लो जये.
(२५) अभीन(अमानतदार) षयानत करने लगे.
(२६) यौधरी नुल्म पेशा लो. (२७) आलीम और कारी बहकार लो.
(२८) जब लोग लेउ की पालें पलनने लगे.
(२९-३०) उन्के दीव मुरदासे जयादा बहबुदार और अल्वेसे जयादा

कउवे लो. उस वकत अल्लाहतआला उन्हें जैसे किन्नेमें डाल
देगा छस्में यलुदी जलीमों की तरल बटकते झिरेंगे.

- (३१) सोना आम लो जये. (३२) यांही की मांग लोगी.
(३३) गुनाल जयादा लो जयेंगे. (३४) अमन कम लो जयेगा.
(३५) कुआनमल्लह को आरास्ता (शागार) किया जयेगा.
(३६) मस्जिदोंमें नकशी निगार कीये जयेंगे.
(३७) उये उये मिनार बनाये जयेंगे. (३८) हील वेरान लोंगे.
(३९) शराबे पी जयेगी.
(४०) शरीयत की सजाओं को भत्म कर दीया जयेगा.
(४१) बाही अपने आका को जनेगी.
(४२) जे लोग (कीसी जमानेमें) नंगे पाव और नंगे बदन रखा करते थे
वो बाहशाह बन बेठेंगे.
(४३) छंदगीकी दौडमें और तिज्जरतमें औरत मर्दके साथ शरीक लो जयेगी.
(४४) मर्द औरतों की (४५) औरतें मर्दोंकी नकल करेगी.
(४६) अल्लाह के अलावा दुसरोंकी कस्में भायी जयेगी.
(४७) मुसलमानबी बगैर कले (जुही) गवाही देने को तैयार लोगा.
(४८) जन-पलेंयान वालोंको सलाम कीया जयेगा.
(४९) बेहीनी के लीये शरई कानुन पढा जयेगा.
(५०) आभिरतके अमलसे दुनिया कमाई जयेगी.
(५१) माले गनीमत को दौलत (५२) अमानतको गनीमत का माल
(५३) और जकात को तावान (दंड) करार दीया जयेगा.
(५४) सबसे जयादा जलील आदमी कौम का सरदार बन जयेगा.
(५५) आदमी अपने बापका नाकरमान लोगा.
(५६) मा से बहसुलुकी करेगा.
(५७) दोस्त को नुकशान पलेंयानेसे नही बयेगा.
(५८) बीवी की ईताअत करेगा
(५९) बहकारोंकी आवाजे मस्जिदोंमें बुलंद लोगी.
(६०) गानेवाली औरतें (बगैर निकाहकी) रभी जयेगी.
(६१) और गाने का सामान रभा जयेगा.

- (६२) रास्तेमें शराबें उड़ाई जायेगी. (६३) लुम्ब को इध्र समझ जायेगा.
 (६४) धन्साइ बिकने लगेगा. (६५) पोलीस की कसरत होगी.
 (६६) कुआँन को नगमा सराई (गाने का) जरीया बना लीया जायेगा.
 (६७) दरीन्दोंकी भाव के मोझे बनाये जायेंगे.
 (६८) उम्मत का पीछला डिस्सा पड़ेले लोगोंकी बुरा भवा कड़ेगा.
 (६९) उस वक्त सुर्भ आंधी. (७०) जमीनमें धस जना.
 (७१) शकले बिगड जना.
 (७२) और आसमानसे पत्थर बरसने जैसे अजाबों का धन्तिजर कीया जाये. (दुर्गे मन्सुर-६/पर) (अल इरकान-२/२००२/३४)

औरत और तिज्जरत :

लजरत धंने मस्उद (रदी.) से रिवायत छे के लुजुर (स.अ.व.) ने धर्शाद इरमाया के कयामत से पड़ेले कुछ अलामतें जहरीर होगी. भास भास लोगों को सलाम केडना, तिज्जरत का यहाँ तक डैल जना के औरते मर्दोंके साथ तिज्जरत में शरीक और मद्दगार होगी. रिश्तेदारों से तअल्लुक तोडे जायेंगे, क्लम का तुक्षान, भरपा होगा. जुठी गवाली का आम होना. सखी गवाली का छुपाना. (दुर्गे मन्सुर-६/पर)

जैर से जाली लोगों की बीड :

लजरत अब्दुल्लाह धंने उमर (र.दी.) इरमाते छे के लुजुर (स.अ.व.) ने धर्शाद इरमाया :- कयामत कायम नहोँ लोगी यहाँ तकके अल्लाहतआवा अपने मकबुल बंदोको जमीनवालों से उठा वेगा. हीर जमीन पर जैर से जाली लोग रेल जायेंगे. जे न कीसी नेकी को समजेंगे. न कीसी बुराई को समजेंगे. (दुर्गे मन्सुर-६/पर)

कयामत की नइसा नइसी :

नबीये करीम (स.अ.व.)से पुछा गया या रसुलुल्लाह (स.अ.व.) कयामत के दीन क्या कोई अपने अेखलो अयाव की ખબर वेगा ?

आप (स.अ.व.) ने धर्शाद इरमाया :- के तीन मौके जैसे लोंगे के उस वक्त कोई कीसी की ખબर नहोँ वेगा. हर अेक को सिर्फ अपनी ही

झिकर डोंगी.

- (१) पडेला भौका वो डोगा अस वक्त मैदाने लशरमें मिजाने अदल रभी जयेगी. ता के अंदो के आमाव का वजन क्रिया जये उस वक्त डर शप्स को सिई अपनी झिकर रडेगी. जब तक उस्को मालुम न हो जये के उस्का मिजाने अमल लारी डे के डल्का.
- (२) वो भौका डोगा जब के डर ईन्सान के आमाव की क्रिताबें डीजांमें बिभेर दी जयेगी. उस वक्त डर शप्स झिकर मंद डोगा के उस्का आमावनामा दाडने लाथमें आयेगा या बाये लाथमें या उस्की पीठ तरङ्से उस्को भीलेगा ?
- (३) तीसरा वो भौका डोगा जब के पुलसिरात को जलन्मके उपर रभा जयेगा पुलसिरात के दोनों जनीब काटेदार वोडे की दांती डोगी. अल्लाडतआला अपनी मज्जुकमें अस्को याडे यडां रोके रभेंगे. उस वक्त ईन्सान सिई अपनी डी झिकरमें रडेगा और ये भ्याल करता डोगा के ईस राडसे नजत पायेगा या नही.

मयदाने लशर के ये तीन भौके जैसे डे अस्में सिई नइसा नइसी डी रडेगी कोई कीसीको पुछना तो दर किनार देपना भी पसंद न करेगा. बल्के अक दुसरे को देभकर भाग पडेगें.

डहीसमें ये भी आया डे के कयामत का अक दीन अक डजार साल के बराबर डोगा. मज्जुक के डिसाब क्रिताबमें पांचसो साल और जन्त जलन्म के दाबलों में पांचसो साल गुजर जयेंगे.

ये तो आलमे आभिरत का मामला था. जडां रीशते नाते टूट जयेंगे. और कोई तअल्लुक बाकी नही रडेगा.

आपस के तअल्लुक पारा पारा (टूट कुट) हो जयेंगे. बडा नइसा नइसीका आलम डोगा. दुनियाकी जूँडगीमें कीसीकी अपनी जन पर आजये तो वो सब अजीज और करीब को लुल जाता डै. तो डीर कयामत का मामलातो बडा अतरनाक और सप्त तरीन डै.

लेकीन अडलेईमान ईन तमाम दुशवारीयों के बावुनुद डर भौके पर सुकुन और ईत्मीनान से रडेगे. बल्के उनडे ये भी भेडसुस न डोगा के ये वक्त उन पर कब गुजर गया. (इराभीने रसुल (स.अ.व.) ४८)

ખતરોં કા ઝમાના :

યે હઝરત અબ્દુલ્લાહ ઈબ્ને મસ્ઉદ (ર.દી.) કી એક તકરીર હે. જો આપ હર જુમેરાત કો અપને શાગિદોંકો સુનાયા કરતે થે. અન કરીબ લોગોં પર એક ઝમાના એસા આયેગા જીસ્મેં.

- (૧) નમાઝોં સે ગફલત બરતી જાયેગી.
- (૨) ઉંચી ઉંચી ઈમારતેં બનાયી જાયેગી.
- (૩) જુઠી કસમોં કી કસરત હોગી.
- (૪) એક દુસરે પર લાનતાન આમ હો જાયેગી.
- (૫) રિશ્વતખોરી ફેલ જાયેગી.
- (૬) ઝિનાકારી આમ હો જાયેગી.
- (૭) આખિરત કો દુનિયા કે બદલે મેં બેચા જાને લગેગા.

ઉસ્કે બાદ હઝરત ઈબ્ને મસ્ઉદ (ર.દી.) ને ઈશાદિ ફરમાયા કે જબ તુમહારે સામને યે બાતોં આ જાયે તો તુમ ખતરોં સે બચને કા એહતિમામ કરના. આપસે પુછા ગયા કે બચાવ કીસ તરહ હોગા ? તો આપને ફરમાયા કે તુમ અપને ઘરોં સે બગેર જરૂરત કે બાહર મત નીકલના ઓર અપની ઝબાન ઓર હાથ કો રોક કર રખના.

(આસારે-સહાબા (ર.દી.)૩/૧૧૩)

બચાવ કે સે હો... ?

ઉપર બચાન કિયે ગયે ખતરોં કો હોતે હુએ જાંદગી કેસે ગુજરે ? ઈન ખતરોંસે બચને કી કયા તદબીરે ઈખ્તિયાર કરે ? ઈસ બારેમેં હઝરત ઈબ્ને મસ્ઉદ (ર.દી.) ને હુઝુર (સ.અ.વ.) કી સોહબત સે જો ફિરાસતે ઈમાની હાસિલ કી ઉસ્કી રોશનીમેં નીચે લીખી ગઈ ત્રીન બાતોંકી તરહ રેહનુમાઈ ફરમાઈ.

- (૧) બગેર જરૂરત ઘરસે બાહર ન નિકલે. કુઝુલ મજલીસો મેં શિકત ન કરે. કીસી કે મામલેમેં જબરદસ્તી દખલગીરી ન કરના. કીસી ઝઘડેમેં ફરીક ન બનના. વગેરહ. ઈસ તરીકેસે આદમી હઝાર ફીત્નોંસે મેહફુઝ રેહ સકતા હે.
- (૨) અપની ઝબાન કાબુમેં રખે. યાની કીસી કે બારેમેં ગલત જુમ્લા ન નિકાલે, કીસી કી ઝીબત ન કરે, જુઠ ન બોલે, કીસી પર

બોહતાન ન બાંધે, વગેરહ. મશહુર હે કે “દિવાર કે ભી કાન હોતે હે” યાની એસી ખાતે પોશીદા નહીં રેહતી. કીસી ન કીસી ઝરીયેસે દુસરે તક પહુંચ જાતી હે ઓર ફીર યહી બાત ફિત્નેકી બુનિયાદ બન જાતી હે. ઇસ લીયે ઝબાન કો મેહકુઝ રખીયે.

- (૩) અપને હાથ સંભાલ કર રખે. યાની કીસી પર જુલમ ન કરે. જલીમ કા સાથ ન દે. કીસી કી હક તલ્ફી ન કરે. હકીકત યે હે કે અગર હમ ઉપર લીખી ગઈ હિદાયતોં પર અમલ કરેંગે તો ઇન્શાઅલ્લાહ કાફી હદ તક ખતરોં સે હિકાઝત હો જાયેગી ઓર આફ્રિયત કે સાથ અપની જાંદગી કે દીન પુરે કર કે બારગાહે ખુદાવંદી મેં સુખ રૂઈ કેસાથ હાજર હોને કી સઆદત હાસિલ કર લેંગે.

(નિદાએ શાહી-૯/૨૦૦૩/૯)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا - عَلَى حَبِيْبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

(७) जन्त

जन्त की तिज्जरत के लीये अल्लाह तआला की दयावतः-

अल्लाह तआला का ईशद है :

अय ईमान वालों ! क्या तुम्हो ऐसी तिज्जरत बतवाउं जे तुमको अँक दईनाक अजाब से बयावे. (वो ये हे के) तुम लोग अल्लाह पर और उसके रसुल (स.अ.व.) पर ईमान लाओ. और अल्लाह की राह में अपने ज्ञान माल से बिछाद करो. ये तुम्हारे लीये बलोट ली बेहतरे हे. अगर तुम कुछ समज रभते हो. (जब तुम ऐसा करोगे) तो अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाह माफ करेगा. और तुमको (जन्त) के ऐसे बागोंमें दाखिल करेगा जन्के नीचे नेहरे बेहती होगी. और उम्दा मकानों में (दाखिल करेगा) जे लंमेशा रेहने के बागोंमें बने होंगे. ये बडी काम्याबी हे.

(सुरअे साफ़ - १०-११-१२)

ईस ईशद में भोमिनो कों अल्लाह तआला ने अँक ऐसी तिज्जरत के बारे में बताया हे के जे दोज़भ से बया कर जन्तमें ले जने वाली है और वो हे अल्लाह रसुल पर ईमान लाना. अल्लाह की ईतायत में अपने माल और ज्ञान के साथ कोशीष करना. ईससे मालुम हुवाके अजाबसे नज्जत और जन्त जैसी अज्जम दौलत भोमिनो को और इरमाबरदारों को अता होगी. ईन आयातमें ईस बात की तरगीब हे के ईन्सान जन्तको लासिल करने और दौज्जभसे बयने की तिज्जरतकी अपना शेवा (हंग) बनाये यही तिज्जरत ईन्सानको आपिरतमें शायदा मंद हे.

जन्त की तरफ़ दौडः-

अल्लाह तआला का ईशद है :

और मग़द़िरत की तरफ़ दौडो. जे तुम्हारे परवर हिंगार की तरफ़ से (नसीब) हो. और दौड कर जन्तकी तरफ़ (यानी ऐसे नेक काम ईप्तिथार करो जससे परवर हिंगार तुम्हारी मग़द़िरत कर दे और तुमको जन्त ईनायत हो और वो जन्त ऐसी है) जस्की थोडाई ऐसी हे जैसे सब आस्मान और जमीन (और जयादा का ईन्कार नहीं) युनांचे

लकीकतमें जयादा छोना साबित है. और वो तैयार की जुदासे उरनेवालों के लीये. (आले ईमान-१३३)

ईस आयत में मुसलमानों को जन्नत की तरगीब इरमाते जुअे उस्की तरक होउने का हुकम दीया गया है. और परलेऊगार है वो जे जुदा के इरमाबरदार और गुनाह से दुर रेहने वाले है. उनके लीये तैयार की गर्ह है. आमाव जन्नतकी कीमत नहीं है. लेकिन अल्लाहकी आदत यही है के वो अपने इकल से उसी बंदेको नवाऊता है जे नेक आमाव करता है. अल्लाह तआला का ईशाद है :

और अल्लाह तआला तुम्हे जन्नतकी तरक बुलाता है.

(सुरअे युनुस-२५)

उजरत ईबने अब्बास (रही.) इरमाते है के “दाउस्सलाम” से मुराद जन्नत है. (दुरैमन्सुर)

जुजुर (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया :

अेक सरदारने अेक घर बनाया. और अेक दस्तरख्वान लगाया. और अेक दाई को भेजा. तो ज्जस्ने दाईको लम्बेक कडा वो उस घरमें दाखिल हो गया और दस्तरख्वान से भाया. और सरदार को राज्ज कीया.

बस ! सरदार “अल्लाह तआला” है. और घर “ईस्लाम” है. और दस्तरख्वान “जन्नत” है. और बुलानेवाले “मुहम्मद” है.

रसुलुलाह (स.अ.व.) का हुनिया में जन्नत और जहन्नम का मुशाहीदा :-

जन्नत और दौऊभ अगरये दूसरे आलम की चीजें है. लेकिन निगाहो का पर्दा उीठ जये तो सामने आ जये जुजुर (स.अ.व.) के इरमाने मे सुरज ग़लन जुवा आप सलाबा (रही.) के साथ नमाऊ में जाडे जुअे और बहोत देर तक किरामत और रूकुअ सिवटे में मशगुल रहे. ईस दौरान सलाबा (रही.) ने देभा के आप (स.अ.व.) ने अेक बार हाथ आगे को बढ़ाया हीर देभा के आप कीसी कदर पीछे हटे. नमाऊ के बाद दरयाक़त कीया गया तो इरमाया. के ईस वक़त मेरे सामने वो तमाम चीजें पेश की गर्ह ज्जस्का तुमसे वाअदा किया गया है. जन्नत और दौऊभ की तमसील (नज्जरा) ईसी दीवाल के पास दीभाई गर्ह. मैंने जन्नत को देभा के अंगुर के भोशे लटक रहे है. याहा के तोउजु अगर मैं तोउ सकता तो

तुम क्यामत तक उसको आ सकते. झीर मैंने दौऊप को देया छस्से जयादा भयानक थीऊ मैंने आजतक नही देयी. लेकिन मैंने उसमें जयादातर औरतों को देया. सडाबा (रही.) ने पुछा या रसुलुव्वाड (स.अ.व.) जैसा खुं ? इरमाया के 'अपने भाविंद की नाशुकी के सबब'.

मैंने दौऊप में उस चोर को देया जे डाऊयों का सामान चोरी करता था. मैंने अक थलुदी औरत को देया उसको अजाब ईस लीये डो रडा था के उसने अक बिल्वी को बांध दीया था. उसको कुछ पाने को न देती थी और न छोडती थी के वो जमीन पर गीरी पडी थीजें भायें. आभिर उसी लुकसे उसने जन देदी. (बुभारी-मुस्लिम)

अक लदीस मे लै के आप (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया के मैं जन्नत में ज निकला तो देया के वहां के बाशीन्दों में बडी तअदाद उन्की ले जे दुनिया मे गरीब थे. और दौऊप को जकर देया तो उसमे बडी तअदाद औरतों की पाई. (बुभारी)

आप (स.अ.व.) की आभरी जिन में आप शोडदा अे उडद के मकबरे में तशरीफ ले गये. और वहां से वापस आकर आप (स.अ.व.) ने जुल्बा दीया. इसी दरम्यान में आपने इरमाया में अपने लौजे (कौरर) को यही से देप रडा लुं और मुंजे जमीन के भजानों की कुंछयां डवाले की गई.

अय लोगों ! मुंजे ये भौइ नही ले के भेरे बाद तुम शिर्क करने लगोगे. लेकिन उरता ईस से लुं के तुम ईस दुनिया की दौलत में पडकर आपस में रशक और डसद करने लगो. (बुभारी)

जन्नत की उम्मीद रखनेवाला जन्नतकी मेहनत करे :

डुजुर (स.अ.व.) ईशाद इरमाया :

- * मैं ने जन्नतकी मिसाल नही देयी छस्का ताबीब सो गया डो. और न दौऊप जैसी (मुसीबत और अजाब) देया ले छससे भागनेवाला भी सो गया डो. (तिमीजी)
- * डजरत ईबने उमर (रही.) इरमाते लै के डुजुर (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया ! जन्नत में वोडी दाभिल डोगा जे उसकी उम्मीद रहेगा. (बिडाजा मुसलमानोंको उसका उम्मीदवार रेडना

याडीये)

दुर्गे मन्सुर-६/३१४

* अक उदीसमें उजरत अनस (रदी.) ने लुजुर (स.अ.व.) का ये
 बयान नकल इरमाया ! के जन्ततमें उस्के लरीस-(लालथी) के
 सिवा कोई नही जयेगा. (सिइतुल जन्तत-अभुनर्धम/१-६०)

दो बडी थीजों को न लुलो :-

उजरत अब्दुल्लाह बीन उमर (रदी.) से रिवायत है के
 रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया :

तुम दो अज्जम थीजोंको मत लुलना. सलाभा (रदी.) ने अर्ज
 क्रिया कौनसी दो अज्जम थीजें या रसुलुल्लाह (स.अ.व.) !

आपने ईशाद इरमाया ! जन्तत और दौऊप को. (तरगीब व तरडीब)

सबसे पेहले जन्तत में जानेवाले :

उजरत अबु लुरैरु (रदी.) से रिवायत है के रसुलुल्लाह
 (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया :

सबसे पहले जे जमाअत जन्तत में दाबिल होगी उन्की सुरते
 चौदवी रात के यांद जैसी होगी. ये न तो जन्तत में थुकेगे. न नाक बडेगी
 और न पायपाना करेगे. उन्के बरतन और कंगीया सोने और चांदी के
 होंगे. उन्की अंगेडीया अगरकी लकडी की होगी. उन्का पसीना कस्तुरी
 का होगा. उन्में से हर अक के लीये दो बीवीयां ऐसी होगी जन्की
 पीन्डली का गुदा उन्के लुस्त की वजह से गोशतके अंदर से नजर आयेगा.
 उन्के दरम्यान कोई ईप्तिवाइ नही होगा और न आपसमें दृशमनी होगी.
 उन्के हील अक हील की तरह होंगे. ये सुब्दशाम अल्लाहतआला की
 तरबील करेगे. (बुपारी शरीफ)

जन्तत की नेअमतें :

जन्तत अक बलोट बडी छेरत अंगेज (दंग कर देने वाली)
 दुनिया है. जे भुदाने अपने पास बंदो के लीये बनाई है. वहां भुदा का
 कमाव अपनी पुरी शान के साथ जल्वागर (सामने) होगा. जन्तत के
 बारे में कुर्आन में है. वहां न रंज होगा न भौइ. ये अक बलोट बडी
 अनोभी सीइत है. कयुं के दुनियामें हम जानते है के कोई बडे से बडा
 दौलतमंद या लाक्रीम ऐसा नही जे रंज और गम और भौइ से पाली

छंदगी अपने वीये लासिव करे. जन्तके बारेमें कुआन में है. वहां हर तरफ़ "सलाम" सलाम" का यर्था लोगा. ईस्का मतलब ये है के जन्त ऐसे बुवंद ईन्सानोंकी आबादी है. जे हर कीसमके बुरे जज्बातसे पावी लोंगे. उन्के दीवोंमें दुसरोंके वीये सलामती और पौर ज्वाली के सिवा कुछ नहीं लोगा. जन्तके बारेमें उदीसमें आया है. वहां आदमी जे गीजा (जाना) जायेगा और जे मशरूबात पीयेगा वो पेशाब पायजाना की शकलमें नहीं नीकलेगा. बल्के अेक पुशबुदर उवा नीकलेगी और उस्के ऊरीये तमाम गंदगी नीकल जयेगी. ईस्का मतलब ये है के जन्त ऐसा पाकीजा मुकाम है जहां नापाकी पुशबुकी शकलमें तब्दील होती है.

उदीसमें है के जन्तमें निंद नहीं लोगी. वहां आदमीकी हर ज्वालीश पुरी की जयेगी. उस्का मतलब ये है के जन्त ऐसी लजीज जंगा है के आदमी अेक रातकी निंद के बराबर भी उससे जुदा होनापसंद नहीं करेगा. लावां के वो उस्के अंदर भरब ला भरब सालसे भी जयादा मुद्दत तक रहेगा. कैसा लोगा जन्तका पडोश और कैसी अज्जब लोगी जन्तकी छंदगी ! ईर ईन सभसे बढकर ये के जन्त वो मुकाम है. जहां आदमी अपने जुदा को देण सकेगा. वो जुद हर कीसमकी कामील जुबीयों का मालीक है. वो जुदा ज्जस्ने अदम (नेस्ती) से पुबुद (छंदगी) को पैदा कीया. वो जुदा जे आस्मानों का भालीक है. वो जुदा ज्जस्ने सुरज को यमकाया. वो जुदा ज्जस्ने दरज्जतोंकी दरयावी और कुलोंकी मेंलक पैदा की ऐसा जुदा कैसा अज्जम और कैसा लसीन लोगा? उस्को सोयना भी कीसी के वीये मुश्कीन नहीं है. जस जन्तमें ऐसा पाकीजा माखोल लो. जहां काईनात के रब का दीदार लासिव होता लो. उस्की लज्जतों और राखतों को कौन बयान कर सकता है ?

जन्त के वीये तैयारी :-

ऐसी कीमती जन्त कीसीको सस्ते दामों मे नहीं भील सकती. ये तो उस पुश किस्मत रूड का लिस्सा है. जे लकीकतमें जुदा का बंदा होने का सुबुत दे.

भोमिन होने का मतलब ये नहीं है के आदमी अपनी आम

दुनियादारी वाली छंदगी के साथ कुछ ईस्लामी आमाव का जेड लगावे. बल्के मोमिन डोने का मतलब ये छे के ईस्लाम ही आदमी की पुरी छंदगी बन जाये. ईस्लाम डाय की छही उंगली नही बल्के पुरा डाय छे.

मोमिन वो छे जइसे सीनेमें ईस्लाम अक डकीकत बनकर दाखिल हुवा छे. जे भुदा को ईत्ना करीब पाये के उससे सरगोशीयां (गुपयुप बातें) जारी हो जाये. जइसी तन्हाईयां भुदा के इरिशतोसे आबाद रेडती हो. ईस्लामने उस्की ज्बान पर भुदा की लगाम लगा रभी हो. और जइसे डार्थों और पांवमें भुदा की बेडीयां पडी हुई हो. जइसे ईस्लामने उस्को मेदाने डशर के आने से पहले मेदाने डशरमें भडा कर दीया हो.

डकीकत ये छे के जे कुछ काफिर पर मरने के बाद गुजरने वाला छे. वो मोमिन पर जते जे ईसी दुनियामें गुजर जाता छे. मोमिन पर क्यामत से पहले क्यामत गुजर जाती छे. जब के दुसरो पर क्यामत उस वकत गुजरेगी जब के वो अपने वकत पर आ युकी होगी.

(ईस्लाम १५ वी सदीमें-१७.)

डुजुर (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया.

अल्लाडतआला ने पहले आदम (अ.व.) को पैदा इरमाया डीर अपना दस्ते कुदरत उन्की पुशत (पीठ) पर डेरा तो उन्की पुशत से जे नेक ईन्सान पैदा होनेवाले थे वो निकल आये तो इरमाया के उन्को मैंने जन्त के लीये पैदा कीया छे. और ये जन्त ही के काम करेंगे. डीर दुसरी मरतबा उन्की पुशत पर अपना दस्ते कुदरत डेरा तो जन्ने गुनाडगार बदकार उन्की नसबसे पैदा होने वाले थे. उन्को निकाल कर भडा कीया. और इरमाया के उन्को मैंने दोज्भ के लीये पैदा कीया छे. और ये दोज्भमें जाने ही के काम करेंगे.

सडाभा (रदी.) मे से अक शप्सने अर्ज कीया या रसुलुल्लाड (स.अ.व.) जब पहले जन्त और दोज्भी तय कर दीये गये तो डीर अमल कीस मकसदके लीये कराया जाता छे ? आप (स.अ.व.) ने इरमाया के जब अल्लाडतआला कीसी को जन्तके लीये पैदा इरमाते छे तो वो अडले जन्त ही के काम करने लगता छे. यहाँ तक के उस्का भात्मा कीसी जैसे ही काम पर डोता छे. जे अडले जन्त का काम डोता छे. और

जब अल्लाह तआला कीसी को दोज़्ब के लीये बनाता है तो वो दोज़्ब ली के काममें लग जाता है. यहां तक के उस्का आत्मा भी ऐसे ली काम पर लोता है जे अेडले जलन्नम का काम है. (अबुदावुद, तिर्मीज़ी)

मतलब ये है के जब ईन्सान को मालुम नही के वो किस तब्केमें दाखिल है तो उस्को अपनी छिम्मत और ताकत और ईप्तिहार को ऐसे कार्मों में भर्य करना याहीये जे अेडले जलन्नत के काम है. और यही उम्मीद रपना याहीये के वो उन्हीमे से लोगा. (म. कु. -४/११३)

जलन्नत के आमाव :

नबीये करीम (स.अ.व.) से दरयाइत कीया गया के जलन्नतमें दाखला दीलवाने वाली कौनसी चीज है ?

ईशाद इरमाया : तकवा और अरखे अप्लाक,

तकवा का उर्दू तरजुमा “जौके पुदा” कीया जाता है. लदीसमें ईस भस्लतको “जम्माउल जेर” नेकीयो का सरयश्मा और मरकज कला गया है.

जौके से मुराद वो उर नही जे हरीन्हीं और जुनज्वार जनवरों को देभकर या कीसी जलीम और कातिल को देभकर दील में पैदा लोता है. ऐसा जौके और उर “तकवा” नही ये तो अेक झीन्ती कैफ़ीयत है जे जन माव के अंदेशे पर पैदा लोती है. उस्को तकवा नही कला जाता. ये तभई (कुहरती) जौके है.

तकवा के असल मइलुम में वो जौके और उर शामील है जे बर्येको अपने बाप से, या शागिर्द को अपने उस्ताद से, या बीवीको अपने शौहर से, ईसी तरल छोटों को अपने जुजुर्गोंसे लुवा करता है. उन्की नाइरमानी बल्के उन्की मरज्ज के भिलाइ करनेसे ली आदमी अेडतियात करता है.

ईसी तरल अल्लाहसे तकवा और उर का मतलब है के अल्लाह की अजमत और बडाई, कुव्वत और ताकत और उस्के जालीक और मालीक लोनेकी वजहसे ईन्सानको जे जौके और उर लोना याहीये वो तकवा के मइलुम में शामील है. ज्जस्का जलीरी असर ये लोता है के अल्लाहतआला की मरज्जयात को पुरा कीया जाता है. और ना इरमानी

से परलेऊ कीया जाता हो जैसे भौड़ और उर को “अल्लाह का तकवा” कडा जाता है. जे ईन्सान को सिराते मुस्तकीम पर कायम रभता है.

दुसरी सिद्धत अरखे अप्लाक को बयान कीया है. अरखे अप्लाक अंबिया (अ.ल.) की मिरास है. कोई नबी और रसुल ईस सिद्धतसे पावी नही रहे है. उहीस शरीकमें ये.बी है के मिजाने अदवमें अरखे. अप्लाकसे ऊयादा वजनी और कोई अमल नही लोगा.

मतलबके ईन्सान को जन्नतमें ले जानेवाली ખस्वतोंमें अरखे अप्लाक कवीदी (बुन्यादी) सिद्धत है.

(इरामीने रसुल (स.अ.व.) ११५)

अंजुरों में बांधकर जन्नत में दाखिल कीये जायेगें :-

सखीब बुभारी की उहीस में आया है. के कुछ लोग जन्नतमें अंजुरों में बांधकर दाखिल कीये जायेगे. ईस उहीस का मतलब आम तौर पर ये समज जाता है के अंजुरों में बांधने का ये वाक्या आप्तिरत में पेश आयेगा. लेकिन सखी ये है के ये के अंजुरों में बांधना दुनिया की मुसीबतों में मुब्तला करने की अेक ताबीर (मतलब) है.

ये मामला शायद जिन भास लोगों को पेश आयेगा. जन्के अंदर ये सलाहीयत हो के वो मुसीबतों में पडे और गलत सोच का शिकार न हो जाये बल्के मुसीबत का वाक्या जिनके अंदर अल्लाह की तरफ़ इज्जुअ करने की कैफ़ियत पैदा करेदे. वो जिनको अल्लाह के करीब करने का उरीया बन जाये. जिनके लीये मुसीबत का तजुरबा रब्बानी नइसीयात जगाने का उरीया बन जाता है. वो गइलत से निकल कर अल्लाह की याद करने वाले बन जाते है. और ईस तरल वो जन्नत के मुस्तखीक बन जाते है. ये वाक्या आजकी दुनिया में होता है न के आप्तिरत की दुनिया में.

(अलरिसाला-४-२००४-३८)

ईमान का बदला :-

उजरत उमर (रही.) से रिवायत है के रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया :

जे शप्स ईस डालत में झोत हुवा के वो अल्लाह तआला और रोऊे कयामत पर ईमान रभता था उसे कडा जायेगा. जन्नतके आहों

हरवाजोंमेंसे जिससे याहे जन्नतमें दाखिल होजाये. (मस्नदे अहमद)

अच्छी तरह पुजुं करनेवाला :-

उजरत उमर (रही.) से रिवायत है के बुजुर (स.अ.व.) ने
 ईशाद्वि इरमाया:

तुममेंसे जिसने पुजु किया और पानी को अच्छी तरह पलुंयाया
 और पुजुसे इरागत पर कडा.

أَفْهَدَ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ

وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

मैं गवाही देता हूं के अल्लाहके सिवा कोई मअबुद नही वो अकेला
 है उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं उजरत मोहंमद
 (स.अ.व.) उसके बंदे और रसुल है.

तो उसके वीये जन्नत के आठों हरवाजे भोल दिये जाते है.
 उनमेंसे जिससे याहेगा दाखिल हो जायेगा. (मुस्लिम शरीफ)

यालीस हदीस की हिफाजत का इनाम :-

उजरत इब्ने मरुद (रही.) से रिवायत है के रसुलुल्लाह
 (स.अ.व.) ने ईशाद्वि इरमाया.

जिस्ने मेरी उम्मत के वीये यालीस हदीसे याद की, या मेहकुजकी,
 या पलुंयाई, जिस्ने अल्लाहतआला ने उनको नफा पलुंयाया, रोजे
 कयामत उसे कडा जायेगा जन्नत के जिस हरवाजे से याहे दाखिल हो जा.

(इर्रे मन्सुर)

औरत को चार कामों का इनाम :-

बुजुर (स.अ.व.) ने ईशाद्वि इरमाया :

- (१) जो औरत पांचो नमाजें पढती रही.
- (२) रमजानुल मुबारक के रोजे रभती रही.
- (३) अपनी शर्मगाह की हिफाजत करती रही और
- (४) अपने शौहर की इरमा बरदारी करती रही उसे रोजे कयामत
 कडा जायेगा. जन्नतके जिस हरवाजे से याहे दाखिल हो जा.

(मस्नदे अहमद)

योथा कल्मा बाजार में पढने का सवाल :-

उजरत उमर (रही.) से रिवायत है के रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने एर्शाद फ़रमाया : जे शप्स बाजार में दाग़िल हुवा और ये कल्मा पढा.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ
وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

तो अल्लाह तआला उसके लीये अेक लाभ नेकीयां लीभते है और अेक लाभ गुनाह मिटाते है. और जन्नत में अेक महेल बनाते है.

(तिमीर्जी-एब्ने माज)

मश्हद की सझाई :

उजरत अनस (रही.) से रिवायत है के हुजुर (स.अ.व.) ने एर्शाद फ़रमाया :

मश्हदों को साङ़ करना हुरे - अैन के मेहर का लक है. (द्यलमी)

जुर और रोटी के टुकड़े का सझाई :-

हुजुर (स.अ.व.) ने एर्शाद फ़रमाया :

मुक़ीमर जुर और रोटी का टुकड़ा (सझाई करना) हुर के मेहर का लक है. (कुर्तुबी)

जन्नत का मुफ़तसर नज्जारह :-

उजरत उसामा बिन जैद (रही.) फ़रमाते है के रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने एर्शाद फ़रमाया :

कोई जन्नत की तैयारी के लीये तैयार है ? कुं के जन्नत इनाडोने वाली नही. रब्बे का'बा की कसम ! ये अैसा नुर है. जे लेह लेहाने वाला है. अैसा कुलों का दस्ता है जे जुंम रहा है. और अैसा महेल है. जे बुलंदो बावा है. और अैसी नहेर है जे जरी रहनेवाली है. अैसा इल है जे पका हुआ तैयार है. अैसी बीवी है जे हसीनो जमील है. अैसा लिबास है जे बडी तअदाह में है. सलामती के घरमें हंमेशा रेहने की जगा है. हंमेशा के लीये मेवे है, सबजा अर है, पुशी है, नेअमत है, हसीन और बुलंद मुकामात है.

सहाबा किराम (रही.) ने अर्ज कीया हा ! या रसुलुल्लाह

(સ.અ.વ.) હમ ઉસ્કે લીયે તૈયાર હૈ. ફરમાયા : ઈન્શાઅલ્લાહ કેહલો, તો સહાબા કિરામ (ર.દી.) ને ઈન્શાઅલ્લાહ કહા.

(દુર્રે મન્સુર-૧/૩૬)

જન્નત કી ખુંબીયા :-

હાફીઝ ઈબ્ને કેય્વીમ (ર.અ.) જન્નત કી સિક્કાત ઓર ખુંબીયો કો સામને રખકર રગબત દીલાને કે લીયે જન્નત કા કુછ ઈસ તરહ મંજર ખીયા હૈ.

એસે અજ્જમુશ્શાન ઘરકી અઝમત કયા પુછને ! જીસ્કો અલ્લાહ તઆલા ને ખુદ અપને દસ્તે મુબારક સે બનાયા હો. ઓર અપને મેહબુબો ઓર આશિકો કે ઠેહરને કા ઠીકાના ઠેહરાયા હો. ઉસ્કી નેઅમતો કો અજ્જમ કામ્યાબી કરાર દીયા હો. ઉસ્કો હર કિસમકી એબ ઓર આફત ઓર નુકશાન સે પાક કર દીયા હો. અગર તું ઉસ્કી ઝમીનકા પુછે તો વો કસ્તુરી ઓર જાઅફરાન કી હૈ. અગર તું ઉસ્કી ઈમારત કા પુછે તો ઉસ્કી એક ઈંટ સોને કી ઓર એક ઈંટ ચાંદી કી હૈ.

અગર તું ઉસ્કા ગારા પુછે તો ખુશબુદાર કસ્તુરી હૈ. અગર તું ઉસ્કે ફલ કા પુછે તો મટકો કી તરહ (બડે બડે) હૈ. જાઘ(ફીંગ) સે ઝયાદા નરમ ઓર શહેદ સે ઝયાદા મીઠે હૈ. અગર તું ઉસ્કી નહેરોં કા પુછે તો કુછ નેહરે દુધ કી હૈ જીસ્કા મઝા બદસ્તુર કાયમ હૈ. ઓર કુછ નેહરે શરાબકી હૈ. જો પીને વાલોકે લીયે ખુબ લજ્જહ હોગી ઓર કુછ નેહરે સાફ સુથરે શહેદ કી હૈ.

અગર ખાને કા પુછે તો વો મેવે હૈ. જોન્સે ચાહે પસંદ કર લેંગે ઓર ગોશત હોગા ઉડતે પરીદો કા જીસ કીસ્મકા જી ચાહેગા. અગર તું પીને કા પુછે તો તસ્નીમ ઓર ઝન્જબીલ ઓર કાફુર પીયેંગે. અગર તું ઉન્કે બરતનોં કા પુછે તો વો સોને ચાંદી કે હોંગે. શીશે કી તરહ સાફ. કે અંદર કી ચીઝ બાહર સે નજર આયેગી.

અગર તું ઉન્કે લિબાસ કા પુછે તો વો રેશમ કા હોગા. અગર તું એહલે જન્નત કી ઉમ્મે પુછે તો ૩૩ સાલકી ઉમ્મ મેં હોંગે. અગર તું જન્નતવાલોં કે ચેહરોં કા પુછે તો વો ચાંદ કી તરહ ચમકદાર હોંગે. અગર

तुं उन्के जेवर और बिबास की जीनत का पुछे तो वो कंगन तो सोने और आवा दहरे के मोतीयो के होंगे. और सरों पर शाही ताज होंगे.

अगर तुं दुल्लनों का पुछे तो नवजवान औरतें होगी. हम उम्र उन्के आजामें आबे शबाब गरदीश करता होगा. गुलाब और सीप जैसे इन्सार (गाल) होंगे. मोतीयो की शकलमें दांत होंगे. कमर नाजुक होगी. उस्के सर का टुपटा टुनिया और उस्की तमाम चीजोंसे जयादा किंमती है. लेऊ-निहास, नजला, जुकाम, पेशाब पायजाना और दुसरी गंदगीयो से पाक होगी. इमेशा जवान रहेगी. उन्के रंग रूप का पुछे तो गोया वो याकुत और मरजान (जैसी) है.

ये तो जन्नत और उस्की धुरों का डाल रहा. अगर तुं यव मे मजीद का पुछे और परवर दिगार की जयारत और खेरे का पुछे या उस्की कोई सिद्ध और शान का पुछे तो उस्का कोई जवाब नही. ये सिई मुशाहिदे (दामने) से तअल्लुक रहते है.

(जन्नत के इसीन मनाजूर-६७)

जन्नती तीस साल की उम्र के होंगे :-

इजरत मआज बीन जबल (रही.) ने जुजुर (स.अ.व.) को ईशाद इरमाते बुअे सुना :

जन्नती जन्नत में ईस डालतमें जयेंगे के उन्के जस्मों पर बाल नहीं होंगे. उन्की दाढी भी नहीं होगी. आंभोकी पुतलीयां और सुरमा लगाने की जगा सुरमगी होगी. तीस साल की उम्रमें होंगे.

(मस्नदे अहमद)

यानी सिई महों और औरतों के सर के बाल होंगे बाकी जस्म बालोंसे साफ़ होगा.

शौहर की आशिक और मनपसंद मेहबुजायें :

अल्लाह तआवा ईशाद इरमाते है : (۱۳۷ ۲۷ ب) غُرَابًا أَمْرًا
(बीवीयां होगी) प्यारवाने वालीयां, हम उम्र.

(सुरअे वाकीअह-३७)

अइबा उस औरत को केहते है. जे अपने शौहर की आशिक और उस्की मनपसंद मेहबुबा हो. इसीन हो. नाज नभरे वाली हो,

अलबेवी हो, रंगीवी हो, पुश पुशाल हो, यंचल हो, शोभ नजर हो, माशुकाना अंदाज हो, प्यार वाने वाली हो, शेडवत परस्त हो.

मतलब के अल्लाह तआला ने इस आयत में जन्नत की औरतों की जुबसुरती के साथ अच्छी अेशो आराम वाली खंडगी को भी जमा करमाया है और यही जुबीयां बीवीयों में मतलब है और उसी जुबीयों के साथ उनसे मर्द की बज्जत खंडगी की तकमीब होती है.

यले गये वो अदाअे दीभाके पदें में

शरारतें भी-है शरारतों के पदें में

नवजास्ता (नवजवान) औरतें :-

अल्लाहतआला ईशाद करमाते है :

إِنَّ الْمُتَّقِينَ مَفَازًا حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا.. وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا (پ ۳۰ ع ۲)

पुदा से उरने वाले के वीये बेशक काम्याबी है यानी (पाने और सैर करनेको) भाग (जिनमें तरु तरु के मेवे होंगे) और अंगुर और (दीव बढेलाने को) नव जास्ता हम उम्र औरतें होंगी.

(सुरअे नभा-32-33-34)

काईब उभरी दुई छातीयों वाली औरत को केडते है. मुराद इससे ये है के उनकी छातीयां अनारकी तरु लोगी बटकी दुई नही लोगी.

(डावीयुव अरवाड-२८५)

हुरों की चमक दमक :-

उजरत अनस (रही.) से रिवायत है के रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने ईशाद करमाया :

सुब्ह या शाम की अेक घडी अल्लाह के रास्ते में गुजर देना दुनिया और उसकी तमाम चीजों से बेडतर है. और जन्नत में तुमडारी अेक कमान का झस्वा दुनिया और उसकी तमाम चीजोंसे जयादा किंमती है. अगर जन्नतकी औरतोंमें से कोई औरत जमीनकी तरु जांकले तो तमाम जमीन को रोशन कर दे. और इअे जमीन को पुशबुदार कर दे और उसके सर का द्रुपट्टा दुनिया और उसकी तमाम चीजोंसे जयादा किंमती है.

(बुपारी - तिमीजी)

दूर की पुश्बुं :-

दूरत मुज्जलीद (र.अ.) इरमाते है के दुरे-अन मे से दूर दुरं की पुश्बुं पयास साल के सकर की मसाइत से मेदसुस डोगी.

(दुरे मन्सुर. ६-३४)

दुनिया की औरतें दुरों से अइजल होगी :-

दुजुर नबीये करीम (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया के :

दुनिया की (जन्नती) औरतें दुरोंसे अइजल होगी. जैसा के पोशाक का उपर का कपडा नीचे वाले कपडे (अस्तर) से बेदतर दुवा करता है. (तिबरानी)

दूरत उम्मे सल्मा (रही.) ने दुजुर (स.अ.व.) से पुछा के दुनिया की औरतों का जन्नत की दुरों से अइजल होने की क्या वजह है. ?

आप (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया नमाज पढने, रोजा रपने और अपने रबकी ईबादत करने की वजह से वो जन्नत की दुरों से अइजल हो गई. अल्वाइतआला उनके येदुरों पर नुर की पोशाक पड़ेनायेगा. उनके जस्मों पर रेशम का लिबास डोगा. उनका रंग भुबसुरत डोगा. लिबास सभज (बीला) रंग का, सोने चांदी के जेवर से आरास्ता, पुश्बु और उद जलाने के बरतन मोतीयों के, उनकी कंगीया सोनेकी. वो अपने जन्नती शोहर को भुश करने के लीये पुरकशीश दीव आवेज आवाजमें ये नग्मे पढ रही डोगी.

जस्का तरजुमा ये है :-

- ✽ हम लंमेशा जीदा रेडनेवाली भवातीन है हमें मौत न आयेगी.
- ✽ हम नरम व गुदाजजस्म वालीयां है कबी पुश्क सप्तजसम न डोगे.
- ✽ हम तुम्डारे मेदलोडी में मुक्रीम रहेगी कबी सकर या कुच न करेंगे.
- ✽ हम तुम्डारे साथ भुश व भुर्रम रहेंगे कबी नाराज व अइजा न डोगे.
- ✽ वो मुबारक व भुश नसीब है उनके लीये हम है और वो हमारे लीये है.

इर दूरत उम्मे सल्मा (रही.) ने पुछा था रसुलुव्वाह (स.अ.व.) कीसी औरत के अक के बाह दो-तीन-चार शोहर हो और

झीर जन्त में सब दाभील हो जये तो जन्तमें ईस औरत का शौहर कोन लोगा ?

ईशाई इरमाया : अय उम्मे सव्मा (रही.) उस औरत को ईप्तिथार दीया जयेगा. वो अपने छस शौहर को याहो पसंद करवे. और वो उस शौहर को पसंद करेगी जे दुनिया की छंढगीमें सबसे अच्छे अप्वाक वाला था. और अपने रबसे दरभास्त करेगी अय परवर दिगार ! मेरा ये शौहर दुनिया की छंढगीमें मेरे साथ निहायत उम्हा अप्वाकसे पेश आया करता था. मेरा निकाल उसीसे कर दीजये. (झीर उसका निकाल उसी पसंदीदा शौहरसे जन्तके सारे लवाजीमातके साथ कर दीया जयेगा)

मतलबके नेक और जन्ती औरतोंको वोही सबकुछ मीलेगा जे उन्की अपनी मरज होगी. वो अपने जन्ती शौहरको पसंद करनेमें भुद मुप्तार होगी.

कुआन मज्दमें जन्तके मई औरतोंको पाकीजा जेडे कला गया है. "जवज" का लइज शौहर और बीवी दोनों के लीये ईस्तिमाल कीया जाता है.

यानी जन्तमें मीयां-बीवी का ये रिश्ता पाकीजा सिद्धके साथ रहेगा. अगर दुनियामें कोई मई नेक था. और उसकी बीवी नेक नहीं थी. तो आभिरतमें बीवी का रिश्ता कट जयेगा और नेक मई को कोई दुसरी नेक बीवी दे दी जयेगी. ईसी तरल अगर दुनियाकी छंढगी में कोई नेक औरतथी और उसका शौहर बढकिरदार था तो आभिरतमें जैसे बढकिरदार मईको ईस नेक बीवीसे अलग कर दीया जयेगा. और झीर कीसी नेक मईसे उस नेक औरतका रिश्ता कर दीया जयेगा.

और अगर दुनियामें शौहर और बीवी दोनों नेक थे. तो जन्तमें उन्का यही दुन्यवी रिश्ता कायमी हो जयेगा. दुनिया की ये नेक बीवी जन्तमें अपने दुस्नो जमाल की वजहसे जन्तकी दुर्गोंमें मुमताज और आलीशान हैसियतकी मालिक होगी. उसकी शान और ईज्जत पर जन्तकी दुर्गें ली रशक करती रहेगी. (इरामीने रसुल (स.अ.व.) ६५-६८)

उजरत लब्बान इरमाते है के दुनियाकी औरतें जब जन्तमें दाभिल होगी तो उन्को दुनियामें नेक अमल करनेकी वजहसे दुर्गों पर

इकीवत अता इरमाई जयेगी. (दुर्गे मेंबी और दुस्नमें बी).

अल्लामा कुर्तबी (र.अ.) इरमाते छे के ये बात दुजुर (स.अ.व.) से मरकुअन रिवायत की गई छे के : दुजुर (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया :

दुन्यवी औरते जन्नत की दुरे-अैन से सत्तर हजार गुना अइजल होगी. (कुर्तबी-२/४७७)

जन्नत में अल्लाह का दीदार :

हजरत जरीर बीन अब्दुल्लाह (रही.) इरमाते छे के हम दुजुर (स.अ.व.) की बिदमते अकदस में छाजूर थे. आपने यौदवी के याद की तरफ देखा और ईशाद इरमाया :

सुनलो ! तुम अन करीब (क्यामत और जन्नतमें) अपने रबकी जियारत (दीदार) ईस तरहसे करोगे जैसे ईस यौदवी के यादकी देष रहे हो और उसकी देषने तुम कोई तकलीफ मेहसुस नहीं करते बस ! अगर तुम खिम्मत करो के इजर और असर (की नमाज) न छुटने दो. और उसकी पाबंदी करलो. (बुधारी)

ईर हजरते जरीर (रही.) ने ये आयत तिलावत इरमाई.
(سَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا) (१७६. १५)

“और तुम सुरज तुलुअ होने से पहले और सुरज दुबने से पहले अपने रबकी उम्द बयान करो” (सुरअे ताहा-१३०)

यानी इजर और असर की नमाज अदा करो.

जन्नत में अल्लाह तआला के दिदार की नेअमत बी सिई भोमिन ईन्सानों के लीये भास छे. के वो जन्नत में मरतभे के मुताबिक जिन्को छसिल होगी.

बाज को सुब्द, शाम, बाज को हर जुम्मा के दीन, और औरतों को दोनों ईदों के दीनों में.

लेकीन इरिशतों को ये दौवत नसीब न होगी. ईसी तरह और बी बाज नेअमते सिई भोमिन बंदों को अता दुई छे. जन्की तइसीव तइसीरे मजहरी में (जुद-१-५४) में देषी ज सकती छे.

भोमिन औरतों को दोनों ईदों के दीनों में दीदारे जुदावंदी की

नेअमत ढासिव लुवा करेगी. (जमेअे सगीर - सुयुती)
लेकीन ईससे दुसरे अवकात में दीदार डोने की नकी नही ले.

(मल्कुआते मुडदीसे कश्मीर (२.अ.) पेज-७२)

दीदार के वक्त जन्नत की सब नेअमतें लुल जायेंगे:

डजरत डसन (२दी.) इरमाते ले के जब अल्लाडतआवा जन्नतवालों के सामने तजल्ली इरमायेंगे. और जत्ना अल्लाड की जियारत से मुशर्रक होंगे. तो जन्नत की तमाम नेअमतें लुल जायेंगे.

(किताबुसुन्नड)

अल्लाह से मोहब्बत :-

अक औरत डजरत जुनेद (२.अ.) के पास आकर केडने लगी के मेरा शौडर दुसरा निकाल करना याडता ले. आपने इरमाया. अगर ईस वक्त डिस्के निकाल में यार औरतें नही ले तो डिस्के लीये दुसरा निकाल करना जाईज ले. औरत ने कडा के अय जुनेद ! अगर गेर मर्द को औरतों की तरफ देपना जाईज डोता तो मैं अपना खेरा डोल कर आपको दीपाती तो आप मुजे देप कर केडते के जस्के निकाल में मेरे जैसी डुबसुरत औरत डो डिसे मेरे सिवा दुसरी औरत की तरफ रगडत करना लायक ले के नही?

डजरत जुनेद (२.अ.) औरत की ये डात सुनकर डेडोश डो गये. जब डोश में आये तो कीसीने ईसका सबड पुछा तो इरमाया मेरे डेडन में ईस वक्त ये ड्याल आया के अल्लाडतआवा इरमाता ले अगर दुनिया में कीसी को मुजे देपना जाईज डोता तो अपना डिजड (पर्दा) डिठाकर जाडीर डो जाता के वो मुंजे देपता डीर उसको डालुड डोता के जस्का मुंज जैसा रड डो डिस्के दीलमें मेरे सिवा दुसरे की मोडब्बत डोना याडीये ?

(नुजडतुल मजलीस-१ / ४५)

(रवजतुस्साविडत-८५)

अजड तेरी ले अय डेडडुड सुरत

नजर से गीर गये सब डुडसुरत

तेरी निगाडने मड्मुर कर दीया

क्या डयकटे को जंउ तुंजे देपने के डाद.

अल्लाह तआला कुर्आन सुनायेगें :-

उजरत अब्दुल्लाह बीन भुरैदल (रही.) इरमाते छे के (आला हर्गे के) जन्नती जन्नत में रोजाना हो मरतबा अल्लाह की जियारत करेंगे. और अल्लाह तआला उनके सामने कुर्आन मज्हद पढकर सुनायेंगे. और कुर्आन सुनने वालों में से हर जन्नती अपनी उस मज्लीस पर रौनक अकरोज लोगा. जहां वो बेठा करता लोगा. गीया हर वकत याकुत, जबरजद, सोने और जमर्द के मेम्बरो पर अपने अपने आमाव के दरजात के मुताबिक बेठेंगे. और इस किरामत से उनकी आर्षे ठंडी लोगी. और उससे बढकर कोई अजमत वाली और उसीन थीज नहीं सुनेंगे. उसके बाद वो अपनी सवारीयों पर बेठकर अपनी मसजद आंभो के साथ ऐसी ही कल तक के लीये वापस लोट आया करेंगे.

(इकीम तिमीजी-१५६)

जन्नत के दरवाजों के नाम :-

उजरत अनस (रही.) से रिवायत छे के रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया :- जन्नतके आठ दरवाजे छे.

१. बाभुल मुस्लीन - (नमाजीयों का दरवाजा)
२. बाभुस्साईमीन - (रोजेदारों का दरवाजा)
३. बाभुस्सादेकीन - (सय्योंका दरवाजा)
४. बाभुल मुतसददेकीन - (आपसमें दोस्ती रबनेवालों का दरवाजा)
५. बाभुज्जकेरीन - (भुदकी याद करनेवालों का दरवाजा)
६. बाभुस्साभेरीन - (सभर करनेवालों का दरवाजा)
७. बाभुलफाशेईन - (आज्जी करनेवालों का दरवाजा)
८. बाभुल मुतवककेलीन - (तवककुल करनेवालों का दरवाजा)

(अयडकी)(जन्नतके उसीन मनाज्ज-१२२)

हर अमल का एक दरवाजा :-

उजरत अबु डुरैरल (रही.) इरमाते छे के रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया :

उर तरुड के अमल करनेवालों के लीये जन्नतके दरवाजोंमें से एक दरवाजा है. ईसी अमल की वजह से उनको ईसी दरवाजेसे बुलाया जायेगा. (मस्नदे अहमद)

आठों दरवाजों का पुल जाना :

उजरत उमर (रही.) से रिवायत है के रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया :

जे शप्स ईस डालमें झौत लुवा के अल्लाह तआला और रोके कयामत पर ईमान रपता था उसे कहा जायेगा जन्नत के आठों दरवाजोंमें से जससे चाहे जन्नतमें दाखिल होजा. (मस्नदे अहमद)

जन्नत और दौअप का मुतालजा :-

रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया :

कोई दीन नही गुजरता मगर जन्नत और दौअप दोनों सवाल करती है. जन्नत केडती है. अथ मेरे परवरदिगार ! मेरे इल तैयार हो चुके है. मेरी नेहरे ज़री हो चुंकी है. मैं अपने मकीनों की (रहनेवालों की) मुश्ताक हुं. अस ! मेरे अंदर रहनेवालों को जल्दी से भेज दीजिये.

(सिफ़तुल जन्नत-अभुनईम-१/१२२)

(८) जहन्नम

कुरआन मज्दमें जहन्नम का बयान :-

कुङ्कार और बद अमल लोगोकी सजा देने के लिये अल्लाह तआलाने जहन्नम बनायी है. ज़स्की सजाओं और अजाब ना काबिले बयान है. कुरआन मज्दमें जगल जगल जहन्नमका जिक करते लुवे उससे उराया गया है.

- * जहन्नम की आग जलाने के लीये ईंधन के तौर पर ईन्सान और पत्थर ईस्तेमाव होंगे. (अल अकरस - २४)
- * काङ्करो की भाव जब जहन्नम की आग से जल जायेगी तो झौरन नयी भाव उन पर यढा दी जायेगी. ताके बारबार सप्त तकलीफ़का अडेसास होता रहे. (अन्नीसाअ - ५६)
- * आग ही जहन्नमीओं का ओढना बिछौना होगी. (अल अरफ़ - ४१)

- * जलन्ममीओं को पानी के बदले सडा लुवा पीप पीलाया जअेगा. ज्जस्को उन्हेँ जबरदस्ती पीना पडेगा. (धंभ्राडीम - १६)
- * जलन्ममीओं का विभास गंधक का डोगा. (धंभ्राडीम - १०)
- * जलन्ममीओं की अजाअ की सप्तती की वज्ज से ऐसी यीओं पुकार डोगी के कान पडी आवाज सुनाई न डेगी. (डुड - ६)
- * जलन्ममीओं पर निडायत भोलता लुवा गरम पानी डाला जअेगा. वो पानी जब अदन के अंअर पडॉरेगा तो पेट की अंतडीयां और डोजडी सभ पीधला कर निकाल डेगा. और भाल ली पीधल जअेगी. और उपरसे लोडेके डथोडेसे पीटाई डोती रहेगी. अडोत कोशीष करेँगे के कीसी तरल जलन्मसे निकल भागे मगर इरीशते पीटाई करके डीर उन्हेँ जलन्ममें धकेलते रहेंगे.
(अल डजज-१८-२२)
- * डर तरङ्ग आगमें जलने की वज्ज से जलन्ममीओं की सुरते भीगड जअेगी.
(अल मुअमेनुन - १०४)
- * जलन्ममीओं को जककुमका दरभ्त भीलाया जअेगा. जे जलन्ममीकी पैदावार डोगा. जे शयतान नुमा निडायत अद सुरत डोगा ज्जसे डेभ कर ली कराडत आयेगी. धंससे वो अपना पेट भरेंगे. और जब थ्यास लगेगी तो उपरसे सप्त तरीन भोलता लुवा पानी और पीप पीलाया जअेगा. (अल सङ्कत - ६२-६७)
- * काङ्गीरो को सत्तर गज लंबी जंजरो में जकडकर लाया जअेगा.
(अल डकक-३०)
- * जलन्ममके पडरे पर निडायत जबरदस्त कुप्वत वाले और सप्त मिजळ इरीशते मुकरर डे. जे अल्लालके डुकममें जरा बराबर ली कोताडी नडॉ करते. (यानी न वो जलन्ममीओं पर रहम भाअेंगे और न धंहेँ यकमा डे कर कोई जलन्ममी निकल सकेगा.)
(अत्तडरीम - ६)

हडीस शरीडमें जहन्नमीओं की सजाओं का जयान :-

डुजुर (स.अ.व.) ने तङ्गील के साथ जलन्म और उसके ददनका अजाओं से उभमत को अबरदार कीया डे.

- * જહન્નમ કી આગ દુનિયાકી આગ કે મુકાબલેમેં ૬૯ ગુના ઝયાદા જલानે કી સલાહીયત રખતી હે. (મુસ્લિમ ૨/૩૮૧)
- * જહન્નમીઓં કી ગીઝા (જકકુમ) ઈત્ની બદબુંદાર હે કે અગર ઉસ્કા એક કતરાબી દુનિયામેં ઉતાર દીયા જયે તો તમામ દુનિયા વાલોંકા બદબુ કી વજહ સે યહાં રહેના મુશ્કલ હો જયે. અબ અંદાઝા લગાઈએ જુસ્કા ખાના હી યે હોગા તો ઉસ્કા કયા હાલ હોગા.? (તિર્મીઝી-૨/૮૨)
- * કાફીરકી ઝબાન જહન્નમ મેં એક ફર્સખ ઓર દો ફર્સખકે બરાબર બાહર નિકાલ દી જાએગી ઓર દુસરે જહન્નમી ઉસ પર ચલા કરેંગે. (તિર્મીઝી ૨/૮૫)
- * જહન્નમીઓં પર રોને કી હાલત તારી કરદી જાયેગી. ઓર રોતે રોતે ઉન્કે આંસુ ખુશ્ક હો જાએંગે. તો ફીર વો ખુન કે આંસુ સે ઈસ કદર રોયેંગે કે ઉન્કે ચહેરો મેં બડે બડે ગદ્દે હો જાએંગે. અગર ઉનમેં કશ્તીયાં ચલાઈ જાએ તો વો ભી ચલને લગે. (ઈબ્ને માજ-૩૮/૪૩૨૪)
- * જહન્નમ મેં સબસે કમ અઝાબ વાલા વો શખ્સ હોગા જુસ્કે જુતે મેં જહન્નમ કે અંગારે રખ દીયે જાએંગે. જુન્કી ગરમી કી વજહ સે ઉસ્કા દીમાગ ઐસા ખોલેગા જેસા દેગચી મેં આગ પર પાની ખોલતા હે. ઓર વો સમજેગા કે મુઝસે ઝયાદા સખ્ત અઝાબ કીસીકી નહીં. હાંલાંકે વો સબસે કમતર અઝાબ વાલા હોગા. (બુખારી ૨-૯૭૧)

ઈસ લીયે હમેં અલ્લાહ કે અઝાબ સે હર વક્ત ડરતે રહેના ચાહીએ ઓર ઉસ્કી ફીકર રહેની ચાહીએ. કે કહીં હમ અપની બદઅમલી કી વજહ સે ખુદા ન કરે અઝાબ મેં મુબ્તિલા હો જાયે. અલ્લાહ તઆલા ઉમ્મત કો અઝાબ સે મહેકુઝ રખ્ખે...આમીન.

અલ્લાહુમ્મ ઈન્ના નસઅલુક રજક વલજન્નત - વનઊઝૂબિક મિન ગદબિક વન્નાર -

અય અલ્લાહ ! હમ આપકી રઝામંદી ઓર જન્નતકા સવાલ કરતે હે ઓર આપકી નારાઝગી ઓર દોઝખ સે પનાહ માંગતે હે.

ઈસ દુઆ કો અહેતિમામ કે સાથ પઢતે રહીયે.

(९) मेहड़ीले धर्शाद

शागिर्द का जत :

उजरत धमाम गजाली (२.अ.) के अेक शागिर्द बरसों आपकी जिदमतमें रेड कर क्षरिग डो युंके. तो अेक दीन ये डिकर पैदा डुध के मैंने अेक उम्र धलम डसिल करनेमें अर्थ करदी. लेकीन मैंने ये न जना के कौनसा धलम नाइअ (नका वाला) डै.? जे कअ और मयदाने डशरमें मेरे लीये मुकीद और क्षयदामंद डो सकता डै. और कौनसा धलम गेर मुकीद डै अससे मुजको बयना याडीये. कयुंके डदीस शरीकमें आया डै. “डम जुदातआला की पनाड मांगते डै धलमे गेर नाइअ से” अेक मुदूत तक वो धसी परेशानीमें रडे. आगिर कार उन्डोंने अपने उस्ताद धमाम गजाली (२.अ.) से उस्के मुतअल्वीक सवाल कीया. और यंद मसाधल और ली पुछे. और ये ली-लीआ के अगरये आपकी तस्तीक़ात. जेसा के अडयाडल उलुम, किम्यअे सआदत, जवाडिडल कुअान, मेअयाडल धलम, मिजानुलअमल, किस्तासुल मुस्तकीम, मआरिनुल कुदूस, मिन्डानुल आबेदीन, वगेरडसे मेरे सवाल का जवाब मील सकता डै. लेकीन आस तौर से अेक मुप्तसर जवाब याडता डुं असको डंमेशा पेशे नजर रप कर अमल करता रडुं.

धमाम गजाली (२.अ.) ने उन्के जवाबमें लीआ के डेटा ! पुदा तआला तुमडारी उम्र डराज करे. और तुमको अपने अडबाब के रास्ते पर यलनेकी तौडीकडे. डजरत रसुलुल्लाड (स.अ.व.) से अल्वलीन से आगिरीन के लीये नसीडतों का अेक डकतर मौनुद डै. जे आपने अपनी जबाने मुबारकसे धर्शाद डरमाये डै. अगर तुमको धससे कुछ पडुंया डै तो मेरी नसीडत की तुमडे कया जडरत डै.? और अगर नडों पडुंया तो डतलाओ के तुमने धन्नी लंबी मुदूतमें कया डसिल कीया? डेटा ! धन तमाम नसीडतोंमें जे डुजुर (स.अ.व.) ने तमाम आलमको डरमाध डै सिई ये डरमा डेना के:

“अंटे का गेर मुकीद कामोंमें मशगुल डोना ये आस अलामत डै उस्कीके पुदातआलाने उस्की तरडसे अपनी नजरे धनायत डेरली डै. और अस काम के लीये धन्सान पैदा कीया गया डै. अगर उस्के सिवा

कीसी और काममें उसकी एक घड़ी भी ખર્च हो गई तो बड़ी हसरत का मुकाम है. और जो शम्स का डाल यावीस भरस की उम्र के बाद भी ये रखा के बुराईयों पर भलाईयां गाबिब न हो तो उसको दौज्जाममें जाने के लीये तैयार रेहना चाहीये.”

ये सिई तुम्हारे लीये बल्के तमाम आलम के लीये काई व शाई नसीहत है. (उजरत ईमाम गज़ाली (र.अ.) का अेक पत)

छुटकारे के लीये अेक हदीस :-

शेभ शिब्ली (र.अ.) इरमाते है के मैंने यारसो उस्तादों की पिदमत में रेह कर यार उजार हदीसों पढी है. उन्मे से सिई अेक हदीस को अमल के वास्ते पसंद कर लीया है. क्युं के वो हदीस मेरी नज्जत और छुटकारे के लीये काई है. और अक्वलीन और आपरीन के उलुम उस्में दर्ज है. वो हदीस ये है :

- ◆ दुनिया के लीये ईत्ना काम कर जत्ना तु उस्में रहेगा .
- ◆ और आपिरत के लीये ईत्ना काम कर जत्ना तेरा रेहना वहां मुकददर है.
- ◆ और अल्वाह तआवा के वास्ते ईत्ना काम कर जत्ना तुं उसका मोहताज है.
- ◆ और दौज्जाम के लीये ईत्ना काम कर जत्ना तुं उसकी तकलीफ़ी पर सबर कर सकता है. (ईमाम गज़ाली (र.अ.) का अेक पत)

शेभ अ.कादीर ज़ुलानी (र.अ.) का ईर्शाह :-

शेभ अ.कादीर ज़ुलानी (र.अ.) इंमेशा जिको इिकरमें मशगुल रेहते और भीवने वालों को भी उसकी तल्कीन इरमाते.

अेक जग़ा इरमाया :- **لَا مُعِينُ إِلَّا اللَّهُ**

अल्वाह तआवाके सिवा कोई मददगार मुश्कील कुशा नही.

बल्के यहां तक ईर्शाह इरमाया :- **لَا تَنْجُرُكَ إِلَّا اللَّهُ**

अल्वाहतआवा के सिवा कीसी के लीये दरकत भी न कर.

कही इरमाया :- **لَا يَأْتِي بِالْخَيْرِ إِلَّا اللَّهُ**

अल्वाहतआवा के सिवा कोई भलाई नही ला सकता.

कहाँ इरमाया :- لَا يَصْرِفُ السُّوءَ إِلَّا اللَّهُ

अव्वाह तआवा के सिवा कोई मुश्कील कुशा नहीं.

(गुन्यतुत्तालेबीन-३१) (अलकुरकान-२/६७)

ओक जग्या पर ईर्शाह इरमाया :

दुनिया हाथ में रचना जर्हज, जैब में रचना जर्हज, कीसी अरछी निखत से उस्को जमा रचना जर्हज, बाकी हील में रचना जर्हज नहीं. (के हील से मेहबुब समजने लगे) दरवाजे पर उस्को ખडा होना जर्हज, बाकी दरवाजे से आगे घुसाना ना जर्हज है. न तेरे लीये र्हजजत है. (कुयुजे यजदानी मजलीस-५१) (अल कुरकान-२/६५)

हील की आंभ :

ईमाम गजाली (र.अ.) इरमाते है के :-

ये कैसे मालुम हो के आदमी के हील की आंभ दुरस्त है. उस्की मिसाल ऐसी समजे के अगर कीसी नाबीना (अंधे) आदमी के सामने लकीज पानों का दस्तरख्वान बीछा हुआ हो तो उस्को कुछ मालुम न होगा. अगर ईन्सान की जलीरी आंभ दुरस्त हो तो वो लकीज पानों और नेअमतों को देखकर भुश होता है. ईस लीये समज लेना याहीये के उस्की आंभ दुरस्त है. और कीसी को मालुम ही न हो तो उस्की आंभ दुरस्त नहीं.

ईसी तरह ईन्सान की ईताअते भुदावंदी की तरह रगभत ओर शोभ हो तो समजे के उस्के हील की आंभ दुरस्त है. वरना हील ना-बीना है. उस्का ईलाज करना याहीये.

ईबत :-

इसन बसरी (र.अ.) को ओक मरतबा ठंडा पानी दीया गया थावा हाथमें लेते हुआ ही मुंडसे आह ! निकली और बे होश हो गये जब ईझाका हुआ तो लोगोंने पुछा उजरत ! आप का क्या हाल हो गया? इरमाने लगे :

मुंजे दोऊभीयों की आरजुं याद आ गई. जब के वो जन्नतीयोसे कहेंगे. "हमें जरा पानी पीवा हो"

(ईमाम गजाली (र.अ.) का ओक अत)

उसन बसरी (र.अ.) इरमाते हे के अगैर अमल के अन्त की आरजुं करना अेक तरल का गुनाल हे.

طَلَبُ الْحَيَّةِ بِلاَعْمَلٍ ذَنْبٌ مِنَ الذُّنُوبِ

शाह वलीयुल्लाह मोहदीस देहली (र.अ.) के ईशादात :-
जादशाहों और अमीरों के नाम :-

अय अमीरो ! देओ ! क्या तुम भुदा से नली उरते. ? दुनिया की इानी लऊऊतोंमें दुबे अ रहे लो. और अण लोगों की निगरानी तुमडारे अम्मे सुपुई दुई हे. उन्को तुमने छोड दीया हे. ताके उन्मे भाऊ भाऊ को भाते और निगलते रहे. क्या तुम भुवे तौर पर शराब नली पीते ? इीर अपने ईस इेव को तुम भुरा भी नली समवते. तुम नली देभ रहे लो के बडोत लोगों ने उंये उंये मलेल ईस लीये अडे कीये हे के उन्में जीना कारी की अये. और शराबे ढावी अये. नुवा भेवा अये. लेकीन तुम उस्मे दभल नली देते और उस डाल को नली बदलते. क्या डाल हे ? उन अडे अडे शेडरों का अन्में छे सो साल से कीसी पर “डददे शरध” (शरीयत की सऊा) अरी नली दुई. जब कोई कमअोर मील अता हे तो पकड लेते लो और जब कोई ताकतवर लोता हे तो छोड देते लो.

तुमडारी जेहन ली ताकतें ईस पर अर्य लो रही हे के लजीअ भानों की कस्में पकवाते रहो और नरम नाजूक बदनवाली औरतों से लुक् उठाते रहो. अरछे कपडों और उंये मकानों के सिवा तुमडारी तववबुड कीसी तरइ नली डोती. क्या तुमने कभी अपने सर अल्लाड के सामने अुकाये ? भुदा का नाम तुमडारे पास सिई ईस लीये रेड गया हे के अपने तऊकेरों में और कीस्से कडानियों में उस्का नाम ईस्तिमाव करो. अैसा मालुम लोता हे के अल्लाड के लइअ से तुमडारी मुराद अमाने का ईन्कलाव हे. क्युं के तुम अकसर भोलते लो के भुदा कादीर हे के अैसा करदे. यानी अमाने के ईन्कलाव की ये तअबीर हे.

हुन्नर-तिअरत करनेवालों को भिताव :-

अय कमाई करने वालो ! देओ अमानत का वलअा तुमसे निकल गया हे. तुम अपने रब की ईबादतसे आली जेहन लो गये लो. तुम अपने मनधउत बनाये दुअे मअबुदों पर कुर्बानीयां रढाते लो. तुम मदार

और साधार का डबडब करते हो। तुम मेंसे बाज लोगोंने झालबाजी और टुटका (जहुँ) और गंडे (छील्ला) वगैरह का पेशा (धंधा) धिंथियार कर रभा है। यही उन्की दौलत है। और यही उन्का दुन्नर है। ये लोग भास क्रिस्म का विभास धिंथियार करते हैं। भास तरह के आने आते है। उन्में छन्की आमदनी कम होती है। वो अपनी औरतों और बरयो के डक की परवा नहीं करते। तुम मे से बाज सिर्फ शराब भोरी को पेशा बनाये दुअे है। तुममें से कुछ लोग औरतों को किराये पर खला कर पेट पाल लेते है। ये कैसा बढबन्त आदमी है।

अपनी दुनिया और आभिरत दोनों को बरबाद कर रहे हो। डालां के अल्लाह तआला ने तुम्हारे लीये मुप्तलीक्ष कीसम के पेशे और कमाने आने के दरवाजे खोल रभे है। जे तुम्हारी और तुम्हारे घरवालों की जरतों के लीये काई हो सकते है। शर्त ये हैके तुम अर्थ करनेमें दरम्यानी राह धिंथियार करो। और धिन्नी रोजी पर राख हो जओ जे तुम्हे आसानीसे आभिरत के नतीजों तक पहुँचादे। लेकिन तुमने पुदा की ना शुकी की। और रोजी हासिल करनेमें गलत रास्ता धिंथियार कीया। क्या तुम जडन्नमके अजाब से नहीं उरते ? जे बडोत बुरा भीछोना है।

देभो ! अपनी सुब्द शाम को तुम पुदा की यादमें बसर करो। और दीन के अडे डिस्सेको अपने पेशे (धंधा) में अर्थ करो। और रात अपनी औरतों के साथ गुजरो। अपना अर्थ कमाईसे लंमेशा कम रभा करो। झीर जे अय जये उससे मुसाझीरों और मिसकीनों की मदद कीया करो। और कुछ अयानक आनेवाली मुसीबतों और जरतों के लीये रभ लीया करो। तुमने अगर धिस रास्ते को पसंद न कीया तो समज लो तुम गलत रास्ते पर ज रहे हो। और तुम्हारी कोई तदबीर दुरस्त नहीं है।

मशाईज की औलाद से जिताब :-

अय वो लोगो ! जे अपने बाप दादा के रस्मों रिवाज को बगैर कीसी डकके पकडे दुअे हो। आप से सवाल है के आपको क्या हो गया है के टूकडीयों और टोलीयों में अट गये हो। दर अक अपने अपने राग अपनी अपनी मंडवी में आलाप (गीत गा) रहा है। और जस तरीके को अल्लाहने अपने प्यारे रसुल (स.अ.व.) के जरीये नाजील किया है।

उसे छोड कर हर एक तुममें एक मुस्तकील पेशवा बना हुआ है. और लोगों को उसकी तरफ बुला रहा है. और अपने को रास्ता पाया हुआ रहबर समझ रहा है. छावां के वो जुद असल राह से भटक कर दुसरोंको भटकानेवाला है. हम जैसे लोगों को बिलकुल पसंद नहीं करते जे लोगो को सिर्फ ईस वीये मुरीद करते है. ता के उनसे टके पुसुल करे. और शरीफ ईल्म सीप कर दुनिया भटोरते है. क्युं के जब तक दीन की शकल और तर्ज ईप्तिथार न करेंगे दुनिया हासिल नहीं हो सकती.

और न में उन लोगों से राख लुं जे सिवाय अल्लाह रसुल के जुद अपनी तरफ लोगों को बुलाते है. और अपनी मरख की पाबंदी का लोगों को लुकम देते है. ये लोग कुंटमार और राहगीर है. उनका शुमार दज्जालों और कलज्जालों में है. और उन लोगों में है जे जुद किन्ना और आजमाईश के शिकार है.

जबरदार ! हरगीज उसकी पेरवी न करना जे अल्लाह और रसुल की सुन्नतकी तरफ दअवत न देता हो. और अपनी तरफ बुलाता हो. लोगों देभो ! क्या तुम्हारे वीये अल्लाह तआला के ईस ईशाईमें कोई ईब्रत नहीं है ?

إِنَّ هَذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ وَلَا تَتَّبِعُوا السَّبِيلَ فَتَفْرَقَ بَكُمُ عَنْ سَبِيلِهِ (پ १८. ८)

“ये मेरी राह है सीधी, तो ईस पर चल पडो और मुप्तवीइ राहों के पीछे न पडो. के तुम्हें अल्लाह की राह से बीछडवा देंगे.”

(पारा-८ ३-६)

तालीजे ईल्मों से जिताब :-

अय बह अकलो ! ज्खनों ने अपना नाम “उल्मा” रभ छोडा है. तुम सई नडव और मआनीमें गरक हो. और समजते हो के यही ईल्म है. याद रभो ! ईल्म या तो कुआन की कीसी आयत का नाम है या सुन्नते साबेता कायेमा का.

याहीये के कुआन सीपों. पडेवे उसके लुगात (शब्दकोश) डल करो झीर शाने नुजुल का पता चलावो. ईसी तरह जे उदीसे रसुल (स.अ.व.) सही साबीत हो चुंकी है. उसे मेहकुज करो. यानी रसुले अकरम (स.अ.व.) नमाज कीस तरह पढते थे और पुजुं कीस तरह करते

थे. अपनी बर्बरत के लीये लुजुर (स.अ.व.) कीस तरह जाते थे. उबल केसे अदा इरमाया था. बिडाद के लीये आपका क्या कायदा था. बातचीतमें क्या अंदाज था. अपनी जमान की डिंकाजत कीस तरह इरमाते थे. आप के अज्वाक क्या थे.? वगैरह.

याहीये के लुजुर (स.अ.व.) की पुरी सीरत की पेरवी करो. और आप (स.अ.व.) की सुन्नतों की पेरवी करो. मगर उस्में ये भ्याव रहे के जे सुन्नत है उसे सुन्नत ही समझे. उस्को इर्ज का दर्ज अता न करो. ईसी तरह इराईज को सीओ. जैसा के वुंजु के इर्ज क्या है ? नमाज के अरकान क्या है ? जकात का निसाब क्या है ? वाज्जब क्या है ? मैयत के वारिसों के डिस्सोंकी भिकदार क्या है ? लुजुर (स.अ.व.) की आम सीरत का मुतावा करो. जससे आपिरत की रगभत पैदा हो. सहाबा (र.दी.) और ताबेईन के डालात पढो.

जुन चीजोंमें तुम उल्जे लुअे हो और ज्स्में तुम सर भया रहे हो उन्को आपिरत के ईल्मसे क्या वास्ता ? इर उन्ही तल्बासे इरमाते है.

जुन उलुम की हैसियत जरीया और सबभ की है जैसा के सई-नलव-वगेरह-तो उन्की हैसियत जरीया और सबभ की रेहने हो भुए उन्ही को ईल्म न बना भेओ.

ईल्म का पढना तो ईसी लीये वाज्जब है के उस्को पढकर मुसलमानों की बस्तीयोंमें ईरलामी शेआर को रिवाज हो.

लेकीन तुमने दीनी शेआर को इलाया नही तुमने अपने डालात से आम मुसलमानों को ये आवर (यकीन) कराया है के उल्मा की बडी कसरत हो चुंकी है. डालां के अभी किन्ने भडे भडे ईलाके है जे उल्मासे ખाली है. और ज्हां उल्मा पाये जाते है. वहां भी दीनी शेआरों का भास गल्बा नही है.

वाईजों और आबिदों से जिताब :-

दीन में भुशकी और सफ्ती की राह ईप्तिहार करनेवाले वाईजों और आबिदों से मैं पुछता हुं. जे ખान्कालों में भेठे है. के ये तुम्हारा क्या डाल है ? डर भली भुरी बात और सडी गलत बात पर तुम्हारा ईमान

है. लोगों को तुम मनघडत और बनावटी उद्दीसों का अवाज सुनाते हो. अल्लाह की मज्जुक पर तुमने छुंङगी तंग कर रानी है. डावां के तुम धंस लीये पैदा लुअे थे के लोगों को आसानीयां पलुंयाओगे. न के उन्की दृश्वारीयों में मुभ्तवा करोगे. तुम दीन के बारे में जैसे लोगों की बातें पेश करते हो जे बियारे मगलुब डाल थे और धंशको मोडुभत में अकल और डोश भी भो चुके थे. डावां के तुमको ये याडीये था के सडी अकीदा और नेक अमल उन्की जरूरत है उस्को सीपवाते.

जरूरी है के लोगों को अल्लाहकी तरफ बुलाओ. पड़ेले भुद अमल करो हीर दूसरों को दअवत दो. क्या ? तुम धंत्नाभी नहीं समजते के सबसे बडी रडमत और सबसे बडा करम अल्लाह का वो है. जैसे रसुले अकरम (स.अ.व.) ने पलुंयाया है वोडी सिई खिदायत है.

आम मुसलमानों से जिताव :-

मै मुसलमानों की आम जमाअत की तरफ मुजातब हुं और केडता हुं अय धंन्ने आदम ! देभो तुम्हारे अप्लाक सो चुके है. तुम पर बालय और भुदगळ सवार हो चुकी है. तुम पर शयतानने काबु पा लीया है. औरते मदेके सर यढ गध है. और मर्द औरतों के लुकुक बरबाद कर रहे है. दराम को तुमने अपने लीये भुशगवार बना लीया है. और डवाल तुम्हारे लीये बदमजा बन गया है. हीर कसम है अल्लाह की अल्लाहने डरगीज कीसी को उस्के बस से जयादा तकवीक नहीं दी है. याडीये के तुम अपनी नइसानी प्वालीश निकाल के जरीये पुरी करो. याडे तुम्हें अेक से जयादा ही निकाल क्युं न करने पडे. और अपने भयमें पडननेमें और रेडनेमें तकलुक से काम न लीया करो. धंत्नाही भयं करो उन्ना तुम्हारी ताकत है.

याद रभो ! अेक का भोव दूसरा नहीं उठाता. और अपने उपर जबरदस्ती तंगी न लो. अगर तुम अैसा करोगे तो तुम्हारे नइस आभिरकार गुनाहों तक पलुंय जर्येंगे.

अल्लाह तआला धंसीको पसंइ इरमाते है के उस्के भंटे उस्की आसानीयों से नइा उठाये. पेट की प्वालीश को जाने से पुरी करो. धंत्ना कमाने की कोशीष करो के अपनी जरूरतें पुरी हो. दूसरों पर भोव बनने

की कोशीष न करो. के उन्से मांग मांग कर आया करो. तुम उन्से मांगो और वो तुम्को न दे. तुम्हारे लीये यही पसंदीदा है के भुद कमाकर आया करो. अगर तुम ऐसा करोगे तो भुदा तुम्हे रोजी की राहें ली समजयेगा. जे तुम्हारे लीये काड़ी डोगी.

अय आदम के बर्यो :-

जैसे भुदा ने अक रेडने की जगा देरपी है. जसमें वो आरामसे रहे. धत्ना पानी जससे वो सेराब हो सके. धत्ना जाना जससे गुजर हो जये. धत्ना कपडा जससे तन ढक जये. ऐसी बीवी जे धस्की शर्मगाड की डिहाजत कर सकती हो. और धरेलुं कामकाजमें मदद कर सकती हो. तो याद रभो के दुनिया कामीव तौर से उस शप्सको मीव चुकी है. याडीये के वो धस पर भुदा का शुक्र करे. और अल्लाह की याद के लीये जे कुरसद मीवे उसे गनीमत जने कमअजकम तीन वक्तोंमें सुब्द शाम और पीछली रातमें जिक्र का भास अेलतिमाम करे. अल्लाहतआला की याद उस्की तस्बीह और तहवीव (वाधवाह धव्वल्लाह) और कुर्आन मज्जद की तिलावत के जरीये कीया करे. और रसुले अकरम (स.अ.व.) की हदीस सुने और जिक्र के हल्कोंमें डाज्जर डुवा करे.

अय आदम के बर्यो ! तुमने जैसे बीगडे डुवे रस्मों रिवाज धम्तियार कर लीये है. जनुसे धीन की असल सुरत बीगड गध है. तुम आशुरा के धीन जुठी बातों (ताजीया) पर जमा डोते हो. धसी तरह शबेबरातमें भेल कुद करते हो. और मुर्दों के लीये जाना पका पका कर धीवाने को अर्रछा ज्याव करते हो. अगर तुम सख्येहो तो उस्की हवीव पेश करो.

धसी तरह और ली जुरी रस्में तुममें जरी है. जसने तुम पर तुम्हारी ज्हुंघी तंग करदी है. जैसा के शाही बियाहों की दम्बतों में तुमने हदसे जयादा तकल्लुक भरतना थुड़ कर दीया है. तवाक धेने का रिवाज आम ठेहरा लीया है. बेवाओं को निकाल से रोकें रेडते हो. धन रस्मों में तुम अपनी दौलत बरबाद करते हो.

तुमने अपनी नमाजें बरबाद कर रपी है. तुम में कुछ लोग है. जे दुनिया कमाने और अपने धंधो में धत्ने इस गये है के नमाज का उन्हे

वक्त ली नलीं भीवता. कुछ लोग है जे कीस्सा कलानी सुननेमें वक्त बरबाद करते है. तुमने जकात देने को ली छोड दीया है.

तुममे सें बाजों ने रोजे छोड रभे है. भास कर जे लोग मेहनत का काम करते है. केहते है के हम रोजा रभने की ताकत नलीं रभते. मालुम होना याहीये के तुमने गलत राह ईप्तिहार करली है. ये दमवती पयगाम उजरत शाह वलीयुल्लाह मोहदूसि देलव्वी (र.अ.) का है. जससे अंदाज हो सकता है के आम तौर पर मुसलमानों के हर तबके की हिंदुस्तानमें क्या डालत हो चुकी थी. नीज ईसीसे शाह साहब (र.अ.) के अंदर के नज्ज्बात और अहसास क्या थे? और उनकी निगाहें कहां कहां थी और कीन कीन चीजों को देख रही थी.

...भुलासा ये के कुहरत की तरफसे मुसलमानों को भास कर हिंदुस्तानके मुसलमानों को मुसलसल ओलाम दीया ज रहा है. जे उन्हें बारबार थोंका रहे है और नगा रहे है. लेकिन वो अपनी नगा कुछ दूसरा ईस्ला कर चुंके है. (अल कुरकान-प/२००२/२३)

हजरत मौलाना ईल्य़ास साहब (र.अ.) के ईशादात :-

- (१) इर्ज नमाज के सामने तो कीसी ईबादत का थिराग नलीं नवता. नवाक़िल में सबसे अइजल तलनबुद है. अगर पीछली रातको उठ सके तो तलनबुद पढे. वरना उसकी हसरत के साथ सोने से पड़ेले दो-चार रक़ात पढलीया करे.
- (२) अल्लाह के जिक और ध्यानसे गाक़िल तो बे नसीब है.
- (३) जिकली दो किस्म के है. जिके मकबुल-जिके मरदुद. अंदागीके हरशोबे को लुज़ुर (स.अ.व.) की सुन्नतके मुताबिक बनानेकी कोशीष करना जिके मकबुल और मलबुब है. और लुज़ुर (स.अ.व.) ने जस्मे सवाब न बताया हो उस्मे सवाब की उम्मीद रभना जिके मरदुद है.
- (४) ईस्लाम दूनिया की हर चीज को तरपीर (काबुंमें रभने) का अमल है. तुम जत्ने भुदा के बंदे बनोगे हर चीज तुम्हारी बंदगीमें (गुलामीमें) आती रहेगी.
- (५) बंदगी उसको केहते है के भुदा का लुकम मानने में मजा आने लगे.

- (६) तुम ખુદા કે આગે નરમ હો જાઓ તો હર ચીઝ તુમહારે લીયે નરમ હો જાયેગી.
- (૭) સહાબા (રદી.) જબ એક દુસરે સે ખૈરિયત માલુમ કરતે થે તો ઈસ્કા મતલબ યે હોતા થા કે હુઝુર (સ.અ.વ.) જીસ તરીકે પર છોડ કર ગયે થે વો બાકી હે ? ઉસ્મે કુછ ફર્ક તો નહીં આયા.
- (૮) જો અપને નફસ કે અલાવા દુસરે કો જલીલ કરને કે પીછે પડતા હે. અલ્લાહ તઆલા ઉસ્કો જલીલ કરને કા ઈરાદા કર લેતા હે.
- (૯) કીસી જાત યા ઉસ્કી બાતસે ઈત્ના જી લગાના કે ઉસ્કી જાત કો રસુલે અકરમ (સ.અ.વ.) કા બદલ. ઓર ઉસ્કી બાત કો અલ્લાહ તઆલા કે કલામ કા બદલ બનાલે યે મેરે નઝદીક દેહરીયત (ખુદા કો ન માનના) હે.
- (૧૦) છોટોસે બડો કી ઈઝઝત હે. ઓર બડો સે છોટોકી તરક્કી ઓર તરબિયતમેં છોટે જીત્ને બડો કે મોહતાજ હે. ઉસસે ઝયાદા બડે છોટો કે મોહતાજ હે.
- (૧૧) હુઝુર (સ.અ.વ.) કી લાઈ હુઈ સ્કીમ કે અલાવા કીસી ઓર સ્કીમકો નજાત કા ઝરીયા સમજના ઈલ્લાદ (દીને હકસે ફીર જાના) હે.
- (૧૨) અપના પૈસા દુસરોં પર ખર્ચ કરના બરકત કા ઝરીયા હે. દુસરોંકે પૈસોં કી લાલચ કરના બે બરકતી હે. દુસરોં કી ખિદમત કરના નજાત કા ઝરીયા હે.
- (૧૩) એક શખ્સને કહા હઝરત ! ચીઝોં કે કંટ્રોલને નાક મે દમ કર દીયા હે. મૈને કહા. હુઝુર (સ.અ.વ.) કી સ્કીમ કો ઠુકરાને કા યહી નતીજા હે.
- (૧૪) હદીસમેં હે શયતાન દીલ પર ચીમટે હુએ હે. જબ અલ્લાહ કા ઝિક્ર હોતા હે. તબ ઉન પર ચોટ પડતી હે.
- (૧૫) તાલીબે ઈલ્મકા માઅના. યે હે કે જીન અહકામ કા સીખના જરૂરી હે ઉન્કો હાંસિલ કરને કે લીયે બેચેન હોના.
- (૧૬) મૌત કો દીનમેં પરચીસ મરતબા યાદ કરનેવાલા શહીદોંમે ઉઠેગા.
- (૧૭) તબ્લીગ કી રાહ મેં સર પર આરા ચલના ઓર તખ્તે સુલેમાની

- का मीलना दोनों नजर अंदाज कर देने के काबिल है।
- (१८) दीन का काम जो लगने की वजह से करना दुनिया है।
- (१९) भोमिनो से मोलुब्बत न होने पर अल्लाह तुम्से काफ़िरो के कुत्तो से मोलुब्बत करायेगा।
- (२०) दीन का काम करने के बाद शुक्र करे, नदामत से सर जुंकाये. जैसा करना याहीयेथा नही कर सका।
- (२१) नफ़स के धोके से भयो. काम न करने पर केलता है. के गुंजईश के मुताबिक कर रहा हुं. और करने पर केलता है के मैंने बलौत करवीया. ईससे गुज़र (तक़ब्बुर) पैदा होता है. बस ! उसको सिर्फ़ अल्लाह के वीये करो.
- (२२) डज़रत अबु बक़ (रही.) ख़िज़रत के वक़त रास्ता भताने वाले थे और वफ़ाते रसुल (स.अ.व.) के बादबी.
- (२३) दज़दशरीक़ पढने से तमाम दुआओं कुबुल होती है. दुआके अव्वल आभिर उसे पढ वीया करो.
- (२४) जब मुसलमान की तरफ़ निगाह किया करो तो उसकी तरफ़ वकार (ईज़ज़त) के साथ नजर किया करो. के ये जुदा पर ईमान लाया हुआ है. मेरा जुदा उसको प्यार करता है. ईर मैं क्युं उसको गेर नजर से देपु.
- (२५) अल्लाह के उर से भरतभा बुलंद होता है. जुदा के यहाँ उरनेवाला ही पसंद है.
- (२६) जबतब ईन्सान अपने को मज्लुक का भादीम और छोटा समजता रहेगा. उस वक़त तक अल्लाह तआला के यहाँ मुक़रब और मेहबुब है.
- (२७) नमाज़ की सफ़ों का टेडा होना वीलों को टेडा करता है. आगे पीछे भडा होना तफ़रीक़ (जुदाई) का सबब है. और इसल (बीय मेंजगा का) होना शयतान का दाभिल होना है.
- (२८) वदीसमें है के अक़ सलाबी (रही.) ने जुज़ुर (स.अ.व.) से अर्ज़ किया के मुज़को शयतान नमाज़में बलौत वसावीस (ज्याल) वीलाता है. जुज़ुर (स.अ.व.) ने इरमाया तीन

मरतबा नमाजसे पहले बाये मुँढेपर 'अउजू बिल्लाडी
मिनशयतानीर्रज्जम' पढकर थुंथकार दे.

- (२९) कीसी से अच्छी तरह ओलना सटका है.
- (३०) यकीन केहते है दीव में कीसी यीऊ के उतर जाने को.
- (३१) डुजुर (स.अ.व.) ने सलाबा (रही.) से इरमाया के जन्नत के मेवो में मुँड मार लीया करो. सिजदे जन्नत के भाग है.
सुब्दानल्लाह, अल्लमुदिल्ल्लाह, अल्लाहुअकबर, उसके मेवे है. अल्लाह के नामसे जैसा के वो पाक है. पाक यीऊं मीलेगी. और बडोत बडी और उम्दा मीलेगी.
- (३२) अल्लाहतआवा का अक मरतबा नाम लेना इस सलतनते सुलेमानी (अल.) से बढकर है.
- (३३) जे शप्स बे नमाजी को नमाजी बनाने की किकर और गुनाह करने वाले को गुनाह से बयाने की किकरमें लगा रेहता है. वो वबालसे बय सकता है. वरना हर शप्स जरूर उसके वबालमें गिरइतार लोगा.
- (३४) ખુદા તઆવા કા ધ્યાન અપને દીલमें हर वकत मोजुद रेहना उसका नाम अेहसान है.
- (३५) नइस से कडा करो के अबतक तुं मरा नलीं.
- (३६) पुजुं करते वकत गुनाहों के साइ होने का ध्यान करो. हीर मस्जिद का अदब करते हुअे अल्लाहतआवा की बडाई दीव में रभते हुअे और अल्लाहतआवा का उर रभते हुअे नमाज अदा करो.
- (३७) बिमारी अक मेहमान है. उसका ईकराम करना याहीये कयुं के ये मौत को याद दीलाती है.
- (३८) मुसाइह करो कीना जता रहेगा. उदीया दीया करो आपस में मोडबत करने लगोगे. और अभीवी जती रहेगी.
- (३९) सुब्दकी सुन्नत और इर्ज के दरम्यान अक तस्बीह सुब्दानल्लाही वबे उम्देही सुब्दानल्लाहील अज्जम.
अस्तगइइल्लाहल अज्जम वअतुबु ईलयह पढनेसे रोजी बढती है. ईस कल्मे को रोजी की बरकत से पास निस्बत है.

- और यलते झीरते “अल्लालुमग झीरली” पढा करो.
- (४०) असर के बाढ ७० भरतबा ँस्तिगझर से ७० भरस के गुनाड माझ डोते डे.
- (४१) आयतुल कुसीं डर नमाज के बाढ पढनेवाला भरने के बाढ झीरन नन्नत में जयेगा.
- (४२) दुइद शरीक दस-दस भरतबा नमाज के बाढ पढनेवाला डुजुर (स.अ.व.)की शिक्षाअतमें दाभिल डोगा.
- (४३) ँल्म, अमल, सोडभत ँन तीनोंके अगैर दीन डसिल नडीं डोता.
- (४४) सब गुनाडोंकी नड तकडुभुर, डसद, डालय डे, झीर उन्की छे शापे डे. पेड डर पाना, जयादा सोना, राडत तलबी, माल की मोडुडभत, डुडुडेजड (डननत की प्वाडीश) डुडुडे न्जिमाअ (डमबिस्तरी) झीर ँन्से गुनाडों की पैदाडश डोती डे.

(डशांदाते मकतुभात पेज-पड)

डजरत भौलाना ँल्यास (२.अ.) ने डरमाया :- मुंजे नभ ली मेवात नना डोता डे तो डंमेशा अेडले पेर और जिक के मजमा के साथ नता डुं. झीर ली आम लोगों के मेलनेवसे दीव की डालत ँस कदर बदल नती डे. के नभतक अेअतिकझ के जरीये उस्की गुसल न डुं. या यंद रोज के वीये. “सडारनपुर” या “रायपुर” के पास मजमा और पास माडोवमें नकर न रडुं दीव अपनी डालत पर नडी आता.

दुसरोसे ली कली कली डरमाया करते थे के :- दीन का काम करनेवालों को यालीये के गशत और यलत-झीरत के दीवी असरोंकी भिलवतों (तन्डाडथों) के जिक डिकर के जरीया धोया करे.

(डजरत भौलाना ँल्यास और दीनी दअवत पेज-७३ / १८८प)

डजरत भौलाना ँल्यास (२.अ.) दोस्तों को अंतमें वीअते थे.

डस बात का नडर यकीन करना यालीये के जे शप्स ँस्वाम के मीटने का दद वीये अगैर मरेगा. उस्की भौत बदतरीन भौत डे. मजडभ के डुरोग (डेवावा) से गडलत वावा और अपनी डी लजजत और दुन्यवी अंणगी में मस्त रेडनेवावा कयामत के दीन डसियाड (कावामुंड) उडेगा.

दीन की कोशीष करना लुजुर (स.अ.व.) के दईका मरुम ले. ईत्नी बडी लुस्ती के मरुम का झिकर न करना बडी ज्हालत और सप्त बुरी बात ले.

(लजुरत मौलाना ईल्वास (र.अ.) और दीनी दअवत) (१-१८८५-२२)
हजरत मौलाना हुसैन अहमद मदनी (र.अ.)के ईशादात :-
नइस का गल्बा :-

अकल ईन्सान में नुर और आइताब जैसी रोशनी पैदा करनेवाली ताकत ले. इससे भलाई और बुराईमें तमीज पैदा होती ले. ईस्के जरीये ईन्सान अपना नइा नुकशान समजता ले. हर ईबादतमें याहे वो नमाज लो या तिलावते कुर्आन लो. या कोई दुसरी ईबादतमें लज्जत का न आना. तबीयत का गभराना ईसी तरल गुनाहों की तरक रगबत और उस्में लज्जत आना ईस पर काबुं पाने के वीये मुप्तवीइ किसमकी कोशीषे करनेकी ज्जुरत ले. जिक्की कसरत से शयतान का तस्लुत (काबुं) कम लो जता ले. इस तरल घरवालोंके जगते रेडने और पोवीस की गशत से थोरोंका जतरा कम लो जता ले. अगर ईन्सान बार बार दील की तरक तवज्जुल करता रहे और गइलतको दुर करने की कोशीषमें लगा रहे तो शयतानी पउक कमजोर पउ जती ले.

सादात की ज्जुमेदारी :-

अल्लाहतआला ने कीसीको नसब (जानदान) की वज्जसे मकबुल नहीं बनाया. अगर अमल सली लोता ले तो सब कुछ ठीक लोता ले. अगर अमल दुरस्त नहीं ले तो कुछ भी नहीं लो सकता.

लजुरत नुल (अल.) के बेटे किन्आन को पयगंबर का बेटा लोने का कोई इयदा लासिल नहीं लुवा. ईस वीये के उस्का अमल दुरस्त नहीं था. शेभ सअदी (र.अ.) ने वीजा ले. "जब किन्आन की आदत और अमल जराब लुवा तो पयगंबर का बेटा लोने के बापुजुद अल्लाहतआला के यहाँ उस्की ईज्जत और कदर नहीं लो सकी."

कबीला बनानेका मकसद अपने जानदान के लोगों को पहँयान कर उन्के साथ सिलारलेमी और लमदईकी आसान करना ले.

अल्लाहतआला का ईशाद ले के "सबसे बुलंद और बरतर

लोगों के दरम्यान वो ईन्सान है. जइस्ने तकवा ईप्तिथार किया है”.

याहें उसब-नसब के ऐअतिबार से कीसी बी कबीलेसे तअल्लुक रफता डी. या नवमुस्लिम डी.

उजरत मौलाना हुसैन अहमद मदनी (र.अ.) इरमाते है के मैं अपने नाम के साथ सैयद नहीं लीपता. उसकी वजह ये है के नज्द का दारो मदार नसब से नहीं है. अमल से है. अगर कोई नसबकी हैसियतसे आवा दर्वे का नसबवाला है. मगर आमाव भुरे है तो उजरत नुड (अव.) के भेटे की तरह दरबारे पुदावंदी से दुर है. और अगर कोई यमार या बंगी है. मगर वो मुसलमान मुत्तकी है उसकी काम्याबी ऐसी है जैसे उजरत बिलाव (र.दी.) और उजरत सुखेब (र.दी.) की दुई. मेरे आमाव मुझे ईस दावे (ईये पानदानमे डोने) की ईज्जत नहीं देते मुझको शरम आती है.

सादात पर तमाम मुसलमानों की भिदमत गुजरी जरूरी है. न ये के सादात तमाम मुसलमानों को अपना गुलाम समझे और उन्से भिदमत की प्वालीश करे.

“तज्कीरतुल अवलिया” में लीपा है के ऐक भरतबा ईमाम जइर सादिक (र.अ.) बगदाद में ऐक बडे मजमे के सामने इरमाने लगे भाईयो ! तुममें जइस्को कियामत के दीन अल्लाहतआवा बक़ दे. तो मेरी शिक्षाअत करना. लोगोंने तअज्जुब किया और कडा. क्या हम आपकी शिक्षाअत करे ? डालां के आप रसुले अकरम (स.अ.व.) के साडबजाहे (यानी आपकी औवाहमे से) है. तो इरमाने लगे के यहाँ थीज मेरे लीये बेयेनी का संबल है. उम्मत के तमाम मुसलमान मेरे नानाज्जिन उजरत मुहुंमद (स.अ.व.) के मेडमान है. और मैं उन्के पानदान का बय्या हुं. और कायदा है के मेडमान की भिदमत गुजरी पानदान के छोटों पर जरूरी डोती है. अगरवो कोताली करे तो पानदानवाले बडोत नाराज डोते है. और छोटों को तन्बीह करते है.

अगर कियामत के मेदानमें रसुलेअकरम (स.अ.व.) ने मेरे कंधे पर डाय रफकर मुझसे सवाल किया के जइइर तुमने मेरे मडेमानोंकी क्या भिदमत की ? मै शरम की वजहसे मुंड न उठा सकुंगा.

ये ईशाद उजरत जअकर (र.दी.) का सही है और सादात के वीये ईब्रतका इरमान है. मगर अइसोस डम गइलतमें मुब्तवा है. मैने जब से ये ईशाद देखा है. बडोत इिकरमंद रेडता हुं. - अल्लाहतआवा मद्द इरमाये.

सादात का सबसे जयादा और अव्वल इर्ज है के आका अे नामदार (स.अ.व.) की वायी हुई शरीअत को अपने अमलसे जीदा करे. और आप (स.अ.व.) की सुन्नतो पर बडोत मजबुतीसे यवे और डर उम्मीती का याडे वो कैसा डी गरीब और जलील और छोटी जत का डो ओडतिराम करे और उस्की पिदमत गुजरी करे वो डमारे आका (स.अ.व.) का मेडमान और बुलाया हुवा मेडमान है.

डमें नसब के इअ्र का मौका सिई उस वकत डोगा जबके अल्लाहतआवा की मगइरत और डमारे आका और नानाजन उजरत मुडंमद रसुबुल्लाड (स.अ.व.) की जुशनुदी डसिल डो जाये. उससे पडेवे ईस पर इअ्र करना जडावत और नादानी है.

(मकतुबात-उजरत हुसैन अडमद मदनी (र.अ.)

अपनी तारीफ सुनकर :

तारीफ के अल्लाज सुन कर अगर नइस कुलने लगे तो ये बुरी अलामत है. लेकीन आरीफबिल्लाड की जब तारीफ छोती है तो वो डंसता है के अल्लाड की तारीफ डो रली है.

वो जस्को जस तरड याडे वैसा बना दे. वो तो ईस ईन्आम देनेवाले को देपता है. وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

कुइइरे मकका जब डुजुर (स.अ.व.) के बारेमें बद्गोई के अशआर पढते थे तो उजरत डस्सान बिन साबित (र.दी.) जवाब देते थे और डुजुर (स.अ.व.) के कमावात बयान इरमाते थे काबिले तारीफ अशआर आप जुदामी सुनते थे.

जस्के नजदीक तारीफ और बद्गोई का सुनना बराबर डो जाये तो उस्के सामने तारीफी कलिमात केडने में कोई डरज नडी. मगर ओडतियात बेडतर है.

(अल इरकान-५/१८७८/३८)

हजरत थानवी (र.अ.) के ईशादात :

मामलात को लोगों ने दीन से अलग ही समझ लीया है. यहाँ तक के उल्मा तस्नीफ़ करते है. और वाअज़ केलेते है. और लोगों को दीन की तावीम करते है. मगर कहीं मामलात का जिक्र ही नहीं आता.

मुहती मेहमुदुल हक साहब (मौलाना अबराज़ल हक साहब दरदोई के वावीद माज्द) दरदोई से आये थे. केलेने लगे मैं आन्कल कितार्ने देभता हूँ. उन्मे नमाज़, रोज़ा के मसाईल तो है. मगर मामलात की सफ़ाई का कहीं जिक्र नहीं, गौर करनेसे उसकी वजह मेरी समझमें ये आयी है के ज़न्के मामलात भुद साफ़ हो वो दूसरों को भी तावीम करने की हिम्मत कर सकते है. आन्कल के लोग ज़े दूसरों को उसकी तावीम नही करते. तो ईससे पता चलता है के उन्के भुद के मामलात भी साफ़ नहीं है और आप ज़े दूसरों को ईसकी सप्त खिदायत करते है उसकी साफ़ वजह यही है के आप के मामलात बिलकुल साफ़ है.

इरमाया मैं रेल्वे स्टेशन पर रेल के ईन्तिज़ार में था. ईधर मगरिब का वक़्त था. उधर रेल की आमद. अक़ कारीसाहब भी वहाँ थे. उन्को ईमाम बनाया. उन्होंने लंबी किराअत शुरु करदी. अैसे मौके पर ईस कदर देर करना ठीक नहीं है. मै तो सफ़रमें अक़सर सुब्ह के वक़्त नमाज़ में कुल अउज़ु बिरब्बील इलक़. और कुल अउज़ु बिरब्बीनास से ज़यादा नही पढता हूँ. (दुजुर (स.अ.व.) से भी सफ़रमें सुरअेनास पढना साबित है.)

अलफ़ुरकान-१/१८८१/१६)

इरमाया ज़स्में दो यीज़ें हो वो मुंजे बहोत मेहबुब है. तकवा और इलम (समजदारी) सहाबा (रदी.) में ये दो यीज़ें थी ज़न्से वो कामिल और मुकम्मल थे. वरना सबके सब पढे लीपे भी नहीं थे.

इरमाया ज़िकुल्लाहमें ज़ लगे न लगे निभाये ज़ये. ज़िकुल्लाह बडी अज्जब यीज़ है. उसकी कदर मरते वक़्त होगी. ज़न्के कुलुब में ज़िक़ रय ज़ता है. उन्का ખાત્મા बहोत पाक़ साफ़ सुथरा होता है.

इरमाया आदमी थोडासा लगाव अल्लाहतआवा के साथ पैदा करले हीरे देपे क्या क्या रलमतें होती है. हज़रत हाज्ज ईम्दादुल्लाह (र.अ.) इरमाते थे के अच्छे अमल की लंमेशा तौफ़ीक़ होना उसकी क़बुवीयत

की अलामत है. बाऊ वक्त आमावे साविडामें ऐसी कशीश लोती है के आदमी उसको छोड नहीं सकता. (अलफुरकान-३/१८८१/२८)

इरमाया : मेरा दो शप्सो से दीव नहीं मीवता. अक मुतकब्बिरसे और दुसरा यावाक से.

इरमाया : छरत गंगोली (२.अ.) के पास बिदअतीयों के बलोट पत आये के मुनाजरा कर लीजये. मगर ध्यान नहीं दीया. क्युं के उस्मे जे मद्दासिद (पराबीयां) पेदा लोती है वो बडी सप्त है.

(अल फुरकान-५-७८-३८)

पराब दिमाग :-

इरमाया :- आज कल लोगोंने बल्के मुसलमानों ने मजलबके साथ जाने जैसा मामला कर रखा है. के अपने घर का पुलाव - जर्द भी अफ्री मालुम नहीं होता. और दुसरों के यहाँ की दाव भी पसंद आ जाती है. मालुम होता है के मजलब से उकता गये है. और मजलब के साथ “हर नई चीज लज्जत वाली होती है.” का सुलुक करना यादते है. इस्लामी अलकाम इस्लामी तेडजीब. इस्लामी अप्लाक याहे किन्ने ही आवा और अफजल क्युं न हो. पसंद नहीं आते. दिमाग बिलकुल पराब होते जा रहे है. नेकी और बदी का इर्क उठता जा रहा है. काश ! मुसलमान डॉश में आये और इस्लाम जैसी अजीमुश्शान नेअमत की कहर पहँचाने.

(मजाहिरे उलम-५/१८८७/३४)

छरत मौलाना महंमद अहमद प्रतापगढी (२.अ.) के ईर्शादात :-

* इरमाया : जिन्को अजकार और नवाक़िल की कसरत से अकसर लोगों के दीवोंमें गुज़र (धमंड) पैदा होता है. झीर वो भी अपने को बुजुर्ग समजने लगते है. और दुसरे लोग भी उन्हे बुजुर्ग समजने लगते है. और सिर्फ़ इराज, वाज्जबात और सुन्नतों की अदायगीसे गुज़र पैदा नहीं होता. बल्के आदमी अपने को कुछ नहीं समजता. इमाम इब्ने तयमीयह और बाऊ दुसरे बुजुर्गोंने ये बात लीभी है. और मुशाहीदा भी है. बडे लोगों की खंढगी के बलोट से पेडवुं राऊ में रेडते है. और बलोट दीनों के बाद उन्के कुछ करीबी दोस्तों के जरीये वो राऊ पुवता है.

* सादीबे डिदाया (इकड ही मशहुर किताब के मुसन्नीफ़) कथ साव

तक छिदाया की तस्नीक में मशगुल रहे. और जब तक तस्नीक करते रहे रोऊ से रहते थे. मगर कीसी पर ज़लीर नहीं होने दीया. रोजाना घरसे जाना आता था और इकीरोंको तकसीम करते थे. घरवालों को ठस्का ठल्म नहींथा. अखोत दीनों के आद इीर ठन्के दोस्तों के जरीये उन्का ये राऊ भुला.

* शाही-बियाह वगेरह की तकरीबों में अपना जाती मिज्ज ये छे के शिकत न की जये. अजरत मौलाना इजलुर्रहमान गंज मुरादाबादी (र.अ.) इरमाते ये अगर दअवतमें मक़ासिद (बुराईयां) न छोतो जना शर्त छे जाना शर्त नहीं”

* उल्माओं को याहीयें के वो अपने को ज़लील न करे. मौलाना थानवी (र.अ.) ने कीसी दुनियादार से सखी इरमाया था के जस तरह जाने पीने को तुम्हे भीलता छे मौल्वी कोभी भीलता छे. मगर ठल्मे दीन जे मौल्वी को भीला छे. उससे तुम्हे अल्वाहतआवाने मेइरूम फ़ीया छे. ठस वीये जे दौलत मौल्वी के पास छे वो तुम्हारे पास नहीं छे.

* अक साहबने मजलीस में ठमान पर आत्मे की दुआकी दरआस्त की. उस पर इरमाया. सारी कोशीषों का नतीजा, भुलासा ठमान पर आत्मा छे. अजरत सुक़यान सौरी (र.अ.) उसके वीये बेहद रोते थे. कीसीने पुछा के आप गुनाहोंकी वजहसे ठत्ना रोते छे ? इरमाया नहीं. बुरे आत्मे के भौइसे रोता छुं इीर अडे दई बरे अंदाजमें अजरत मौलानाने ये आयत तिलावत की

فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَنْتَ وَلِيّ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ تَوَفَّنِي مُسْلِمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ (ب 13 56)

* अजरत शेअ अ. कादीर ज़लानी (र.अ.) इरमाया करते ये अय आलिम ! अपने को ज़खिल से बेहतर न समज ! कयुं के नहीं मालुम के “भुदा के यहाँ कीसका दर्ज कया छे” ?

अल्वाह के नेक अंदे मासुम (बेगुनाह) तो नहीं छोते मगर मइकुल छोते छे. अल्वाहतआवा का ठशाद छे. मेरे अंदो पर तेरा (शयतान का) जेर नहीं यलेगा.

मगर मेइकुल होने के आ वुजुह बे भौइ नहीं छोते अल्के अर वकत अल्वाह के सामने रोते गीउगीउाते रहते छे.

(अल इरकान-४/१८७८/३४)

* મીઠ્ઠીકા ઢેલાં ઓર સોના દોનો જબ તક કીસી કી નજરમેં બરાબર નહીં હો જાતે ઉસ વકત તક અલ્લાહ તઆલા કી મોહબ્બત ઉસે નહીં મીલ સકતી.

* આજ કલ લોગ અવામ કે મિજાઝ કે મુતાબિક ઉન્કો ખુશ કરને કે લીયે તકરીર કરતે હૈ એસા કરના હકીકતમેં ખયાનત હૈ. અસલ મકસદ હિદાયત કા નફા ઓર અલ્લાહ તઆલા કી રઝામંદી હોના ચાહીયે.

(૧૯૨૫) وَتَكْفُرُ الصَّابِرِينَ وَ جુમ્લેમેં કિત્ની લઝઝત હૈ. અલ્લાહ તઆલા બંદે કી તકલીફ કે મોકે પર ફરમાતે હૈ કે તકલીફ નહીં હૈ બલકે બશારત કા ઝરીયા હૈ. (અલ ફુરકાન-૬/૧૯૭૮/૩૯)

હઝરત મૌલાના અ.ગની સા.ફુલપુરી (ર.અ.) કે ઈશાદાત :-

* તન્હાઈમેં ઈસ નિચ્ચતસે બેઠના ચાહીએ કે મેં બુરા હું. અલ્લાહકી મખ્લુક મેરી બુરાઈસે મહેકુઝ રહેગી. અપને કો અચ્છા સમઝકર ઓર મખ્લુકકો બુરા સમઝકર અલગ રહેના પસંદ ન કરે. યે તો સખ્ત ખતરનાક બીમારી હૈ. દીન નહીં હૈ. ક્યું કે અપને કો અચ્છા સમઝના તમામ નેકીયોં પર પાની ફેર દેતા હૈ. એસા સખ્શ મખ્લુકસે તો અલગ હુવા લેકીન અપને નફસ સે અલગ ન હુવા. ^{શિખરે}

* હઝરત ગંગોહી (ર.અ.) કી તહકીક નમાઝે ઈશરાક કે બારેમેં યે હૈ કે જબ આફતાબ કી ટીકીયાં યાની ઉસ્કા પુરા દાયરા આસ્માન મેં નજર આ જાયે તો નમાઝે ઈશરાક કા વકત હો ગયા.

* નમાઝે ઈશરાકકે બાદ ફૌરન ચાશત કા વકત શુરૂ હો જાતા હૈ. ઈશરાકકે બાદ ચાશત કી નમાઝ પઢ સકતે હૈ.

(હઝરત શાહ અ.ગની - ફુલપુરી (ર.અ.)-પેજ-૪૧)

હઝરત મૌલાના અબરાહીલ હક સાહબ (દા.બ) કે ઈશાદાત :-

(૧) દીન કી બાર્તે સુનને કે બાદ અગર યાદ ન રેહ સકે તો ભી ઉન્કા નફા જરૂર હોતા હૈ. જીસ તરહ હમ દોહફતા પહેલે ખાઈ હુઈ ગીઝાકો ભુલ જાતે હૈ. યાદ નહીં રહેતા કયા ખાયા થા ? મગર ઉસ્કી તાકત હમારે બદનમેં મેહકુઝ હોતી હૈ. ઈસી તરહ દીન કી કિતાબેં દેખના. ઓર બુઝુર્ગોં કા વાઅઝ સુનના. હર હાલતમેં મુફીદ હૈ. ચાહે યાદ રહે યા ભુલ જાયે.

उन्के असरात इहमें बाकी रेल जाते है. जन्की ताकत से आमावे सालेडा की छिम्मत और तौड़ीक छोती रेलती है.

(मजलीसे अबरार-८६)

(२) कीसी काममें जल्दी न करो वरना नदामत (पछतावा) होगी. हर काममें छजरत थानवी (२.अ.) का ये गुर (नुकता) याद रखे. जे सिई दौ लकड़ों में है. (१) तअम्मुल (छुकम बज लाना) (२) तलम्मुल (नरमी) यानी हर काम को सोये और तलम्मुल से काम ले.

(मजलीसे अबरार-८०)

(३) छजरत थानवी (२.अ.) ने इरमाया : धरोंमें मुर्दों की इह आने का ज्वाल गलत है. क्युं के जे नेक है वो तो दुनियामें आना नहीं याखते. और जे बढ है उन्हे ईज्जत नहीं मील सकती.

(४) अल्लाहतआला तक पलुंयने का रास्ता यही है के भुरे अप्लाक जाते रहे. अरखे अप्लाक पैदा हो जाये. गुनाह छुट जाये, ईताअत की तौड़ीक हो जाये, गकलत दूर हो जाये और अल्लाहतआला का ध्यान पैदा हो जाये.

(५) इरमाया - लोग अडे शौकसे बयअत होने के लीये आते है और जब ईस्वाह शुइ छोती है तो गलराते है. ईसी वास्ते केडता हुं के बयअतमें तवककुइ (ठडेरना) मस्वेडत है. उस वकत आदमी शौकमें आ जाता है. मगर जब ईम्तिडान लीया जाता है तो बडोत से भाग निकलते है.

(६) कोई भी पडेलवान अपनी तमाम मुक्वी गिजाओं आते रहे. सिई साल में ओक बार संपीया (जेहर) आ कर दैपे चारपाईमें पड जायेंगे. संपीयाका जेहर तो तमाम साल की मुक्वी गिजाओं पर पानी डेर देगा और कमजोरी पैदा करेगा. और अगर जयादा मिक्दार आवे तो मौत भी हो सकती है. तो क्या ? गुनाहों का जेहर इह की नुरानीयत और आमावे सालेडा की ताकत पर असर न करेगा ? ये कीस कहर धोका की बात है.

(७) ताउन (प्लेग) के जमानेमें हर शप्स युले से उरता है के ताउन के जरासीम हमारे घरमें न आ जाये. और बढअम्बली और गुनाहोंके युंहे

હમારે ઘરોંમેં કિત્નેહી હો ફિકર નહીં. સાપ ઘરમેં આ જાયે. સબ પરેશાન ઓર ઘરમેં શરીઅત કે ખિલાફ રેહન સેહન ઓર જાનદારોં કી તસ્વીરે, રેડીયો કે ગાને, ટેલીવિઝન કા ઘરેલું સિનેમા આ જાયે તો કોઈ ફિકર કી બાત નહીં. હર અમલમેં ઈલ્મે સહી કી જરૂરત હે. બે ખબરીમેં ઝેહર ખાને સે નુકશાન તો યકીનન પહુંચેગા.

હઝરત ઉમર (ર.દી.) એક ઘરમેં તશરીફ લે ગયે વહાં તસ્વીરે જાનદાર કી થી. ફોરન વાપસ આ ગયે.

રોઝી કી બરકત કે લીયે વઝીકે પઢને કે લીયે તૈયાર હે. મગર ગુનાહ છોડને કે લીયે તૈયાર નહીં.

(૮) અલ્લામા અબ્દુલ વહહાબ શઅરાની (ર.અ.) ને લીખા હે કે મેરે ઉપર જો ઈનામે ઈલાહીયહ હે. ઉન્મેસે એક યે ભી હે કે મુઝ પર એક દુશ્મન મુસલ્લત હે. જો મુંઝે બોહતાન ઓર ગીબતસે તકલીફ પહુંચાયા કરતા હે. ઓર મુઝે બેકરારી કે તોર પર યે સુન્નતે અંબિયા (અ.લ.) હાસિલ હો ગઈ.

(૯) જાઈઝ અમલ અગર ગુનાહ કા સબબ હો જાયે તો જાઈઝ ભી ના જાઈઝ હો જાતા હે. જીસ તરહ કિંમતી કપડા જૈસા કે ૨૦૦/- રૂ. કા પેહનના જાઈઝ હે. મગર ઉસ્કે પહેનનેસે અગર દીલમેં બડાઈ આ જાયે તો નાજાઈઝ ઓર હરામ હોગા. કયું કે યે કપડા (ઘમંડ) ઉજબ ઓર તકબ્બુરી કા સબબ હુવા.

(હઝરત મૌલાના અબ્રારહલહક સાહબ (દા.બ.)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا - عَلٰى حَبِيْبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

(१०) अल्वाहवालों की छुंङगी

ईमाम अबु युसुफ़ (र.अ.) की तालीजे ईल्मी :

अतीब बगदादीने तारीजे बगदादमें काळ अबुयुसुफ़ (र.अ.) के बारेमें लीजा है अली बीन जअद केडते है के ईमाम युसुफ़ (र.अ.) ने मुंऊको बताया के मेरे बाप ईब्राहीम का ईन्तिकाव डो गया मेरी मा ने मुंऊे अेक, धोबी की दुकान पर रअ दीया. मैं अकसर धोबी को छोडकर ईमाम अबु डनीक़ल (र.अ.) के दर्समें यवाजता और वहां डदीस का ईल्म डासिल करता. मेरी मा को मालुम डोता तो वो आती और मेरा डाय पकड कर दो बारा धोबी के यहां पडुंया देती. जब अैसा क़िस्सा बार बार डोने लगा तो मेरी मा ने ईमाम अबु डनीक़ल (र.अ.) से कडा ईस वडके का बिगाड सिर्फ़ तुम डो. ये अेक यतीम वडका है. उस्के पास कुछ नडीं. मैं यरपा कांत कर उस्को पिलाती डुं. और यालतीडुं के वो भी कुछ कमाने लगे. ईमाम अबुडनीक़ल (र.अ.) ने मेरी मा से कडा वो पिस्ता का डालुदा पाने वावा ईल्म डासिल कर रडा है. मेरी मा ये केडती डुई वापस यली गई. मालुम डोता है डुढापे की वजहसे तुमडारी अकल जती रडी है.

ईमाम अबु युसुफ़ (र.अ.) केडते है के ईमाम अबु डनीक़ल (र.अ.) ने मेरी माली मदद की और मैं उन्के डलकअे दर्स में बराबर ईल्म डासिल करता रडा. यहां तक के ईस काबिल डो गया के अब्बासी डुकुमतने मुंऊे काळी के ओडदे पर मुकरर किया. अब मैं अलीक़ा डारुन रशीद की मजलीसमें डेठने लगा. मैं उन्के दस्तरख्वान पर पाना जाता. अेक रोज़ दस्तरख्वान पर डारुन रशीद के लीये डालुदा आया. डारुन रशीदने कडा ईस्को पाओ. मैं ने पुछा अभीडुव मुअमेनीन ये क्या है ? डारुन रशीदने कडा ये पीस्ताका डालुदा है. ये सुनकर मुंऊको डंसी आ गई पुछा तुम कयुं डसते डो? डीर मैंने उपर का क़िस्सा शुडसे आपिर तक का सुनाया डारुन रशीद ये सुनकर अयंभेमें पड गये डीर कडा ईल्म आदमी को डुवंद करता है. और दीन दुनिया में उस्को नक़ा देता है. अल्वाड तआवा अबु डनीक़ल (र.अ.) पर रडम करे वो अपनी अकल की आप से वो यीळ

द्वेष लेते थे जिसको वो अपने सर की आंख से नहीं देख सकते थे.

ईन्सान के खड़े पर अल्लाहतआला ने दो जुबसुरत आर्षों दी है. जन्से वो तमाम चीजों को देखता है. मगर इन आर्षों से जे कुछ नजर आता है. वो सिर्फ जलीरी चीजें है. गेहराई और अंदरमें देखने के लीये अेक दूसरी आंख की जरूरत है. ये बसीरत या अकल की आंख है. जे शम्स सिर्फ सर की आंख रખता हो उसका देखना जैसा ही है. जैसा के कोई मशीन के उपर का ढक्कन देखे. मगर अंदर के पुरजों से बेखबर रहे. जैसा देखना बराजे नाम देखना है.

बुढीया की जलीरी आंख नवजवान का मुस्तकबील सिर्फ धोबी के काममें बनना देखती थी. मगर इसी नवजवान को जब अेक अकल की आंखवालेने देखा तो वो उसको बादशाह के दस्तरख्वान पर बेठा हुआ नजर आया.

(अल रिसाला-४/१८८०/३८)

नाइरमानी से डरना :-

उजरत उमर बिन अ. अजीज (र.अ.) ने अपने खिदायत नामेमें उजरत मन्सुर बिन गालिब (र.अ.) को ये लुकम दीया के डर डालमें तकवा ईप्तिथार करे क्युं के अल्लाहतआला का तकवा बेहतरीन सामान और ठोस तदबीर और सख्खी ताकत है.

अमीरुल मुअमिनीन उनको लुकम देते है के वो अपने साथियों के लीये “दुश्मन से जयादा अल्लाहतआला की ना इरमानी से डरे” क्युं के गुनाह दुश्मन की तदबीरों से जयादा ईन्सान के लीये ખतरनाक है. और गुनाहों की वजह से वो डम पर गालिब आ जते है. अगर डम और वो दोनों गुनाहों में बराबर हो जये तो वो तअदाह और कुव्वतमें डमसे बढकर साबित होंगे. अपने गुनाहोंसे जयादा कीसी की दुश्मनी से योक्न्ना न हो. जहां तक मुम्कीन हो अपने गुनाहोंसे जयादा कीसी चीज की इिकर न करे.

(उजरत उमर बिन अ. अजीज (र.अ.) का अेक इरमान)

ईमाम शाइई (र.अ.) की नज्मत:-

ईमाम गजाली (र.अ.) ने अडयाउल उलुममें उजरत अबुल इसन शाइई (र.अ.) का वाकैआ नकल करते है के उनहोंने रसुले अकरम

(स.अ.व.) को ज्वाबमें देण कर दरयाइत किया के लुजुर ! एमाम शाक़ि (र.अ.) ने अपनी किताब के शुर्में ये दुरद शरीक़ लीआ है.

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ كُلَّمَا ذَكَرَهُ الدَّاكِرُونَ وَكُلَّمَا غَفَلَ عَنْ ذِكْرِهِ الْعَافُونَ
 “अल्लाहुम्म सल्ली अला मुहंमदीन कुल्लमा ज़करहुं ज़क़रुन वकुल्लमा ग़फ़ल अन ज़क़रे हील गाफ़ीलुन”.

तो उसके अवेजमें आप (स.अ.व.) की तरफ़ से उन्को क्या मीला ?
 लुजुर (स.अ.व.) ने ज्वाब में ईशाद़ि इरमाया. क्यामत के दीन उन्को मैदाने खिसाब में बुलाने की तकलीफ़ नहो दी ज़येगी.

(इयतुन्नबी) (निदाअे शाही-१/१८८३/२३)

बुजुर्गी का सबल :-

बिशरडाइ (र.अ.) इरमाते है के मैंने ज्वाबमें रसुले अकरम (स.अ.व.) की ज़यारत की. आप (स.अ.व.) ने मुंजसे इरमाया के अय बिशर ! क्या तुम जानते हो के तुम्हारे डम ज़माना लोगोंमें अल्लाह तआलाने तुम्हारी ईत्नी ईज्जत कयुं की है? मैंने अर्ज़ किया ज़ नहो. आप (स.अ.व.) ने इरमाया. मेरी सुन्नत की ईत्तिबाअ, नेक लोगों की पिटमत, अपने भाईयों की ज़ेर ज्वाही और मेरे सहाबा और अहले बयत के साथ मोहब्बत की वजह से. यही वो चीज़ें है. ज़न्हो ने तुम्को अबरार के मरतबे पर पहुंचा दीया.

अमल की ईस्तिफ़ामत :-

अक़ बुजुर्ग़ आलिम ज़ेलमें थे. ज़ुम्आ के रोज़ अपनी कुदरत के मुताबिक़ गुस्व करते और अपने कपडे धो लेते और ज़ुम्आ की नमाज के लीये तैयार हो कर ज़ेल जाने के दरवाजे तक ज़ते. वहां पहुंच कर अर्ज़ करते या अल्लाह मेरी कुदरतमें ईत्नाही था. आगे आपके ईज्तिहार मे है. अल्लाह तआला की रहमत से कुछ मुश्कील नही था के उन्की करामत से ज़ेल का दरवाज़ा खुल ज़ता और ये नमाजे ज़ुम्आ अदा करलेते. लेकिन उसने अपनी खिकमत से ईस बुजुर्ग़ को वो मुकामे आली अता इरमाया. ज़स पर ज़जरो करामते कुरबान है. के उन्के अमल की वजह से ज़ेल का दरवाज़ा न खुला. मगर उसके बावुजूद उन्होंने अपने काममें खिम्मत नहो डारी डर ज़ुम्आको मुसलसल यही अमल होता रहा. यही

वो ईस्तिकामत है. जस्को अकाबिरे सुझियाने करामतसे बावातर इरमाया
है. (म.कु.प-प६)

ईमान व यकीन की मजबुती :-

उजरत पीरा ने पीर शेभ अ.कादीर जलानी (र.अ.) ने इरमाया
के उजरत अब्दुल्लाह बीन मुबारक (र.अ.) से लिंकायत ले के अेक दीन
उन्के पास सवाल करने वाला आया. और कुछ पाना मांगा. उस वकत
आपके पास दस अंडोके सिवा कुछ नहीं था. आपने बांटी को लुकम दीया
के सब अंडे सवाल करने वालेको दे दी. बांटी ने नव अंडे दे दीये और अेक
रभ लीया. जब सुरज गुर्ब लोने लगा तो अेक शप्स आया और कडा
ये छाभा ले जाओ. उजरत अब्दुल्लाह बीन मुबारक (र.अ.) ने छाभा
उससे लीया. और अंडे गीने तो नब्बे (८०) निकले. तब आपने बांटीसे
इरमाया तुने सवाल करनेवालेको किन्ने अंडे दीये थे. उसने कडा नव दीये थे
और अेक रभ लीया था के आप उससे रोजा ईकतार कर लेंगे. आपने
इरमाया के तुने लमको दस अंडोका नुकशान करवा दीया.

(निदाअे शाडी-१०/१८८३/४२)

पालीक की इहरत पर हसना :-

अेक बुजुर्ग कुब्जे कमर से जुंके लुअे थे. अेक बादशाह की मुलाकात
के लीये उसके दरबारमें लाज्जर लुअे. कुब्जा आदमी जुंका लुवा लोता है.
उन्की ईस डालत को देखकर बादशाह को लंसी आ गई.

वो बुजुर्ग अडे अल्लाहवाले थे. मामुली शप्स नहीं थे. ईस
लीये इोरन बादशाह को ईस उरकत पर टोक दीया. इरमाया बादशाह
सलामत को लंसी कीस पर आयी, अरतन पर या कुंभार पर ?

मतलब ये बुजुर्ग का ये था के प्याला अगर टेडा बना लोतो
उस्में प्याले का क्या कुसुर ? उस पर लसना गोया कुंभार पर लसना है.
क्युं के सुरतों का बनाने वाला पुदा है. उसने जस्को नैसा यादा बना
दीया. लिडाजा अय बादशाह सलामत आप का मुंजको देभ कर लंसना
दरअसल पालिक पर अेअतिराज करना है. आप उसका अंजम पुद
समज लीजये.

बुजुर्गने बादशाह को ईस पर तंभील इरमाई के बादशाह को

जीदा के मानीन्द् है. और जिक न करनेवाला. मुट्टे के मानीन्द् है. अगर जिक से गड़वत हो तो झीर वो मौत है. ईस सिलसिलेमें अक तारीफी वाकेआ ली है.

उट्टुसुस ७७ ईसाईयों ने इत्ला किया और उस पर उन्का कब्जा हुआ तो उन्होंने वहां बहोतसी कब्रें ट्रेपी जून पर उन्की उम्मे लीपी दुई थी. कीसी की छे मलीना कीसी की अक साल. और कीसी की तीन मलीना तो ये उन्की समजमें नलीं आया. ईस लीये के उन्की कब्रें बडी थी और उम्मे बहोत कम, तो उन्होंने उसके बारेमें वहां के लोगों से दरयाइत किया. तो मालुम हुआ के तमाम उम्मे उन्होंने भेल तमाशेमें गुजर दी और आभीरमें तीन मलीने अल्लाहके जिक और उस्कीयाद में गुजरे. तो हमारे नजदीक जीदा वो है जे अल्लाहतआला के जिक के साथ हो. बडी कब्रवाला अल्लाहके जिकसे गाड़िल था. आभिरमें अक साल अल्लाह का जिक किया ईस लीये बताया गया के वो अक साल जीदा रहा.

(मोलाना लुसैन अडमदमदनी (२.अ.)

मिसाली सजर और माडी :-

अली ईब्ने लुसैन (२दी.) की अक बांटी आप को चुंजु करा रही थी. अचानक पानी का भरतन हाथ से छुटकर उजरत अली बीन लुसैन (२दी.)के उपर गीरा. कपडे भीग गये. बांटी को अत्रा हुआ तो उसने झोरन ये आयत पढी (१६३) وَالْكَاطِمِينَ الْفَيْظِ

ये सुनते ही उजरत का गुस्सा ठंडा हो गया. उसके बाद बांटीने दूसरी आयत पढी (१६३) وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ

तो इरमाया मैंने तुंजे भी दीवसे माफ़ कर दीया. बांटी भी होशियार थी उसने उस्का तीसरा जुम्बा सुनाया. (१६३) وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ

(जुस्मे ओडसान और नेक सुलुक करने की डिहायत है) उजरतने ये सुनकर इरमाया मैंने तुंजे आज्ञा कर दीया. (म.कु.२/१८८)(इल्लुल मआनी)

तकवा की रोशन मिसाल :-

उजरत अबु बक सिद्दीक (२दी.) ७७ पलीका हुआ तो उन्की तिज्जरत बंद हो गई. और बयतुलमालसे उन्के लीये २५००/- दीरडम सालाना मुकरर कीये गये. ईसी पर आप का गुजरा था. अक दीन

अहलीयाने कडा के मीठी यीज्जानेको छु यादता छे. इरमाया के बयतुलमाव से भीवने वाले वजीहा में से थोडा थोडा बया कर कीसी दीन मीठी यीज्ज पकालेना. युनांये बीवीने औसा ली किया. और थंढ रोज के बाद मीठी यीज्ज पकाकर सामने रभ दी. उजरत अबुबक (रदी.) ने दरयाइत इरमाया के रोजाना तुमने किन्ना बयाया था ? उस पर बीवी ने कोई भास मिकदार बयान की तो उन्हीं ने बयतुल माव को लीभ लेज के मेरे वजीहे से/ईत्नी मिकदार कम कर दी जये. क्युं के बगैर मीठा भाये ली छंढगी असर हो सकती छे. (कन्जुल उम्माल-६/३१२)

शरारत :-

उजरत शेभ अबुसईद (र.अ.) रास्ते से जारहे थे. कीसी बेवकुइ ने पीछे से आकर कंधे पर लाथ मारा. आपने मुंड डेर कर देणा और टोका.

उस्ने शेभ से कडा मुंजे क्युं टोका ? डावां के आप इरमाते छे के पैर और शर अल्लाहतआवा की तरफ से पछुंयता छे. शेभ ने इरमाया छकीकतमें बात तो तुम्हारी सखी छे. लेकीन में ये देभरछा था के अल्लाहतआवाने कीस बदबपतको ईस काम पर लगाया. और शर को अमलमें लाने का जरीया कीसको बनाया छे.

(इवाईद-३८०) (मजाहिरइल उलुम-७/२०००/३६)

गलत ईस्ला देने से ईन्कार :

अल्लामा ईब्ने शीरीन (र.अ.) इरमाते छे के डम अबु उबैदड की मजलीस में बेठे थे उन्के सामने अेक अंगेठी में आग जल रही थी. अेक आदमी आपके पास आया और उस्ने बिस्तर पर बेठकर बडी राजदारी से कोई बात कही (जे डम न सुन सके) तो अबुं उबैदडने उस आदमीसे कडा.

तुम मेरे लीये अपनी उंगली आगमें डाल दो. तो वो आदमी बोला सुब्हानल्लाह ! क्या आप मुजे लुकम दे रहे छे के मैं आपकी वजह से अपनी उंगली आगमें जला दूं ? तो अबुं उबैदड ने कडा. तुम मेरी पातीर अपनी अेक उंगली ईस दुन्यवी आगमें डालनेको तैयार नहो हो और मुंजसे औसी बात केड रहे हो जस्की वजह से मैं तुम्हारी पातीर अपना पुरा बदन दौजपकी आगमें जेक दूं. अल्लामा ईब्ने शीरीन

(२.अ.) केडते डे के डमे ये गुमान लुवा उस्ने अबुं उबैदड से कीसी गलत मामलेमें ईस्वा करने के लीये कडा लोगा.

(डकीमाना अकवाल-१००)

अल्लाहतआला बंदो को आजमाते है :

अक आलिकके अक दोस्त थे. जे कीसी मुश्कील में पड गये. तो उन्हीं ने अपने दोस्त को लीया.

अल्लाह तआला अपने बंदोको धंस लीये आजमाते है ताके वो उसके सामने आच्छी करे और मद्दतलब करे. और उसकी ही लुधु नेअमत का शुक्र अदा करे. और मुसीबतमें सभ्र करे. क्युं के लंमेशा की नेअमत और आक्षिपत धंन्सान को मगडर और धंतरानेवाला बना देती है. यहां तक के वो अपने उपर नाज करने लगता है. और अपने रबके जिंक से गाक्षि लो जाता है.

अल्लाह की जत से बंदा लो जाये अगर गाक्षि

सरऊनीष से बयने की कोशीष लोती है वा डसिल

शुक्र गर करता रले नेअमत को डसिल दवाम

नाशुकी करनेवालौं का धंभ्रतनाक है अंजाम.

(डकीमाना अकवाल-१२६)

हाजुर जवाब :

मौलाना सईद अडमदभां सुलतान पुरी जभीयते उल्माअे हिंद के आर्गेनार्डजर थे. लोग उन्हे मोडब्बत में “दादा” कडा करते थे. २० जन्नु. १८८८ को अपने वतन सुलतानपुरमें उन्का धंन्तिकाव लुवा. उन्की उम्र ७० सालकी थी.

वो निडायत डाजुर जवाब थे. अक बार का डिस्सा है वो मस्जिदे अब्दुन्नबी (नईदिलली) में अक मजलीस में भेठे लुअे थे. धंन्ने में अक बुलंद कामत उमदा विबास आदमी आ कर सामने पडे लो गये. उन्हींने तेज वेडजे में कडा के आपके द्दतर के कारकुन निडायत बद्दतमीज डे. वो डम जैसे लोर्गोंका अडतिराम नर्ही करते उसके बाद जे बातथीत लुधु वो ये थी.

मौलाना सईद अडमद : आप कौन डे.?

आदमी : मुझको आप नहीं जानते मैं पंजाबका
रेलने वाला हूँ.

मौलाना सईद अहमद : ओ, नहीं अनता इसी लीये तो कुछ रखा^{हा}
हूँ.

आदमी : मैं इस जमाने का नबी हूँ.

मौलाना सईद अहमद : अगर तुम नबी हो तो मैं तुम्हारा पुत्र हूँ
तुमको कुछ देता हूँ के तुम औरन यहाँ से
निकल जाओ.

मौके के खिलाज से ये बेशक बेहतरीन जवाब था. बाज मौके पर
ईल्मी मन्तीकी जवाब जयादा शायदा मंद होता है. मगर बाज मौके ऐसे
है जहाँ जवाब का वो अंदाज जयादा कार आमद है. उसकी अक मिसाल
उपर की बातचीत में नजर आती है.

इसी को आम जमान में छाजर जवाब कहते है. छाजर जवाबी
अक आला ईन्सानी सवालीयत है. लेकिन ईस्तिमावके अतिगार से
ईस्की हो अलग अलग क्रिमे है.

अक ये के ईस पुदादाद सवालीयत को बातिल के तोडने के लीये
ईस्तिमाव कीया जाये. उसकी अक मिसाल उपरका वाक्या है.

दूसरी सुरत ये है के आदमी ईस सवालीयत को लोगों का मजाक
उडाने के लीये ईस्तिमाव करे.

ईस्का पलेला ईस्तिमाव बेशक अरफा है. और उस्का दूसरा
ईस्तिमाव बेशक बुरा है. (हीने ईन्सानियत-१८६)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا - عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

(११) ना इस्मानों की दास्तान

ईब्ने सबा का झिन्ना:-

ईब्ने सबा के झिन्नोंने ईस्लामी तारीफको शायद सबसे जयादा नुकशान पहुँचाया है. वो यमन के शहर "सन्आ" का रहनेवाला था. वो अेक यहूदी था. उस्का पुरा नाम अब्दुल्लाह बीन सबा उई "ईब्नेसवदा" था. वो उजरत उस्मान (रही.) (तीसरे पलीफ़ा) के जमानेमें था. उस्ने ये नजरिया (उसुल) निकाला के उर परगंबर का अेक वसी (वसीयत पर अमल करनेवाला) होता है. जे उन्केबाद उन्का पलीफ़ा बनता है. मुहंमद (स.अ.व.) के वसी अली ईब्ने अबी तालीब (र.अ.) है. जैसे उजरत मुहंमद (स.अ.व.) फ़ातिमुल अंबिया है. ईसी तरह उजरत अली (रही.) फ़ातिमुल अवसिया है. उस्का केहना था के मुहंमद (स.अ.व.) की वफ़ात के बाद लोगों ने अली (रही.) के सिवा दुसरों को पलीफ़ा बनाकर सफ़ती की है. अब सब को थालीये के मौजूदा पलीफ़ा (उस्मान (रही.) को कत्व करे या मअजुल (बरतरफ़) कर दे और उन्की जग़ा अली (रही.) को पलीफ़ा बनाये.

"सन्आ" में ईस झिन्नेको इेवाने का जयादा मौका नहीं था. युनांचे वो सन्आ को छोडकर मदीना आ गया. यहाँ के डालात भी उस्के मुवाफ़िक नहीं थे. उस्के बाद वो बसरा गया. फ़ीर कुफ़ा और द्मिशक पहुँचा. बेकीन उर जग़ा के डालात उस्को अपने फ़िलाफ़ नजर आये. आफ़िरमें वो मिसर पहुँचा उस वक़्त अब्दुल्लाह बीन सअद ईब्ने अबीसिरल भीसर के गर्वनर थे. अब्दुल्लाह ईब्ने सअद की जाऊ बातोंसे यहाँ के लोगों को कुछ शिकायतें थी. ईन्ही शिकायतोंने ईब्नेसबा को मिसरमें काम करनेका मौका दे दीया उस्ने लोगों के जज्बात को उभारकर भीसरमें अेक आम इसाद भरपा कर दीया ज़स्का आफ़री नतीजा उजरते उस्मान (रही.) को कत्व करना था.

डाकिमों के फ़िलाफ़ अेज्जेशन (आंदोलन) की लडाई का काम यवाना और सियासी शिकायतों को बयान करके अवाम को लडकाना. ये तमाम काम सरासर ईब्ने सबाकी सुन्नत है. ये सुन्नत आज भी

मुसलमानोंमें पुरे जेर शोरसे जरी है. मौजूदा दौर में जून मुस्लिम रेडनुमाओंने उमुमी शोहरत हासिल की वो तकरीबन सबके सब वोली है जे एंभने सभा के एस मुज्दरब नुस्जे को एंस्तिमाव करके शोहरत और मकबुलीयत के मुकाम तक पहुंचे है. (अल रिसाला-४/१८८८/२३)

गाइलों का डीरदार :-

मकका मुकर्मल में नजर बीन हारिस नामसे अक मुशरीक बडा ताज्जर था. वो तिज्जरत के वीये मुप्तवीक मुल्कों का सइर करता था. वो मुल्के इरससे कीस्सा वगेरह के तारीफी किस्से भरीह कर लाया. और मकका के मुशरीकीन से कला के मुहंमद (स.अ.व.) तुम को कौमेआह और कौमे समुदके किस्से सुनाते है. मैं तुम्हे उन्से बेहतर इस्तम और अस्कन्द्यार और दुसरे इरसके बाहशाहों के किस्से सुनाता हूं. ये लोग उस्के किस्से शोक और रगभत से सुनने लगे. कयुं के उन्में कोए तावीम तो थी नही. जस पर अभल करने की मेहनत करनी पडे. सिई लजीज कलानीया थी. उस्की वज्जहसे वो मुशरीकीन जे पड़ेले कुर्आनमज्जद सुनने की रगभत रभते थे. उन्को कुर्आन न सुनने का बहाना भील गया.

डीर वोली ताज्जर बाहर से अक गानेवाली बाही भरीह कर लाया और उस्के जरीये लोगों को कुर्आनमज्जद सुननेसे रोकने के वीये सुरत निकाली के जे लोग कुर्आन सुनने का एंराहा करे. अपनी एंस बाही से उन्को गाना सुनवाता था. और केहताथा के मुहंमद (स.अ.व.) तुमको कुर्आन सुना कर केहते है. नमाज पढो, रोजा रभो, अपनी जहनहो, जस्मे तकवीक ही तकवीक है. आवो तुम ये गाना सुनो और भुशीयां मनाओ. एंस तरह हसते करके लोगों को गुमराह करता था.

बेहुदा किस्से कलानीयां और गाना बजाना जे एंन्सान को अल्वाहकी याह से गाइल करहे. लहवव हदीस है. (यानी जे अल्वाह की एंबाहत से गाइल करहे) सही हदीसों में गाने बजाने को नाज्जिज और हराम इरमाया है.

एंस वकत पुरी दुनिया का नकशा ये बना हुवा है. के आम मुसलमानों के घरों में टी.वी. और टेप के जरीये, बेहुदा किस्से, औरतों का नंगापन और एंशकी मंजर देपना और औरतों के गाने सुनना आम

हो गया है. और बढ़ता ही जा रहा है. डालां के छुल्लुर (स.अ.व.) ने
 धन कार्मोंसे मना किया है. जब जैसे गुनाह आम हो जायेंगे तो जैसे
 गुनाह करनेवालों पर अल्लाह का अजाब नाज़ील होगा. मुसलमान
 जैसे डालातसे जबरदार रहे और धन खतरनाक गुनाहोंसे बचने का
 पुरा खेडतिमांम करे. (म. कु. ७/१८)

आजकल शहर के लोग. अपनी कुरसद के अवकात को सिनेमा,
 टी.वी. देखनेमें गुजरते हैं. डालांके उन्को अपनी कुरसद के अवकात शहर
 के बाहर कितरी (कुदरती) माहोलमें गुजरना चाहीये. टेलीवीज़न होबारा
 आदमीको धनसानी बनावटों की धसी दुनियामें गुम कर देता है. खस्मे
 वो धससे पड़ेले गुम था. उस्के मुकाबलेमें जुले दुअे जेगराड़ीया
 (भोगोवीक) का माहोल आदमी को जुदावदे करीम की कारीगीर की दुनियामें
 पहुंचा देता है. वो दुनिया जहां धनसान और जुदा की कुदरत आमने
 सामने हो जाते हैं. जहां आदमी अपने रब की कुदरत की कारीगरी को
 देखता है. और आदमी अपने रबकी उम्दो सना करने लगता है. और
 दुनिया की जहरीरी शकलों से गुजर कर अपने रब को पा लेता है.

नीचे आस्मान के नीचे उभरी दुई पहाड़ीयां हरे हरे दरख्त
 ओकसीजनसे भरी दुई जालीस हवा. कुदरत के धस हसीन माहोलमें
 धनसान अपने को जुदा के सामने मेहसुस करने लगता है.

गुस्ताफी का धवतनाक अंजाम :-

खेडले हलब की अक जमाअत सडाभा (रदी.) की शानमें
 गुस्ताफी और गालीगलोय किया करती थी. अक बार उन्मेंसे कुछ लोग
 अमीरे मदीना के पास आये और बखोत सा माल-अस्बाब उम्दा किंमती
 कपडे साथ लाये और अमीरे मदीना के सामने ये तोड़के/खे दीव को
 मोहनेवाले ये पेश करके अर्ज किया के ये किंमती तोड़के कुबुल कर लीये जाये
 और धस्के बहलेमें बस ! धन्ना किया जाये के रोजा शरीकके दुजरे का
 दरवाजा खुलवा दीया जाये ता के ये लोग खजरत अबुबक सिद्वीक (रदी.)
 और खजरत उमर (रदी.) के मुबारक बदनको वहां से निकाल कर ले जाये.
 अमीरे मदीना जालिस दुनियादार और मालका जालयी था धस लीये वो
 धस सोदे पर तैयार हो गया. और हरेमे मदीना के दरबान को बुलाकर

लुकम दीया के दोषो ! ये लोग जब और जिस वक्त आये तो दरमशरीक का दरवाजा खोल दीया ज्ये और ये लोग जे कुछ करे मना न कीया ज्ये.

दरबान केडता है के जब तमाम लोग ईशांकी नमाज पढ कर इफ्तत हो गये और दरमशरीक के दरवाजे दस्तुर के मुताबिक बंद कर दीये गये तो थोड़ी देर के बाद दरवाजा फिटफिटाने की आवाज आई मैंने अमीर के लुकम के मुताबिक दरवाजा खोल दीया. मैंने देखा यावीस-पचास आदमी कुदाव और मशअव (यिरागदान) लेकर भरे है. ये लोग अंदर दाखिल हो गये. और मैंने मस्जिदके कोनेमें बैठकर रोना शरू कर दीया के या ईलाही ! ये क्या क्यामत नाजिल हो गई ? लेकिन मुंजे अल्लाहकी कुरत और सलाभा (रही.) की शान नजर आ गई. मैंने देखा के अभी ये लोग मीम्बर शरीक के करीब ली नही पहुंचे थे के जमीन ईन तमाम लोगों को उनके सामान के साथ निगल गई.

अमीरे मदीना ईन्तिजार में था के ये लोग अपने कामसे इरिग होकर उसके पास आरेंगे. मगर जब बहुत जयादा देर हो गई तो अमीरने मुंजे बुलाकर डाल पुछा मैंने जे कुछ देखाथा बयान कर दीया. अमीर केडने लगा समजके भोवो के क्या केड रहे हो ? मैंने कडा अय अमीर मैंने जे कुछ देखा है बयान कर दीया. अगर यकीन न आये तो चलकर पुढे ली देप लीज्ये. उन लोगों के आज कपडे अभीतक नमुदार है.

(जलबुल कुलुब)(शेफ (अ.डक मुडदूस देडल्वी-२.अ.)

(निदाअे शाही - २/२०००/२८)

गुस्ते जनाबत न करने की सजा :-

अगरये अल्लाहतआला का आम दस्तुर है के अजाबे कब्रका मुशाहिदा आम जिन्नतों और ईन्सानों को नहीं होता. लेकिन कभी कभी अल्लाहतआला ईब्रत के वीये आज अलवाल जलीर इरमा देते है. जे पुदा के वीये कुछ मुश्कील नहीं. किताबों में जैसे वाकिआत मजकुर है जन्मेंसे बंद वाकिआत ये है.

अबानईब्ने अब्दुल्लाह (२.अ.) केडते है के हमारे अक पडोशी का ईन्तिकाल हो गया. हम उसके गुस्व, कइन, दइनमें शरीक हुअे. जब जनाजा ले कर कब्रस्तान पहुंचे. तो कब्रमें अक बिल्वी जैसा जिनवर

नजर आया. लोगों ने उसको निकालने की बख्त कोशीश की मगर वो वहांसे नहीं उटा. मजबुर होकर दूसरी कब्र खोदी वहां ली वो जनवर मौजूद था. तीसरी कब्र खोदी उसमें ली यही जनवर मीला-आच्छा आकर लोगोंने उसी के साथ उस शम्सको दफन कर दीया. जब कब्र बराबर कर दी गई तो उसमेंसे एक जबरदस्त धमाका हुआ. लोगोंने धर आकर उसकी भीवीसे उस शम्सके डालात मालुम कीये तो पता चला के वो जनाबत का यानी नापाकी दूर करने का गुस्ल नहीं करता था.

(शरहुस्सुदूर-२४४)

नमाज छोडने और असुसी की सजा :-

अम्र बिन दीनार (र.अ.)केडते है के मदीनामें एक शम्सकी बडेन का ईन्तिकाल हुआ. दफन करते वकत एक थेवी कब्रमें रेल गई. जे याद आने पर उसको निकालने के लीये एक साथी को लेकर कब्रस्तानमें गया और कब्र खोदकर थेवी निकाली. कब्रकी बगली का पत्थर उटाकर अपनी बडेन को देखाया था. देखा तो पुरी कब्र आगेके शोलोंसे भरी हुई थी. उसने कब्र को बंद कर दीया. और धर आकर वालेदासे डाल सुनाया तो बताया के वो नमाजको देर करके (वकत टाल कर) पढती थी. कभी बगैर पुजु के पढती थी. जब पड़ोशी सो जते तो दरवाजे पर कान लगाकर उनके छुपे राज को डालिसल कीया करती थी. (शरहुस्सुदूर-२४४)

अबु जेहल को अजाबे कब्र :-

उजरत अब्दुल्लाह ईब्ने उमर (र.दी.) इरमाते है के मैं बहर के करीबसे गुजर रहा था. मैंने अयानक देखा के एक शम्स जमीनसे निकला छस्की गरदन पर एक जंजीर है. और उसके सिरे (छोटे) को एक काले शम्सने थाम रखा है वो जमीनसे निकलने वाला आदमी मुंजसे पानी मांगने लगा मगर काले शम्सने झोरन कला ईसे पानी मत पीलाना ये काझीर है. झीर उसे भीय कर जमीनमें दाम्बील कर दीया. मैंने हुजुर (स.अ.व.) की जिदमतमें आकर ये किस्सा बयान कीया तो आप (स.अ.व.) ने इरमाया. ये अब्दुल्लाह का दुश्मन अबु जेहल था. क्यामत तक उसकी यही अजाब होता रहेगा. (शरहुस्सुदूर-१५४)

(११) हिक्मतकी बातें

लुज़ुर (स.अ.व.) का ईशाद है के मुंजे सबसे जयादा अंदेशा उस मुनाझीक ईन्सानसे है जे लीकमतकी बात करे मगर उस्का अमल उस्के खिलाफ़ हो.

ईस लदीस में जस ईन्सानका जिक़ कीया गया है वो ईन्सान मुसलमानों के अंदर भी पाये जाते है. और गैर मुस्लिमके अंदर भी.

तज़ुरबे के मुताबिक़ ईस बीमारी में सबसे जयादा मुभ्तवा वो लोग है जन्को मौजूदा जमाने में दानिश्वर कडा जाता है.

मौजूदा जमाने में जे तरककीयां लुई है उनमें अेक तरककी ये है के लोग जुबसुरत अल्हाज़ ओलने के माख़िर हो गये है. उन लोगों का डाल ये होता है के उनके दीव में न दई होता है न संजुहगी. मगर वो औसी जुबसुरत बातें करते है जन्को सुनने वाले दीवयशपी के साथ सुने.

शायद तकरीर की यही कीस्म है जस्को तकरीर बराये तकरीर कडा गया है उनकी ईस तकरीर में अल्हाज़ की धुम होती है मगर बातीन के अेअ्तिबार से उस्का कोई महज़ुम नीकालना मुश्किल होता है.

कितने करीब कितने दूर :-

हर लम्हा सोचते रहो के तुम जुदासे कितने करीब लुओ. शयतानसे कितने दूर लुओ. जन्नतसे कितने करीब लुओ. और दौजअसे कितने दूर लुओ.
(उज़रत जुनेद बगदादी (र.अ.)

मेहज़म नहीं होता :-

- * सप्पी आदमी ईजज़त और जुजुर्गीसे मेहज़म नहीं होता.
- * वफ़ादार आदमी लोगों की मुहब्बत और ईनायतसे मेहज़म नहीं होता.
- * शुक गुज़र आदमी जयादा नेअमत और बरकतसे मेहज़म नहीं होता.
- * दूसरों की रियायत करनेवाला शप्स सरदारी और बडाई से मेहज़म नहीं होता.
- * ईन्साफ़ करनेवाला आदमी जैरियत और आक़ियतसे मेहज़म

નહીં હોતા.

* અરજી અખલાક ઓર નરમ મિજાજવાલા આદમી ઈજ્જતસે મેહરૂમ નહીં હોતા.

નમાઝ કી પાબંદી :-

હજરત ઉમર ફારૂક (રદી.) ને અપને સબ હાકિમોં કો યે હિદાયતનામા લીખ કર ભેજા થા.

“મેરે નજદીક તુમહારે સબ કાર્મોં મેં સબસે ઝયાદા અહમ નમાઝ હે. જો શખ્સ નમાઝકો બરબાદ કરતા હે. વો દુસરે તમામ અહકામે દીન કો ભી બરબાદ કરદેગા”
(મ.કુ.૬/૪૫)

મસ્જીદ કા સબક :-

નમાઝે બાજમાઅતમેં ઈમામ કે પીછે જબ મુખ્તલીફ કૌમો કે લોગ સફ બાંધકર ખડે હોતે હે તો એસા મેહસુસ હોતા હે કે જૈસા કે વો (۴۲۳) وَأَغْتَصِمُوا بِاللَّهِ حَيْثُ وَكَيْفَ કે હુકમકી અમલી તસ્દીક કર રહે હે. યે કેસા અજબ સબક હે. જો મસ્જીદ કે માહોલમેં મુસલમાનોં કો દીયા જાતા હે. અગર યે સબક મુસલમાનોં કી પુરી જાંદગીમેં શામીલ હો જાયે તો ઉન્કે અંદર એક બડા ઈન્કિલાબ આ જાયે.

આસાન શરીઅત :-

હુજુર (સ.અ.વ.) ને ઈશાદ ફરમાયા કે મૈને તુમકો એક સહલ ઓર આસાન શરીઅત પર છોડા હે જીસ્મેં ન કોઈ મશક્કત (તકલીફ) હે નુ ગુમરાહી કા અંદેશા.
(મ.કુ.૪/૮૬)

મુનાફિક :-

મુનાફિક નામ હે ડબલ કેડીટ લેને કા. મિસાલકે તોર પર આપ દીન કી બાતેં કરે મગર અમલી તોર પર દીન જાંદગીમેં શામિલ ન હો. ઝબાનસે અપને આપ કો ઈમાનદાર મોમીન બતાયે મગર અમલમેં અપને આપ કો ઓર અપને બેટોં કો ઈમાનદારી કે આમાલ સે દુર રખે.

જંગ કી આગ બુઝાઓ :-

કુઆન મજીદ મેં ઈશાદ હે કે “જબ ભી ઉન્હો ને જંગ કી આગ ભડકાઈ તો ખુદાને ઉસે આગ કો બુઝા દીયા. (અલમાઈદ-૬૪)

ઈસ એઅતિબાર સે દેખીયે તો દુસરોં કા તરીકા આગ ભડકાને કા હે. જબ કે કુઆન મજહેકે મુતાબિક (મુસલમાનોં કા તરીકા આગ બુઝાને કા હોના ચાહીયે ન કે એસા તરીકા ઈખ્તિયાર કરના જે આગકો ઝયાદા ભડકાયે. (અલ રિસાલા-૧૧/૨૦૦૨/૩૮)

માયુસી સે બચો :-

બારગાહે ખુદાવંદી નિહાયત અઝીમુશ્શાન બારગાહ હે. રહમત ઓર કરમ ઉસ્કી ખાસ સિક્તોં મેં સે હે. હીદીસે કુદ્દસીમે હે. “મેરે ગુસ્સે પર મેરી રહમત સબકત લે જતી હે”. ઉસ્કે લુત્ફો કરમસે કબી માયુસ ન હોના ચાહીયે.

ઈસ રહીમ-કરીમ કી જાત કી યાદમેં ઉમ્મ ખર્ય કીજયે ઓર માયુસી કો રાસ્તા ન દીજયે. ઝિકમેં જીસ કદર મુમ્કીન હો. પાબંદી કી જયે યહી ગનીમત ઓર ફાયદામંદ હે. ઉસીકો હમેં ઈસ દુનિયાસે સાથ લેજના હે.

(સુલુકે તરીકત-૧૪૯)

બિમારીયોં કા મજમુઆ :-

ઝયાદા બાત કરને કી આદત ઉસ વકત હોતી હે જબ કે અપની બડાઈ ઝેહન મે હો ઓર અપની બડાઈ ઉસ વકત નજરમેં આતી હે જબ અલ્લાહતઆલા સે ગફલત હો ઓર અલ્લાહતઆલાસે ગફલત એક બિમારી નહીં બલ્કે બિમારીયોં કા મજમુઆ હે. જીસ શખ્સકો દેખો કે વો ઝયાદા બાતેં કરનેમેં મુબ્તલા હે. તો સમજવો એક બિમારીમેં મુબ્તલા નહી બલ્કે બહોતસી બિમારીયોં મેં મુબ્તલા હે. ઓર ઉસ્મેં વો તમામ બિમારીયાં મૌજુદ હે. જે તકબ્બુરી ઓર બડાઈ કી શાખે હે.

(શરીઅત ઓર તરીકત)

બાત કરને કા ઢંગ :-

“ખામોશ આજીઝ બોલને વાલે આજીઝ સે બેહતર હે”

યાની એક આદમી કો બોલના નહીં આતાં ઈસ બીના પર વો ચુપ રહા. તો એસા શખ્સ ઉસ આદમી સે બેહતર હે. જીસ્કે અંદર બોલને કા સલીકા નથા. ઉસ્કે બા વુજુદ વો બોલા ઓર બાત બિગડ ગઈ.

(અલ રિસાલા-૧૦/૧૯૯૯/૧૬)

तकदीर :-

भुभारी और मुस्लिम शरीकमें लजरत अब्दुल्लाह ईब्ने मस्उद (र.दी.) की रीवायत है के नबीये करीम (स.अ.व.) ने अेक लंबी लदीसमें इरमाया अस्का भुवासा ये है.

ईन्सान अपनी पैदाईश से पहले मुप्तवीक दीर से गुजरता है. जब उसके आजा (अवयव) पुरे बन जाते है तो अल्लाहतआला इरिशते को लुकम करते है के जे उसके वीये चार चीजें वीअ लेता है.

- (१) क्या अमल करेगा ?
- (२) उम्र-साल-मलीने, दीन, मीनट और उसके सांस तक वीअ वीये जाते है.
- (३) कहां मरना है और कहां दफन होना है ?
- (४) रोजी कित्नी और कीस तरल भीवेगी ?

राज में रणना :-

अस शम्सके बारे में ये डर हो के लमारी भुशलावी और नेअमत को सुन कर वो लसद करेगा और नुकशान पलुंयाने की सोचेगा. तो उसके सामने अपनी नेअमत, दौलत और ईजजत वगेरह का चर्चा न करे.

लुजुर (स.अ.व.) का ईशाद है के अपने मकसद को काम्याब बनाने के वीये उन्को राजमें रणनेसे महद लासिल करो. क्युं के दुनियामें डर नेअमत वालेसे लसद कीया जाता है.

(म. कु. प-२३)

तुशन का जतरा :-

आदमी अगर अपने लाल पर सोचे तो वो धमंड न करे. वो ऐसी लवाओमें धीरा लुआ है जे कीसी वकत तुशनकी सुरत ईप्तिचार करके उसकी अंहगी और चीजों को तेलसनेलस कर सकती है. वो ऐसी नमीन पर भडा लुवा है. जे कीसी ली लमडा लवलवे की सुरतमें इट सकती है. वो अस समाजमें रेहता है. उस्में डर वकत ईत्नी अदावतें मौनुद रेहती है के अेक चीन्गारी पुरे समाजको भाक और भुन के लवावे करने के वीये काड़ी है.

भुदा से डरने वाला :-

लजरत वलब बीन कयसान (रदी.) केलेते है के अब्दुल्लाह बीन

जुबैर (रही.) ने मुंजे नसीखत नामा बेज और उस्मे लीजा पुदासे उरनेवावा वो है. जस्ने बलाओं पर सभर कीया. और अल्लाहके हेस्वो पर राज् रहा. और नेअमतों का शुक्र अदा कीया. और कुअनमज्जुदके लुकम के आगे जुंज गया. (अल रिस्वाला-१/१८८१/३०)

तकब्बुर की अलामत :-

लुजुर (स.अ.व.) यलने की सिद्धत शमाईल में लीजी है के आपका यलना बखोत आखिस्ता नही बल्के कीसी कहर तेजी के साथ था.

लदीसमें है के आप (स.अ.व.) जैसा यलते थे के गोया जमीन आपके लीये सीमटती है. (ईब्ने कसीर)

ईसी लीये सल्के सालिहीनने बनावट से बिमारों की तरल आखिस्ता यलने को तकब्बुर की अलामत और बनावट लोने के सबब मकड़ल करार दीया है.

लजरत उमर झाड़क (रही.) ने अेक नव जवान को देभा के बखोत आखिस्ता यल रहा है. पुछा क्या तुम बिमार हो ? उस्ने कडा नही. तो आपने उस पर अेक दुरा उकाया और लुकम दीया के कुव्वत के साथ यला करो. (ईब्ने कसीर)(म.कु.-६/५०२)

ईज्जत हासिल करने की शर्त :-

ईमाम गजाली (र.अ.) ने इरमाया: के दुनियामें ईज्जत और भरतबा हांसिल करना तीन शरतों के साथ जईज है.

- (१) अपने को बडा और दुसरे को छोटा या जलील समजता न हो बल्के आभिरत के इयदे के लीये हो के लोग मेरे मुअतकीद लोकर नेक आभाव में मेरा ईत्तिबाअ करे.
- (२) जुठी तारीक कराना मकसुद न हो जे सिद्धत (पुभी) अपने अंदर न हो उसकी तारीक कराने की ज्वालीश न हो.
- (३) दुनिया की ईज्जत और भरतबा हांसिल करने के लीये कीसी गुनाह या दीनके मामलेमें कोताही ईज्जियार न करे.

अल्लाह तआला के अेहसान :-

अंदा जब गुनाह करता है अल्लाह तआला उस पर यार

ओहसान इरमाते हे.

- (१) रोजी बंद नही करता
- (२) तंदूरस्ती नही छीनता
- (३) कीसी पर उस्का गुनाह ज़ाहिर नही करता.
- (४) झौरन अज़ाब नही करता.

चार चीज़ें सप्त आमांल में से हैं :-

- (१) गुस्से के वक़्त ખता को माफ़ करना
- (२) मुक़वीसी में सभावत करना.
- (३) तन्हाई में पाक़ दामन रेहना
- (४) भौड़ और उम्मीद के वक़्त सख़ी बात केहना.

मोमिन की शान :-

आदमी की छंदगीमें ये अज़ब बात है के वो ज़े चीज़ ખता है वो ज़स्मके अंदर दाख़िल हो कर उन्के गोशत और पुन और लडी की सुरत छप्तिथार कर लेती है.

मोमिन के साथ वोही बात इ़ख़ानी गीज़ा के बारेमें खोती है. ईस तरह के मोमिन ईस दुनिया में ज़े कष्टु देખता है या सुनता है या तज़ुरबा करता है तो वो सब उस्के ईस्लामी ज़ेहन की वज़हसे उस्के वीयें मअरेक़ते लक़ में तब्दील हो जाता है. ईसी मोमिनाना सिइत को कुअनिमज्जदमें "तवस्सुम" कडा गया है.

(अल रिंसावा-3/२003/६)

ईमाम शाइई (र.अ.) का हडीमाना कौल :-

ईमाम शाइई (र.अ.) इरमाते है के लोगोके साथ बद् मिज्जज़ीसे पेश आना लोगो को दुश्मन बना देता है. और बख़ोत अयादा पुश मिज्जज़ीसे पेश आना बुरे साथीयो की डिम्मतको बढा देता है. बिडाज़ा बद् मिज्जज़ी और अयादा पुश मिज्जज़ी के दरम्यान राह छप्तिथार करे.

(ताभीरे ख़यात-२५-जुन-२00२)

नींद बडी अज़ब चीज़ है :

नींद बडी अज़ब चीज़ है. आदमी ख़लता इीरता है. वो देખता बोलता है. मगर जब सो जाता है तो उस्के तमाम ख़वास (खोश) ईस

તરહ બેકાર હો જાતે હૈ. જૈસે જીંદગી ઉસસે નિકલ ગઈ હો. ઉસ્કે બાદ જબ વો નીંદ પુરી કરકે ઉઠતા હૈ તો વો ફીર વૈસા હી ઈન્સાન હોતા હૈ જૈસા કે પહેલે થા. ગોયા યે જીંદગી ઓર મોત કી મિશાલ હૈ. યે મામલા હમારે લીયે ઈસ બાતકો સમજને કે કાબિલ બના દેતા હૈ કે આદમી કીસ તરહ મરેગા. ઓર કીસ તરહ દો બારા ઝીંદા હોકર ખડા હો જાયેગા. યે વાકીઆત સાબિત કરતે હૈ. કે સારે ઈન્સાન ખુદાકે ઈખ્તિયાર મેં હૈ ઓર વો વકત જલ્દી આનેવાલા હૈ. જબ કે ખુદા અપને ઈખ્તિયાર કે મુતાબિક ઉન્કા ફેસ્લા કરે.

અંબિયા (અ.લ.) કી નીંદ :-

હઝરાતે અંબિયા (અ.લ.) કી ખુસુસીયત યે હૈ કે ઉન્કી નીંદ આમ ઈન્સાનોં કી નીંદ સે મુખ્તલીફ હોતી હૈ. આમ ઈન્સાન નીંદ કી હાલતમેં બેખબર હોતે હૈ. જબ કે અંબિયા (અ.લ.) નીંદ કી હાલતમેં ભી બે ખબર નહીં હોતે ઉન્કી નીંદ કા તઅલ્લુક સિફ આખોંસે હોતા હૈ. દીલ નીંદ કી હાલતમેં ભી અલ્લાહતઆલા કી જાતે આલીસે જુડા રેહતા હૈ.

(બજલુલ મજહુદ) (મુન્તાખબ અહાદીસ-૭૬)

જરા સોચો તો કૌન બેકાર હૈ ?

બેકાર હૈ વો કોમ	-	જીસ્મેં અખ્લાક ન હો.
બેકાર હૈ વો ઈન્સાન	-	જીસ્મેં ઈન્સાનિયત ન હો.
બેકાર હૈ વો જીંદગી	-	જે દુસરોં કે લીયે ન હો.
બેકાર હૈ વો ખુશી	-	જે સિફ અપને લીયે હો.
બેકાર હૈ વો આંખ	-	જીસ્મેં શરમ ન હો.
બેકાર હૈ વો મોહબ્બત	-	જીસ્મેં વફાદારી ન હો.
બેકાર હૈ વો દૌલત	-	જે હલાલ ન હો.
બેકાર હૈ વો ઔલાદ	-	જે ફરમાબરદાર ન હો.

એકદીલ :-

- ❁ કુઅનિમજીદ સુનતે વકત.
- ❁ ઝિક મજલીસોં મે.
- ❁ તન્હાઈ કે અવકાત મેં
અગર ઈન તીનોં મોકો પર તુમ અપને દીલ કો હાજર ન પાઓ

(यानी उनमें तुम्हारा हील न लगे) और हील जुदा की तरफ़ मुतवज्जने न हो) तो अल्लाहतआला से दरपास्त करो के वो तुम्हें अेक हील अता इरमा दे. ईस वीये के तुम्हारे पास हील नहो.

(इजरत अब्दुल्लाह ईब्ने अब्बास(र.दी.)

ईस्लाह में नरमी का जरताव :-

इजरत ईमाम शाइफ़ (र.अ.) ने इरमाया :

“जस शप्स को कीसी गवती पर तंबीह करना हो और आपने उसको तन्हाई में नरमी के साथ समजाया तो ये नसीहत है. और अगर सबके सामने उसको इस्वा किया तो इज़ीहत (इज़ेती) है.

आजकल तो अेक दुसरे के औबों को अप्बारों और पेम्फ्लेट के जरीये मंजरे आम पर लाने को हीन की जिदमत समज वीया गया है.

जटके सेहना :-

वोगों के दरम्यान ज़ंद्गी गुजरते लुअे अकसर गुस्सा और ईन्तिकाम के जज्बात हील के अंदर पैदा होते है. ऐसी डालतमें मोमीन को क्या करना चाहीये ? मोमिन को ये करना चाहीये के वो ईस किसम के तमाम नइसीयाती जटकों को जुद अपने ऊपर सडे. वो उनको दुसरों तक न जाने दे. वो वोगों के दरम्यान कार की तरह रडे न के ट्रेक्टर की तरह.

(अल रिसाला-१०/१८८८/४३)

गुस्सा न करो :-

अेक शप्स रसुलुल्लाह (स.अ.व.) के पास आया. उसने कडा अय अल्लाह के रसुल (स.अ.व.) मुजको ऐसे कलीमात बताईये जन्के साथ में ज़ंद्गी गुजरूं और वो कलिमात ज़यादा न हो के में लुल जउ. रसुलुल्लाह (स.अ.व.) ने इरमाया गुस्सा न करो.

(मोअत्ता ईमाम मालिक र.अ.)(हीन-१-शरीअत-१३५)

शराब के बारेमें ज़हील का हकीमाना डौल :-

बिज्नौर बस अडे पर अेक साडबने बताया के में १८७८ ई.स. तक बडोत शराब पीता था. अेक भरतबा अेक मुसलमान शप्स मीवा मेंने उनसे कडा के मुंजे शराब पीने की आहत है ईस वीये के शराब नशा करती है. उनहोंने कडा के शराब नशा नहो करती बल्के नशा उतारती है.

मैंने तअज्जुब से पुछा के ये कैसे ? उन्होंने कडा के अकसर ईन्सानमें तीन नशे डोते छे.

- (१) ईज्जत आबड़ं का नशा
- (२) तंदुरस्ती और ताकत का नशा
- (३) माल का नशा.

शराब ईन तीनों नशों को उतार देती छे. जब ईन्सान शराब पीता छे तो माल बरबाद डोता छे. और ऐसी डरकतें करता छे के ईज्जत आबड़ं भाकमें मील जाती छे. और तंदुरस्ती भराब डो जाती छे.

वो साडब केडते छे के जब उन्होंने ये बात कही तो आज तक मैंने शराब का ग्लास डायमें नर्ही लीया.

(निदाओ शाही-४/२०००/४५)

तकवा बडा अमल है :-

मेरे मोडतरम् अगर कोई अमल तस्फीस्का (ताबे करने का) औसा डोता तो मैं यहाँ गेले ली में क्युं पडा रेडता. सबसे बडा तस्फीरी अमल तकवा छे. अल्लाड तआला का ईशाद छे.

अल्लाडतआला को राजी कीजिये- डर थीजमें ईभ्लास और तकवा को अस्वी मकसद करार दीजिये.
 (मकतुभाते शैखुलईस्लाम-१/३०७)

राज की बात :-

नादान आदमी ना मुवाकिक बातोंसे उवजता छे. अकलमंद आदमी ना मुवाकिक बातोंसे दामन बचाते डुओ गुजर जाता छे. यही अक लइजमें ईस दुनियामें ना कामी और काम्याबी का राज छे. यहाँ उवजनेका अंजम ना कामी छे. और नजर अंदाज करने का अंजम काम्याबी.

गइलत का नतीजा :-

जे लोग आलीम, डाकिल या नेक बनकर अमली छंदगी ईज्जियार करे या अपने गैबों में डोकटरी और अन्जनीधरींग की आला डीग्री लीये डुओ डो उन्हे दादा बनने की जरूरत नर्ही. दादागीरीका पेशा डंमेशा वोही लोग ईज्जियार करते छे जे अपनी गइलत के नतीजेमें

જાહીલ રેહ ગયે હો.

બુરાઈ કા ફેલના :-

કોઈ બુરાઈ હંમેશા છોટી સતહ સે શુરૂ હોતી હે. ઓર ફીર બઢતે બઢતે બડી બન જાતી હે. અગર ઐસા હો કે બુરાઈ જબ અપની ઈબ્તેદાઈ હાલતમેં હો ઉસી વકત કુછ લોગ ઉસ્કે ખિલાફ ઉઠ જાયે તો વો આસાનીસે ઉસે કુચલ દેંગે. લેકીન જબ બુરાઈ ફેલ ચુકી હો તો ઉસ્કી જડે ઈત્ની ગેહરી હો જાતી હે કે ફીર ઉસ્કો ખત્મ કરના મુમ્કીન નહીં હોતા.

તાકતવર :-

તાકતવર વો હે જો જીસ્કી જરૂરીયાત મુખ્તસર હો. જીસ્કી આરજુંએ મેહફુદ હો. જો લઝઝત ઓર જાહ કા તાલીબ નહો. જીસ્કો તવાબુઅ મેં રાહત મીલતી હો ન કે અપને કો બડા બનાનેમેં- ઐસા આદમી નફસાનિયત સે ખાલી હોતા હે. ઉસ્કે લીયે સહી ફેસ્લા કરનેમેં કોઈ ચીઝ રૂકાવટ નહીં હોતી. મસ્લેહતોં કા ખ્યાલ ઉસ્કા કદમ નહીં રોકતા. મકસદ કે ખાતીર કુરબાની કી હદ તક જાનેમેં ઉસ્કે લીયે કોઈ ચીઝ રૂકાવટ નહીં હોતી. (અલ રિસાલા-૯/૧૯૮૧/૧૧)

દીલ કા સખ્ત હોના :-

માલિક બીન દીનાર (ર.અ.) ને કહા દીલ કી સખ્તીસે ઝયાદા બડી સઝા કભી કીસી બંદે કો નહીં દી ગઈ.

સરમાયા કી જરૂરત નહીં :-

ઝબાન સચ્ચી હે. ઓર ઈમાન દીલમેં હો તો સરમાયા કી જરૂરત નહીં. આપ ઝબાન દેકર કિત્ના ભી સોદા બાઝાર સે ઉઠા સકતે હે.

આખિરત કા યકીન :-

“બેલગાડી” કે દૌર મેં ઈન્સાન કે લીયે “હવાઈ જહાઝ” એક ના કાબિલે યકીન ચીઝ થી કયુંકે ઉસ વકત “હવાઈ જહાઝ” મુસ્તકબીલ કે પદોમેં છુપા હુવા થા. ઈસી તરહ મૌબુદા જીંદગીમેં અભી આખિરત કા દૌર ઈન્સાન કી નજરોં સે છુપા હુઆ હે. પદા હટને કે બાદ આલમે ગૈબ કી ખાતે ભી આદમી કે લીયે ઈસી તરહ કાબિલે ફહેમ બન જાયેગે. જીસ તરહ આજ દુનિયા કી ખાતે કાબિલે ફહેમ બની હુઈ હે.

अकलमंटी :-

अगर कीसी शम्स को कावा और सफ़ेदमें इर्क मालुम न हो तो उसकी ज़ाहीरी आंगभ भराब होती है. इसी तरह अगर कीसी को जीना और निकालमें इर्क मालुम न होतो उसका बातीन (यानी दौल की आंगभ) भराब हो गइ है. अगर कीसीको बदन्युं और गुशु मे इर्क मालुम न हो तो ज़ाहीर है उसकी सुंघने की कुव्वत भराब है.

इसी तरह ज़स्को डक और बातिल में इर्क मेडसुस न हो उसकी अकल बिमार और भराब है. अल्लाहतआवा की ही दुर्घ अकल अक बहोत बडी नेअमत है. और तमाम उल्माअे किराम का इस बात पर इत्तिफ़ाक है के डज़रते अंबिया (अ.व.) से बढकर कोई अकलमंद् नहो है.
(मज़ाहिरे उलुम-६/२००१/३१)

इप्वास :-

कीसी कामको बगैर मजदूरी लीये करना तन्प्वाड न लेना ये इप्वास की दलील नहो है. इप्वास तो वो है के सब कुछ करने के बापुबुद ये समजे के मैंने कुछ नहो किया और न मुंजसे हो सका. इप्वास बडी कदर करने की चीज है.
(मज़ाहिरे उलुम-१०/२०००/२०)

हिसाबे मेहशर :-

डज़रत अली (रही.) से कीसीने सवाल किया.

जब क्यामत के रोज़ अव्वलसे आग़िर तमाम मैदाने डशरमें ज़मा होंगे तो इत्ने बेशुमार आदमीयो का हिसाब अल्लाहतआवा कैसे लेंगे ?

आपने इरमाया :

जस तरह वो इस वक़्त अपनी मज्हुक को रोज़ी पढुंया रहा है इसी तरह उस दीन सबका हिसाब भी ले वेगा.

डर शम्स को डर ज़गा रोज़ी अपने वक़्त पर पढुंय जाती है. डालां के इअे ज़मीन पर जुदा की बे शुमार मज्हुक आबाद है. जुदा उन्को बगैर कीसी गवती के रोज़ी देता है. इसी तरह सब का अक डी वक़्तमें बगैर गवती के हिसाब भी ले वेगा.

कीसीने डज़रत अब्दुल्लाड इब्ने अब्बास (रही.) से सवाल

कीया के जब ईन्सान मरजाता है तो उसकी इइ कड़ा यवी जाती है ?
 इरमाया - जब शिराग जबता है तो उसमें नुर और रोशनी छोती है.
 जब उसको बुजा देते है तो बताओ वो नुर कहां यवा जाता है ?

(पुन्जात मौलाना कांधलवी-२.अ.)

कौल और अमल का रेकार्ड :-

बडी कोन्डरन्सोंमें ये मंजर आम है के टेलीवीजन के आदमी मशीनोंको वीये दुअे मौबुद रेखते है. और लोगों की आवाजे और उनकी डरकते रेकार्ड करते है. ईस मंजर को देअकर जेहनमें ये वाकेआ ईस तरड बदल गया. जइसा जिक कुर्आनमज्द में है.

أَذِيتَلْقَى الْمُتَلَقِينَ عَنِ الَّتِيْمِيْنَ وَعَنِ الشَّمَالِ قَعِيْدٌ" (११६ २१ प)

औसा लगता है के जैसे डकीकतमें डमारे दोनों तरइ इरिशते अडे दुअे है. और निडायत सडी अंदाजमें डमारे कौल और अमल का रेकार्ड तैयार कर रहे है.

(अल रिस्आला-१८८८/३२)

जहिल की भस्वतें :-

डजरत उमर बीन अ. अजीज (२.अ.) ने इरमाया जहिल की दो भस्वतोंसे बयकर रेडना उन्हे कबी न अपनाना.

(१) बातथीत करते वकत सरको बडोत जयादा दाये-बाये डरकत देना.

(२) कीसी बात का जवाब देने में जल्द बाजी करना.

(डकीमाना अकवाल-१३४)

अकल और तजुरबा :-

केडते है के डरथीज अकल की मोडतान्ज छोती है और अकल तजुरबे की मोडतान्ज छोती है.

(डकीमाना अकवाल-१५१)

बडा बेवकुइ :-

डजरत उमर (२दी.) ने अपनी मजलीस के साथीयों को मुजातब करके इरमाया. मुंजे अडमक(बेवकुइ) तरीन शप्सके बारेमें बताओ ?

लोगोंने कडा वो शप्स जे दुनिया के बदलेमें अपनी आपिरत को बेच डाले. तो डजरत उमर (२दी.) ने इरमाया .

क्या मैं तुम्हें उससे भी ज्यादा अलमक शम्सके बारेमें बताऊँ ? तो उन्हींने कड़ा बताईये. तो उजरत उमर (र.अ.) ने इरमाया. वो आदमी जस्ने अपनी आपिरत कीसी दुसरेकी दुनिया के लीये भेय दी.
(उकीमाना अकवाल-१४४)

आदमी की पहचान का मरीया :-

अक आदमीने उजरते उमर (रदी.) से कड़ा के इला आदमी बलोट भला और नेक है. तो आपने इरमाया क्या तुमने उसके साथ सकर क्रीया है.? उसने कड़ा नहीं आपने इर कड़ा क्या तुम्हारे और उसके बीचमें कोई जघडा हुआ है.? वो बोला नहीं तो आपने इरमाया. क्या कभी उसके पास अमानत रभवाई है ? उसने कड़ा नहीं.

तो आपने इरमाया तो तुम उसके बारेमें कुछ नहीं जनते शायद तुमने उसकी मस्जिदमें सर उठाते और जुंकाते देखा होगा.

(उयुनुल अज्जार) (उकीमाना अकवाल-२२५)

सबसे ज्यादा हक कीस का ? :-

उजरत आयशा (रदी.) से रिवायत है के मैंने रसुले अकरम (स.अ.व.) से पुछा के औरत पर सबसे ज्यादा हक कीसका है. आपने इरमाया उसके शौहर का, इर मैंने कड़ा, आदमी पर सबसे ज्यादा हक कीसका होता है ? तो आप(स.अ.व.) ने इरमाया उसकी मा का.

(हाकिम)(उकीमाना अकवाल-८८)

तिलापत का मस्नुन तरीका :-

सुरअे इतिहा की हर आयत पर वकफ करते हुअे पढना हुजुर (स.अ.व.) से सिखा सितामें साबित है. (सुबुके तरीकत-४८)

सुदी कर्ज से परहेज कीजिये :-

सुदी कर्ज हरगीज नवे. कर्ज सप्त मुसीबत है. पास कर सुदी कर्ज तो जेहरे कातिल है. अगर मुम्कीन हो तो कुछ खिस्सा जयदाह का भेय कर सुदी कर्ज से छुटकारा हासिल कीजिये. और लंमेशा अेदतियात रभीये सुदी कर्ज हरगीज मत लीजिये.

(सुबुके तरीकत-२८)(निदाअे शाही-५/१८८३/२२)

पेरवी करना जरूरी है :-

उजरत जुनैद बगदादी (र.अ.) ने इरमाया मज्बुक के वीथे अल्वाड तआला की तरफ़ पलुंयने के तमाम रास्ते बंद है. सिवाय उस रास्ते के जे नबीथे करीम (स.अ.व.) ने अतलाया है. (म.कु.४/८३)

सझाई पेश करना :-

कीसी शप्स पर कोई गलत तोहमत बांधे तो अपनी सझाई पेश करना. अंबिया (अ.व.) की सुन्नत है. ये कोई तक्कुल और जुजुर्गी नही के उस वकत जामोश रेह कर अपने आपको मुजर्रीम करार देई.

गुनाहों का कझारा :-

जुजर (स.अ.व.) ने ईशाद इरमाया. जब भी कीसी मुस्लिम पर कोई थकान या र्हँ या रंज और गम या तकलीफ़ पलुंयती है. यहाँ तक के अगर कोई कांटाभी चुंभता है. तो अल्वाडतआला जरूर ईन मुसीबतों को उसके गुनाहोंका कझारा बना देता है.

(इत्तुलबारी शर्रे बुजारी-१०/१०७)

खंडगी की हकीकत :-

क्या ? आपने कभी सोचा के खंडगी नाम है खंड सांसोके मज्मुअे का. अेक सांसभी अगर बगैर कीसी काममें लगे बेकार गुजर गई तो खंडगी के अेक डिस्से की जुद कुशी लो गई. जुद कुशी डराम है. तो अेक सांस का अेक लम्हा भी बरबाद करना डराम है.

उस्ताद का मरतबा :-

क्या आप अपने उस्तादों के मरतबे और मुकाम से वाकिफ़ है ? उजरत अली (रही.) का इरमान है.

जुस्ने मुंजे कुछ भी सीजाया. मैं उसका गुलाम लो गया. याहे तो वो मुजे बेय दे. या आजाद कर दे. क्या ? आपने कीसी इज्जिल उस्ताद की गुलामी ईप्तियार की. (निदाअे शाडी-८१०३/२४)

अब डमारे बख्यों की तरबियत कौन करता है ? टेवीवीजन करता है. और बख्या जरा बडा लो जता है तो अज्जारों और रिसालों से लोती है. और ये बताने की जरूरत नही के टेवीवीजन क्या सिजाता है ?

क्या ? आप समजते हैं के टेलीवीजन पर जे कुछ दीयाया और बताया जाता है वो हवामें तलवील हो जाता है ? नहीं बल्के वो अपना नकश छोड जाता है. (तामीरे हयात-२५/८/०३/१२)

कमजोरों की वजह से रोमी :-

हदीसमें है के अक शप्स के यहां हो भाई थे. अक भाई घरका कारोबार सभांलता था. और दुसरा भाई दीनी कामों में मशगुल रहता था. पहलेवे भाई ने लुजुर (स.अ.व.) से अपने भाई की शिकायत की और कडा के वो घरके कारोबार में हिस्सा नहीं लेता. आप (स.अ.व.) ने इरमाया शायद तुमको उसीकी वजह से रोमी भील रही हो. ईसी तरह अक और रिवायतमें लुजुर (स.अ.व.) ने इरमाया के :

तुम को जे मदद भीलती है. जे रोमी भीलती है. वो सिर्फ तुम्हारे कमजोरोंकी वजहसे भीलती है. (इन्हुलबारी शरह मुभारी-६/१०५)

अल्लाह की दैन :-

आदमी को अपने दीलमें ये बात उतारवेलनी याहीये और घरमें बीवी बर्योंसे भी ये केलना याहीये के हमारे पास जे कुछ है. वो बराहरेस्त (सीधा) अल्लाह का अतीया (दीया हुआ है) याहें कोई छोटी चीज हो या कोई बडी चीज. ईस तजुरबे का बाडा फायदा ये होगा के आदमी हर वकत ये मेहसुस करेगा के मैं अल्लाहके दीये लुअसे पारल्ला हूं. न के अपनी मेहनत की कमाई से. (अल रिसाला-१०/२००१/४२)

थोके में जरकत :-

कुछ आज, कुछ कल, ईस तरह दररोज ईल्मी जवाहीरपारे जमा करने से ईन्सानके पास ईल्म व हिकमत का भजाना जमा हो जाता है. जस तरह कतरा, कतरा जमा हो कर दरिया बन जाता है.

(ईब्ने नहडस)

काम्याब ईलाज :-

अगर आज आपको कीसीसे तकलीफ पहुंचे तो सोय समजकर "कल" उसका जवाब दीजिये. कीसीकी अक कारवाहसे आपके अंदर गुस्सा पैदा हो तो पहलेवे अपने गुस्सेको ठंडा कीजिये, और उसके बाद उसके मुकाबले के लीये उठीये. कोई शप्स आपको जलील मालुम हो तो

अपने जेहनमें उसको बराबर की सतह पर लाईये और हीर उसके खिलाफ़ कारवाही कीजिये. यही ईस दुनियामें काम्याब अेक ईलाज है.

(अल रिसाला-३/१८८३/४६)

मुझीह बातें :-

● ज़ंझी के कीसी ली शोबे में रहते हुअे आपको बडा बनना है तो अपने कीरदार और अमल, मोलुबत, लमहर्दी, ज़ैर ज़्वाली, मेहनत और मज्हुके जुदा की जिदमत के मैदानों में ज़बरदस्त कारनामों अंजम दीजिये. और ईज्वास पर साबित कदम रहिये. दूसरे जुद छोटे हो ज़ियेगे. उनको घटाने और भीटाने की ज़रत नहोीं होगी.

(मज़ाहीरे उलुम-४/२००२/१८)

● दुनिया के जाकसारीं (आज्ज) अस्तालाव, परागंदाभाव लोगों को लकारत यानी गीरी हुई निगाहसे मत देजो, तुम्हे क्या पता ? ईस उते हुअे गरहे (धुल) कारवां के अंदर कोई घोडा सवार हो.

● आज की मेहनत कल की किस्मत है.

● कोई मौका तुम्हारा दरवाजा सिर्फ़ अेक बार ज़िट ज़िटाता है.

● गुस्सा लंमेशा बेवकुईसे शुज़ होता है और शरमीहगी पर अन्म होता है.

● गलती के बाद सही बात ये है के आदमी अपनी गलती का ईकरार करे. आदमी अगर झैरन अपनी गलती को मान ले तो वो रास्ता छुट जाता है. लेकीन अगर उसने गलती माननेमें देर की या गुस्सेमें कोई और गलती कर डाली तो ये सिर्फ़ गुनाह को बढ़ाने वाली दरकत होगी.

● “साबुन कपडे के मेल को साफ़ करता है और ईकरार अज्वाक के मेल को”.

● गुस्सा आने के बाद गुस्सा के अंजम से बचने के लीये सिर्फ़ अेक रीज की ज़रत है. यानी अपने आप को थोडी देर के लीये संत्वालने की ताकत पैदा करो. गुस्सा आने के बाद अगर अेक लम्हे के लीये ली आप अपने आपको उसके असर से रोकले तो यकीनी तौर पर आप अपने को गुस्से के अंजमसे बचा सकते है.

● शलवतींसे मुराह दुनिया की वो लज्जतें है जे ईन्सान को

અલ્લાહતઆલા કી યાદ આર નમાઝસે ગાફલ કર દે.

● હઝરત અલી (રદી.) ને ફરમાયા કે શાનદાર મકાનોંકી તામીર ઓર ઐસી શાનદાર સવારીયોં પર સવારી કરના જસ પર લોગોં કી નજરે ઉઠે ઓર લિબાસ જસસે આમ લોગોં મેં ઇમ્તિયાઝ કી શાન નજર આયે શેહવતમેં દાખિલ હે. (મ. કુ. ૬/૪૫) (કુતુબી)

● જસ વકત આદમી હવાઈ જહાઝમેં તેઝી સે સફર કરતા હે તો વો હર ઘડી વતસે દુર ઓર મંઝીલ સે ક્રીબ હોતા રેહતા હે. યહી હાલ ખુદ ઇન્સાન કા હે. ઇન્સાની જીંદગી એક મુસલસલ (લગાતાર) સફર હે. ઓર હર ઇન્સાન ઘડી બ ઘડી દુનિયાસે દુર ઓર આખિરતસે નજદીક હોતા જ રહા હે.

● દો ચીઝોં કા તજુરબા ઇન્સાન કો સિફ આખિરત મેં હોગા. એક ઐસી જીંદગી જસમેં હાલ કી તકલીફ ન હો. ઓર દુસરા મુસ્તકબીલ કા ગમ ન હો. કુઆન મજીદમેં હે. لَاخَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

● જન્નત એક નફીસ તરીન પાકીઝા મુઆશિરા હે. ખુદા ઓર ફરિશ્તોં પયગંબરોં ઓર સાલેહીન કા મુઆશરા હે. જન્નતી ઇન્સાન ઇસમેં રહેગા. વહાં ન હાલ કા કોઈ ગમ હોગા. ઓર ન મુસ્તકબીલ કે બારેમેં ખોફ.

● ઇસ દુનિયામેં ઓરત ઓર મદદ દોનોં કો શિકાયતોં કે દરમ્યાન જના પડતા હે. હરરોઝ કોઈ ન કોઈ કિસ્સા ઐસા પેશ આતા હે જે આપ કે દીલમેં દુસરોં કે ખિલાફ શિકાયત કા જઝબા પૈદા કર દે. યહી ઇસ દુનિયામેં કીસી ઓરત યા મદદ કા સબસે બડા ઇમ્તીહાન હે. ઇસ દુનિયામેં કામ્યાબ સિફ વો શખ્સ હે. જે શિકાયતોં કે તુફાનમેં અપને દીલ કો શિકાયતોં સે ખાલી રખે. જે શિકાયતકે બાવજુદ બે શિકાયત બન કર રેહ સકે.

● દુસરોં સે નફરત આદમી કો બુઝદીલ બનાતી હે. ઓર દુસરોં સે મોહબ્બત આદમી કો બહાદુર બના દેતી હે. (મ.કુ.૨/૩૪૩)

● ઇમામે તફસીર મુજહીદ (ર.અ.) ને ફરમાયા. જે શખ્સ કીસી કામમેં અલ્લાહ તઆલા કી નાફરમાની કર રહા હે વો યે કામ કરતે હુએ જહિલ હી હે. અગરચે સુરત (દેખાવ) મેં બડા આલિમ ઓર જનકાર હો. (ઇબ્ને કસીર)

● હઝરત અબ્દુલ્લાહ ઈબ્ને મસ્ઉદ (રદી.) ને ફરમાયા કે અગર મુઝે યે યકીન હો જાયે કે મેરા કોઈ અમલ અલ્લાહતઆલાને કુબુલ ફરમા લીયા તો યે વો નેઅમત હૈ કે સારી જમીન સોના બનકર અપને કબ્જેમેં આ જાયે તો ભી ઈસ્કે મુકાબલેમેં કુછ ન સમજું. (મ.કુ.-૩/૧૧૩)

● હઝરત અબુ દરદા (રદી.) ને ફરમાયા કે અગર યે બાત યકીની તોર પર તય હો જાયે કે મેરી એક નમાઝ અલ્લાહતઆલાકે નઝદીક કુબુલ હો ગઈ તો મેરે લીયે વો સારી દુનિયા ઔર ઉસ્કી નેઅમતોસે ઝયાદા હૈ.

● હઝરત ઉમર બીન અ.અઝીઝ (ર.અ.) ને એક શખ્સકો ખતમેં યે નસીહતે લીખી કે. “મેં તુઝે તકવા કી તાકીદ કરતા હું જીસ્કે બગૈર કોઈ અમલ કુબુલ નહીં હોતા ઔર એહલે તકવા કે સિવા કીસી પર રહમ નહીં કીયા જતા ઔર ઈસ્કે બગૈર કીસી થીઝ પર સવાબ નહીં મીલતા. ઈસ બાત કા વાઅઝ કેહને વાલે તો બહોત હૈ. મગર અમલ કરનેવાલે બહોત કમ હૈ.

● હઝરત અલી (રદી.) ને ફરમાયા તકવાકે સાથ કોઈ છોટા સા અમલ ભી છોટા નહીં હૈ. ઔર જો અમલ મકબુલ હો જાયે વો છોટા કેસે કહા જ સકતા હૈ ? (મ.કુ.-૩-૧૧૪) (ઈબ્ને કસીર)

● હઝરત અબ્દુલ્લાહ ઈબ્ને અબ્બાસ (રદી.) ને ફરમાયા કે જો યાહો ખાઓ પીઓ ઔર જો યાહો પેહનો. સિફ દો બાતોસે બયો એક યે કે ઉસ્મેં ઈસરાફ યાની જરૂરત સે ઝયાદા ન હો. દુસરા ફખ્ર ઔર તકબુરી ન હો. (મ.કુ.-૩/૫૪૬)

● હઝરત હસન (રદી.) કી આદત થી. કે નમાઝ કે વકત અપના સબસે બેહતર લિબાસ પહેનતે થે. ઔર ફરમાતે થે કે અલ્લાહતઆલા જમાલકો પસંદ ફરમાતા હૈ. ઈસ લીયે મેં અપને રબકે લીયે ઝીનત ઔર જમાલ ઈખ્તિયાર કરતા હું. અલ્લાહતઆલા કા ઈશાદ હૈ.

(م.ک. ૩/૫૪૩) حَذُّوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ (پ. ع)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا اَبَدًا - عَلَى حَبِيْبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

(१२) शेअर

उजरत भोवाना अ. रलीम लाणपुरी (२.अ.) लंमेशा धन
अशआर को पढा करते थे.

- | | |
|---------------------------|----------------------------------|
| अबर उदीसोंमें अस्की आध | - वली जमाना अब आ रहा है. |
| जमीन भी तेवर बहल रही है | - इलक भी आंगे दीपा रहा है. |
| पराये माल को अपना समझे | - दराम को भी खलाव समझे. |
| गुनाह करे और क्माल समझे | - बताओ दुनियामें क्या हो रहा है. |
| भाई का भाई हो गया रेहजन | - उकीकी भेटी है मा- की दुश्मन. |
| पीसरने छोडा पीर का दामन | - बडेन को भाई सता रहा है. |
| दाध बांधे अडे है सङ्क पर | - सब अपने अपने प्याव में. |
| धंमामे मस्जिद से कोई पुछे | - नमाज कीसको पढा रहा है. |
- (अशरकुल उलुम-६/१८८८/३६)

नइस की लज्जत :-

उजरत उमर (२दी.) ने अेक औरत को ये केडते लुअे सुना

उमर के जाने के बाद मेरे नइसने

दी धंस तरह मुंजको दअवते गुनाह

मैंने कडा हरगीज न करूंगी धंताअत तेरी

याडे अत्नी भी लंबी हो तन्हाई की मुदत मेरी.

अय नइस मैंने तेरा कडा मान लीया अगर

जानतीलुं के इस्वाधमें बहल जायेगी धंजजत मेरी.

उजरत उमर (२दी.) ने उससे कडा तुमहे औसा करने से कीसने
रोका. तो वो बोली शरम और डया और धंजजते नइस ने. उजरत उमर
(२दी.) ने इरमाया के शरम व डया में अडे रंगीन तोडके पोशीदा है अस्ने
शरम की और जे छुप गया. उसने तकवा धंजितयार कीया और अस्ने
तकवा धंजितयार कीया वो अय गया. (उकीमाना अकवाल-२५३)

तौहश :-

तोडका धंन्ना होता है पुअसुरत

के जदु की तरह दीलों को धींय लेता है.

बदल देता है नकरत को मोलब्धतमें
 दुरीयोंको बदल देता है कुरबत में
 दुश्मनों के दीवों पर असर करता है पुब
 देरीना दुश्मनों को बना देता है मेडबुब.
 (उकीमाना अकवाल-रपप)

गम हमेशा नहीं रहता :-

अथ गम के मारे तेरा गम दूर हो जायेगा.
 र्छन्मिनान रप के तेरे लीये काई है अल्लाह.
 माना के मायुसी बडोत परेशान कुन होती है.
 मायुस न हो के तेरा मुश्कील कुशुल है बस अल्लाह.
 काई है तुझको अल्लाह की पनाह जे तुने मांगी
 उससे जयादा मेडकुअ होगा कौन छस्का मुडाकिअ है अल्लाह
 झीकर मत कर के तदबीर उसके डायमें है
 बेडतरी उसमे होती है जे कुछ करता है अल्लाह.
 अथ नइस कर सब्र कजा व कहर पर
 सरे तस्वीम जम कर के डकिम है बस अल्लाह.
 ना मुम्कीन को मुम्कीन मुश्कील को आसान करता है वो.
 कीन्नीही आइतों से बस बयाता है अल्लाह.
 (उकीमाना अकवाल-र६६)

ईबत :-

वो दौर ली देभा है तारीज की नवरोंने
 लमहोंने जता की थी सदीयों ने सजा पाई
 अकबर अल्लाबादी दाहीमें जिजब लगा रहे थे. आईने में देजते
 दुजे अपने नइसको जिताब करके ये शेअर पढा.
 मसउक है दुजुर कीस बंदोबस्तमें
 अग्रिल की बडार न होगी अगस्तमें
 (मजाहिरे उलुम-७/२००२/३८)

सुब्हान तेरी कुदरत :-

हरिया जे बेड रडा है, सुब्हान तेरी कुदरत !
 डर कत्ता केड रडा है, सुब्हान तेरी कुदरत !

जे बार उठा सके न, अरहोँ जिबावोँ अइवाक
 धन्सान सेह रखा है, सुब्दान तेरी कुदरत !

(छजरतं शाह सैयद नईस अलहुसैनी)

अय बुढापा-पुश आमदीह :-

अय बुढापे पुश आमदीह व मरहबा

आनेवाले मेहमान तुंजकी मरहबा

तुंने मिटा दी हर जहालत और दीया मुजको वकार

पुबीयां मुंजको अताकी और बनाया नेको कार

बनगया में मुत्तकी छोने लगा मेरा धकराम.

हर कोर्ण करने लगा मेरी धज्जत अहतिराम

नवजवान देने लगे मुंजको इतबा और मुकाम

जब के अय बुढापे तुंजसे पहले नही था मेरा कोर्ण नाम

जैसे ली आता लुं मैं सब भडे हो जते है.

बुजुर्गी की तअजीम में आदाब बज्ज वाते है.

मेरी बातकी सय ज्जानते है सब

जे ली मैं केहता लुं उसे मानते है सब

(इकीमाना अकवाल-५१)

वअज - व-धबत :-

शुगल हे अब इकत धबाहत का

जौक हे धमान की लवापत का

झिके दूनिया से अब नज्जत भीले

शौक हो बस तेरी धताअत का

सीधे रास्ते पे यला हमको

कयहे शयतानसे बया हमको

छंद्गी छोतो बस धबाहत में

साथ धमान के झीर छिठा हमको.

(मुइती शई (२.अ.)

يَا رَبِّ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِمًا أَبَدًا - عَلَى حَبِيبِكَ خَيْرًا الْخَلْقِ كُلِّهِمْ

(१५) दीनी किताबें

किताबों तक पहुंचना :-

ईलमको लीअकर मेहुकुळ करो.

ईस्के मुताबिक अेक ईलम वो है जे तहरीर की शकल में मेहुकुळ है दुसरा ईलम वो है जेस्को तहरीर में मेहुकुळ किया गया हो. आलीम और जालीममें ये इर्क है के जालीम की पहुंच तहरीर की शकल के ईलम तक नहीं होती सिई ईलम की बात सुनने तक हो सकती है. क्युंके जे शप्स पढना न जानता हो वो सिई उन्ही बातों को जान सकता है जन्को वो सुन सकता हो. वो ईलम जे किताबों में तहरीर की शकल में है उस्को जालीम पढ नहीं सकता. और लकीकत ये है ईलम का ललज खिस्सा वो है जे तहरीर की शकल में किताबों में मौजूद है. तावीमी ईदारे ईस तहरीरी ईलम तक ईन्सानों को पहुंचाने के काबील बनाते है.

मद्रसा ईन्सान को ईस काबील बनाता है के वो तन्हाई में ली मुकम्मल तौर पर ईलम हासील कर सके अगर आदमी मुताबे की सवालीयत से मेहुइम रहे तो कभी ईलम हासिल नहीं कर सकता.

पढने की सवालीयत का ये बडा इयादा है के आदमी ईस काबील बन जाता है के वो सारी दुनिया के दीमाग वाले यहां तक के जे ईन्सान वफ़ात पा गये है. उन्के ईलम और तलकीकसे ली वो वाकीइ हो सकता है.

कीसी का कोल है जेस्के पास किताब है वो अकेला नहीं. ये बात बिलकुल सही है. अेक तावीम याइता आदमी किताबोंके जरीये अपने दीन रातको ईये हिमागवाले ईन्सानों की सोलबतमें गुजरने के काबिल हो जाता है. और जालीर बात है के ईससे बडी कोई शुशकिस्मती नहीं हो सकती.

दीनी मदारिसने बेशुमार लोगोंको यही तोड़इ दीया है. ईन मदारिसने लोगों को ईस काबील बनाया के वो जे सुन नहीं सकते उस्को पढकर मालुम करवे. जेन बडे ईन्सानों को देखने का लमें भौका नहीं मीला वो उन्की किताबों के जरीये उन्का लमनशीन (पदोशी) बन सकता है.

(दीन-१-शरीअत-११)

किताबों का जमीरा और ईशाअत :-

कदीम उल्माअे किराम की कल्मी किताबें दुनिया से नापेद (अत्म) लो जाने के बावुजूद अब ली कर्ष लाअ किताबें अशिया, युरोप की लायब्रेरीयों में मौजूद है. तुर्कीमें नायाब किताबें मुफ्तवीक्ष कुतुबखानोंमें बढोत अयादा है. उसके बाद मिसर का दर्ज है. और अब र्शन नायाब किताबों की आरी आरी ईशाअत लोने लगी है. खिंदुस्तान-पाकीस्तान में नायाब किताबों का जमीरा काफ़ी मौजूद है. और कीसी दर्जमें उन्की ईशाअत लो रली है.

पीछले दौरमें बडे बडे सालीबे तस्नीक्ष (किताबें लीअने वाले) उल्मा पैदा लुअे. जे अपनी जतसे तस्नीक्षी तालीक्ष का अेक ईदारा थे.

ईमाम तिबरी, ईमाम र्शने जवज़ी, ईमामे जलबी, लाकिज़ र्शने लजर, ईमाम सुयुती, लाकिज़ सभावी, ईमाम र्शने कसीर, अतीब बगदादी, जैसे बेथुमार मुसन्नेफ़ीन अपनी जतसे अेक ईदारा है. जन्मेंसे लर अेकने र्शनी अयादा किताबें लीअी है के लम र्शन सबको पढ नली सकते. उन्की किताबोंमें से बढोतसी किताबें नाबुद लो गर्ष. और बढोतसी अबली कुतुबखानोंमें पायी जाती है. और उन्मेंसे बढोतसी छप गर्ष है. और लम उन्से शायदा उठा रहे है.

आज के दौरमें किताबें लीअना आसान है. कागज़-प्रिन्टींग और ईशाअत के अस्बाब आम है. पुरी दुनियासे र्शल्मी तअल्लुकात कायम है. घर बेठे दुनिया भरके कुतुबखानें और किताबोंसे शायदा लासिल करने की आसान सुरतें पुजूद में आ चुंकी है.

अल्लाल तआला अस्वाक्ष पर रलम इरमाये जन्लोंने लर किसम के वसाईल की नायाबी के बावुजूद लमारे लीये किताबों का बढोत किंमती अऊाना छोडा है. उम्मेते मोलुंमदीयल की ये करामत है.

(निदाअे शाही-१/१९९३/१९)

लोग अस्वाक्ष की किताबों से नक्ष नली उठाते. न उन्का मुताला करते है. अस्वाक्षकी तसानीक्ष को शायेअ करना. और उन्की तरक्ष वतजबुल दीलाना जरूरी है.

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ

وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

